श्री जैन सिद्धान्त भास्कर

जैन पुरातत्व संबन्धी वार्षिक शोधपत्र

वी॰ नि॰स॰—2524-25 वि॰ स॰—2054-55	1997 एव 1998	भाग—50-51 अक—1-2

प्राच्य दुर्लभ पाण्डुलिपि विशेषांक २

(श्री जै॰ सि॰ भ॰, आरा मे सुरक्षित सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूची सख्या-998 से 2017 तक। सम्पादक—डॉ० ऋषभचन्द फौजदार)

प्रकाशक

अजय कुमार जैन, मत्री

श्री देव कुमार जैन ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट

श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा (बिहार)

शुल्क भारत में—200/- विदेश में—300

THE JAINA ANTIQUARY

YEARLY JAINOLOGICAL RESEARCH
JOURNAL

V N.S -2524-25	1997 & 1998	Vol —50—51
V.S 2054-55	Joint Special Issue	No —1-2

MANUSCRIPTS SPECIAL ISSUE - II

(DISCRIPTIVE CATALOGUE OF OLD RARE SANSKRIT, PRAKRIT, APABHARANS, HINDI MANUSCRIPTS PRESERVED IN SRI JAIN SIDDHANT BHAWAN, ARRAH, No 998-2017, *Edited by* **Dr. Rishabhchand Fauzdar**)

Published by
Ajay Kumar Jain, Secretary

Shri Devkumar Jain Oriental Research Institute
SHRI JAIN SIDDHANT BHAWAN
ARRAH BIHAR (INDIA)

Inland Rs. 200/-] [Foreign Rs 300/-

INDEX
(विषय - सूची)

पृष्ठ सख्या

1. मानद प्रबध निदेशक का प्रतिवेदन लें॰ सुबोध कुम्मार जंन
2. प्रधान सम्पादकीय लें॰ डा॰ राजाराम जैन 1 से 10
3. Foreword Naseem Akhter
(Manuscript, Special Issue, vol-II)
4 प्रकाशकीय नम्र निवेदन ले॰ अजय कुमार जैन
5 Abbreviation
6 समर्पण ले॰ सुबोध कुमार जैन
7 Introduction Dr. Gokul Chand Jain I से IX
(Manuscript vol-I)
8 सम्पादकीय डा॰ ऋषम चन्द जैन 'फौजदार'
(श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली-भाग-2) XI से XIV
9 Introduction to Dr Gokul Chand Jain
SECOND VOLUME
10 Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabharamasa
& Hindi, Manuscripts
(i) Purana, Carita, Katha 1 से 13
(ii) Dharma, Darsana, Acara 14 से 39
(iii) Rasa-chand Alankara & Kavya 40 से 49
(iv) Mantra, Karmakanda 50 से 59
(v) Ayurveda 60 से 61
(vi) Stotra 62 से 113
(vii) Puja-Patha-vidhana 114 से 173

11. परिशिष्ट

(i)	पुराण, चरित कथा		1 से 55
(ii)	धर्म, दर्शन, आचार		56 से 69
(iii)	रस, छन्द, अलकार इत्यादि		70 से 79
(iv)	रस, छन्द, अलकार एवं काव्य		80 से 91
(v)	मंत्र, कर्मकाण्ड		92 से 107
(vi)	आयुर्वेद		108 से 115
(vii)	श्रोत		116 से 203
(viii)	पूजा-पाठ-विधान		204 से 309
12	भवन का 95 वां वार्षिक प्रतिवेदन	ले० अजय कु० जैन	310 से 313
13	मुडविद्री जैन मठ के भट्टारक दिवगत स्वामी जी	ले० निरज जैन (सतना)	314 से 315
14.	श्री मुडविद्री क्षेत्र के पूज्य भट्टारक जी के देहावसन पर	ले० सुबोध कु० जैन	316
15	हमारे बडे भाई प्रबोध कुमार जी का देहावसन	ले० सुबोध कु० जैन	317 से 318
16	भाषा के स्वभाविक विकास का नाम है 'प्राकृत'	ले० मदनलाल खुराना	319
17.	कुन्द-कुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार (कुन्द-कुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर द्वारा प्रवर्तित)	ले० डा० अनुपम जैन	320
18.	पाठको के उदगार (1 से 4)		321 से 322
19.	पुस्तक समीक्षा एव समालोचना		322 से 325
20	छपते-छपते	ले० सुबोध कु० जैन	326
21	Catalogue & Price list of Printed & Xerox publications 1998	Ajay K. Jain	1 से 11
22.	मुनि सिद्धान्त देव नेमिचन्द कृत 'द्रव्यसग्रह' का हिन्दी-छाया अनुवाद (29 से 58)	ले० सुबोध कु० जैन	टाईटिल पृष्ठ स० 2, 3

मानद प्रबंध-निदेशक का प्रतिवेदन

श्री जैन सिद्धान्त भवन का ग्रथावलि भाग-1 एव भाग-2 जो कि भारत सरकार के शिक्षा विभाग के सहयोग से प्रकाशित हुआ था, लगभग 2000 हस्तलिखित ग्रथो की सूची एव विस्तृत परिचय है और उनका 2 भागो मे निम्न विद्वानो को कुछ माह मैंने अपने देवाश्रम कार्यालय मे बिठाकर स्वय अपने निर्देशन मे इसे तैयार करवाया था।

दोनो ही ग्रथावलियो का सम्पादन सस्कृत प्राकृत के विद्वान डॉ० ऋषभ चन्द्र 'फौजदार" ने किया था।

श्री जैन सिद्धान्त भास्कर के ग्राहको को सन् 19?5 मे प्रथम भाग विशेषाक के रूप मे प्रेषित किया गया था। अब उसी ग्रन्थ का दूसरा भाग इस वर्ष उसी प्रकार विशेषाक के रूप मे सभी ग्राहको को प्रेषित किया जा रहा है।

अत मैं डॉ० ऋषभ चन्द फौजदार तथा उनके सहयोगी सभी विद्वानों को आज फिर धन्यवाद दे रहा हूं जब कि हम ग्रंथावलि के दूसरे भाग को श्री जैन सिद्धान्त भास्कर के ग्राहको को सन् 1997 एव सन् 1998 के रुप मे प्रेषित करने की तैयारी कर रहे हैं। इस विशेषाक मे कुल 514 पृष्ठ है।

श्री जैन सिद्धान्त भास्कर के प्रधान सम्पादक डॉ० राजा राम जी जैन ने विद्वतापूर्ण प्रधान सम्पादकीय लेख लिखा है, उसके लिए मैं उन्हे धन्यवाद दे रहा हूँ।

भवन मे लगभग 6000 हस्तलिखित ग्रथ हैं। अभी 4000 ग्रथों की विस्तृत सूची के लिए भारत सरकार का कोई ग्रान्ट प्राप्त नही हुआ है। फिर भी 1000 हस्तलिखित ग्रंथो का तीसरा भाग मैंने भवन की ओर से तैयार कराकर डॉ० ऋषभ चन्द फौजदार के सम्पादन के लिए प्रेषित किया है। इस समय डॉ० ऋषभ चन्द जैन वैशाली शोध सस्थान मे प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रहे हैं। उनके सम्पादन का दायित्व पूरा होने पर मुद्रण का प्रोग्राम बनाऊँगा।

सूचनार्थ यह मतव्य मुद्रित कर रहा हूं।

सुबोध कुमार जैन
मानद प्रबन्ध निदेशक
श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा

गणतत्र दिवस
26 जनवरी 1998

प्रधान सम्पादकीय

पाण्डुलिपियाँ और उनका महत्व

प्रो० (डॉ०) राजाराम जैन

पाण्डुलिपियाँ किसी भी समाज एव देश की अमूल्य धरोहर मानी गई हैं क्योकि वे उनके पूर्वजो द्वारा अनुभूत ज्ञान गरिमा की प्रतीक तथा स्वाध्याय, पठन-पाठन, मनन एव चिन्तन की प्रवृत्ति, मानसिक एकाग्रता, आध्यात्मिक उत्थान, बौद्धिक-विकास, सास्कृतिक उन्नयन, कलात्मक अभिरुचि और साहित्यिक-प्रतिभा आदि की परिचायिका होती है।

यही नही, उनके आदि एव अन्त में उपलब्ध प्रशस्तियों एवं पुष्पिकाओ मे पूर्ववर्त्ती अथवा समकालीन इतिहास, सस्कृति, समाज एव साहित्य आदि के उल्लेखो के कारण देश एव समाज के विविध पक्षीय इतिहास के लेखन तथा राष्ट्रीय अखण्डता एव भावात्मक एकता को ठोस बनाने मे भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इनके अतिरिक्त भी, उनमे लेखन-सामग्री में प्रयुक्त विविध उपकरण, लिपि की विविध शैलियाँ, चित्रकला तथा उनकी कलात्मक अभिरुचि की अभिव्यक्ति तथा उसके विकास की दृष्टि से भी उनका विशेष महत्त्व है।

जैन-परम्परा में जिनवाणी को सुरक्षित रखने का मूल आधार होने के कारण पाण्डुलिपियो को पूज्यता तथा विशेष आदर का भाव मिलता रहा है। उन्हे अपनी पवित्र धरोहर मानकर जैनो ने न केवल अपने तीन दैनिक आराध्यो-देव, शास्त्र एव गुरु मे से शास्त्रो को भी समान रूप से पूज्य मानकर उनकी सुरक्षा के लिए प्रारम्भ से ही अनेक प्रयत्न किये हैं, अपितु जैनेतर अनेक दुर्लभ पाण्डुलिपियो को भी प्राणपण से सुरक्षित रखा है।

पाण्डुलिपि उसकी आवश्यकता और प्रादुर्भाव :—

प्राकृतिक विपदाओ तथा अन्य सांसारिक जटिल समस्याओ के कारण उत्पन्न मानसिक अस्थिरता और उनसे विस्मृति के उत्पन्न होने की आशका से, कण्ठ-परम्परा द्वारा प्राप्त ज्ञान को सुरक्षित रखने की आवश्यकता का जब अनुभव किया गया तब उसे जिन सहज उपलब्ध उपकरणो पर लिपिबद्ध किया गया, उसे 'पाण्डुलिपि" नाम से अभिहित किया गया। इस "पाण्डु-

लिपि" शब्द मे दो पदो का मेल है-पाण्डु एवं लिपि, जिसका अर्थ है-पाण्डुर-वर्ण वाले आधार अथवा उपकरण पर, किसी विशेष अथवा किसी तरल पदार्थ से अथवा किसी विशेष कठोर नुकीले उपकरण से, किन्ही मान्य सकेतो के द्वारा अपेक्षित ज्ञान को चित्रित अथवा उत्कीर्णित कर उसे सुरक्षित रखना। इस प्रकार भारत मे पाण्डुलिपियो का प्रादुर्भाव हुआ। गवेषको के अनुसार इसका काल अनुमानत ईसा पूर्व चतुर्थ सदी के आसपास माना जा सकता है।

पाण्डुलिपियो के उपकरण —

यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि पाण्डु अथवा पाण्डुर वाला प्रारम्भिक आधार क्या रहा होगा ? इस विषय पर क्या-क्या गवेषणा हुई, उनकी जानकारी तो नही मिल सकी, किन्तु हमारी दृष्टि से पाडुलिपि तैयार करने का प्रारम्भिक भारतीय आधार पाषाण था।

तत्पश्चात विकास की यह परम्परा चलती रही है और (2) भोजपत्र (3) ताडपत्र (4) कागज (5) कपडा (6) काष्ठ पट्टिका (7) चमडा (8) ईट (9) सोना (10) चाँदी (11) ताबा (12) पीतल (13) कासा और (14) लोहा तथा उनके मिश्रण से निर्मित उपकरण आदि हमारे आगम शास्त्रो तथा ज्ञान-विज्ञान तथा इतिहास, सस्कृति एव सामाजिक-विचार को लिपिबद्ध करने के साधन बने।

उक्त सामग्री को देखकर यह भ्रम होना स्वाभाविक है कि पत्थरों तथा धातुओ पर लिखित सामग्री को पाण्डुलिपि कैसे माना जाय ? इसके समाधान मे केवल यही कहा जा सकता है कि तत्कालीन सहज उपलब्ध प्राकृतिक पाण्डुर-वर्ण अथवा उसके समकक्ष वर्ण वाली वस्तु पर अकित आधार-सामग्री को पाण्डुलिपि कहा गया। भले ही वह पत्थर को हो अथवा पेडो की छाल की। उस समय उसका पाण्डुलिपि के रूप में जो नामकरण हुआ, वह ऐसा रूढ होता चला गया कि उक्त सभी तो पाण्डुलिपि कहलाती ही रही, वर्तमान मे प्रेस मे छापने के लिए दी जाने वाली प्रेस-सामग्री भी पाण्डुलिपि कही जाने लगी।

जैन-परम्परा में लेखन-कार्य हेतु पूर्वोक्त आधारभूत सामग्रियों मे से चमडा, ईट, कासा एव लोहा छोडकर अल्पाधिक मात्रा मे प्राय उक्त समस्त सामग्रियो का उपयोग किया गया है। इन उपकरणो के उल्लेख प्राचीन जैन-ग्रन्थो मे एक साथ एक ही स्थान पर नही मिलते, बल्कि प्रासगिक अथवा अनुषागिक रूप से यत्र-तत्र बिखरे पडे हैं। उनमे इन तथ्यो की स्थिति लग-

भग वैसी ही है, जिस प्रकार समुद्रतल मे छिपे मोतियो अथवा नदी-तटो की बालू मे बिखरे हुए सर्णपबीजो को। फिर भी, इन सामग्रियों की खोज जितनी कठिन है, उतनी ही रोचक एव मनोरजक भी। इस दिशा मे अभी तक क्रमबद्ध खोजपूर्ण विस्तृत कार्य नही हो सका है, जब कि जैन पाण्डुलिपियो के गौरवशाली महत्व को विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करने की महती आवश्यकता है।

यह परम गौरव का विषय है कि पाण्डुर-वर्ण के पाषाण पर उत्कीर्ण एक जैन शिलालेख भारत की सम्भवत सर्वप्रथम लिखित पाण्डुलिपि है, जो भ० महावीर के परिनिर्वाण के ८४ वर्ष बाद अर्थात् वीर निर्वाण सवत् ८४ (ई० पू० ४४३) मे उन्ही की स्मृति मे ब्राह्मी-लिपि मे उत्कीर्ण कराया गया था।[१]

इस प्रकार आधार सामग्री, लिपि-शैली एव वीर निर्वाण सवत् के स्पष्ट उल्लेख होने के कारण वह लेख न केवल जैन समाज के लिए गौरव का विषय है, अपितु देश के लिए एक ऐतिहासिक महत्व का दस्तावेज भी। यह शिलालेख अजमेर के पास बडली-ग्राम मे मिला है। काल के प्रभाव से वह कुछ क्षतिग्रस्त हो गया है। फिर भी, महामान्य पुरातत्ववेत्ता तथा प्राच्य लिपि-विधा के महापण्डित प० गौरीशकर हिराचन्द्र ओझा ने सावधानी पूर्वक पढकर उसे भारत का प्राचीनतम अभिलेख बतलाया है।

ईसा-पूर्व दूसरी सदी के हाथीगुम्फा-शिलालेख मे चर्चा आती है कि सम्राट खारवल ९ वर्ष की आयु मे युवराज पद प्राप्त करने के पूर्व लेख, रूप, गणना एव व्यवहार-विधि मे विशारद (पण्डित) हो गया था। इससे यह विदित होता है कि लेखन की परम्परा खारवेल के समय तक श्रमण सस्कृति में पर्याप्त विकसित हो चुकी थी।

ई० पू० की सदियो मे कागज एवं भोजपत्र के प्रयोग :—

पाण्डुलिपि तैयार करने सम्बन्धी अन्य उपकरणो मे भोजपत्र, ताडप एव कागज का महत्वपूर्ण स्थान है।

भारत मे कागज के निर्माण की सर्वप्रथम सूचना यूनानी-स्रोतों से मिलती है। सम्राट सिकन्दर के सेनापति निआर्कस (ई० पू• 320) मे लिखा है कि "भारतीय प्रजा रुई तथा चिथडो को कूटपीस कर कागज बनाती

१. 'वीराय भागवत चतुरासिति वस" प्राचीन शिलालेख सग्रह पृ• ४

है।" मगध में सीरिया के राजदूत के रूप मे आए मेगास्थनीज (ईसा पूर्व 305) ने भी उसका समर्थन किया है। इससे विदित होता है कि ईसा-पूर्व की तीसरी-चौथी सदी में भारत मे कागज का आविष्कार हो गया था और उसी समय कागज तथा भोजपत्र दोनो का ही प्रयोग होने लगा था। किन्तु उसका उपयोग किसने किस प्रकार किया, इसकी जानकारी उपलब्ध नही होती। आज ई० पू० की कागज अथवा भोजपत्र की कोई, पाण्डुलिपि उपलब्ध भी नही है। इसका कारण सम्भवत यही रहा होगा कि वे दोनों ही सडने गलने वाले पदार्थ थे, अत बहुत सम्भव है कि वे नष्ट हो चुकी हो ?

ईस्वी सन् के प्रारम्भिक वर्षों में भी सम्भवत भोजपत्र पर पाण्डु-लिपियाँ लिखी जाती रही। उन पर लिखित बौद्धो एव वैदिको की कुछ प्राचीन पाण्डुलिपियाँ भी उपलब्ध होती है, किन्तु जैनियो की नही। हिमवन्त-थेरावली के एक उल्लेख के अनुसार सम्राट खारवेल के पास भोज-पत्र पर लिखित एक जैन पोथी थी, यद्यपि मुनि पुण्यविजय जी ने उक्त उल्लेख को केवल कल्पनाधारित ही बतलाया है।

भोजपत्र की कुछ पाण्डुलिपियाँ पूना, लाहोर, कलकत्ता, तिब्बत, लन्दन, ऑक्सफोर्ड वियेना एव बर्लिन के ग्रन्थागारो मे सुरक्षित है, किन्तु प्रो० एस० एम० कात्रे के अनुसार वे 15 वी सदी ईस्वी के पूर्व की नही है।

ताडपत्र का प्रयोग

प्राचीन काल मे पाण्डुलिपियो के लिए ताडपत्र सबसे अधिक सुविधा जनक माना गया। क्योकि एक तो वह टिकाऊ होता था, दूसरे उसकी लम्बाई एव चौडाई पर्याप्त होती थी। पत्तो की दोनो नसों के भाग को आवश्यकतानुसार काट कर उन्हे पानी मे भिगो दिया जाता था। फिर उन्हे सुखाकर कौडी, बाँस या किसी चिकने पत्थर से रगडकर उसे चिकना बना दिया जाता था, तब किसी नुकीले उपकरण से उस पर खोदकर लिखते थे। काश्मीर तथा पजाब को छोडकर सारे भारत मे इसका प्रयोग किया जाता था। इस प्रक्रिया मे काष्ठपट्टिका पर अक्षर खोदकर स्याही लिपे हुए ताडपत्र पर उन्हे छाप दिया जाता था। यह पद्धति उत्तर भारत मे प्रचलित थी और लेखनी मे ताडपत्र पर पहले अक्षर उकेर कर फिर उनमे काला रस भर दिया जाता था। यह प्रक्रिया दक्षिण भारत मे प्रचलित थी।

चीनी यात्री ह्यूनत्साग के अनुसार बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद जब प्रथम संगीति हुई, तब त्रिपिटिक का लेखन ताड-पत्रो पर ही किया

---

1 ततो लेख रूप गणना ववहार विधि विसार देन सबविजावाद क्षालेन नववसानि योवराज पसासि (पक्ति स० 2)

जाता था। - किन्तु वे मूल पाण्डुलिपियाँ अब उपलब्ध नहीं।

वर्तमान में भारत में जो भी ताडपत्रीय पाण्डुलिपियां मिलती हैं, वे 10 वी 11 सदी के पूर्व की नहीं थे। इसके पूर्व की पाण्डुलिपियाँ या तो नष्ट हो गई, अथवा बहुत सम्भव है कि वे विदेशो मे ले जाई गई होगी।

दशवैकालिक (हारिभद्रीय) टीका में ताडपत्रीय पाण्डुलिपियों की रोचक जानकारी दी गई है। उसमे उनका 5 प्रकार के आकृतिसूचक वर्गीकरण किया गया है।

गडो—जो चौडाई, लम्बाई एव मोटाई मे समान होती थीं।

कच्छपी—जो कछुवे के समान मध्य में विस्तीर्ण तथा अन्त मे पतली होती थी।

मुष्टि—जो लम्बाई मे चार अंगुल अथवा वृत्ताकार होती थी अथवा, चार अगुल लम्बी तथा चार कोनो वाली होती थी।

सपुष्टि—जो दो पुटको मे बन्धी हुई होती थी। और, सृपाटिका/सम्पुटक जो पतली किन्तु विस्तृत होती थी। इसक आकार सम्भवत चोच के समान होता था।

ताडपत्र की इन पाण्डुलिपियो को 'पोत्थय' भी कहा गया है—जिसका अर्थ है पोथी अथवा पुस्तक अथवा धार्मिक ग्रन्थ।

राजप्रानीय सूत्र मे ताडपत्रीय पाण्डुलिपि की सरचना के विषय मे सुन्दर वर्णन मिलता है। उसके अनुसार सूर्याभदेव के व्यवसाय-सभा-भवन में एक ऐसी पाण्डुलिपि सुरक्षित थी, जिसके आगे पीछे के आवरण पृष्ठ (पुट्ठे) रिष्टरत्न से जटित थे, जिसकी कम्बिका (ऊपर तथा नीचे को ओर लगी लकडी की पट्टी) रिष्ट नामक रत्नो से जटित थी, जो तप्तस्वर्ण से बने डोरे, नाना मणि जटित ग्रथी, वै-ढडूर्य-मणि द्वारा निर्मित लिप्यासन अर्थात् दवात, रिष्ट नामक रत्न द्वारा निर्मित उसका ढक्कन, शुद्ध स्वर्ण निर्मित श्रृखला रिष्टरत्न द्वारा निर्मित स्याही, वज्ररत्न द्वारा निर्मित लेखनी और रिष्टरत्नमय अक्षरो द्वारा लिखित धर्मलेख मे युक्त थी। इस वर्णन मे अतिशयोक्ति प्रतीत नही होती। क्योंकि वर्तमान मे इसी प्रकार की रत्नजटित कुछ कमलीय अमूल्य जैन पाण्डुलिपियाँ जैन शास्त्र-भाण्डारों मे एव जैनेतर पाण्डुलिपियाँ जनेतर शास्त्र भण्डारो में सुरक्षित हैं।

ताडपत्र की प्रतियाँ आकृति में छोटी बडी सभी प्रकार की मिलती हैं। उसकी सबसे लम्बी प्रति दिगम्बराचार्य प्रभाजन्द्रकृत प्रमेयकमलमार्तण्ड की है, जो जैन न्याय का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ माना गया है। वह 37 इ च लम्बी है, जो पाटन (गुजरात) के जैन श्वेताम्बर शास्त्र भण्डार मे सुरक्षित है।

कागज़ की पाण्डुलिपियाँ

कुमारपाल प्रबन्ध (जिनमण्डन मणि वि० स० 1402) मे एक उल्लेख मिलता है कि एकबार चालुक्यनरेश कुमारपाल जब अपने जैन ज्ञान भण्डार में गया तो उसने देखा कि उसके लिपिकार कागज के पत्रो पर पाण्डुलिपियाँ तैयार कर रहे हैं। तब उसने पूछा कि कागज पर लेखनकार्य क्यो किया जा रहा है तो लिपिकारो ने उसका कारण ताडपत्रो की कमी बतलाया। इसका तात्पर्य यह हुआ कि १२ वी – १३ वी सदी मे ताडपत्रों की उपलब्धि में कठिनाई होने लगी थी। अत पाण्डुलिपियाँ कागज पर लिखी जाने लगी थी। कागज की ऐसी पाण्डुलिपियाँ उत्तर भारत मे प्रचुर मात्रा में मिलती है।

पाण्डुलिपियो के अध्ययन मे मुझे भी पिछले लगभग ४० वर्षों का अनुभव है। उनकी खोज, प्रतिलिपिकार्य अध्ययन सम्पादन अनुवाद एव समीक्षाकार्य घोर धैर्य-साध्य कष्ट-साध्य एव व्यय-साध्य होने के साथ साथ गुफागृह में बन्द रहकर ही एकाग्रमन सम्पादनादि कार्य करने की प्रेरणा देता है। यह भी अनुभव किया कि मध्यकालीन प्राचीन पाण्डुलिपियो के न्यायपूर्ण अध्ययन के लिए विभिन्न सदियो के अनुमा—

१ (क) एकदा प्रातर्गुरून् सर्वसाधन वन्दित्वा लेखकशाला विलोकनाय गत । लेखका । कागदपत्राणि लिखन्तो दृष्ट । तत गुरुपार्श्वे पृच्छा। गुराभिरूच-श्रीचौलुक्यदेव सम्प्रति श्रीताडपत्राणा त्रुटिरन्ति ज्ञानकोशे अत कागदपत्रेषु ग्रन्थलेखनभिति ।

नधि-वैष्ट्य का ज्ञान तो आवश्यक है ही, प्राच्य भारतीय सस्कृति, तत्कालीन राजनैतिक एव सामाजिक-इतिहास, लोकसस्कृति एव भाषा-विज्ञान का समुचित ज्ञान भी अत्यआवश्यक है। क्योकि मध्यकालीन विशेष रूप से अपभ्रंश-पाण्डुलिपियो के आदि एव अन्त मे विस्तृत प्रशास्तियो का अकन किया गया है जिनमे स्वात्म परिचय के साथ-साथ कवियो ने पूर्ववर्त्ती एव समकालीन साहित्यिक राजनैतिक, सामाजिक एव लोकजीवन सम्बन्धी सन्दर्भ सामग्री भी अकित की है, जिसके-तुलनात्मक अध्ययन से लुप्त, विलुप्त, अनुपलब्ध अनेक ऐतिहासिक तथ्यो की जानकारी मिलती है। राष्ट्रकूट, गग तथा चालुक्य,सम्राटो एव अन्य तोमर, चौहान एव मुस्लिम नरेशो के कार्य-कलापो एव उनके समय को अनेक घटनाओ

पर प्रकाश पडता है, जो वर्तमानकालीन इतिहास-ग्रन्थों मे अनुपलब्ध है। इसकी विस्तृत चर्चा मैने अपने शोध-प्रबन्ध तथा समय-समय पर लिखित अन्य स्वतन्त्र निबन्धो मे की है। जिनकी साहित्य-जगत में प्रशसा भी हुई है।

महाकवि रइधू की प्रशस्तियो मे उल्लिखित उनकी स्वर रचित रचनाओ की सूची में मे कुछ पाण्डुलिपियाँ अभी तक अनुपलब्ध हैं। उनकी सिरिबालचरिउ' की प्राचीन एव प्रामाणित पाण्डुलिपि न मिलने से उनके लिए मै अत्यन्त व्यग्र एव चिन्तित था। किन्तु इसे सुखद सयोग ही कहा जायेगा कि कुछ समय पूर्व मगध विश्वविद्यालय के हमारे एक प्रोफेसर-मित्र जब पेरिस (फ्रास विश्वविद्यालय मे एक भाषणमाला प्रस्तुत करने गए तब वहा की एक प्रोफेसर—महिला ने उनसे मेरा पता पूछा। उसका कारण यह था कि उस विदुषी महिला ने महाकवि रइधू कृत "अणयमिउकहा" पर मेरा एक निबन्ध कही से उपलब्ध कर सन् 1964 के आसपास पढा था। उसमे प्रभावित होकर वे मेरी खोज मे थी। क्योकि महाकवि रइधूकृत 'सिरिबालचरिऊ' को एक पाण्डुलिपि उन्हें पेरिस के किसी शास्त्रागार में उपलब्ध हुई थी और वह उसे मेरे लिए भट स्वरूप भेजना चाहती थी। मेरे उक्त मित्र के द्वारा उक्त पाण्डुलिपि को जीरोक्स कापी के साथ उन्होने मेरे लिए अत्यन्त भावुक-पत्र भेजकर आरा नगर (बिहार) में आकर मिलने की इच्छा भी व्यक्त की थी। इस प्रसग ने मुझे यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि रइधू साहित्य की तथा अन्य अनेक लेखको को भारत मे अनुपलब्ध कुछ पाण्डुलिपियाँ भी विदेश मे कही सुरक्षित हो सकती हैं।

अपभ्रंश के महाकवि धवल (10 वीं सदी) जैसे अनेक कवियो ने अपनी-अपनी ग्रन्थ प्रशस्तियों में पूर्ववर्ती अनेक ऐसे दजनो ग्रन्थो एव ग्रथ-कारो के उल्लेख किए है जिनमे से वर्तमान मै कुछ अज्ञात विस्मृत अथवा अनुपलब्ध हैं। असम्भव नही कि उनमे से भी अनेक ग्रन्थ विदेश के शास्त्र भण्डारो मे अज्ञात वनवास भोगते हुए अपने उद्धार की प्रतीक्षा कर रहे हों? कुछ समय पूर्व मैने रूस के शास्त्र-भण्डारो में सुरक्षित कुन्द-कुन्द शिवार्य, पूज्यपाद, सोमसेन आदि एव अन्य जैनाचार्य-लेखको की सक्षिप्त ग्रन्थ सूची 'प्राकृत-विद्या" (अक 7/1) मे प्रकाशित की थी साथ ही पचास्तिकाय गोम्मटसार—(कर्मकाण्ड) के फारसी अनुवाद एव फारसी-भाषा मे लिखित 'ऋषभस्तोत्र" आदि की भी चर्चा की थी। इसी प्रकार "जैन-पचरवाण" (प्राकृत जैनेतर 'पचतन्त्र" संस्कृत कथानक कहे गया आदि पर भी चर्चा की थी तथा बताया था कि मैगास्थनीज, फाहियान, ह्यूनत्साग, अलबेरुनी तथा अन्य अनक विदेशी-यात्री भारत आकर जैनाजैन अनेक

पाण्डूलिपियाँ अपने साथ लेते गए थे। दुर्भाग्य से उनका विवरण आज तक तैयार नही हो सका है। मैंने एक बार यह भी लिखा था कि आचार्य जिनसेन के परम भक्त एवं शिष्य राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष द्वारा विरचित प्रश्नोत्तर रत्नात्नमालिका' नामको संस्कृत जैन रचना तिब्बत के एक शास्त्र भण्डार में ऊपलब्ध हुई थी, जो भाषा, भाव, शैली की दृष्टि से एक बेजोड रचना सिद्ध हुई है। यह भी लिख चुका हूँ कि बट्टकेरकृत मूलाचार की प्राचीनतम प्रामाणिक हस्तलिखित प्रति जर्मनी के प्रोफेसर अल्सडार्फ के पास सुरक्षित है। डा० अल्डार्फ डा० हीरालाल जो एव प्रो० उपाध्ये जी घनिष्ट मित्र तथा आचार्य जी विद्यानन्दजी के प्रशशक एव परमभक्त थे। अभी हाल मे हो डा० आलसडार्फ का स्वर्गवास हुआ है। वे उसका सम्पादन कर रहे थे।

तात्पर्य है कि सहस्त्रों जैन पाण्डुलिपियाँ विदेशों के कोने-कोने में पहुँचकर वहाँ सुरक्षित अथवा असुरक्षित रूप में पडी हुई हैं। हमें निरन्तर यह विचार करना चाहिए कि वे हमारे आचार्यो के समुन्नत-चिन्तन प्रौढ-लेखन सशक्त-भाषा, विचार एव सहज-शैली के प्रकाशक एव समकालीन लोक भाषाओं को साहित्यिक सामर्थ्य प्रदान करने वाले अनुपम उदाहरण हैं। हमारी श्रवण सस्कृति के चिरन्तन विकास एव विश्व साहित्य की समृद्धि के वे स्वर्णिम अध्याय हैं। उन्हे अपनी बहुमूल्य धरोहर समझकर इस समय उनकी उपलब्धि एव जीर्णोद्धार हेतु सामाजिक-प्रयत्न अतीव आवश्यक हैं।

आरा स्थित जैन सिद्धान्त भवन जैसो कि (इस सदी के प्रारम्भिक काल से) भारत विख्यात आरा (बिहार) स्थित जैन सिद्धान्तभवन के बहुमूल्य प्राच्य शास्त्र भण्डार के विषय मे देश-विदेश में चर्चाएँ होती रही हैं, उसकी ताडपत्रीय एव कर्गलीय (सचित्र एव सामान्य) पाण्डुलिपियो का सदुपयोग शोधार्थियों ने आवश्यकतानुसार बहुत मात्रा मे किया है। इसके लिए उन्हें सहस्त्रो मीलों की यात्रा कर आरा आने तथा दीर्घ प्रवास करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता था। अत. उनको सुविधा के लिए जैन सिद्धान्त भवन की प्रबध समिति ने भवन मे सुरक्षित पाण्डुलिपियो का (Discriptive manus cripts of old maniscripts) के प्रकाशन का निर्णय लिया। उसे निर्णय शृंखला का प्रथम भाग प्रकाशित होकर पाठकों के हाथो मे पहुँच चूका है। पूर्व मे यह भी निर्णय लिया गया था कि इसे भवन के शोध-पत्र-जैन सिद्धान्त भास्कर and Jain Antiquory) के विशेषाक के रूप में अपने सामान्य ग्राहको एव पाठको को भेंट किया जाय। इसे जै० सि० भ० And Jaina Antiquory का विशेषांक इसलिए मनाया

मे जा रहा है कि उसके माध्यम से वह अधिकाधिक जिज्ञासु पाठकों के हाथो जा सके। क्योंकि समस्त सामग्री के दो खण्डो का लागत मूल्य ही लगभग 500/– से अधिक आ रहा है, इस कारण उसे खरीद पाना प्रत्येक पाठक को सम्भव भी न हो पाता।

प्रस्तुत अश मे सस्कृत, प्राकृत अपभ्रश एव हिन्दी की 996 पाण्डुलिपियों को सूची प्रस्तुत को जा रही है। शोधार्थियो की दृष्टि से इसमे आदि एव अन्त की प्रशस्तियो तथा पुष्पिकाओं के साथ साथ अन्य आवश्यक सूचनाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिनसे पाण्डुलिपियो के लेखक का परिचय, लिपिकारो का परिचय, उनका प्रतिलिपि काल तथा प्रतिलिपि-स्थल का तो पता चलता ही है, साथ ही ग्रन्थकार के इतिवृत्त के समकालीन अनेक घटनाओ की भी सूचना मिलती है, जो इतिहास के निर्माण मे सहायक सिद्ध होती है।

प्रस्तुत अश में प्राच्य भारतीय विद्या के शृगार तथा जैन-विद्या के गौरव ग्रन्थ के रूप मे प्रसिद्ध ग्रन्थो मे जिनसेनाचार्य कृत आदिपुराण (ऋषभ चरित) का मूल हिन्दी पद्यानुवाद उसकी वचनिका तथा टिप्पणी विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसकी मूल प्रति को प्रतिलिपि वि० स० 1773 में पाटलिपुत्र मे की गई थी, इससे विदित होता है कि उस समय पाटलीपुत्र का जैन समाज जिनवाणी के उद्धार मे विशेष रुचि रखता था तथा वह उत्तर मध्य काल तक जैन-विद्या का केन्द्र भी रहा था। क्रमाक 13 की पाण्डुलिपि आचार्य रत्ननन्दि कृत भद्रबाहुचरित्र का विशेष महत्त्व इसलिए है कि उसमे जैन-सघ के दि० एव श्वेताम्बर सम्प्रदाय मे विभक्त होने की ऐतिहासिक सूचना अकित है।

जैन सिद्धान्त भवन ग्रथागार मे सुरक्षित अपभ्रश कृतियो मे महाकवि रइधू कृत हरिवशपुराण (क्रमाक 44) तथा यश कीर्ति कृत हरिवशपुराण क्रमाक 45) मेघवरचरित रइधू, (क्रमाक 64) पार्श्वपुराण रइधू, (क्रमाक 88) जयमित्रहल्लकृत वड्ढमाणचरिउ (क्रमाक 135, 136) सुकोमलचरिउ रइधू, (क्रमाक 441) (उपदेशरत्नमाला सुबुद्ध पडित (क्रमाक 453) आदि पाण्डुलिपिया शोधार्थियो की दृष्टि मे विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

इसी प्रकार शौरशेनी प्राकृत के भगवती-अराधना (शिवार्य क्रमाक 177 भावसग्रह (श्रुतमुनि, क्रमाक 181) चौबीस ठाणा (पाण्डे भोवाल, क्रमाक 201) चौबीस गुणगाथा (क्रमाक 202-203), चउसरण पइण्ण (क्रमाक 205) दर्शनसार (देवसेन, क्रमाक 209), द्रव्यसग्रह (नेमिचन्द्र सि० च० क्रमाक 213,-224), धर्मरसायण (क्रमाक 235) गोम्मटसार जीव काण्ड नेमिचन्द्रसि०च० क्रमाक (242-244) गोमटसार कर्म काण्ड ने० च० सि० च०

(क्रमाक 245–249) कर्मप्रकृति ग्रन्थ (नेमिचन्द्र सिद्धान्तिदेव, क्रमाक 272) कर्म-विपाक (आनन्दसूरि क्रमाक 273), कार्तिकेयानुप्रेक्षा (स्वामिकुमार क्रमाक 276) लोकवर्णन (अपूर्ण, क्रमाक 282), मूलाचार (कुन्दकुन्द, क्रमाक 292) पचसग्रह (रत्नकीर्ति क्रमाक 305) प्रतिक्रमणसूत्र (क्रमाक 316) सत्रोव-पचासिका (क्रमाक 337) सत्वत्रिभगी (रगनाथ भट्टारक क्रमाक 361) सिद्धान्तसार (जिनेन्द्रदेवाचार्य, क्रमांक 374), वसुनन्दिश्रावकाचार (क्रमाक 443) ब्रह्महेमचन्द्र क्रमाक 384) तत्वसार (क्रमाक, 393) त्रलोक्य प्रज्ञप्ति प्रशस्ति (प. मेधावी क्रमाक 420–421) त्रिभगी (कनकनन्दी, सैद्धान्तिक चक्रवर्ती क्रमाक 422) त्रिलोकसार (नेमिचन्द्र, क्रमाक 424) प्राकृत-व्याकरण द्वि० अध्याय (क्रमाक 488)। आदि।

उक्त पाण्डुलिपियाँ शौरसेनी प्राकृत–साहित्य तथा समकालीन भाषा लिपि के इतिहास–लेखन की दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखती है।

पूर्व मध्यकालीन (अर्थात् रीतिकालीन) हिन्दी मे महाकवि भूदरदास द्वारा लिखित पार्श्वपुराण की दो प्रतिया (क्रमाक 91 तथा 92) भवन मे सुरक्षित है। हिन्दी भाषा एव साहित्य के महारथी विद्वान प. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे हिन्दी भाषा का उत्कृष्ट कोटि का महाकाव्य माना है। पूर्वाचार्यों द्वारा निर्धारित महाकाव्य के सभी लक्षण इसमे विद्यमान है। इसका कथानक पौराणिक होते हुए भी वह अत्यन्त रोचक मर्मस्पर्शी एव आत्मपोषक है। इस ग्रथ की गरिमा एव लोकप्रियता का इसीसे पता चलता है कि इसका प्रतिलिपि श्वेताम्बर मातानुयायी ऋषि हसराज जी के शिष्य रामसुखदास ने वि॰ स॰ 1856 को कार्तिक सुदी नौवी बुधवार के दिन शाहजहानाबाद (दिल्ली) मे बैठकर की थी। यही प्रतिलिपि जै॰ सि॰ भ॰ मे सुरक्षित है।

इसके अतिरिक्त हिन्दी सस्कृत प्राकृत एव अपभ्रश की विविध विषयक अनेक पाण्डुलिपियाँ यहाँ सुरक्षित हैं, जिनका विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में अकित किया गया है।

प्राचीन पाण्डुलिपियों को विवरणात्मक एव स्वीकृत सूची तैयार करना स्वय में एक कठिन कार्य है फिर भी डॉ॰ ऋषभचन्द्र जैन फौजदार श्री जिनेश जैन एव अन्य साहित्य सेवियो ने जिस एकाग्रता से इसे तैयार किया है वह सराहनीय है। जैन सिद्धान्त भवन के संरक्षक सचालक श्री बाबू सुबोध कुमार जैन का उत्साह भी अत्यन्त सराहनीय है क्योंकि उनकी प्रेरणा के बिना उक्त बहुमूल्य कार्य सम्भव न होता। पूर्ण विश्वास है कि शोधार्थी एव स्वाध्यायार्थीगण इसका पूर्ण सदुपयोग कर तथा अपने सुचिन्तित सुझाव देकर हमें उपकृत करेगे।

Foreword

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution Some of the manuscripts contain rare Jain paintings These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes Each volume contains two parts First parts consists of the list of manuscr ipts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc Part second which is named as Parisista (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job, This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna.

February 29, 1988
Vikas Bhavan, Patna

प्रकाशकीय नम्र निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का दूसरा भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पचवर्षीय योजना के रूप मे इसके छ भाग प्रकाशित करने मे सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' का यह दूसरा भाग जैन सिद्धात भवन, आरा के ग्रन्थागार मे सग्रहीत सस्कृत प्राकृत, अपभ्रश, कन्नड एव हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची है। इसमे लगभग एक हजार ग्रन्थो का विवरण है। हर भाग मे इसका विभाजन दो खण्डो मे किया गया है। पहले खण्ड मे अग्रेजी (रोमन) मे ग्यारह शीर्षको द्वारा पाडुलिपियो के आकार, पृष्ठ सख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रथागार मे लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रथो का सग्रह है। इनमे अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित है। अप्रकाशित ग्रन्थो का सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान मे जैन सिद्धात भवन, आरा मे उपलब्ध 'राम यशोरसायन रास (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठको के हाथ मे होगा। इसमे ७१३ दुर्लभ चित्र हैं।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने मे काफी कठिनाइयो का सामना करना पडा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी सयोग जुडते गए जिससे मैं यह ऐतिहासिक एव महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने मे सफल हुआ हू। भविष्य मे भी अपने सभी सहयोगियो मे यही अपेक्षा रखता हूँ कि हम उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एव रामयशोरसायन रास के प्रकाशन के सबसे बडे प्रेरणा-श्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एव मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। अपने कार्यकर्ताओ की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय से निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य मे लगे है।

बिहार सरकार एव भारत सरकार के शिक्षा विभाग एव सस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एव आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एव निदेशक सग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी सबधित

अधिकारियों के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेंगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रर्थों के प्रकाशन में उनका सहयोग देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य मे भी हमे प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, सपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आंगल भाषा में लिखी है। बिहार म्यूजियम के विद्वान एव कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, सस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसस्थान, आरा ने आवश्यकता पडने पर हमें इस प्रकाशन के सम्बन्ध मे बराबर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोंही जाने माने विद्वानों का आभार मानते हैं।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का सपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे सस्थान में मानद शोधा-कारी के रूप मे भी कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनों खण्डो के सकलन के सपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा मे एक हजार ग्रथो की ग्यारह कालमो मे विस्तृत सूची तथा प्राकृत एवं सस्कृत आदि भाषाओं मे परिशिष्ट के रूप मे सभी ग्रथो के आरम्भ की तथा अत के पदो का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद वर्मा ने पुस्तक के अत मे 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारो एव टीकाकारों की नामावली और उनके ग्रन्थो की क्रम सख्या का सकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थों का रखरखाव होता है। प्रस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक सभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगो से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

अजय कुमार जैन

मंत्री

श्री देवकुमार जैन ओरिएन्टल लाईब्रेरी

देवाश्रम,

आरा

ABBREVIATION

V S.	—	Vikrama Samvata
D.	—	Devanāgarī
Stk	—	Sanskrit
Pkt	—	Prakrit
Apb,	—	Apabhraṁśa
C	—	Complete
Inc.	—	Incomplete

Catg of Skt Ms – Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg by Lewis Rice M R. A. S,, Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg of Skt & Pkt Ms – Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar by Rai Bahadur Hiralal B A Nagpur, 1926

(१)	आ॰ सू॰	आमेर सूची—डा॰ कस्तूरचन्द, कासलीवाल ।
(२)	जि॰ र॰ को॰	जिनरत्नकोश –डा॰ वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना ।
(३)	जै॰ ग्र॰ प्र॰ स॰	जैन ग्रन्थ प्रशस्ति सग्रह—प॰ जुगलकिशोर मुख्तार ।
(४)	दि॰ जि॰ ग्र॰ र॰	दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।
(५)	प्र॰ जै॰ सा॰	प्रकाशित जैन साहित्य—डा॰ पन्नालाल अग्रवाल ।
(६)	प्र॰ स॰	प्रशस्ति सग्रह – डा॰ कस्तूरचन्द कासलीवाल ।
(७)	भ स॰	भट्टारक सम्प्रदाय -विद्याधर जोहरापुरकर ।
(८)	रा॰ सू॰	राजस्थान के शास्त्र भडारो की सूची—डा॰ कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि॰ जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान) ।

समर्पण

देवाश्रम परिवार में
पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,
राजर्षि बाबू देवकुमार जी,
ब्र० पं० चन्दा माँश्री,
और
बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी
यशस्वी तथा गुणीजन हुए है।
उन सभी को पावन
स्मृति को यह
श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली
सादर समर्पित है।

देवाश्रम आरा — *सुबोधकुमार जैन*
१४-३-८७

INTRODUCTION
(VOL—I)

I have great pleasure in introducing *Śrī Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvalī* – a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhānta Bhavan, Arrah The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b* Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz 1 Serial number, 2 Library accession or collection number, 3 Titleof the work 4 Name of the author, 5 Name of the commentator 6 Material, 7 Script and language, 8 Size and number of folio, lines per page and letters per line. 9 Extent, 10 Condition and age, 11 Additional particulars These details provide adequate informations about the MSS For instance thirteen MSS of *Dravyasaṁgraha* have been recorded (S Nos 213 to 224) It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators Each Ms preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number Its justification could be observed in the details provided

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry Each Ms has different size and number of folios Lines per page and letters per line are also different All are complete and in good condition. Only one Ms (216) is a Hindi verson in poetry by some unknown

writer and is incomplete Two MSS (218, 222) are with exposition in *Bhāṣā* (Hindi) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in Bhāṣā poetry by Bhagavatidas. Ms No. 223 dated 1721 v. s., is with Sanskrit commentary in Prose Ms No 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda These details could be seen at a glance as they are presented scientifically.

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads : –

1	Purāna, Carita, Kathā	1 to 155
2	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3	Nyāyaśāstra	454 to 480
4	Vyākarana	481 to 492
5	Kośa	493 to 501
6.	Rasa chanda, Alankāra & Kāvya	502 to 531
7	Jyotiṣa	532 to 550
8	Mantra Karmakānda	551 to 588
9	Āyurveda	589 to 600
10.	Stotra	601 to 800
11	Pūjā, Pāṭha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512)

The Second Part of the volume is entitled as *Pariśiṣṭa* or Appendix This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part. Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgari* script The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt The cross references of more than ten other works deserve special mention. Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour-

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations. A few of them are noted below :—

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparīkṣā* (295) which deals with Gemeology. The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna śāstra* by Buddhabhatt. Similarly, *Nītivākyāmṛtam* (511 512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent.). *Trepanakriyākośa* (498, 499) is not a work on Lexicon It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra* These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him.

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṁsā* contain *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṁsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṁsābhāṣya* of Akalaṅka (457). These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasrī Aṣṭaśatī* and *Devāgamavṛtti* Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions

(3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been cop ed, have been given These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parential Ms is very important. If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same. It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on. It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms. The difference of alphabets in different languages is obvious. Thus the reference of parential Ms is of great importance (373)

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannada* scripts (7, 318, 373) whereas some in Northen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi

(5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana Arrah itself MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars

(6) The study of colophon reveals many more important references of *Saṁghs, Ganas, Gacchas, Bhaṭṭārakas* and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics copying the Ms for personal study—*svādhyāya*, and getting the work prepared for his son or relative etc Such references denote the continuity of religious practice of *śāstradāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvakas* and desciples of *Bhaṭṭārakas* or other ascetics

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *ślokas*, or *gāthās* have been given as *granthaparimāna* at the end of the MSS This reference is very important from the point of the extent of the Text Many times the author himself indicates the *granthaparimāna* Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each) The *Āptamīmāṁsā Bhāṣya* of Akalanka is more popularly known as *Aṣṭaśati* and *Āptamīmāṁsālaṁkṛti* of Vidyānanda is famous as *Aṣṭasahasri* Both works are the commentaries on the *Āptamimāṁsā* (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyananda himself says about his work.—

"*Śrotavy—aṣtasahasri śrutaih kimanyaih sahasrasamkhyānaih*"

Counting in the form of ślokas seems a later development When the teachings of Vardhamāna Mahāvira were reduced to writing counting was done in the form of *Padas* For instance the *Āyāramga* is said to contain eighteen thousand *Padas*

" Ṇyāraṁgamatthāraha—pada - sahassehi "

(Dhavalā p. 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio cultural importance as well The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS The remuneration of writing was decided per hundred words For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly *contributes to the advancement of oriental learning* With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India However the copying work was done on the spot if the Ms was not lent by the owner or otherwise was not transferable The earliest Śauraseni Prakrit *Siddhānta Śāstra Saṭkhandāgama*

with its famous commentaries *Davalā, Jayadavalā*, and *Mahādavlā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannaḍa* scripts, preserved in the *Siddhānta Basadi* of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of Śrī *Syādvāda Mahāvidyālaya* A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof Heraman Jacobi of Germany, Prof Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915. Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal

The other activity of the publication of *Biblothica Jainica—The Sacred Books of the Jainas* began with the publication of *Dravya Samgraha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra, Gommatasāra, Ātmānuśāsana* and *Purusārtha Siddhyupāya* were published Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objectiveto bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular The palm leaf MSS in *Kannada* scripts or rendered into *Devanāgari* on paper are valuable assets of the collection It is undoubtedly accepted that a manuscipt is more valuable than an icon or Architectural set-up An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice. A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, because the *Jina*, *Jinavāni* and *Jinaguru* were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras*. During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A.D.) and Aurangzeb (1661-1669 A.D.) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places were choosen for the purpose A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsis emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śāstra Bhandāras*. As a result, many MSS collections came up all over India The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Rajasthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras* One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāna* and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties This resulted into two unwanted developments viz 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessiblity Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars The story of the *Siddhānta Śāstra Satkhan lāgama* is now well known It is only one example

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries. This continued during the first quarter of 20th century. In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world Almost all the eminent Joinologist of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, *Jinaratnakośa* by Velankar deserves special mention It is quite a different type of reference work relating to MSS Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kannadaprāntiya Tādapatriya Grantha* Sūchī in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr Kastoor Chand Kasliwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji Jaipnr also deserve mention L D Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dilli Jina-Grantha-Ratnāvāli* published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University

In the above range of catalogues, the present volume of *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a valuable addition As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight His associates also deserve applause for their due assistance I also thank my esteem friend Dr Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible

Dr Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jainägam, Sampurnanand
Sanskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश मे विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान में इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एव विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बडा मगमरमर का हॉल है, जिसमे सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थो का सग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान मे श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घा' है। इस कला दीर्घा मे शताधिक दुर्लभ हस्तनिर्मित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एव अन्य पुरातत्व सामग्री प्रदर्शित है। यहीं ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा मे श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १९०३ मे भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होने स्थानीय जैन पचायत की एक सभा मे बाबू देवकुमार जी द्वारा सगृहीत उनके पितामह प० प्रभुदास जी के ग्रन्थ सग्रह के दर्शन किये तथा उन्हे स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एव सस्कृति के प्रेमी थे, उन्होने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वहीं कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेंट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के सवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ मे दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमे विभिन्न नगरो एव गांवो मे सभाओ का आयोजन करके जैन सस्कृति की सरक्षा एव समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गावो और नगरो से हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानों पर शास्त्रभडारो को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एव निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाडियो पर हुआ करती थी। किन्तु काल की गति को कौन जानता है? १९०८ ई० मे ३१ वर्ष की अल्पायु मे ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिससे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धात भन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोड़ीचन्द्र ने भवन का कार्य सभाला और उन्होने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तो की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थों का सग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस मे बडे पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियो और सभाओ का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न सग्रह को देखकर डा० हर्मन जैकोबी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होने बाबू देवकुमार की स्मृति मे प्रशस्तियाँ लिखी एव भवन की सुरक्षा एव समृद्धि की प्रेरणाएँ दी।

सन् १६१६ मे स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मलकुमार जी भवन के मन्त्री निर्वाचित हुए। मन्त्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य-कलापो मे गति भर दी। १६२४ मई में जैन सिद्धात भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष में भव्य एव विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १६२६ मे श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धात भवन ग्रन्थागार को नये भवन मे प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होने अपने कार्यकाल मे ग्रन्थागार मे प्रचुर मात्रा मे हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रथो का सग्रह किया।

जैन सिद्धात भवन आरा मे प्राचीन ग्रथो की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थो को बाहर के ग्रन्थागारो मे मगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने सग्रह मे रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थो की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने सग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थो की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थो मे प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एव इन्दौर भेजे गये हैं।

सन् १६४६ मे बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मन्त्री चुने गये। ग्यारह वर्षों तक उन्होने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १६५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मन्त्री पद का भार दिया गया जिसे वे अभी तक पूरी लगन एव जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे है। बाबू सुबोधकुमार जैन भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढप्रतिज्ञ है। इनके कार्यकाल मे भवन के क्रिया-कलापो मे कई नये अध्याय जुड गये है, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एव कृतित्व दोनो उभर-कर सामने आये है।

जैन सिद्धात भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धान्त भास्कर एव जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १६१३ मे हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषयिक, हिन्दी-अग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका मे जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एव पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओ के लेख प्रकाशित होते हैं। शोध-पत्रिका अपनी उच्चकोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर मे सुविख्यात है। इसके अक जून और दिसम्बर मे प्रकट होते हैं।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान है। इसमें प्राकृत और जैनविद्या की विभिन्न विधाओं पर शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। संस्थान मे शोध सामग्री प्रचुर मात्रा मे भरी पडी है। संस्थान सन् १९७२ ई० से मगध विश्वविद्यालय, बोध गया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान मे इसके मानद् निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत-सस्कृत विभाग, हर-प्रसाद दास जैन कॉलेज (मगध वि. वि) आरा हैं। इस समय संस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं तथा अनेक पी. एच, डी की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

इस सस्था द्वारा अबतक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं। इस सस्था के हस्तलिखित ग्रन्थो के सूचीकरण कार्य मे यह दूसरा उपहार 'जैन सिद्धान्त भवन ग्रथावली, का द्वितीय भाग है। इसमें सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रस एव हिन्दी भाषाओ के १०२३ ग्रथो की विवरणात्मक सूची प्रकाशित है। ग्रथ को प्रथम भाग की तरह दो खडो मे विभक्त किया गया है। प्रथम खड मे पाण्डुलिपियो का विवरण रोमन लिपि मे दिया गया है। दूसरे खण्ड म परिशिष्ट शीर्षक से ग्रन्थो के प्रारम्भिक अश, अन्तिम अश तथा प्रशस्तियाँ दी गई है। सूची मे आधुनिक पद्धति से ग्रन्थो का विवरण व्यवस्थित किया गया है। विवरण निम्न ग्यारह शीर्षको मे प्रस्तुत है—

(१) क्रम सख्या। (२) ग्रन्थ सख्या। (३) ग्रन्थ का नाम। (४) लेखक का का नाम। (५) टीकाकार का नाम। (६) कागज या ताडपत्र। (७) लिपि और भाषा। (८) आकर सें मी -मे, पत्रसख्या, प्रत्येक पत्र की पक्ति सख्या एव प्रत्येक पक्ति की अक्षर सख्या। (९) पूर्ण-अपूर्ण। (१०) स्थिति तथा समय (११) विशेष जानकारी यदि कोई है।

ग्रन्थावली को सामान्य रूप से विषय वार निम्नलिखित शीर्षको के अन्तर्गत विभक्त किया गया है—

(१) पुराण-चरित-कथा।

(२) धर्म दर्शन-आचार।

(३) रस छन्द अलकार काव्य।

(४) मन्त्र-कर्मकाण्ड।

(५) आयुर्वेद।

(६) स्तोत्र, (७) पूजा-पाठ विधान।

अनेक ऐसे भी ग्रन्थ है, जिनका विषय निर्धारण बिना आद्योपान्त अध्ययन के सम्भव नहीं हो सकता है, उन ग्रन्थो को भी इन्हीं शीर्षको के अन्तर्गत व्यवस्थित किया गया है।

क्र० ९९८ से १०६८ के बीच लगभग पचास ऐसे ग्रन्थ हैं जो पूजा से-सम्बन्ध रखते हैं, क्योंकि वास्तव में यह प्रायः व्रत-कथाएँ हैं। ऐसी कथाओं मे पूजा-अर्चना की प्रधानता होती है। इसी के साथ कथा कही जाती है, जिससे जनसामान्य धर्म से प्रभावित होकर आत्मोन्नति की ओर प्रवृत्त होता है। क्योंकि बाल-बुद्धि लोगों के प्रतिबोध के लिए कहानी ही सबसे अधिक उपयोगी एव सरल विधा है ।

प्रस्तुत सूची में तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसग्रह, भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, विषापहार स्तोत्र, सिद्धपूजा आदि की प्रतियाँ बहुसख्यक हैं। क्रम सख्या १३६१ से २०२० तक स्तोत्र एव पूजा-विधान के ही ग्रथ हैं। एक विषय के इतने अधिक ग्रन्थो का एक साथ सग्रह होना, अपने आपमें महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद के शार्ङ्गधरतिलक सटीक, वैद्यमनोत्सव, योगचिन्तामणि, वैद्यभूषण प्रभृति ग्रथो की पाण्डुलिपियाँ विशेष महत्व की तथा प्राचीन भी हैं।

अन्य ग्रथागारो मे उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियो के सन्दर्भ यथास्थान दिये गये हैं। इनमे जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली भाग—१ के भी सन्दर्भ दिये गये हैं। यह सन्दर्भ प्रतियो के खोजने मे सहयोगी होगे। इससे यह भी ज्ञात होता है कि देशभर के अनेक शास्त्रभण्डारो, मदिरो तथा सस्थानो मे हस्तलिखित ग्रन्थो की भरमार है। जो अभी तक अप्रकाशित पडे हुए हैं। उन्हे प्रकाश मे लाने की दिशा मे जो प्रयत्न हो रहे हैं, वे पर्याप्त नही है। विद्वानो, अनुसन्धाताओ, तथा सम्बद्ध सस्थाओ को इसे एक आन्दोलन के रूप आगे बढाने का उपाय करना चाहिए।

ग्रन्थावली के इस भाग को तैयार करने मे डा० गोकुलचद्र जैन, वाराणसी, श्री सुबोधकुमार जैन श्री अजयकुमार जैन आदि व्यक्तियो का महत्वपूर्ण निर्देशन रहा है। उक्त सभी का हृदय से आभारी हूँ। आशा है भविष्य मे भी सबका निर्देशन एव सहयोग आशीष पूर्वक प्राप्त होता रहेगा। ग्रथावली के सम्पादन, सयोजन मे जो त्रुटियाँ हुई हैं, उनके लिए विद्वज्जन क्षमा करेगे।

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार
शोधाधिकारी,
देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान
आरा (बिहार)

INTRODUCTION TO SECOND VOLUME

In continuation to my introduction to first volume of *Śrī Jaina Sidhānta Bhavana Granthāvali*, I have great pleasure in introducing the Second Volume of the same series Like the First Volume the Second Volume contains descriptions of more than One Thousand Sanskrit, Prakrit, Aprabhraṁśa and Hindi Manuscripts preserved in *Shri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah* It has been prepared strictly according to the Scientific Methodology adopted in First Volume In the introduction to First Volume, I have discussed in detail various points related to the Catalogue in general and *Śrī Jaina Sidhānta Bhavana Granthāvali* in particular.

The Second Volume is also divided into two parts In the first part descriptions of manuscripts have been given, and in the second part the text of the opening and closing portions of MSS along with Colophons have been recorded in Devanāgarī scripts The MSS have been classified under some general heads like Purāna–Carita–Kathā, Dharma–Darśana–Ācāra etc This classification helps a common reader Those who want to go into details, they should have a keen eye on the contents while looking on the titles. The MSS recorded under the head of *Kathā* (nos 998 to 1026) are the part of *Ācāra* or *Pūja–Vidhāna* and not related with the narrative literature in its strict sense

The manuscripts recorded in the present volume have their own importance By publication of this volume they have became accessable to scholars, and now could be best adjudged when utilized for study or critical editions, Here I would like to draw the attention on certain points which seems to me significant to this volume

It has been generally observed by scholars and religious critics that due importance to *Bhakti* and *Karmakāṇḍa* (rituals) have not been given in Jaina religion A large number of MSS recorded in the present volume are related to various type of rituals, devotional songs-*Stotra-Stuti-Pūjā Pāṭha, Pratisthā* etc and other related matters The number and variety of MSS clearly testify that *Bahkti and Karmakāṇḍa* occupy an important position in Jaina Tradition. It is true that according to Jainism *Bhakti* and *Kriyākāḍa* alone can not lead to liberation or *Mokṣa*.

In this volume seven more MSS of Dravyasaṁgraha have been recorded. It shows the popularity of the treatise. All the MSS related to it should be taken into consideration while undertaking a critical study of the Text.

Some important Prakrit and Apabhraṁśa MSS like Samayasāra (1165–1168), Pravacanasāra (1158–1161), Saṭpāhuḍa (1172–1173), Kārtikeyānuprekṣā (1133) Paramātmaprakāśa (1154, 1155) have also been recorded in this volume

Seventeen MSS relating to Indian medicine i e *Āyurveda* have been mentioned some of which like Aṣṭāngahṛdaya of Vāgbhata (1344), Śārangadhara-saṁhitā (1356) o Śāradātilaka (1355), Madanavinoda (1349) deserve special mention

A good number of MSS is related to stotra *literature* Some of them are close to *tantra* It is true that Tantrism could not be developed in Jainism like some other schools of Indian religions, still some trends can be seen in the works like *Padmāvatīkalpa*, *Jvālāmālinīkalpa*, *Sarasvatīkalpa* etc

In the end I like to thank the editors and publishers for bringing the Second Volume with in a short time after the publication of first volume I do hope that the same enthusiasm will continue in preparing and publication of other volumes of the Catalogue

—Dr Gokul Chandra Jain

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY,

JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH (BIHAR)

S. No.	Library accession or Collection No. if any	Title of Work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
998	Nga/48/15/4	Ananta-Caudaśa-Kathā	Jnānasāgara	—
999	Nga/47/4/43	,, ,, ,,	—	—
1000	Ta/42/50	Ananta-Vrata-Kathā	—	—
1001	Nga/47/4/54	Anantanāth-Kathā	—	—
1002	Nga/411 Jha/	Aṣṭānhikā Kathā	Jnānasāgara	—
1003	Nga/48/15/6	,, ,	—	—
1004	Nga/47/4/64	Aṭhāī ,,	Bhairondāsa	—
1005	Nga/47/4/47	Ādityavāra ,,	—	—
1006	Nga/40/1	,, ,	—	—
1007	Nga/41/Ga	,, ,,	—	—
1008	Nga/47/4/48	,, ,	—	—

Mat. or Subt.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per page & No. of letters per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	17 5×13 5 7 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 3 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	20 0×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 11 16 18	C	Old	
P	D; H Poetry	14 2×9 0 22 9 22	C	Old	
P	D, H. Poetry	14 5×11.0 3 13 16	C	Good	
P.	D, H, Poetry	20 6×18.0 3.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1009	Nga/48/25	Ādityavāra Kathā	—	—
1010	Ta/42/45	Ākāśa-Pañcamī Kathā	Jnānasāgar	—
1011	Nga/41 Ta	,, ,, ,,	—	—
1012	Ta/12/1	Bhaviṣyādatta Kathā	—	—
1013	Nga/40/7	Canda Kathā	Rajācanda	—
1014	Ng/41 (Gha)	Caturdaśī Kathā	Jnānasāgara	—
1015	Nga/40/2	Caturavacanoccārinī Kathā	—	—
1016	Ta/26/1	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
1017	Nga/47/4/63	Daśa-Lākṣnī Kathā	—	—
1018	Nga/47/4/68	,, ,, ,,	Bhairondāsa	—
1019	Nga/41/Cha	,, ,, ,,	Jnānasāgara	—
1020	Nga/48/15/3	,, ,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. poetry	23 0×16 7 8 12 29	C	Good	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 9 13 16	C	Od	
P	D, H Poetry	24 2×16 0 68 10 30	C	Good 1948 V S	
P	D, H Poetry	14 2×9 0 31 9 22	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 8 13 16	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 11 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	2o 3×17 5 38 14 21	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	20 6×18 0 8 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 8 13 16	C	Old	
P.	D, H, Poetry	17 5×13 5 7 14.18	C	Good	

1	2	3	4	5
1021	Ta/42/52	Dasa-lākṣaṇī vrata-Kathā	Jnānasāgara	—
1022	Nga/44/16/1	,, , ,, ,,	—	—
1023	Ta/27/1	Darśana-Kathā	Bhārāmalla	—
1024	Nga/40/4	Dhama-pāpa-buddhi Kathā	—	—
1025	Ja/60	Dhūpa-daśamı Kathā	—	—
1026	Nga/47/4/79	Dudhārasa-vrata ,	—	—
1027	Ja/53	Hari-vamsa Purāna	—	—
1028	Ja/27/1	,, ,, ,,	—	—
1029	Jha/10/3	,, ,, ,,	—	—
1030	Ja/59	Jambū-caritra	—	—
1031	Nga/46/8	Labdhi-vidhāna Kathā	—	—
1032	Ja/6/1	Mahāvira-Purāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poet y	13 0×10 3 5 9 10	Inc	Old	There are so many opening pages are not available
P	D, H Poetry	19 7×16.5 48 14 21	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 14 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	24 5×10 5 5 8 28	Inc	Good	Its three to twelve pages aae lost
P	D, H Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P	D, Skt / H Poetry	27 9×17 3 149 14 40	C	Good	
P	D, Skt / H Prose/ Poetry	21 5×14 4 41 15 38	Inc	Old	The heading of this book his clouvayed
P	D, H Prose	26 8×10 5 8 12 37	Inc	Old	It has no opening and clysing.
P	D, H Poetry	29 4×14 1 22 13 38	C	Good 1933 V S	Rajyakumāra canda seems to be copiar
P.	D, H Poetry	19 0×17 0 5 15 22	C	Old	
P.	D, H Poetry	30 2×15 0 85 12 49	Inc		Opening pages are missing

1	2	3	4	5
1033	Nga/37/9	Nemi-nātha-Vivāha	Vinajilāla	—
1034	Nga/47/4/62	Niskāṅkṣita-guna Kathā	—	—
1035	Ta/42/46	Niśśalyāṣṭami ,,	Jnānasamudra	—
1036	Nga/41/Jha	Nirdoṣa-saptami ,,	Jnānasāgara	—
1037	Nga/48,15/8	Pancami ,,	Surendra-Bhūṣana	—
1038	Ja/11	Parśva-purāna	Lālā Candulāla	—
1039	Ja/10	,, ,,	—	—
1040	Nga/41/Cha	Ratnatraya Kathā	—	—
1041	Ta/42/51	,, ,	Jnānasāgara	—
1042	Nga/84/15/5	Ratnatraya-vrata Kathā	,,	—
1043	Nga/44/16/2	,, ,, ,,	—	—
1044	Ta/42/44	Ravivrata ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	22 0×13 0 6 15 13	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	P, H Poetry	17 5×13 5 10 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	28 0×13 0 144 13 27	C	Good	
P	D, H Poetry	29 0×14 0 11 12 28	Inc	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19.0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 5 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	13 0×10 2 11 9 10	Inc	Old	
P.	D, H Poetry	32.3×19.0 4 33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1045	Nga/48/15/1	Ravi-vrata Kathā	—	—
1046	Ja/34/1	,, ,, ,,	Bhanukirti	—
1047	Ta/26/2	Rātri Bhojana-tyāga Kathā	Bhārāmalla	—
1048	Ta/42/54	Rohiṇī Kathā	—	—
1049	Nga/48/15/7	,, ,,	—	—
1050	Nga/41/ṭha	Rohiṇī-vrata Kathā	—	—
1051	Ja/62	Roṭa-tīja ,,	Dyānatarāya	—
1052	Ta/42/56	,, ,,	—	—
1053	Nga/46/9/1	,, ,,	—	—
1054	Nga/46/9/2	,, ,,	—	—
1055	Nga/41	Salūnā ,,	Vinodilāla	—
1056	Nga/46/3	Śīla-Kathā	Malla-sena ?	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P	D, H Prose/ Poetry	19 0×14 9 8 11 15	C	Old	
P	D, H Poetry	20 3×17 5 33 14 21	C	Good	
P	D, H / Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 9 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 9 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	22 3×13 0 9 8 23	C	Good	
P	D, H Prose	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; H Prose	18 8×17 6 2 17 23	C		
P	D, H Poetry	18 8×17 6 3 14 17	C		
P	D, H, Poetry	14 5×11 0 19 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	25 6×16 6 27 13 36	C	Old	

1	2	3	4	5
1057	Ta,28/2	Śila-vrata Kathā	Bhārāmalla	—
1058	Nga/40/3	Śilavati ,,	—	—
1059	Nga/41/Ja	Solahakārana Kathā	Jnānasāgara	—
1060	Nga/46/6	,, ,,	,,	—
1061	Nga/48/15/2	Ṣodaśa-kārana ,,	,,	—
1062	Ta/42/48	Ṣravana-dwādaśi ,,	,,	—
1063	Nga/45/1	Saipāla-Caritra	Jivarāja	—
1064	Nga/45/12	,, ,,	—	—
1065	Ta/42/47	Sugandha-daśami Kathā	Jnānasagara	—
1066	Nga/48/15/9	,, ,, ,,	—	—
1067	Nga/47/4/78	,, ,, ,,	—	—
1068	Nga/41	Sugandhadaśami ,,	Jnānasāgara	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	19 8×17 2 45 14 23	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 50 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 5 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	23 2×15 0 4 16 15	C	Old	
P	D; H Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Prose	24 7×11 2 40 13 37	C	Good	
P,	D, H Poetry	24 5×11 3 38 15 35	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.6×18 0 4 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	14 5×11 0 5.13 16	C	Old	

1	2	3	4	5
1069	Nga/40/5	Swarūpa-sena Kathā	—	—
1070	Ta/14/35	Vira Jin nda	—	—
1071	Ja/34/5	Viṣnu Kumā a ,,	Vinodilāla	—
1072	Ta/11/1	Arihat -Kevali	Rāma-gopālā	—
1073	Ta/6,9	Ārādhanāsāra	—	—
1074	Nga/38/10	Ārādhanā-pratibodha	—	—
1075	Ja/1	Attha Prakāṣikā	—	—
1076	Ta/9/1	Ātmānusāsana	Guna-bhadra	—
1077	Ja/38	Banārasi-Vilāsa	Banarasidāsa	—
1078	Nga/47/4/67	Bāraha-bhāvanā	—	—
1079	Nga/47/15/6	,, ,,	—	—
1080	Ta/6/18	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt prose	14 ˈ×9 0 32 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	15 2×12 8 3 11 15	C	Old	
P	D, H Poetry	19 0×14 0 19 15 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 7 29 9 15	C	Good 1917 V S	
P	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 8 18 15	C	Old	
P	D, H Poetry	15 7×9 0 7 9 22	C	Good	
P	D, H Prose	33 4×18 9 411 13 33	C	Good	The opening pages are damaged
P	D, Skt Prose	19 o×14 5 37 15 13	C	Old 1928 V S	
P	D, H Poetry	22.0×13 1 107 12 31	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	16 5×16 0 2.12 19	C	Old	
P.	D, H, Poetry	22 2×14 7 1.20.17	C	Old	

1	2	3	4	5
1081	Nga/44/13/7	Bisa Tirthaṅkaranāmāvali	—	—
1082	Ja/15	Brahma-Vilāsa	Bhagavatidāsa	—
1083	Nga/45/7	,, ,,	,,	—
1084	Ta/42/3	Caitya-Vandanā	—	—
1085	Ta/14/3	,, ,,	—	—
1086	Nga/45/10	Cāturmāsa Vyākhyā	—	—
1087	Ja/40	Caudaha-guna-sthāna	—	—
1088	Ja/45/3	,, ,, ,,	—	—
1089	Ja/51/21	Catvāri-daṇḍaka	—	—
1090	Ta/14/42	Caubisa ,,	Daulata-rāma	—
1091	Ja/65/1	,, ,,	,,	—
1092	Ja/23/1	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	32 5×8 5 3 6 13	C	Old	
P	D, H Poetry	25 0×12 0 170 11 34	C	Good	
P	D; H Poetry	26 8×13 9 168 11 33	C	Old 1967 V S	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 30 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 3 13 18	C	O'd	
P	D, Skt Prose/ Poetry	24 7×11 3 72 13 38	C	Old	
P	D, H Prose	22 0×13 5 63 12 27	C	Old	
P	D, H Prose	15 0×11 3 8 10 19	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	32 3×20 1 1 13 35	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 2×12 8 6 12 20	C	Good	Other subjects are also written in last pages.
P.	D; H. Poetry	11 5×10 0 10 10.14	C	Good	
P.	D; H. Prose	22.4×14.2 18.17 18	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1093	Ja,45/2	Caubisa ṭhāṇā	—	—
1094	Ja/41	Carcā-Saṅgraha	—	—
1095	Ja/8	Carcā-Samādhāna	Bhūdharadāsa	—
1096	Ja/30	,, ,,	—	—
1097	Nga/45/11	Daśāskandha	—	—
1098	Ja/35/6	Dāna-Vāvanī	Dyānatarāya	—
1099	Ja/16/6	,, ,,	,,	—
1100	Nga/37/4	Dāna-śila-tapa-bhāvanā	—	—
1101	Nga/30/2/1	Devagaman	Samantabhadra	—
1102	Ja/41/1	Digambara āmnāya	—	—
1103	Ja/12	Dharma-grantha	—	—
1104	Ja/25	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	15 0×11.3 5 10 20	C	Old	
P	D, H. Poetry	21 2×13 6 148 11 33	C	Old	
P.	D, H Poetry	29 7×14 0 83 11 44	C	Good 1893 V S	
P	D, H Poetry	20 8×14 2 157 16 17	C	Good	
P	D, Pkt Prose/ Poetry	23 4×10 3 42 13 40	C	Old 1735 V S	
P	D, H Poetry	18 3×11 5 10 16 15	C	Good	
P	D, H Poetry	23 3×19 0 10 15 18	C	Good	
P	D; H Poetry	20 3×11 5 13 9 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 0×14 8 14 9 26	C	Old	
P	D; H. Prose	21 2×13 6 2 11 30	C	Old	
P.	D, H. Poetry	12 9×27 4 230 9 19	C	Old	
P.	D; H Prose/ Poetry	22 0×14 4 110 20 14	Inc	Old	Its opening 48 pages and last page are missing.

1	2	3	4	5
1105	Nga/44/8	Dharmāmṛtasāra	—	—
1106	Nga/44/13/4	Dharmāṣṭaka	—	—
1107	Ja/9	Dharma-parīkṣā	Manohara	—
1108	Ja/14	Dharmaratna	—	—
1109	Ja/13	" " grantha	—	—
1110	Ja/35/8	Dharma-rahasya	Dyānatarāya	—
1111	Nga/30/1	Dharmasāra Satasai	Śiromaṇidāsa	—
1112	Ta/61/14	Dravya-Sangraha	Nemicanda	—
1113	Nga/30/2/2	" "	"	—
1114	Ta/37	" "	—	—
1115	Ta/4/1	" "	Nemicanda	—
1116	Ta/6/1	" "	"	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	21.0×16 5 60 15.21	C	Good	
P	D, H. Poetry	13.5×8 5 4 6 13		Old	
P.	D, H. Poetry	29.8×15 0 181 12 48	C	Good	
P	D; H. Poetry	26 9×13.2 181 9.24	C	Good	
P	P; H Poetry	26 6×14.0 206 9 24	C	Good	
P	D, H Poetry	18.3×11 5 10 16 15	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×14 3 75 13 22	C	Good 1832 V S	
P	D, Pkt. Poetry	22 2×14 7 10 23 15	C	Old	
P	D; H Poetry	19.0×14.8 5 9 26	C	Old	
P	D,H /Skt. Poetry	16 0×12 0 41 10.16	C	Old	Starting three pages are missing so it has opening
P.	D,H /Pkt. Prose	23.2×19 5 20 13.32	C	Old 1871 V S.	
P.	D;Pkt./H. Poetry/ Prose	22.2×14 7 49 18 20	C	Old	

1	2	3	4	5
1117	Ja/23	Dravya-Saṁgraha	Nemicandra	—
1118	Nga/16/2	,, ,,	,,	—
1119	Ta//14/33	Dvādaśānuprekṣā	—	—
1120	Ja/51/19	Eryā-patha Sāmāyika	—	—
1121	Nga/38/13	Gati-Lakṣana	—	—
1122	Ja/49	Gommata-sāra	Nemicandra	—
1123	Ta/3/46	Gyāna kē aṭh anga	—	—
1124	Nga/28/1	Hanavanta anuprēkṣā	Pandita Bacharāja	—
1125	Nga/48/11/5	Jina-gāyatri trikāla-sandhyā	—	—
1126	Ta/24/3	Jina-guna-sampatti	—	—
1127	Ja/65/7	Jina-mahimā	—	—
1128	Nga/47/4/77	Jēva-rāsi-kṣamā-vanī	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt./ H Prose/ Poetry	22 4×14 2 19 17 15	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	13 0×15.0 6 11 21	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 2×12 8 4 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 0 2 9 22	C	Good	
P	D, H Prose	36 5×18 7 454 11 38	C	Good	
P	D, Pkt / H Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Good	
P,	D, Pkt Poetry	14 6×14 1 7 14 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	16 5×13 2 0 10 13	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	30.2×20 0 3 37 33	C	Old	
P	D, H Poetry	11.5×10 0 4 10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1129	Nga/40/6	Jnāna-pacisi	Banarasidāsa	—
1130	Ja/23/4	Jnānāmava-Vacanika	Śubhacandra	—
1131	Nga/16/3	Karma-prakṛti-granthā	Nemicandra	—
1132	Ta/17/1	Karma-battisi	—	—
1133	Nga/20,2	Kāratikeyānu prekṣā	Kārtikeya	—
1134	Ja/51	Laghi-tattvārtha sūtra	—	—
1135	Ta/3/12	Laghu-sāmāyika	—	—
1136	Ta/42/80	" "	—	—
1137	Nga/38/9	Leśyā-Swarūpa	—	—
1138	Ta/4/3	Lilāvati-prakirnaka	Bhāskarācārya	—
1139	Ja/18	Mithyātva Khaṅdana	Padmasāgara	—
1140	Ja/4	Mokṣamārga	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	14.2×9.0 3 9.22	C	Old	
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	22 4×14 2 40 18 15	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	13 0×15 0 18 11 21	C	Good	
P	D, H Poetry	15 5×9 5 10 10 19	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	25 6×15 0 38 15 21	C	Good	
P	D, Skt Prose	32 3×20 1 2 13 34	C	Good	It is also named Arhat pravacana
P	D, Skt Poetry	22,5×15 0 2 12 36	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt / Pkt Poetry	15 7×9 0 2 9 22	C	Good	
P	D; Skt Pros / Poetry	19 3×13 0 167 17 16	C	Old	
P	D, H Poetry	23 9×10.8 113.9.32	C	Good	
P	D,H,/Pkt. Prose/ Poetry	32.1×15 0 224.12 50	Inc	Good	

1	2	3	4	5
1141	Ja/65/5	Mokṣa-mārga paidī	Banārasidāsa	—
1142	Ta/14/36	,, ,, ,,	,,	—
1143	Ta/6/13	Mṛtyu mahotsava	—	—
1144	Nga/16/1	Mukti Suktāvali	—	—
1145	Ta/18/11	Navakāra-māhātmya	—	—
1146	Ja/27/5	Naya cakra	Devasena	—
1147	Nga/16/5	,, ,,	,,	—
1148	Ja/41/2	,, ,, Vacanikā	Hemarāja	—
1149	Nga/28/6	,, ,, ,	Devasena	Hemarāja
1150	Nga/20/3	Nirvāna-kānda	—	—
1151	Nga/20/4	,, ,,	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1152	Ta/6/22	Panca Vimśatikā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	11 5×10 0 7.10 14	C	Good	
P	D H Poetry	15 2×12.8 5 11 15	C	Old	
P	D, Pkt Skt / Poetry	22 2×14 7 3 20 19	C	Old	
P	D, H Poetry	13 0×15 0 23 11 21	C	Good	Opening two pages are missing.
P	D, H Poetry	11 0×11 0 6 12 17	C	Old	
P	D, Skt Prose	21 5×14 4 12 19 13	C	Old	It is also called Ālāpapaddhati
P	D, Skt Prose	13 1×15 0 13 11 21	C	Good	
P	D, H, poetry	21 2×13 6 17 11 34	C	Old	
P	D, H Poetry	13.4×17 6 26 11 19	C	Good 1962	
P	D, Pkt Poetry	25 6×15 0 3 18 21	C	Good	
P.	D, H. Poetry	25 6×15 0 3 14 18	C	Good	
P.	D, Pkt, Poetry	22 2×14 7 2.20.20	C	Old	The charts of Mantra and Tantra are in its last pages.

1	2	3	4	5
1153	Ja/45/1	Panca-purmṣṭhī	—	—
1154	Ta/6/8	Parmātma-prakāśa	Yogīndradeva	—
1155	Nga/16/6	,, ,,	,,	—
1156	Ja/6/3	Parīkṣā-mukha Vacanikā	—	—
1157	Nga/^6/4	Praśna-mālā	—	—
1158	Jha/5/2	Pravacana-sāra	Candrakīrti-mahārāja ?	—
1159	Jha/10/1	Pravacanasāra	—	—
1160	Jha/10/2	,,	Hemarāja	—
1161	Ta/11/2	Prāyaścitta-grantha	Akalaṅka-swāmī	—
1162	Nga/47/4/70	Pāpa-puṇya-māhātmya	—	—
1163	Nga/47/4/69	Puṇya-māhātmya	—	—
1164	Ta/12/2	Samyyktva Koumudī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	15.0×11 3 9.10 20	C	Good	
P.	D; Apb. Poetry	22 2×14 7 25 19 13	C	Old	
P	D, Apb Poetry	13 0×15 0 29.11 21	C	Good	It is also called paramappayāsu
P	D, H Prose	30 2×15 0 1 11 37	Inc	Good	
P	D, H Prose	20 3×15 8 57 17 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 8×14 4 27 14 35	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	26 6×10 5 14 14 39	Inc	Old	
P	D, H Prose/ Poetry	26 8×10 5 28 12 47	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	145 ×11 7 6 11 18	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 9 16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	20 6×18 0 1 16 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	24.2×16.0 44.10.30	C	Good	

1	2	3	4	5
1165	Nga/39/2	Samayasāra-gāthā	—	—
1166	Ja/37	,, nāṭaka	—	—
1167	Nga/42/1	,, ,,	Banārasīdāsa	—
1168	Nga/42/2	,, ,,	,,	—
1169	Nga/16/8	Samavaśaraṇa	—	—
1170	Nga/16/7	Samudghāta	—	—
1171	Ta/11/8	Saṭdarśana	—	—
1172	Ta/6/1	Saṭpāhuda	Kundakunda	—
1173	Nga/16/4	,,	,,	—
1174	Nga/47/4/55	Satleśyābheda	—	—
1175	Ta/14/40	Sāmāyika	—	—
1176	Ta/14/15	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt / Pkt Poetry	15 7×9 0 3 9 22	Inc	Good	
P	D, H. Poetry	21 0×14 5 81 13 31	C	Old	
P	D, H Poetry	15 0×8 0 344 6 16	C	Old 1884 V S	
P	D, H Poetry	15 0×14 0 128 13 19	C	Good 1840 V S	
P	D, H Poetry	13 0×15 0 40 11 21	C	Good	
P	D, H Poetry	13 0×15 0 3 11 21	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 7 2 11 20	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 35 11 15	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	13 0×15 0 36 11 21	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, Skt, Poetry	15 2×12 8 2 12 13	C	Old	
P.	D; Pkt/ Skt Prose/ Poetry	15 2×12 8 25 11 16	C	Old	

1	2	3	4	5
1177	Ta/42/95	Sāmāyika	—	—
1178	Ja/51/20	,,	—	—
1179	Nga/19	,,	—	—
1180	Ta/26/3	Sāṣācāra	—	—
1181	Ja/45/4	Sātatattva	—	—
1182	Ja/3	Siddhāntasāra	Nathamala	—
1183	Ja/65/3	Sindūra-Prakarana (Sūktimuktavali)	Somaprabhācārya	Harṣakīrti
1184	Ta/9/3	Sindūra-Prakarana		—
1185	Nga/31/2/6	,, ,,	Somaprabhācārya	Harṣakīrti
1186	Nga/47/4/76	Śīla-Vrata	—	—
1187	Jha/5/1	Śrāvakācāra	Gumānī-Lāla	—
1188	Ta/14/14	Śrāvaka-pratikramana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt / Poetry/ Prose	32.3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 8×9 0 2 9 22	C	Good	
P	D, H Poetry	20 3×17 5 3 14 21	C	Old	
P	D, Skt Prose	15 0×11 3 7 10 20	C	Old	
P	D, H Prose	32 1×16 0 26 11 47	C	Good	
P	D; H Poetry	11.5×10 0 51 10 14	C	Good	
P,	D, Skt Poetry	19.0×14 5 19 15 13	C	Old	Pandita Paramānanda seems to be copier
P	D; H Poetry	12.3×16.0 21 15 16	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	29.8×14.4 151 12.48	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15.2×12 8 19.11.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1189	Ta/42/94	Śrāvaka-Pratikramana	—	—
1190	Nga/48/6/1	Śrāvaka-Vrata-Sandhyā	—	—
1191	Nga/48/11/4	,, ,, ,,	—	—
1192	Nga/47/4/60	,, ,, Vidhāna	—	—
1193	Nga/25/11	Śri-pāla-darśana	—	—
1194	Nga/44/19/1	,, ,, ,,	—	—
1195	Ja/6/2	Sudṛṣti Taraṅginī	—	—
1196	Ta/6/4	Tattwasāra	Devasena	—
1197	Nga/44/12/1	Tatvārtha-Sūtra	Umā Swāmi	—
1198	Nga/46/12/1	Tatvārthā-sūtra	—	—
1199	Nga/47/4/38	,, ,,	Umā Swāmi	—
1200	Nga/47/4/38	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Pkt. Poetry	32.3×19.0 4.33.21	C	Good	
P	D, Skt. Prose	15 7×9 2 8 7 18	Inc	Old	
P.	D,Skt. Poetry	16 5×13 2 6 12.16	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2.16 18	C	Old	
P	P, H Poetry	28 4×17 0 2 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	19 5×12 5 5 9 25	C	Old	
P	D, H Poetry	30 2×15 0 43 15 38	Inc	Good	
P.	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 4 21 21	C	Good	
P.	D, Skt Prose	32 3×20 2 10 23 17	Inc	Old	
P	D; Skt Prose	22 5×13 0 24.18 13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	20 6×18 0 13.16 18	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13.5×8.5 38.6 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1201	Nga/48/7	Tatvārtha-sūtra	Umāswāmi	—
1202	Ta/14/24	,, ,,	,,	—
1203	Ta/42/17	,, ,,	,,	—
1204	Nga/38/6	,, ,,	,,	—
1205	Ja/23,2	,, ,,	,,	—
1206	Ta/6/6	,, ,,	,,	—
1207	Ja/27/3	,, ,,	,,	—
1208	Nga/25/6	,, ,,	,,	—
1209	Nga/20/1	,, ,,	,,	—
1210	Nga/17/2/1	,, ,,	,,	—
1211	Nga/20/1/2	,, ,,	,,	—
1212	Ja/33/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	15 5×11.6 23 8 20	C	Old	
P	D, Skt Prose	15 2×12 8 19 11 15	C	Old	
P	D, Skt Prose	32 3×19 0 4 33 39	C	Good	
P	D, Skt Prose	15 8×9 0 4 9 22	C	Good	
P	D, H Prose/ Poetry	22 4×14.2 57 19 15	C	Old	
P	D, Skt. Prose	22 2×14 7 9 20 20	C	Good	
P	D,H /Skt Prose	21 5×14 4 56 17 13	Inc	Old	
P	D, Skt Prose	28 4×17 0 9 24 17	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 6×15 0 13 15 21	C	Good	
P.	D,Skt /H Prose	25 0×17 0 45 20 16	C	Good	
P	D; Skt. Prose	29 0×17 8 11 21 17	C	Good	
P.	D; S Prose	19 7×13 0 10 18.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1213	Ja/34/2	Tattvārtha Sūtra	Umāswāmi	—
1214	Ja/27	,, ,,	,,	—
1215	Nga/31/2/2	,, ,,	,,	—
1216	Nga/29/3	,, ,,	,,	—
1217	Ja/2	,, ,, Vacanikā	Jayacanda	—
1218	Nga/32	Trepanakriyā	—	—
1219	Ta/5/12		—	—
1220	Nga/48/26/1	Trikāla-Caturvinśati	—	—
1221	Ta/16/3	Trivarnācāra	Jinasenācārya	—
1222	Ja/5	Trilokasāra	—	—
1223	Ja/1 (Kha)	Vacanikā	—	—
1224	Ta/6/10/Ka	Vairāgya-paciśi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Prose	19 0×14 9 18 11 15	C	Old	
P.	D Skt Prose	20 2×14.5 14 15 18	C	Good 1955 V S	
P	D, Skt Prose	12 3×16 6 3 17 16	C	Good	
P	D,H /Skt Prose	13 2×21 0 71 16 13	C	Good	
P	D, H. Prose	32 2×15 3 272 12 56	Inc	Good	
P	D, H. Prose/ Poetry	25 3×15 0 175 16 18	C	Old	The language of this Mss. is not clear.
P	D, Skt Poetry	25 0×15 0 2 26 25	Inc	Old	
P	D, H poetry	17 5×13 5 3 8 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 5×9 5 28 9 16	C	Old	It has no heading or opening
P	D, H Prose	31 0×16 2 295 11 59	C	Good	Two pages are damaged.
P	D; H Prose	33 4×18 9 18 13 33	Inc	Old	
P.	D; H, Poetry	22 2×14 7 2.18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1225	Ja/27/4	Yoga	Śubhacandra	—
1226	Nga/31/2/5	Yogi-rāsā	Jinadāsa	—
1227	Nga/44/19/9	Akṣara Battisi	Bhagavatidāsa	—
1228	Nga/47/4/52	,, Vavani	—	—
1229	Nga/33/7	Anyamata Śloka	—	—
1230	Nga/47/4/44	Aṭhāi-Rāsā	Vinayakirti	—
1231	Ta/14/32	,, ,,	—	—
1232	Ta/3/49	Bāraha-māsā	Vinodilāla	—
1233	Nga/47/4/50	,, ,,	—	—
1234	Ja/40/2	Candra-śataka	—	—
1235	Nga/46/2/1	Careā-śataka	Dyānatarāya	—
1236	Nga/46/2/2	Caubola-pacisi	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Prose	21 5×14 4 50.22.16	C	Old	
P	D, H. Poetry	12.3×16 6 5 13 14	C	Good	
P	D; H Poetry	19.5×12.5 10 8 21	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 8×18 2 10 18.21	Inc	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 4 16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	15.2×12 8 4 13.18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 6 16.18	C	Old	
P	D, H Poetry	22.0×13 5 16 13 34	C	Old	
P	D; H. Poetry	27 0×17.0 12 13.28	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	

1	2	3	4	5
1237	Ja/16/7	Dasa-bola-pacisi	Dyānatarāya	—
1238	Ja/35/7	,, ,, ,,	—	—
1239	Nga/46/2/3	Daśa-thānaCaubisi	Dyānatarāya	—
1240	Ja/35/1	Dhāla-gana	—	—
1241	Ja/16/3	,, ,,	—	—
1242	Ta/6/17	Dohā	Rūpa-canda	—
1243	Ja/26	Dohāvali	—	—
1244	Ja/27/2	,,	-	—
1245	Ja/28	,,	—	—
1246	Nga/31/4/10	Dwipañcāśatikā	Banarasidāsa	—
1247	Nga/44/11	Fuṭakara-Kāvya	—	—
1248	Ta/9/2	Jnāna-Sūryodaya Nāṭaka	Vādicandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	23 3×19 0 6 15 18	C	Good	
P.	D, H Poetry	18 3×11 5 7 16 15	C	Good	
P	D, H Poetry	27 0×17 0 4 23 28	C	Good	
P	D, H Poetry	18 2×11 5 10 16 15	C	Good	
P	D, H Poetry	23 3×19 0 9 15 18	C	Good	
P	D, H. Poetry	22 2×14 7 7 18 17	C	Old	
P.	D, H Poetry	22 0×15 0 4 18 15	C	Old	
P	D, H Poetry	21 5×14 4 16 18 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	21 0×14 7 4 18 15	C	Good	
P.	D; H Poetry	15.3×12 4 13 25 20	C	Old	Opening pages are missing.
P.	D,Skt./H Prose/ Poetry	13 0×10.0 20 10.15	Inc	Old	
P.	D; Skt/ Poetry	19 0×14.5 25.15.17	C	Old 1928 V. S.	

1	2	3	4	5
1249	Ta/35/7	Jaina-rāso	—	—
1250	Ta/3/44	Jakarī	Bhūdharadāsa	—
1251	Ta/14/34	Jogī-Rāso	—	—
1252	Ta/3/55	Kavitta	—	—
1253	Ta/3/54	,,	—	—
1254	Ja/40/3	,,	Trilokacanda	—
1255	Nga/41/Ka	Kṛpana-Pacisī	—	—
1256	Ta/42/55	Māla-Pacisī	—	—
1257	Nga/44/20	Nāmamālā	Nandadāsa	—
1258	Ja/65/4	Navaratna-Kavitta	—	—
1259	Nga/31/3/9	Nemi-Candrikā	—	—
1260	Nga/41/ba	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Pkt Skt Poetry	15 5×12 0 22 10 19	Inc	Good	
P.	D, H. Poetry	22.5×15 0 2 12 31	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 2×12 8 4 14 21	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	P, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D, H. Poetry	22 0×13 5 2 12 31	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 7 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19.0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 7×11.2 26 17 16	C	Old 1806 V. S	It is also called Mānamañjarī
P	D, H Poetry	11 5×10 0 5 10 14	C	Good	
P	D; H. Poetry	18 2×13 5 168.14 16	C	Old	The mss. is damaged and very old.
P.	D; H. Poetry	14 5×11 0 6.13.16	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1261	Nga/44/10/5	Nemicandrikā	—	—
1262	Nga/37/8	Nemināthā Bārahamāsā	Vinodilāla	—
1263	Ja/16/4	,, Vivāha	,,	—
1264	Ta/3/47	,, ,,	,,	—
1265	Ja/35	,, ,,	,,	—
1266	Nga/47/4/73	Pakhavārā	Tulasī	—
1267	Ta/3/39	Paramārtha Jakarī	Śrīrāma	—
1268	Nga/46/1	Piṅgala	Śrīdhara	—
1269	Nga/47/4,51	Rājula Pacīsī	—	—
1270	Nga/44/10/4	,, ,,	Vinodilāla	—
1271	Nga/44,9/2	,, ,,	,,	—
1272	Nga/44/Pa	,, ,,	,,	—

(Rasa-Chand-Alankara; Kâvya)

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	18 5×13 1 15 13 22	C	Good	
P	D; H Poetry	13 0×22 0 6 16 12	C	Old	
P.	D, H Poetry	23 8×19 0 5 15.18	C	Good	
P	D, H. Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	18.2×11 5 6.16 14	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20.6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Old	
P,	D, H Poetry	30 0×15 8 16 10 37	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D; H Poetry	18.5×13 0 6 13 22	C	Good	
P	D, H Poetry	11.0×10.5 11 12 12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 9.13.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1273	Nga/44/19/5	Rājula Pacisi	—	—
1274	Nga/44/19 2	R sta	—	—
1275	Nga/47/4/81	,,	—	—
1276	Ja/65/8	,,	—	—
1277	Ja/40/1	Rūpacanda-Śataka	Rūpacanda	—
1278	Ja/58	Satasaiyā	Vrndāvana	—
1279	Nga/45/5	Samkitadhikāra	—	—
1280	Ta/3/2	Sammeda Śikhara Māhātmya	—	—
1281	Nga/45/8	,, ,, ,,	—	—
1282	Nga/45/6	,, ,, ,,	Lohācārya	—
1283	Ja/46	Śikhara Māhātmya	Lālacanda	—
1284	Nga/46/5/2	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	19.5×12.5 13 10 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	19.5×12 5 2 9 5	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old 1853 V S	
P	D, H Poetry	11 5×10 0 12 10 14	C	Good	
P	D, H Poetry	22 0×13 5 6 12 35	C	Old	
P	D, H Poetry	21 3×16.4 131 14 16	C	Old 1953 V S.	
P	D, H Poetry	23 5×9 0 31 20 58	C	Old 1702 V S	
P	D, H Poetry	22 3×15 0 3 9 21	Inc	Old	
P.	D, H Poetry	24 0×12 2 11 9 25	C	Good	
P	D, H Poetry	23 7×15 0 103 9 23	Inc	Old	
P	D, H. Poetry	19 3×10 6 72.10.28	C	Old 1892 V. S	All the pages are Damaged.
P.	D; H. Prose	23 1×15.1 70.18.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1285	Nga/47/4/45	Solaha-kāraṇa-rāsā	Sakalakīrti	—
1286	Ta/42/53	Śruta-pañcamī-rāsā	—	—
1287	Nga/46/5/1	Śrī-pāla-darśana	—	—
1288	Ta/10	Subhāṣitāvalī	—	—
1289	Nga/47/4/49	Bāhubalī	—	—
1290	Ta/6/15	Viveka Jakarī	Rūpa-canda	—
1291	Nga/46/2/4	Vyavahāra-pacīsī	—	—
1292	Nga/26/11	Bhaktāmara-stotra-mantra	Mānatuṅga	—
1293	Nga/26/3	,, ,,	,,	—
1294	Nga//26/9	Caubīsa tīrthaṅkara mantra	—	—
1295	Ja/51/15	Gāyatrī mantra	—	—
1296	Nga/43/3/1	Ghaṇṭā-karṇa-mantra	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	20 6×18 0 3.10.18	C	Old	
P	D; H Poetry	32.3×19.0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	23 1×15 1 2 14 14	Inc	Good	
P	D, Skt Poetry	15 0×13 0 178 6 14	C	Old	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	22.2×14 7 14 19 16	C	Old	
P	D; H Poetry	27 0×17 0 4 23.28	C	Good	
P.	D, H / Skt Prose/ Poetry	29 0×17 0 20 24 17	C	Good	Opening pages are missing.
P.	D, H / Skt Prose/ Poetry	20.0×16 4 49.13 22	C	Good	It has fourty eight mantra charts.
P	D,H /Skt Poetry	29.0×17.0 6 24 17	C	Good	
P	D; Skt. Prose	32 3×20.1 3.13 35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 1.9.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1297	Nga/43/6/7	Ghaṇṭā-karna-mantra	—	—
1298	Ta/5/6	Homa-Vidhi	—	—
1299	Nga/13,4	Jaina-gāyatri	—	—
1300	Nga/13/3	Jaina-Saṁkalpa	—	—
1301	Nga/26/7	Jinendra-stotra	—	—
1302	Nga/48/11/7	Kāmadā-Yantra	—	—
1303	Nga/48/6/3	Kriyā-kānda-mantra	—	—
1304	Nga/26/8	Mahālakṣmi-ārādhanā	—	—
1305	Ja/51/18	Mantra	—	—
1306	Ta/11/4	„	—	—
1307	Nga/43/2	„ Saṁgraha	—	—
1308	Nga/48/11/6	Mantra-Yantra	Rāmacandra	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose	17 3×13 0 2 13 12	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	25 0×15 0 7 25 18	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 3×18 3 2 20 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 3×18 3 1 21 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	16 5×13 2 2 12 16	C	Old	
P	D, Skt. poetry/ Prose	15 7×9 2 10 7 18	C	Old	It is so demage that it cannot read and write
P	D,H Skt Poetry	29 0×17 0 2 24 17	C	Good	
P.	D, Skt Prose	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	It has mantra charts also
P	D, Skt. Prose	14 5×11 7 9 11 22	C	Good	
P.	D; Skt, Prose	16.4×13 4 10 13 16	Inc	Old	
P.	D, Skt Prose	16.5×13 2 1 11 15	C	Old	

1	2	3	4	5
1309	Ta/3/51	Namokāra-mantrā	Vinodilāla	—
1310	Ta/42/84	Padmāvatī-daṇḍaka	—	—
1311	Nga/43/4/2	,, Kalpa	Malliṣena	—
1312	Nga/43/6/2	,, ,,	—	—
1313	Ta/42/85	,, Kavaca	—	—
1314	Ta/42/104	,, ,,	—	—
1315	Nga/48/11/2	,, ,,	—	—
1316	Nga/26/12	,, ,,	—	—
1317	Nga/48/6/2	,, ,,	Rāmacandra	—
1318	Ta/30/2	,, Mantra	—	—
1319	Nga/43/6/12	,, ,,	—	—
1320	Ta/42/83	,, Paṭala	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	22 5×15 0 1 12 31	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 3×14 0 11 10 20	C	Old	
P	D, Skt Prose	17 3×13 0 7 13 12	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Prose	16 5×13 2 2 12 17	C	Old	
P,	D.H /Skt Prose	29 0×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	15 7×9 2 6 7 18	C	Old	
P	D,H /Skt Poetry	20 1×15 6 3.13 20	C	Old	
P.	D, Skt Prose/ Poetry	17 3×13 0 3 13 13	C	Old	
P.	D, Skt. Prose	32 3×19 0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1321	Ta/16/6	Pandraha-yantra-vidhi	—	—
1322	Nga/26/2	Pārśwanātha-stotra-mantra	—	—
1323	Nga/43/6/4	„ „	—	—
1324	Nga/26/3	„ „	—	—
1325	Nga/48/20	Prāta-gāyatri	Harayaśa-miśra	—
1326	Nga/13/6	Sakali-karana vidhāna	—	—
1327	Nga/45/4	Sāmāyika-vidhi	—	—
1328	Nga/26/14	Śāntinātha-mantra	—	—
1329	Nga/43/6/6	Saraswati-mantrā	—	—
1330	Nga/47/5/7	„ „	—	—
1331	Nga/38/14	„ „	—	—
1332	Nga/26/4	„ stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Prose	15 5×9 5 8 10 25	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 0 2 24 16	C	Good	
P	D; Skt Prose	17 3×13 0 3 13 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 0 3 14 16	C	Good	
P	P, Skt Prose	16 0×10 3 37 7 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 4×18 7 5 21 17	C	Good	
P	D, H Prose	25 0×10 0 17 15 42	C	Old	
P	D,H /Skt Prose	29 0×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, Skt. Prose	17 3×13.0 3 13 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	16 5×16 0 2 12 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 00 6 9 22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	29 0×17 0 2 24 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1333	Nga/44/19/8	Solaha-kārana-mantra	--	—
1334	Ta/3/42	Sūtika vidhi	—	--
1335	Ta/4/11	Tantra mant ā Samgarah	—	—
1336	Nga/20/15	Trivarnācāra-mantra	—	—
1337	Ta/39/18	Vaś karana-adhikārā	—	—
1338	Ta/39/20	Vas ādhikāra	—	—
1339	Nga/43/8	Vrata-mantra	—	—
1340	Nga/43/6/11	Visarjana ,,	—	—
1341	Nga/48/16	Vivāha-vidhi	—	—
1342	Ta/2/2	Yantra-mantra-samgraha	—	—
1343	Ta/2/3	,, ,, ,,	—	—
1344	Ta/2/1	Aṣṭāṅga hṛdaya	Vāgbhaṭṭa	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	19 5×12 5 2 7 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Old	
P	D, Skt Prose	11 5×15 5 161 21 16	Inc	Old	
P	D,H /Skt Prose	29 0×17 0 13 24 17	C	Good	
P	D, Skt Prose	20 0×12 0 2 17 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 16 1	C	Old	
P	D, Skt Poetry Prose	15 5×11 6 2 10 21	C	Old	
P	D, Skt Prose	17 3×13 0 2 12 12	C	Old	
P	D, Skt Prose	13 3×10 2 21 8 14	Inc	Old	1 to 3 and 6 or 7 pages are missing
P	D, H Prose	20 5×17 1 139 25 22	C	Old	The mantras & tantras charts are availeble in the mss
P	D; H Prose	16 5×21 0 52 17 23	C	Old	There are so many yantra & mantrā charts in the mss
P.	D, Skt. Poetry/ Prose	28 6×18 5 183.22.24	C	Good	

1	2	3	4	5
1345	Ta/1/2	Cikitsā-śāstra	—	—
1346	Ta/1/1	„ sāra	—	—
1347	Ta/4,2	Jwara-hara-yantra	—	—
1348	Ta/4/6	Kuṭṭaka-karana chāyā vyavahāra	Bhāskarācārya	—
1349	Ta/4/1	Madana-vinoda-nighaṇṭu	Madanapāla	—
1350	Ja/33	Nādi-Prakāśa	—	—
1351	Ta/2/1/1	Nidāna	Mādhavācārya	—
1352	Ta/4/9/2	Pañca-daśa Vidhāna	—	—
1353	Ta/1/3	Rāma-vinoda	—	—
1354	Ta/4/9	Rūpa-maṅgala	—	—
1355	Ta/4/8	Śāradā-tilaka satika	—	—
1356	Ta/2/1/2	Sārangadhara Saṁhitā	Sārangadhara	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Prose/ Poetry	27 0×11 9 120 13 49	Inc	Old	Closing pages are missing
P	D, H Prose/ Poetry	19 5×14 7 59 14 29	C	Good	
P	D, Skt Prose	19 3×13 0 2 14 17	C	Good	
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	19 3×13 0 18 19 19	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	19 3×13 0 183 14 17	C	Good 1912 V S	
P	D, H Prose	19 7×13 0 16 15 11	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	28 6×18 5 64 22 16	C	Old	
P,	D,Skt /H Prose Poetry	13 5×11 5 25 15 15	C	Old	
P	D, H Poetry/ Prose	26 0×16 3 158 21 14	C	Good 1906 V S	
P	D,Skt /H Prose	15 8×13 3 74 13 18	C	Good	
P	D; Skt / H Poetry	15 8×13 3 163 13 18	C	Good 1676 V S	
P.	D; Skt. Poetry	28 6×18.5 61 23.22	C	Old	

1	2	3	4	5
1357	Ta/1/4	Vaidya-bhūṣana	Nayanasukha	—
1358	Ta/4/10	,, manotsava	Banśīdhara Miśra	—
1359	Ta/1/4/1	Yoga-Cintāmani	Harṣakīrti	—
1360	Ta/2/4	Yūnānī-Cikitsā	—	—
1361	Ta/42/99	Ācārya-bhakti	—	—
1362	Ta/3/50	Ādinātha-stuti	Vinodīlala	—
1363	Nga/47/4/58	,, ārtī	—	—
1364	Nga/30/2/5	,, stotra	-	—
1365	Nga/47/4/53	Ādityanātha ārtī	—	—
1366	Ja/51/24	Ambikā-devi stotra	—	—
1367	Nga/26/5	Aṅka-garbha-ṣadāracakra	Devanandī	—
1368	Nga/47/4/72	Ārati	Nirmala	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	24 0×16 0 11.34 20	C	Old 1794 V S	
P	D, Skt Poetry	15 8×13 3 81 13 18	C	Good	
P	D, Skt Prose	24 0×16 0 134 22 22	C	Old 1794 V S	
P	D, H Prose	20 5×17 5 98 23 22	C	Old	
P	P, Skt / Pkt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 0×14 8 1 9 26	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Prose	32 3×20 0 1 13 35	C	Good 1959 V S	
P	D, Skt Poetry	29 0×17.0 4 24.17	C	Good	
P	D, H. Poetry	20 6×18.0 2 16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1369	Ta/18/3	Ārati	—	—
1370	Ta/18/10	,,	Dyānatarāya	—
1371	Ta/3/4	,	—	—
1372	Nga/44/17	,, Saṁgraha	—	—
1373	Ta/39/2	Aṣṭaka	—	—
1374	Ta/6/9	Bhajana	—	—
1375	Nga/12/1	Bhajanāvalī	Ajita-Dāsa	—
1376	Nga/12/2	,,	,,	—
1377	Nga/12/3	,	,	—
1378	Nga/16/9	,	—	—
1379	Ja/31	Bhajana-Saṁgraha	Ajita-Dāsa	—
1380	Nga/13/5	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅga	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D H Poetry	11 0×4 0 2 13 19	C	Old	
P	D, H Poetry	11 0×11 0 2 12 17	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 32	C	Good	
P.	D, H Poetry	20.0×16 0 4 13 21	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 19 20	C	Old	
P	D, H Poetry	22 2×1[illegible] 7 2 20 17	C	Old	
P	D, H poetry	25 0×22 0 445 15 24	C	Old	
P.	D, H Poetry	21 0×26 0 25 14 26	C	Good	
P.	D, H Poetry	27 4×22 0 42 22 26	C	Old	
P.	D, H. Poetry	13 0×15 0 5 16 21	C	Good	
P.	D; H, Poetry	20 5×12 7 12.16 16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	24 2×18.6 5 21.18	C	Good	

1	2	3	4	5
1381	Nga/26/1/1	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅga	—
1382	Nga/28/2	,, ,,	,,	—
1383	Nga/38/1	,, ,,	,,	—
1384	Ta/3/10	,, ,,	,,	—
1385	Ta/42/63	,, ,,	,,	—
1386	Ta/4/2	,, ,,	,,	—
1387	Nga/46/12/2	,, ,,	,,	—
1388	Nga/45/2	,, ,,	,,	Hemarāja
1389	Nga/47/4/8	,, ,,	,,	—
1390	Nga/48/21/1	,, ,,	,,	—
1391	Ta/9/5	,, ,,	,,	Śivacandra
1392	Ta/14/26	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	29 0×17 0 5 21.16	C	Good	
P	D; Skt Poetry	14 6×14 1 6 13 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 8×9 0 7 9 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 5 12 18	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	23 2×19 5 7 10 21	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 5×13 0 7 18 13	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	25 2×12 1 34 9 34	C	Good 1849 V S	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	16 5×12 5 10 12 12	C	Old	
P	D; Skt, Poetry/ Prose	19.0×14.5 15.19 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	15.2×12.8 8.11 15	C	Old	

1	2	3	4	5
1393	Nga/20/5	Bhaktāmara stotra	Mānatuṅgā	
1394	Nga/47/4/15	,, ,,	—	—
1395	Ta/18/13	,, ,,	—	—
1396	Ta/31	,, bhāṣā	Hemrāja	—
1397	Nga/41/2/5	,, Stotra	,,	—
1398	Ta/6/3	,, ,	,,	—
1399	Ja/35/4	,,	,,	—
1400	Nga/20/6	,, ,,	,	—
1401	Nga/25/1	,, ,,	,,	—
1402	Ja/52	,, Vacanikā	Mānatuṅga	—
1403	Nga/47	,, Stotra Vacanikā	Mānatuṅga	—
1404	Nga/48/6/7	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	25 6×15 0 7 14 16	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18.0 6 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	11 0×11 0 9 12 17	C	Old	
P.	D, H Poetry	19 5×16 1 6 12 25	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 12 8 15	C	Good	
P	D, H Poetry	22 2×14 7 5 10 20	C	Good	
P.	D, H Poetry	18 3×11 5 8 16 15	C	Good	
P,	D, H Poetry	25 6×15 0 7 16 16	C	Good	
P	D, H Poetry/	28 4×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	27 5×12 5 29 11 38	C	Good	
P	D, H Poetry	20 1×16 3 47 10.27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15 7×9.2 25.7.18	Inc	Very Old	

1	2	3	4	5
1405	Ta/30/4	Bhaktāmara ṭikā	Jinasāgara	—
1406	Nga/44/13/5	,, stotra	Mānataṅga	—
1407	Ta/14/16	Bhakti saṁgraha	—	—
1408	Nga/13/7	Bhairavāṣṭaka	—	—
1409	Ta/42/78	,,	—	—
1410	Ta/19/1	Bhairava stotrā	—	—
1411	Ta/9/9	Bhūpāla caturaviṁśati stotra	Śivacandra	—
1412	Nga/47/4/11	Bhūpāla caubisi		—
1413	Ta/4/6	,,	Bhūpālakavi	—
1414	Ta/42/67	,, ,,	,,	—
1415	Nga/38/5	,, stotra	,,	—
1416	Nga/26/1/6	,, caubisi stotra	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	21 1×15 6 7 13 20	C	Good	
P	D,H /Skt Poetry	13 5×8 5 18 6 13	C	Good	
P	D, Skt Pkt Poetry	15 2×12 8 51 11 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	24 2×18 7 1 21 23	C	Good	
P	P, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	10 3×9 5 6 7 8	C	Good	
P	D, Skt Prose	19 0×14 5 11 20 19	C	Old 1927 V S	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 5 17 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 2×19.5 6 11 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 0 6 9 22	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	29 0×17 8 3 21.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1417	Nga/25/5	Bhūpāla stotra	—	—
1418	Nga/47/4/12	, caul isi bhāṣā	—	—
1419	Nga/47/4/57	Bisa-viraha-māna-ārati	—	—
1420	Nga/44/10/8	Brahma-lakṣana	—	—
1421	Ta/42/87	Caityālaya stotrā	—	—
1422	Ta/42/10/7	Cakreśwarī ,,	—	—
1423	Nga/43/1	,, ,,	—	—
1424	Nga/43/3/5	Candra-prabha ,,	—	—
1425	Nga/48/6/5	, ,,	—	—
1426	Ta/42/98	Cāritra bhakti	—	—
1427	Nga/48/8/2	Caturviṁśatí stotra	—	—
1428	Nga/43/6/8	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	28 4×17 0 2 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 3 17 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 1 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 9×11 2 4 8 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	17 0×13 0 3 9 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 2 4 7 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	9 6×6 0 6 4 8	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	17 3×13 0 2 13 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1429	Nga/43/3/2	Caturviṁśati Stotra	—	—
1430	Nga/44/10/2	„ Jina Stotra	—	—
1431	Ta/18/9	Caubīsa tīrthaṅkara pada	—	—
1432	Ta/42/69	Cintāmaṇi Stotra	—	—
1433	Ja/61	„ Pārśwanātha Stotra	Dyānatarāya	—
1434	Nga/44/10/25	„ „ „ „	—	—
1435	Nga/47/4/66	Caubīsa Jina Ārti	Bhairondāsa	—
1436	Nga/47/4/74	„ „ „	—	—
1437	Ja/23/3	„ Daṇḍaka Vinati	Daulatarāma	—
1438	Nga/47/4/32	Darśana Jnāna Caritra Ārati	Dyānatarāya	—
1439	Ta/6/5	Darśana-Stuti	—	—
1440	Ta/42/105	Darśanāṣṭaka	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	17 0×13 0 3 9 21	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18.5×13 1 1 11 28	C	Good	
P	D, H Poetry	11 0×11 0 11 12 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	22 0×13 0 2 13 11	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 4 12 22	C	Old	
P	D, H poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 4×14 2 6 18 15	C	Old	
P.	D, H / Skt Poetry/ Prose	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, H, Poetry	22.2×14.7 2 21 18	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 1.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1441	Ta/42/89	Deva-stavana	—	—
1442	Nga/38/4	Ekibhāva-stotra	Vādirāja	—
1443	Nga/26/1/4	,, ,,	,,	—
1444	Ta/42/66	,, ,,	,,	—
1445	Ta/1/5	,, ,,	,,	—
1446	Nga/44 10/10	,, ,	,,	—
1447	Nga/47/4/10	,,	,,	—
1448	Nga/44/15	,, ,	—	—
1449	Nga/48/21/3	,, ,,	,,	—
1450	Ta/9/7	,, ,	—	Sivacandra
1451	Nga/47/4/12	,, ,,	,,	—
1452	Nga/25/2	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 0 5 9 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 3 21 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19.0 2 33 37	C	Good	
P	P, Skt Poetry	23 2×19 5 6 11 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 4 17 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 6×9 2 19 7 19	Inc	Old	It has no opening and closing
P	D, Skt Poetry	16 5×12 5 7 12 12	C	Old	
P	D, Skt Prose	19 0×14 5 12 19 19	C	Old	
P	D, H. Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	28 4×17.0 4 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1453	Nga/26/6	Ganadhara Stuti	—	—
1454	Nga/30/2/4	Gautama-Swāmi Stotrā	—	—
1455	Nga/48/8/1	Ghaṅtâ-Karna ,,	—	—
1456	Nga/44/10/6	Gurubhakti	Bhūdharadāsa	—
1457	Ta/14/31	,,	—	—
1458	Ta/3/9	Guruvinati	Bhūdharadāsa	—
1459	Nga/45/3	Gunāvali	—	—
1460	Ta/9/4	Gunāstaka	Parmānanda	—
1461	Nga/39	Jaina-pada-Saṁgraha	—	—
1462	Nga/44/10/26	Jinacaitya Namaskāra	—	—
1463	Ja/38/3	Jinadeva Stuti	—	—
1464	Ta/42/7	Jinapañjara Stotra	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	29 0×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 0×14 8 1 9 26	C	Old	
P	D, Skt Poetry	9 6×6 0 4 4 8	C	Old	
P	D, H Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Good	
P	D, H Poetry	15 2×12 8 4 12 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 1 12 36	C	Good	
P	D, H Poetry	25 0×11 0 18 15 39	C	Old	
P,	D, H Poetry	19 0×14 5 5 14 17	C	Old	
P	D, H Poetry/	11 0×17 5 183 9 23	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 3 13 22	C	Old	
P	D, H Poetry	22.0×13 0 2 14 32	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1465	Ta/18/16	Jinapanjara Stotra	—	—
1466	Nga/48/18/1	,, ,,	—	—
1467	Ta/42/70	Jinara'ṣā Stavana	—	—
1468	Ja/50	Jinasahasranāma	Śikharacanda	—
1469	Ta/3/16	Jinendra darśana Stotra	—	—
1470	Ta/3/38	Jina-darśana	Nawala	—
1471	Ta/3/17	,, ,,	—	—
1472	Nga/26/13	Jwālāmālinī Stotra	Candraprabha	—
1473	Nga/43/3/6	,, ,,	—	—
1474	Nga/43/6/3	,, ,,	—	—
1475	Nga/48/2	,, ,,	—	—
1476	Nga/48/6/8	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	11 0×11 0 4 12 17	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	40 0×11 4 1 52 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	32 2×20 2 90 13 37	C	Good 1957 V S	Copied by Bhagawānadatta
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 1 12 36	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 36	C	Good	
P,	D,H Skt Poetry	29 0×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D; Skt Prose/ Poetry	17 0×13 0 4 9 21	Inc	Old	
P	D, Skt Prose	17.3×13 0 2 12 11	C	Old	
P	D, Skt. Prose	12 8×9 5 6 10 12	C	Good	
P	D; Skt. Prose	15.7×9 2 4 7.18	C	Old	Damaged.

1	2	3	4	5
1477	Nga/48/5	Jwālā-mālinī Stotra	—	—
1478	Ta/42/90	,, ,,	—	—
1479	Nga/26/1/3	Kalyāna-mandira Stotra	Kumudacandra	—
1480	Nga/47/4/7	,, ,, ,,	,,	—
1481	Nga/48/21/2	,, ,, ,,	,,	—
1482	Ta/4/3	,, ,, ,,	,,	—
1483	Ta/42/64	,, ,, ,,	,,	—
1484	Nga/38/2	,, ,, ,,	,,	—
1485	Ta/9/6	,, ,, ,,	,,	Pandit Śivacandra
1486	Nga/44/10/1	Kalyānamandir Stotra	Banārasidāsa	—
1487	Ta/18/12	,, ,,	,,	—
1488	Nga/25/3	,, ,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose	14 3×11 2 8 7 18	Inc	Old	
P.	D. Skt Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 5 21 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	16 5×12 5 10 12 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 2×19 5 7 11 20	C	Old	
P	D, Skt poetry	32 3×19 0 2 33.37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 0 8 9 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	19 0×14 5 16 20 19	C	Old	
P	D, H Poetry	18 5×13 0 5 11 28	C	Good	
P.	D, H, Poetry	11 0×11 0 8 12 17		Old	
P.	D, H. Poetry	28 4×17.0 3 24 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1489	Nga/47/4/16	Kalyāṇa-mandira	—	—
1490	Nga/44/13/3	,, ,,	—	—
1491	Nga/43/6/7	Kṣetrapāla Stotra	—	—
1492	Ta/42/106	,, ,,	—	—
1493	Nga/48/4	,, ,,	—	—
1494	Ta/42/103	,, ,,	—	—
1495	Nga/26/1/8	Laghusahasranāma	—	—
1496	Nga/47/4/5	,, ,, ,,	—	—
1497	Ta/18/8	,, ,, ,,	—	—
1498	Nga/41/Na	,, ,, ,,	—	—
1499	Nga/13/8	Lakṣmi Stotra	—	—
1500	Ta/42/76	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	13 5×8 5 12 6 13	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	17 3×13 0 5 13 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	P, Skt Poetry	16 4×10 0 3 7 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 5 21 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	11 0×11,0 5 12 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 3 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	24 3×18 0 2 21 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33,37	C	Good	

1	2	3	4	5
1501	Nga/26/1	Lakṣmi-Stotra	—	—
1502	Nga/44/4	Mahāvira-Ārati	—	—
1503	Ta/30/8	Maṇḍaloddhāra Stotra	—	—
1504	Ta/3/41	Mangala Ārati	Dyânatarāya	—
1505	Nga/43/6/5	Manibhadra Stotra	—	—
1506	Ta/42/77	Maṅgalâṣṭaka	—	—
1507	Ta/39/23	Maṅgala jina-darśana	Rūpacandra	—
1508	Ta/3/7	Muniswara Vinati	Bhūdharadāsa	—
1509	Nga/26/1/7	Namaskāra	Śripāla	—
1510	Nga/47/4/4	,,	,,	—
1511	Ta/42/102	Nandiswara-Bhakti	—	—
1512	Nga/47/2	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	29 0×17 7 1 24 16	C	Good	
P	D, H Poetry	21 0×16 0 3 13 14	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 1×15 0 2 13 20	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Old	
P	D, Skt H Prose Poetry	17 0×13 0 5 13 11	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 0×1[illegible] 0 1 24 18	Inc	Old	
P,	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	29 0×17 8 3 21 17	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D; Skt Pkt Poetry/ Prose	20 2×15 8 8 10 27	C	Old	

1	2	3	4	5
1513	Ta/6/12	Naraka Vinatí	Gunasāgara	—
1514	Nga/48/14	Nārāyana-lakṣmī-stotra	—	—
1515	Ta/42/74	Nava-graha-stotra	—	—
1516	Ta/42/39	,, ,,	—	—
1517	Ta/18/14	Navakāra-dhāla	—	—
1518	Nga/43/6/9	,, Stotra	—	—
1519	Ta/42/79	Navakāra-mantrā-Stotra	—	—
1520	Nga/47/4/65	Nemināthа Ārati	Bhairondāsa	—
1521	Nga/48/6/4	Nemināthа Stotra	—	—
1522	Nga/38/11	Nijāmani	Brahma Jinidāsa	—
1523	Ta/42/100	Nirvāna Bhakti	—	—
1524	Ta/6/11	,, Kānda	Bhagavatidāsa	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	22 2×14 7 4 18 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	13 8×12 0 29 10 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	11 0×11 0 4 12 17	C	Old	
P	D, Skt Prose	17 3×13 0 3 13 13	C	Old	
P	D, Skt poetry	37 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 1 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 2 3 7 18	C	Old	The mss is totely damaged.
P	D, H Poetry	15 7×9 0 7 9 22	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	22 2×14 7 3 18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1525	Nga/44/19/6	Nirvâna-Kānda	Bhagavatidāsa	—
1526	Nga/47/4/35	" "	"	—
1527	Nga/47/5/11	" "	"	—
1528	Ja/35/3	" "	"	—
1529	Nga/25/7	" "	"	—
1530	Nga/26/1/11	" "	"	—
1531	Ta/6/21	" "	—	—
1532	Nga/48/26/6	" "	—	—
1533	Nga/26/1/10	" "	—	—
1534	Nga/33/5	" "	—	—
1535	Nga/47,4 34	" "	—	—
1536	Ta/47/5/10	" "	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	19 5×12 5 5 10 27	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	16 5×16 0 4 12 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	18 2×11 5 3 16 15	C	Good	
P	D, H Poetry	28 4×17 0 2 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 2 26 26	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 3 18 21	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	16 5×13 5 3 8 24	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	29 0×17 8 2 23 16	C	Good	
P	D, Pkt. Poetry	22 7×15 7 3 18 15	C	Good	
P	D, Pkt, Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	16.5×16 0 3 12 19	C	Old	

1	2	3	4	5
1537	Ta/44/20	Nirvâna Kānda	—	—
1538	Ta/3/35	" "	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1539	Nga/44/13/1	" "	—	—
1540	Nga/26/1/12	Oṁkārastuti	—	—
1541	Nga/47/4/61	Pada	—	—
1542	Nga/47/5/8	"	—	—
1543	Ta/18/15	"	Kusalsuri	—
1544	Ta/14/38	"	—	—
1545	Ta/30/3	"	—	—
1546	Ta/28/2	"	Amicanda	—
1547	Ta/27/2	"	Jinadāsa	—
1548	Nga/44/13/9	"	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 5 12 31	C	Old	
P	D, Skt Poetry	13 5×8 5 4 6 13	C	Good	Starting three pages are missing
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 2 23 17	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	16 5×16 0 1 12 19	C	Old	
P	D, H Poetry	11 0×11 0 4 12 17	C	Old	
P.	D, H Poetry	15 2×12 8 2 12 21	C	Old	
P	D, H Poetry	20 1×15 6 2 13 20	C	Old	
P	D, H Poetry	19 8×17 2 1 14 18	C	Good 1948 V S	
P	D, H Poetry	19 7×16 5 2 14 21	C	Good 1948 V S	Copied by Amicanda
P.	D; H. Poetry	13 5×8 5 3.6 13	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1549	Nga/48/23/6	Pada	—	—
1550	Nga/48/4	,,	—	—
1551	Nga/44/19/7	,,	—	—
1552	Nga/37/2	,,	—	—
1553	Ta/3/84	,,	—	—
1554	Ja/65/6	,,	Jagarāma	—
1555	Nga/37/13	,,	Ramcandra	—
1556	Ja/65	,,	Jagarāma	—
1557	Ja/65/2	,,	—	—
1558	Nga/37/12	,,	Vrndāvana	—
1559	Ja/29	,,	—	—
1560	Nga/31/1	Padasaṅgraha	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	16 8×12 8 1 11 12	C	Old	
P	D; H Poetry	13 5×12 0 2 8 12	C	Good	
P	D, H Poetry	19 5×12 5 3 9 23	Inc	Old	
P	D, H Poetry	17 4×11 0 5 7 17	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 6 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	11 5×10 0 53 10 14	C	Good	
P	D, H poetry	22 0×13 0 8 15 13	C	Old	
P	D, H Poetry	11 5×10 0 59 10 14	C	Good	
P	D, H Poetry	11 5×10 0 4 10 14	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 0×13.0 4 14 13	C	Old	
P.	D, H Poetry	21 1×14 0 3 15 15	Inc	Old	Closing is missing
P.	D; H. Poetry	14 8×14 8 82 13 15	C	Good	

1	2	3	4	5
1561	Ja/21/1	Pada saṁgraha	—	—
1562	Ja/21/2	Pada vinatí	—	—
1563	Nga/25/12	Pada-hajūrē	Dyānatarāya	—
1564	Nga/37/10	Pada holí	—	—
1565	Ja/51/14	Padmāvati aṣ to ttara śatanāma	—	—
1566	Nga/43/6/1	Padmāvati stotra	—	—
1567	Nga/48/11/3	,, ,,	—	—
1568	Ta/39/5	,, ,,	—	—
1569	Ta/42/82	,, ,,	—	—
1570	Ta/30/5	,, ,,	—	—
1571	Ja/51/17	,, ,,	—	—
1572	Nga/25/15	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20 0×15 3 12 11 14	Inc	Old	Closing is missing
P	D, H Poetry	22 8×18 2 31 16 13	Inc	Old	Last pages are missing
P	D, H Poetry	28 4×17 0 0 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	22 0×13 0 4 15 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 3×13 0 10 13 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	16 5×13 2 8 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 5 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 1×15 6 2 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 1 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	28 4×17 0 22 24 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1573	Nga/25/9	Padmāvati stotra	—	—
1574	Ja/51/12	,, sahastranāma	—	—
1575	Nga/48/11/1	,, ,,	—	—
1576	Nga/46/13	,, ,,	—	—
1577	Ta/42/36	,, ,,	—	—
1578	Ta/39/15	,, ,,	Sevārāma	—
1579	Nga/44/12/2	,, vinati	—	—
1580	Nga/48/1/4	,, ,,	—	—
1581	Nga/44/17	Padmanandipanca-viṁśatikā	Padmanandi	—
1582	Nga/43/3/3	Pānco-namaskāra stotra	—	—
1583	Ta/16/4	,, ,,	—	—
1584	Nga/44/10/11	Parameṣṭhi stotra	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	28.4×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 7 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 5×13 2 14 12 17	C	Old	
P	D, Skt Prose	13 0×11 6 1 7 10	Inc	Old	Only first page is available.
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 14 22 17	C	Old 1827 V S	
P	D, Skt / H Poetry	32 3×20 2 3 23 17	C	Old	
P	D, H Poetry	14 0×11 7 8 10 15	C	Old	
P	D, H Prose	11 0×10 2 12 11 9	Inc	Good	
P	D, Skt Poetry	17 0×13 0 5 9 19	C	Old	
P	D, Skt Prose	1[illegible] 5×9 5 13 8 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Good	

1	2	3	4	5
1585	Ta/6/2	Paramānanda stotra	—	—
1586	Nga/44/10/15	,, ,,	—	—
1587	Ta/42/86	Pārśwanātha stotra	—	—
1888	Ta/42 74	,, ,,	—	—
1589	Nga/48/6/6	,, ,,	—	—
1590	Nga/43/3/4	,, ,,	—	—
1591	Nga/30/2/3	,, ,,	—	—
1592	Nga/41/2/8	, ,	Dyānatarāya	—
1593	Ta/3/53	,, stuti	Vinodilāla	—
1594	Ta/42/92	,, stotra	—	—
1595	Ta/18/5	Pārśwanāthāṣṭaka	—	—
1596	Ta/30/1	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	22 2×14 7 2 18 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 3 13 ?2	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 2 3 7 18	C	Old	The mss is totely damaged.
P	D, Skt Poetry	17 0×13 0 2 9 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 0×14 8 3 9 20	C	Old	
P,	D,Skt /H Poetry	14 5×11 0 3 9 17	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	11 0×11 0 3 13 19	C	Old	
P.	D,H /Skt. Poetry	20 1×15 6 3.13.20	C	Old	Starting one to eleven Pages are missing

1	2	3	4	5
1597	Nga/47/4/56	Pārśwajina-ārati	Bhairoadāsa	—
1598	Nga/48/20	Pratyaṅgirā-siddhi-mantra-stotra	—	—
1599	Ta/42/81	Ṛṣi-maṇḍala Stotra	—	—
1600	Nga/31/1/7	,, ,,	—	—
1601	Nga/47/4/17	,, ,,	—	—
1602	Nga/26/10	,, ,,	—	—
1603	Nga/13/5	,, ,,	—	—
1604	Nga/31/2/3	Sādhū-Vandanā	Banārasidāsa	—
1605	Ta/42/16	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1606	Nga/26/1/13	,, ,, ,,	,,	—
1607	Ta/19/2	,, ,, ,,	,,	—
1608	Ta/14/25	,, ,, stavana	Āśādhara sūri	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	17 9×18 5 24 7 22	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	12 3×16 6 7 16 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D Skt Poetry/ Prose	15 4×12 3 26 13 15	Inc	Old	Opening first page is missing.
P	D, H Poetry	12 3×16 6 4 18 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 4 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 6 23 17	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	10 3×9 5 54 7 9	C	Good	Sixteen pages have no folio and paging
P.	D, Skt Poetry	15 2×12 8 14 11 15	C	Old	

1	2	3	4	5
1609	Ta/18/7	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1610	Nga/31/2/8	„ „ „	—	—
1611	Ta/29	„ „	—	—
1612	Ta/42/68	Samantā-bhadra-stotra	—	—
1613	Ta/3/5	Sammeda-śikhara-stuti	—	—
1614	Ta/39/16	Sammedācala stotra	—	—
1615	Nga/48/13	Sandhyā	—	—
1616	Nga/47/4/58	Śantijine ārati	—	—
1617	Ja/29/1	Śānti-stuti	—	—
1618	Ta/42/73	Śāntināthāṣṭaka	—	—
1619	Ta/3/11	Śāradāṣṭaka	Banārsidāsa	—
1620	Nga/44/10/20	Śāradā stūti	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	11 0×11 0 26 10 10	Inc	Old 1842 V S	
P	D, H Poetry	12 3×16 6 9 16 16	Inc	Old	Last śataka is missing.
	D, H Prose	19 5×15 0 50 12 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 4 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 1 5 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 3 21 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	16 0×10 2 11 6 19	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	21 1×14 0 2 12 14	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 35	C	Good	
P.	D. Skt. Poetry	18 5×13.1 5.13 22	C	Old	

1	2	3	4	5
1621	Ta/42/18	Saraswatī stuti	Malaya Kirti	—
1622	Ta/42/75	„ stotra	—	—
1623	Nga/48/9	„ „	—	—
1624	Ta/40	Śāstra Vinati	—	—
1625	Ta/42/96	Siddha-bhakti	—	—
1626	Ta/18/17	Sitā-Vinati	—	—
1627	Nga/41/2/7	Śrīpāladarśana	—	—
1628	Nga/37/1	Śrīpāla Vinati	Sripâlarājā	—
1629	Ta/42/97	Śruta-bhakti	—	—
1630	Ja/16/1	Stotra	—	—
1631	Nga/47/4/31	Sthāpanā Ārati	—	—
1632	Ja/32	Stuti	Haridāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 7×11 7 6 14 12	C	Old	
P	D, H Poetry	13 7×9 7 3 11 10	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	11 0×11 0 13 9 8	C	Good	
P	D, H poetry	14 5×11 0 5 9 15	C	Good	
P	D, H Poetry	9 8×15 7 5 13 11	C	Good	
P	D, Skt / Pkt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	23 3×19 0 4 15 18	C	Good	
P.	D, H Poetry	20.6×18 0 2 16.18	C	Old	
P.	D, H Poetry	19 5×15 0 5 15 2)	C	Good 1965 V S	

1	2	3	4	5
1633	Ta/42/88	Suprabhāta stotra	—	
1634	Ja/51/16	Sūrya-sahasra-nāme	—	—
1635	Nga/47/4/26	Swayambhū stotra	—	—
1636	Ta/42/10	,, ,,	—	—
1637	Ta/3/30	,, ,,	—	—
1638	Ta/14/23	,, ,,	—	—
1639	Ja/29/4	Vinati	—	—
1640	Nga/25/8	,,	—	—
1641	Nga/37/11	,,	Vrndavana	—
1642	Ja/45/5	,,	Bhūdharadāsa	—
1643	Ta/3/40	,,	—	—
1644	Ta/42/29	,,	Jnanasāgara	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	32 3×19.0 1 23 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	P, Skt Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Cood	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 20 11 15	C	Old	
P	D, H Poetry	21 1×14 0 16 13 13	C	Good	
P	D, H Poetry	28 4×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	22 0×13 0 5 15 14	C	Old	
P	D, H Poetry	15.0×11 3 3 10 23	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 1 12 31	C	Old	
P.	D, H Poetry	32 3×19 0 2.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1645	Nga/48/1/3	Vinati	—	—
1646	Ta/30/6	,,	Harṣakirti	—
1647	Nga/48/23/5	,,	—	—
1648	Nga/44/19/3	,,	—	—
1649	Nga/44/12/3	,,	—	—
1650	Nga/47/4/75	,,	Bhūdharadāsa	—
1651	Nga/44/10/7	,,	—	—
1652	Ta/3/8	Vinati-tribhuvana swāmi	—	—
1653	Nga/44/10/9	Viṣāpahāra stotra	Dhanañjaya Kavi	—
1654	Nga/38/3	,, ,,	,,	—
1655	Nga/26/1/5	,, ,,	,,	—
1656	Nga/48/21/4	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	11 7×14 0 5 10.15	C	Old	
P	D, H Poetry	20 1×15 6 2 13 20	C	Good	
P	D, H Poetry	16 8×12 8 3 11 12	C	Old	
P	D, H Poetry	19 5×12 5 3 10 19	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×20 4 4 23 17	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Good	
P,	D, H Poetry	2[illegible] 5×15 0 2 12 31	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 5 13 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 8×9 0 6 9 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 4 21 17	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	16 5×12 5 8 12 12	C	Old	

1	2	3		4	5
1657	Ta/9/8	Viṣāpahāra stotra		Dhanañjaya Kavi	—
1658	Ta/4/4	,,	,,	,,	—
1659	Ta/42/65	,,	,,	,,	—
1660	Nga/47/4/9	,,	,,	,,	—
1661	Nga/44/10/3	,,	,,	—	—
1662	Nga/47/4/14	,,	,,	—	—
1663	Nga/44/12/4	,,	,,	—	—
1664	Nga/44/13/2	,,	,,	—	—
1665	Nga/25/4	,,	,,	—	—
1666	Ja/35/5	,,	,,	—	—
1667	Ja/16/4	,,	,,	—	—
1668	Nga/47/4/6	Vrhat-sahastra-nāma		—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	19 0×14 5 13 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 2×19 5 6 11 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	³2 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 5 16 17	C	Old	
P	D, H Poetry	12 5×13 1 4 12 23	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×20 2 4 23 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	13 5×8 5 13 6 13	C	Old	
P	D, H Poetry	28 4×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	18 3×11 5 5 16 15	C	Good	
P	D; H Poetry	23 3×19 0 4 15 18	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	20 6×18.0 13 16 14	C	Old	

1	2	3	4	5
1669	Nga/47/8/3	Vṛhat-svayambhū	Samanta-bhadra	—
1670	Nga/43/70	,, ,, stotra	,,	—
1671	Nga/26/1/9	,, ,, ,,		—
1672	Ta/42/101	Yoga bhakti	—	—
1673	Nga/30/2/7	Abhiṣēka-vidhi	—	—
1674	Nga/47/5/1	Ādinātha-pūjā	—	—
1675	Nga/41/Ta	,, ,,	—	—
1676	Nga/41/dha	Ādityawāra-pūjā	—	—
1677	Nga/27/3	Ādityavāra-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1678	Ta/39/22	Ākṛtrima-caityālaya-Ārati	—	—
1679	Ta/3/22	, , Arhya	—	—
1680	Nga/26/2/8	,, ,, pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt / H Poetry/ Prose	20.8×16 3 18 15 18	C	Old	
P	D, Skt / H Poetry/ Prose	17 6×13 0 22 12 21	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 13 23 17	C	Good	
P	D, Pkt / Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 0×14 8 1 9 26	Inc	Old	It has no closing.
P	D, Skt Poetry	16 5×16 0 4 12 19	C	Old	
P	D H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	14 5×11 0 2 13 16	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	27 8×17 6 15 10 31	C	Good	
P	D; Pkt Poetry	20 0×12 0 1 24 18	C	Old	
P	D, Skt, Poetry	22 5×15 0 1 12 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30.3×17 5 2 16 16	C	Good	

1	2	3	4	5
1681	Ta/42/30	Ananta-jina-pūjā	—	
1682	Ta/42/49	Anantā-pūjā-vidhi	—	—
1683	Ja/51/22	,, ,, ,,	—	—
1684	Nga/44/10/12	Ari-hanta-dakṣiṇī	—	—
1685	Ta/39/6	Aṣṭabījakṣara-pūjā	—	—
1686	Ta/14/28	Aṣṭānhikā pūjā	—	—
1687	Ta/35/6	,, ,,	—	—
1688	Ta/42/26	,, ,,	—	—
1689	Nga/47/8/15	,, ,,	—	—
1690	Ta/3/33	,, ,,	Dyānatarāya	—
1691	Nga/47/4/24	Athāī-pūjā	,,	—
1692	Nga/27/5	Bāhubali-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 13 37	C	Good	
P	D, H Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Prose	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	
P	D, H Poetry	18 5×13 1 4 13 32	Inc	Good	
P	D, Skt Prose/ Poetry	20 0×12 2 4 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 12 12 18	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	15 5×12 6 11 10 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 3 22 15 17	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	22 5×15 0 7 12 31	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 8 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	18 5×30.5 6 21 20	C	Good	

1	2	3	4	5
1693	Nga/47/8/7	Bāhubali-muni-pūjā	—	—
1694	Nga/47/4/53	Bhairo-rāga	—	—
1695	Ja/38/1	Bisā-Tīrthaṅkara arghya	—	—
1696	Ta/3/25	Bisa-Virahamāne-pūjā	—	—
1697	Nga/48/12/2	,, ,, ,,	—	—
1698	Ta/14/5	,, ,, ,,	—	—
1699	Nga/48/23/1	,, ,, ,,	—	—
1700	Nga/47/4/21	,, ,, ,,	—	—
1701	Nga/41/2/2	Bisa-Vidyamāna-pūjā	—	—
1702	Nga/26/2/11	Bisa-Tīrthankara-jakarī	—	—
1703	Nga/47/3/80	Bisa-Virahamāna ārati	—	—
1704	Nga/48/26/5	Bisa-Tīrthaṅkara-Jayamālā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	20 8×16 3 4 16 21	C	Old	
P.	D, H Poetry	20 6×18 0 1 16 18	C	Old	
P	D, H, Poetry	22 0×13 1 9 12 27	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 4 12 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	13 5×12 0 4 8 12	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 3 13 16	C	Old	
P	D, Skt poetry	16 8×12 8 4 11 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 4 9 17	C	Good	
P	D, H Poetry	30 3×17 5 2 16 16	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 1 16.18	C	Old	
P	D, H Poetry	16 5×13 5 2 8 24	C	Old	

1	2	3	4	5
1705	Nga/47/5/4	Candra-prabha-pūjā	—	—
1706	Nga/17/1/1	" " "	Ajitadāsa	—
1707	Ta/42/15	Cāretra-pūjā	—	—
1708	Ta/14/11	" "	Narendrasena	—
1709	Nga/47/4/30	" "	"	—
1710	Ta/39/7	Caturaviśati-yakṣini-pūjā	—	—
1711	Ta/39/8	" mātrkā pūjā	—	—
1712	Ta/39/9	Caturanivisati-tirthaṅkara-pūjā	—	—
1713	Nga/33/1	" " "	—	—
1714	Nga/33/2	" " "	—	—
1715	Ja/34/4	" " "	—	—
1716	Nga/47/7	" " "	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	16 5×16 0 5 12 19	C	Old	
P	D, H Poetry	25 0×15 0 3 19 21	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 23 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 9 12 16	C	Old	
P	P, Skt Poetry	20 6×18 0 0 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 4 20 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 4 20 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 4 20 20	C	Good	
P	D,H /Skt Poetry	23 4×15.0 21 19 14	C	Good	Its two opening pages are damaged Copied by Rāmcandra
P	D, H Poetry	22 5×13 4 4 16 12	C	Good	
P	D, H Poetry	19 0×14 9 3 15 20	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	18 0×14 1 100 13 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1717	Ta/14/13	Caturavimśati-jina Jayamālā	—	—
1718	Nga/41/na	Caubisa-tirthaṅkara-pūjā	—	—
1719	Nga/48/3	,, ,, ,,	—	—
1720	Ja/55	,, ,, ,,	—	—
1721	Ta/13	,, ,, ,	Caudhari Rāmacanda	—
1722	Nga/46/10	Caubiśi pūjā	—	—
1723	Nga/38/8	Caturavimśati tirthaṅkara pada	—	—
1724	Ta/5/4	Cintāmaṇi-pūjā	Śaṁbhūnātha	—
1725	Ta/24/6	,, pārśwanātha pūjā	Jnānasāgar	—
1726	Nga/47/8/16	,, ,, ,,	—	—
1727	Ta/39/1	,, ,, .	—	—
1728	Ta/42/38	,, ,, ,,	—	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P	D;H /Pkt Poetry	15 2×12 8 3 11 18	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 5 13 16	C	Old	
P.	D, H Poetry	40 9×15 8 2 40 15	C	-	
P	D, H Poetry	35 0×18 0 71 11 30	C	Good	
P	D, H Poetry	15 0×13 3 113 10 22	C	Good	
P	D, H Poetry	19 0×17 8 4 13 20	C	Good	
P	D, H Poetry	15 7×9 0 3 9 22	C	Good	
P,	D, Skt Poetry	25 0×15 0 10 24 16	C	Good 1793 V S	
P	D, Skt Poetry	30 2×20 0 16 37 33	C	Old 1819 V, S	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 3 6 16 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 2 19 20	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1729	Ta/39/13	Cintâmani Jayamāla	—	—
1730	Nga/48/26/2	Darśana-pāṭha	—	—
1731	Nga/44,13/8	,, ,,	—	—
1732	Ta/35/1	,, ,,	—	—
1733	Ta/42/61	,, pūjā	—	—
1734	Ta/42/13	,, ,,	—	—
1735	Nga/47/4/28	,, ,,	Narendrasena	—
1736	Ta/3/29	Daśalākṣani ,,	Dyānatarāya	—
1737	Nga/47/4/25	,, ,,	,,	—
1738	Nga/44/10/14	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1739	Ta/14//8	,, ,,	—	—
1740	Ta/42,59	,, ,,	Dyānatarāya	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Pkt / H /Skt. Prose	20 0×12.0 1 23 19	C	1825 V S	
P	D, Skt Poetry	16 5×13 5 2 8 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	13 5×8 5 4 6 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 5×12 6 2 10 16	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×00 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	22 5×15 0 7 12 31	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	20 6×18 0 15 16 18	C	Old	
P	D, Skt / H Poetry/ Prose	18 5×31 1 4 13 22	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	15 2×12 8 16 12 12	C	Old	
P.	D, H Poetry	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1741	Ta/42/9	Daśa-lākṣaṇī-pūjā	—	—
1742	Ta/35/5	,, ,, ,,	—	—
1743	Ta/38/1	,, ,, Jayamālā	—	—
1744	Ta/24/2	,, ,, Vratodyapana	—	—
1745	Ta/39/10	Digpālārcana	—	—
1746	Nga/26/2/2	Deva-Pūjā	Ājādhara Sūri	—
1747	Nga/25/14	,, ,,	—	—
1748	Nga/14/4	,, ,,	—	—
1749	Ja/45	,, ,,	—	—
1750	Nga/27/2	,, ,,	—	—
1751	Nga/26/2/13	,, ,,	—	—
1752	Nga/41/2/1	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 5×12 6 3 10 15	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	14 5×12 5 15 8 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry	30 2×20 0 5 37 33	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	20 0×12 2 3 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	30 3×17 5 5 16 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	28 4×17 0 6 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×26 0 13 14 25	C	Good	
P	D, H / Skt Poetry/ Prose	15 0×11 3 36 11 33	C	Old	
P	D, Skt Poetry	26 0×17 7 8 20 16	C	Good	
P	D; Skt Poetry	30 3×17 5 2 19 13	Inc	Good	
P	D, Pkt / Skt. Poetry	14.5×0.11 17 9.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1753	Ta/3,18	Devapūjā	—	—
1754	Nga/44/2	,,	—	—
1755	Nga/47/4/18	,,	Dyānatarāya	—
1756	Nga/44/3	,,	—	—
1757	Ta/14/4	,,	—	—
1758	Ta/16,1	,,	—	—
1759	Ta/18/2	,,	—	—
1760	Nga/48/19	,,	—	—
1761	Nga/48/23/1	,,	—	—
1762	Ta/35/2	,,	—	—
1763	Nga/44/10/16	,,	—	—
1764	Nga/48/12/1	,,	—	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	22 5×15 0 5 12 36	C	Good	
P	D, Pkt / Skt Poetry/ Prose	20 5×16 0 9 15 17	Inc	Old	
P	D,Skt /H Poetry	20 6×18 0 12 16 18	C	Old	
P	D, H / Skt Poetry/ Prose	20 0×16 0 26 14 19	C	Old	
P	D, Pkt / Skt Poetry	15 2×12 8 10 12 16	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	15 5×9 5 11 6 18	Inc	Old	
P	D, Pkt / Skt Poetry	11 0×11 0 13 13 19	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	16 1×10 1 8 8 26	C	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	16 7×1 9 12 10 16	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	15 5×12 6 7 10 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 5 13 22	C	Old	
P.	D, Pkt Poetry	13 5×12 0 17 8 13	C	Good	

1	2	3	4	5
1765	Ta/42,2	Deva-pūjā	—	—
1766	Ta/3/19	Deva-jayamālā	—	—
1767	Ta/5/10	Deva-pratiṣṭhā Vidhi	—	—
1768	Nga/48/1/2	Dharanendra-pūjā	—	—
1769	Ta/39/3	,, ,,	—	—
1770	Ja/51/11	,, ,,	—	—
1771	Ta/3/36	Garbha Kalyānaka	Rūpacanda	—
1772	Ja/57	Giranāra-pūjā	—	—
1773	Nga/48/24	,, ,,	—	—
1774	Nga/47/8/11	,, ,,	—	—
1775	Ta/3/21	Gurū-jaya-mālā	—	—
1776	Nga/14/7	Guru--pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt / Skt Poetry	32 3×19 0 3 30 37	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 0×15 0 1 27 20	C	Good	
P	D, Skt Prose	13 7×12 0 89 10 13	C	Old	
P	P, Skt Poetry	20 0×12 2 4 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 1 13 35	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 4 10 15 21	C	Good	
P	D, H Poetry	16 2×9 5 8 6 21	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 6 15 17	C	Old	
P	D; H Poetry	22 5×15 0 2 12 32	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	20 8×26 0 7 14 25	C	Good	

1	2	3	4	5
1777	Nga/41/2/4	Guru-pūjā	Vinodilāla	—
1778	Nga/47/9/42	" "	—	—
1779	Ta/14/39	" "	—	—
1780	Ta/42/8	" "	Brahma Jinadāsa	—
1781	Nga/44/10/19	" "	—	—
1782	Ta/18/6	" "	—	—
1783	Nga/26/2/5	" "	Brahma Jinadāsa	—
1784	Ta/3/27	" "	Hemarāja	—
1785	Nga/48/1/5	Homa-Vidhi	—	—
1786	Ta/24/4	Jala-yātrā-Vidhi	—	—
1787	Ta/5/7	Jinayajna Vidhāna	—	—
1788	Nga/25/10	Jinavara Vinati	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D;Pkt./H. Poetry	14 5×11 0 6 9 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 4 16.18	C	Old	
P.	D, Skt / Pkt Poetry	15 2×12 8 3 14 19	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Old	
P	D, Skt Poetry	11 0×11 0 4 13 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	30 3×17 5 3 16 16	C	Good	
P,	D, H. Poetry	22 5×15 0 5 12 31	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	14 0×11 7 12 10 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	30 2×20 0 1 37 33	C	Old	
P.	D, Skt Poetry/ Prose	25.0×15.0 68 21 17	Inc	Good	
P.	D; H Poetry	28.4×17 0 2 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1789	Nga/47/5/2	Jina-guna-sampati-pūjā	—	
1790	Ta/3/26/1	Jina-vānī-pūjā	Brahma Jinadāsa	—
1791	Nga/47/8/13	Jambū-swamī-pūjā	—	—
1792	Ja/63	,, ,,	—	—
1793	Nga/44/10/22	Jaya-mālikā-pūjā	—	—
1794	Nga/47/4/29	Jnāna-pūjā	—	—
1795	Ta/14/10	,, ,,	Narendrasena	—
1796	Ta/42/14	,, ,,	—	—
1797	Nga/17/1/3	Jwālā-mālinī-pūjā	—	—
1798	Nga/43/6/10	,, ,,	—	—
1799	Nga/47/8/17	,, ,,	—	—
1800	Ta/42/40	Jyeṣṭha-jinavara-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	16 5×16 0 6 12 19	C	Old	
P.	D;Skt./H Poetry	22.5×15 0 6 12 31	C	Good	
P.	D; H Poetry	20 8×16 3 8 15 17	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	16 7×12 8 11 8 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 7 12 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry	25 0×15 0 5 20 21	C	Old	
P	D, Skt Poetry	17 3×13 0 7 13 13	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20.8×16 3 2 15 17	Inc	Old	
P.	D; H / Skt Poetry	32.3×19.0 1.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1801	Nga/48/26/4	Kalaśābhiṣeka	—	—
1802	Nga/41/Ka	Kalikunda-pūjā	—	—
1803	Nga/47/4/40	,, ,,	—	—
1804	Ta/42/22	,, ,,	—	—
1805	Nga/44/10/18	,, pārśwanātha--pūjā	—	—
1806	Ta/14/12	,, ,,	—	—
1807	Nga/26/2/6,7	,, ,, ,,	—	—
1808	Ta/24/1	Kañjikā-vratodyāpana	Paṇḍita Nandarāma	—
1809	Nga/14/3	Karma-dahan-pūjā	—	—
1810	Ta/42/24	Kṣmā-vani ,,	—	—
1811	Ta/30/9	Kṣetrapāla ,,	Viśwasena	—
1812	Ta/41/28	,, ,,	Subhacandra	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	16 5×13 5 5 8 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 2 13 17	C	Old	Opening pages are missing
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 4 12 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	30 3×17 5 5 16 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30 2×20 0 2 37 35	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 8× 0 0 23 14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20 1×15 6 26 13 20	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 0 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1813	Ta/39/12	Kṣetra-pāla-pūjā	—	—
1814	Ta/30/7	,, ,,	—	—
1815	Ta/42/31	,, ,,	Viśwasena	—
1816	Nga/43/6/16	,, ,,	Vijayapāla	—
1817	Nga/41/Dha	,, ,,	—	—
1818	Ja/51/8	,, ,,	—	—
1819	Ta/42/23	Labdh-vidhāna-pūjā	—	—
1820	Nga/47/9/3	Laghu karma-dahana-pūjā	—	—
1821	Nga/47/9/1	Laghu-pañcakalyānaka-vidhāna	—	—
1822	Ja/29/2	Mahāvira arghya	—	—
1823	Nga/78/26/3	Maṅgala	—	—
1824	Ta/42/91	Mantra-vidhi	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	20 0×12 0 4 19 20	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	20 1×15 6 3 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 6 33 37	C	Good	
P	D,Skt /H, Poetry	17 3×13 0 3 13 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 15 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P	D, Skt poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 5×15 9 7 13 19	C	Good 1928 V S	
P	D, H Poetry	20 5×15 9 12 13 29	C	Good	
P	D, H Poetry	21 1×14 0 1 12 13	C	Old	
P	D, H Poetry	16 5×13 5 5 8 24	C	Good	
P	D, Skt Prose	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1825	Nga/31/2/7	Mokṣa-paidi	Banarasidāsa	—
1826	Nga/29/2	Nandīśwara-pūjā	—	—
1827	Nga/28/5	,, ,,	—	—
1828	Nga/44/10/23	,, dvipa-pūjā	—	—
1829	Nga/47/8/8	Navagraha-pūjā	—	—
1830	Nga/27/1	,, ,,	—	—
1831	Nga/36/1	,, ,,	—	—
1832	Ja/51/7	,, ,,	Jinasāgar	—
1833	Nga/46/7	,, ,,	—	—
1834	Ta/39/11	,, ,,	—	—
1835	Nga/47/4/41	Navakāra-panca-tṛiṁśat-pūjā	—	—
1836	Ta/20/1	Nava-pada-kalaśa-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	12 3×00 0 4 16 16	C	Good	
P	D, H Poetry	13 2×21 0 34 17 11	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 6×14 1 23 12 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 28 16 21	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	26 0×16 7 20 19 16	C	Good 1913 V S	
P	D,Skt /H Poetry	13 6×17 8 32 9 26	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 4 13 35	C	Good	It contains chart of nine grahas
P	D, Skt /H Poetry	23 2×15 0 24 16 15	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	20 0×12 0 3 19 20	C	Old	
P	D, Skt, Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	10 9×9 6 25 7 13	Inc	Old	Page no one to thirty seven are missing

1	2	3	4	5
1837	Nga/44/19/4	Neminātha Jayamālā	—	—
1838	Ta/14/37	Nhavana-pūjā	—	—
1839	Ta/42/11	,, ,	—	—
1840	Nga/47/4/37	,, kavya	—	—
1841	Nga/47/5/13	Nirvāna pūjā jayamālā	—	—
1842	Nga/44/9/1	, ,,	—	—
1843	Nga/47/4/33	,, ,,	—	—
1844	Nga/33/4	,, ,,	--	—
1845	Ta/42/21	,, ,,	—	—
1846	Nga/44/10/27	,, ,	Bhagavatidāsa	—
1847	Ta/14/30	,, ,,	—	—
1848	Nga/47/5/5	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	19 5×12 5 2 10 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 9 12 18	Inc	Old	Closing is missing
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	P, Pkt Poetry	16 5×16 0 3 12 19	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	11 0×10 5 8 11 12	C	Good	Sixteeng opening pages are missing
P	D, Pkt / Skt Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 7×15 7 2 18 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	15 2×12 8 5 12 17	C	Old	
P	D; Skt Poetry	16 5×16 0 3 12 19	C	Old	

1	2	3	4	5
1849	Ta/42/42	Nirvāna-pūjā	—	—
1850	Nga/47/8/5	Nirvāna-kṣetra-pūjā	—	—
1851	Nga/47/8/1	,, ,, ,	—	—
1852	Ta/3/34	,, kalyānaka ,,	—	—
1853	Ta/3/37	,, ,,	Rūpacanda	—
1854	Nga/36/2	Nitya-niyama-pūjā	—	—
1855	Nga/37/5	Pada-Lāvani	—	—
1856	Ta/39/4	Padmāvati-pūjā-vidhāna	—	—
1857	Ja/51/13	,, ,,	Cārūkirti	—
1858	Ta/42/35	,, ,,	—	—
1859	Ta/42/37	,, .	—	—
1860	Ta/39/14	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	32 3×19 0 2 33 33	C	Good	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 7 15 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 2 15 18	C	Old	
P	D,H /Skt Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 1 12 31	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	17 8×13 7 24 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	20 8×13 0 4 14 12	C	Old	
P,	D, Skt Poetry	20 0×12 2 2 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 4 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 0×12.0 8 20 16	C	Old	

1	2	3	4	5
1861	Nga/43/6/15	Padmāvatī-pūjā	—	
1862	Nga/41/4	,, ,,	—	—
1863	Ja/51/9	,, vratodyāpana	—	—
1864	Nga/41/1	Pancabālayati-pūjā	—	—
1865	Ta/33	Panca kalyānka-pūjā Pātha	Bhagawāna Prasād	—
1866	Nga/47/4/2	Panca-kalyānaka-pāṭha	Rūpacanda	—
1867	Ta/42/1	,, ,, ,,	,,	—
1868	Nga/14/2	,, ,, Pūjā	—	—
1869	Nga/47/4/82	,, ,, ,,	—	—
1870	Nga/26/2/1	,, ,, dohā	—	—
1871	Ta/5/1	,, ,, pūjā	—	—
1872	Nga/47/8/6	Panca-kumāra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Poetry	17 3×13 0 5 13 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 4 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 5 13 35	C	Good	
P	D, H. Poetry	16 0×9 5 6 7 25	C	Good	
P	D, H Poetry	19 7×15 8 44 17 16	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 8 18 21	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 3 30 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×26 0 24 14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 28 16 21	C	Old	
P	D, H Poetry	30 3×17 5 21 16 16	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	25 0×15 0 17 28 21	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20.8×16 3 4.16.21	C	Old	

1	2	3	4	5
1873	Ja/57/3	Panca-kumāra-vidhāna	—	—
1874	Ta/18	Panca-mangala-pāṭha	—	—
1875	Nga/25/13	,, ,, ,	Rūpacanda	—
1876	Nga/41/2	,, ,	,	—
1877	Ja/26/1	,, meru pūjā	—	—
1878	Ta/3,32	Panca ,, ,,	Dyānatarāya	—
1879	Nga/47/4/23	,, ,,	,,	—
1880	Nga/44/10/21	, ,,	—	—
1881	Ta/42/25	,, ,,	Bhūdhardāsa	—
1882	Nga/47/8/14	,, ,,	—	—
1883	Ta/42/57	,, ,,	Dyānatarāya	—
1884	Ja/57/4	Panca-parmeṣṭi-Arghya	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry/ Prose	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	11 0×11 0 9 13 19	C	Old	
P	D, H Poetry	28 4×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D, H, Poetry	14 5×11 0 14 8 19	C	Good	
P	D, H Poetry	22 0×15 0 22 18 14	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Good	
P	D, H poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	32 3×19 0 1 32 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 3 13 15 17	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 0 33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32 3×20 1 1 13 35	C	Good	

1	2	3	4	5
1885	Ta/3,23	Panca-parmeṣṭhi Jayamālā	—	—
1886	Ta/33/2	,, ,, Pāṭha	—	—
1887	Ta/5/8	,, ,, Pūjā	Dharmabhūṣaṇa	—
1888	Nga/47/9/2	,, ,, ,,	—	—
1889	Nga/33/3	,, ,, ,,	—	—
1890	Nga/14/1	,, ,, ,,	Yaśonandi	—
1891	Nga/37/7	Pārśwanātha Kavitta	—	—
1892	Nga/48/1/1	,, Pūjā	—	—
1893	Nga/47/5/9	,, ,,	—	—
1894	Ja/51/10	,, ,,	—	—
1895	Ja/51/5	,, ,,	—	—
1896	Nga/47/4/3	Prabhāti-Maṅgala	Rūpacanda	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P	D; Pkt Poetry	22 5×15 0 2 12 33	C	Good	
P	D, H Poetry	19 7×15 8 4 17 16	Inc	Good	
P	D, Skt Poetry	25 0×15 0 15 23 15	C	Good	
P	D, H Poetry	20 5×15 9 8 13 19	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	23 5×14 5 18 16 11	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×26 0 39 14 25	C	Good	
P	D, H Poetry	12 0×18 3 4 17 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	13 7×12 0 14 10 14	C	Old	1 to 11 pages are missing.
P	D, H Poetry	16 5×16 0 5 12 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 4 13 35	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1897	Ta/42/34	Pratiṣṭhā-tilaka	Narendra Sena	—
1898	Ta/3/52	Pūjā-māhātmya	Vinodilāla	—
1899	Nga/44/2	,, Saṁgraha	—	—
1900	Ja/19	,, ,,	—	—
1901	Ja/29/5	,, Vidhāna	—	—
1902	Nga/46/4	Punyāha-Vācana	—	—
1903	Ja/51/2	,, ,,	—	—
1904	Nga/48/19	,, ,,	—	—
1905	Nga/43/6/14	,, ,,	—	—
1906	Ta/3/1	,, ,,	—	—
1907	Nga/46/11/1	,, ,,	—	—
1908	Nga/44/5	Puṣpāñjali Pūjā	Lalitakīrti	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	32 3×19 0 15 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	18 5×13 5 102 13 26	Inc	Old	The Mss. is not in order
P	D, H Poetry	23 7×15 0 27 20 17	C	Good	
P	D, H Poetry	21 1×14 0 119 13 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	36 0×19 0 5 12 44	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×20 1 4 13 34	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 8×14 0 16 10 15	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	17 3×13 0 5 13 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	21 0×10 9 16 8 18	C	Good 1866 V S	
P	D, Skt Prose	36 4×19 0 1 12 39	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20 5×15 5 3 12 26	C	Good	

1	2	3	4	5
1909	Ja/34	Ratnatraya-Pūjā	Dyānatarāya	—
1910	Ta/42/62	,, ,,	,,	—
1911	Ta/42/12	,, ,,	—	—
1912	Ta/3/31	,, ,,	Dyānatarāya	—
1913	Nga/41/Kha	,, ,,	—	—
1914	Nga/47/4/27	,, ,,	Dyānatarāya	—
1915	Ta/14/9	,, ,,	Narendra Sena	—
1916	Ta/38/2	,, Jayamālā	—	—
1917	Ja/34/3	Ravivrata-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1918	Nga/47/4/1	,, Pūjā	—	—
1919	Ta/42/33	,, ,,	—	—
1920	Nga/48/10	Ṛṣi-maṇḍala Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	19 0×14 9 3 15 15	C	–	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Good	
P	D,Skt /H. Poetry	14 5×11 0 5 13 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 9 1 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×12 5 6 8 13	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	19 0×14 9 11 17 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18.0 4 18 21	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	12 0×16 5 7 13 14	C	Old 1818 V S.	Hemarāja seems to be the copier of this Mss

1	2	3	4	5
1921	Nga/47/3	Ṛṣi-maṇḍala Pūjā	—	—
1922	Ta/5/5	,, ,,	—	—
1923	Nga/13/1/2	,, ,,	—	—
1924	Nga/22	Sahasranāma ,,	Sikhara-Canda	—
1925	Ja/51/1	Sakali-Karana	—	—
1926	Ta/16/2	,, ,, Vidhi	—	—
1927	Ta/16/5	,, ,, ,,	—	—
1928	Nga/44/6	,, ,, ,,	—	—
1929	Nga/38/15	Samādhi-marana	Dyānatarāya	—
1930	Ja/17	Sāmāyika Pāṭhā	Jayacanda	—
1931	Nga/36/3	,, Vacanikā	,,	—
1932	Ta/6/20	Samavaśarna	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt. Poetry	20 0×16 0 25 13 20	C	Good 1956 V S	
P	D, Skt Poetry	25 0×15 0 18 25 20	C	Good	There are four pages blank.
P	D, H Poetry	24 4×18 5 ?5 21 20	C	Good	
P	D, H Poetry	27 0×17 6 8 14 35	C	Good 1942 V S.	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×20 1 2 13 34	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	15 5×9 5 18 6 18	Inc	Old	Last pages are missing
P	D, Skt Prose	15 5×9 5 22 9 25	C	Old 1921 V S	
P	D, Skt Poetry/ Prose	20 0×16 0 9 13 14	C	Good 1955 V S	
P	D, H Poetry	15 7×9 0 3 9 22	C	Good	
P	D, H Poetry	23 5×11 0 59 9 29	C	Good	
P	D, H Poetry	20 0×12 0 76 15 12	C	Good	
P.	D, H. Poetry	22.2×14 7 1 13 18	Inc	Old	Closing pages are missing

1	2	3	4	5
1933	Nga/31/2/4	Samavasarana	—	
1934	Ta/39/21	Sammedācala Pūjā	—	—
1935	Ta/42/41	Sammeda-Śikhara Pūjā	Rāmcandra	—
1936	Nga/33/6	,, ,, ,,	—	—
1937	Ja/33/6	,, ,, ,,	—	—
1938	Ta/3/14	,, ,, ,, Vidhāna	Gangādāsa	—
1939	Nga/47/8/10	,, ,, Pūjā	—	—
1940	Nga/47/8/4	,, ,, ,,	—	—
1941	Nga/44/10/24	,, ,, ,,	—	—
1942	Nga/47/8/2	Samuccáya-Caubis-Pūjā	—	—
1943	Ja/56	Śāntinātha-Pūjā	—	—
1944	Nga/46/12/3	,, ,,	—	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	12 3×16 3 14 13.14	C	Good 1974 V S	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 24 18	C	Old 1819 V S	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	23 9×13 3 9 18 12	C	Good	
P	D, H Poetry	19 0×14 9 24 12 17	C	Old 1920 V S	
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 8 12 36	C	Good	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 16 15 17	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 21 15 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 5 13 22	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 4 15 18	C	Old	
P	D, H Poetry	28 8×15 0 9 22.20	C	Good	
P.	D, H. Poetry	22 5×13 0 5.18 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1945	Nga/47/4/39	Śānti-pāṭhā	—	—
1946	Ta/3/24	,, ,,	—	—
1947	Nga/48/23/4	,, ,,	—	—
1948	Ta/42/4	,, ,,	—	—
1949	Nga/43/6/18	Śānti Cakra-pūjā	—	—
1950	Nga/43/4/1	Śāntidhārā	—	—
1951	Ta/42/88	,,	—	—
1952	Nga/46/11/2	,,	—	—
1953	Ta/42/27	Saptarṣi-pūjā	—	—
1954	Ta/14/41	,, ,,	—	—
1955	Ta/41	,, ,,	—	—
1956	Nga/26/2/34	Saraswati-pūjā	Brahma Jinadāsa	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 1 12 00	C	—	
P	D, Skt Poetry	16 8×12 8 3 11 12	C	Old	
P.	D, Skt, Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	17 3×13 0 7 13 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	16 3×14 0 3 11 20	Inc	Old	Last page is missing
P	D, Skt poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Prose	36 4×19 0 2 12 39	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 3 12 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	12 5×8 6 5 9 19	Inc	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	30 3×17 5 4.16.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1957	Ta/42/19	Śāstra-pūjā	Dyānatarāya	—
1958	Ta/39/19	„ „	Malayukīrti	—
1959	Nga/41/2/6	„ „	—	—
1960	Nga/47/4/36	„ „	—	—
1961	Ta/14/29	„ „	—	—
1962	Nga/14/8	„ „	—	—
1963	Ta/3/20	„ Jayamālā	—	—
1964	Nga/47/8/12	Satrunjayagiri-pūjā	Viśvabhūṣana	—
1965	Nga/14/6	Siddha-pūjā	—	—
1966	Nga/44/10/17	„ „	—	—
1967	Ta/35/3	„ „	—	—
1968	Ta/14/6	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	32 3×19 0 2 33.37	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	20 0×12 0 2 24 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 7 9 17	C	Good	
P.	D,Skt /H. Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 5 12 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 8×26 0 4 14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 2 12 33	C	Good	
P,	D, Skt Poetry	20 8×16 3 16 16 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 8×26 0 6 14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 7 13 22	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15.5×12 6 5 10 16	C	—	
P.	D; Skt Poetry	15 2×12 8 6 12 15	C	Old	

1	2	3	4	5
1969	Ta/18/4	Siddha-pūjā	—	—
1970	Nga/47/4/19	,, ,,	Khuśālacanda	—
1971	Nga/41/2/3	,, ,,	—	—
1972	Ta/3/26	,, ,,	Khuśālacanda	—
1973	Nga/48/23/3	,, ,,	—	—
1774	Nga/48/18/2	,, ,,	—	—
1975	Nga/48/12/3	,, ,,	—	—
1976	Ta/42/6	,, ,,	—	—
1977	Nga/26/2/9	,, ,,	—	—
1978	Ja/29/3	,, ,,	—	—
1979	Ja/51/6	,, ,,	—	—
1980	Ta/3/13	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	25 0×15 0 4 19 21	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	29 8×15 5 111 14 31	Inc	Old	Closing para is missing.
P	D, H Poetry	20 8×16 3 7 15 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	25 0×15 0 5 28 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 0×15 0 29 25 16	C	Good	
P	D, Skt poetry	25 0×15 0 5 28 20	C	Good	The chart of tirthankara is on its last page
P	D, Skt Poetry	16 5×16 0 6 12 19	C	Old	
P	D,H /Skt. Poetry	23 3×19 0 64 18 23	C	Good 1952 V S.	Published.
P.	D, H Poetry	22 6×13 8 100 12 36	C	Good 1890 V S.	Copied by Raghunātha Sharmā.
P	D; Skt Poetry	30 2×20 0 16 37 33	C	Old	
P	D; Skt Poetry	20 8×26 0 3 14 25	C	Good	

1	2	3	4	5
2017	Nga/26,2/10	Vidyamāna bisa-Tirthaṅkara-pūjā	—	—
2018	Nga/24	„ „ pūjā vidhāna	Śikharacanda	—
2019	Ta/42/5	„ „ „	—	—
2020	Ta/11/5	Vrata-Vidhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Poetry	15 2×12 8 4 12 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 6 13 22	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	22 5×15 0 5 12 31	C	—	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 3 21 18	Inc	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	13 0×19 7 33 15 15	C	Good	
P	D, H Poetry	18 0×11 5 4 7 18	C	Good 1965 V S	
P	D, H Poetry	16.5×16 0 6 12 19	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	22 0×15 0 2 12.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
2005	Nga/17/1/2	Śyāmala-yakṣa-pūjā	Ajita Dāsa	—
2006	Ta/42/32	Tattvārtha-sutrāṣṭaka-jayamālā	—	—
2007	Ja/9/7	Terahadwipa-pūjā	—	—
2008	Nga/47/8/9	Tina-loka-saṁvandhi-pūjā	—	—
2009	Ta/5/11	Tisa-caubisi ,,	—	—
2010	Ta/5/3	,, ,, ,,	Bhāvaśarmā	—
2011	Ta/5/2	Udyāpana	—	—
2012	Nga/47/5/10	Vardhamāna-pūjā	Vṛndāvana	—
2013	Ja/20	Vartamāna caubisi-pāṭha	,,	—
2014	Ta/39	,, ,, pūjā	—	—
2015	Ta/24/5	,, jinanāma	—	—
2016	Nga/14/5	Vidyamāna-bisa-tirthankara pūjā	—	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 4 12 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 6 13 22	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	22 5×15 0 5 12 31	C	—	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 3 21 18	Inc	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	13 0×19 7 33 15 15	C	Good	
P	D, H Poetry	18 0×11 5 4 7 18	C	Good 1965 V. S	
P	D, H Poetry	16 5×16 0 6 12 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 0×15 0 2 12 30	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 1.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
2005	Nga/17/1/2	Śyāmala yakṣa-pūjā	Ajita Dāsa	—
2006	Ta/42/32	Tattvārtha-sutrāṣṭaka-javamālā	—	—
2007	Ja/9/7	Terahadwipa-pūjā	—	—
2008	Nga/47/8/9	Tina-loka-samvandhi-pūjā	—	—
2009	Ta/5/11	Tisa-caubisi ,,	—	—
2010	Ta/5/3	,, ,, ,,	Bhāvaśarmā	—
2011	Ta/5/2	Udyāpana	—	—
2012	Nga/47/5/10	Vardhamāna-pūjā	Vṛndāvana	—
2013	Ja/20	Vartamāna caubisi-pāṭhā	,,	—
2014	Ta/39	,, ,, pūjā	—	—
2015	Ta/24/5	,, jinanāma	—	—
2016	Nga/14/5	Vidyamāna-bisa-tirthankara pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	25 0×15 0 4 19 21	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	29 8×15 5 111 14 31	Inc	Old	Closing para is missing.
P	D, H Poetry	20 8×16 3 7 15 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	25 0×15 0 5 28 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 0×15 0 29 25 16	C	Good	
P	D, Skt poetry	25 0×15 0 5 28 20	C	Good	The chart of tirthankara is on its last page
P	D, Skt Poetry	16 5×16 0 6 12 19	C	Old	
P	D,H /Skt Poetry	23 3×19 0 64 18 23	C	Good 1952 V S	Published.
P	D, H Poetry	22 6×13 8 100 12 36	C	Good 1890 V. S	Copied by Raghunātha Sharmā.
P	D, Skt Poetry	30 2×20 0 16 37 33	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	20 8×26 0 3 14 25	C	Good	

1	2	3	4	5
2017	Nga/26,2/10	Vidyamāna bisa-Tirthaṅkara-pūjā	—	—
2018	Nga/24	" " pūjā vidhāna	Śikharacanda	—
2019	Ta/42/5	" " "	—	—
2020	Ta/11/5	Vrata-Vidhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt / Pkt Poetry	30 3 × 17,5 5,16 16	C	Good	
P.	D: H Poetry	29.0 × 17 0 49 21 16	C	Good 1929 V S	
P.	D, Skt Poetry	32 3 × 19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D: H Poetry	14 5 × 11.7 12 11 22	C	Good	

परिशिष्ट

१- पुराण, चरित, कथा

९९८ अनन्त चौदश-कथा

Opening : श्री जिनवर [illegible], शारद प्रनमो अघनीगंमो ।
भावें गणधर प्रनमो पाय, भावें [illegible] श्री गुरुराय ।।

Closing : जे कोइ इह व्रत भावें करें, ते नर मुक्तरमण कर धरें ।
श्री भूषण पद प्रनमों सही, कथा ग्यानसागर मुनि कही।।५६।।

Colophon : इति अनतव्रत कथा समाप्तम् ।

९९९. अनन्तचौदश-कथा

Opening : देखें, क्र० ९९८ ।

Closing : देखें क्र० ९९८ ।

Colophon : इति श्री अनत चौदश की कथा समाप्तम् ।

१०००. अनन्तव्रत कथा

Opening : अनत देव बंदो सदा, प्रनमों कर बहु भाव ।
सुर असुर सेवत सदा, होइ मुकति परभाव ।।१।।

Closing : तब इह कथा करी बिसताइ, जैसी शास्त्र में करी बनाइ ।
विध पूरब पालें जो कोइ, तांको मुक्ति सिद्धि [illegible]
।।३५।।

Colophon : इति अनंतव्रत कथा ।

१००१. [illegible] कथा

Opening : वृषभ आदि चौबीस जिन, नमूं ताहि सिरनाय ।
[illegible] गुरु [illegible] नमूं, [illegible] नाय ।।

Closing : [illegible] सोय ।
[illegible] होय ।।६६।।

Colophon : इति श्री [illegible] की कथा समाप्तम् ।

१००२. अष्टान्हिका कथा

Opening श्री जिन सारद गणधरपाय, — - ·· — ।
व्रत अष्टान्हिका कथा विचार, भाषू आगमनें अनुसार ।।१।

Closing : ए व्रत जै नरनारी करैं, ते भवसागर से तरैं ।
श्री भूषण गुरुपद आधार, ब्रह्म ज्ञानसागर कहै इह सार।।५३।

Colophon : इति श्री अठाई व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

१००३. अष्टान्हिका कथा

Opening यादव वंसि नेमकुमार, भाव धरि वंदो भवतार ।
कहो अष्टान्हिका सार ।।१।।

Closing : तस दिक्षित बोले ब्रह्मचारी हरषनिधि शिखामण सारी ।
भणो सुणो नरनारी ।।१६।।

Colophon इति नंदीश्वर व्रत कथा संपूर्णम् ।

१००४. अठाईकथा

Opening पंचपरमेष्टी चरन कूं धारो निस दिन ध्यान ।
सो मेरी रक्षा करो जातैं होय कल्यान ।।

Closing : श्रावक धर्म सुजान, वतन लालपुर जानियो
भैरो कही बखान, भव्य जन सुनियै चित्त दे ।।७६।।

Colophon : इति श्री भैंरों जी कृत अठाई रासा समाप्तम् ।

१००५. आदित्यवार-कथा

Opening रिसहणाह प्रणमौं जिनंद जा प्रसाद मन होय आनंद,
प्रणमौं अजित अथासै पाप दुख दालिद भव हरै संताप ।।

Closing : कर्म्म खिप्यो कारण व्रत भई तब यह धर्मकथा मन ठई ।
मनवच भाव सुनै जो कोय सो नर स्वर्ग देवता होय ।।

Colophon : इति श्री आदित्यवार कथा जी समाप्तम् ।

१००६. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, १००५ ।

Closing कमक्षय कारज इह मनि भई तब या धर्म्म कथा भरनई ।
मूर्ति धरि भाव सुणै जो कोइ सो नर स्वर्ग देवता होई ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ गुण-महिमा युक्त रविवार व्रत कथा सपूर्णम् ।

१००७. आदित्यवार-कथा

Opening । श्री सुखदायक पास जिनेस । प्रणमौ भव्यपयोज दिनेस ॥

Closing यह व्रत जो नरनारी करै, सो बहु नहि दुरगति परै ।
भाव सहित सुरनरसुख लहै, बार बार जिन जी यो कहै ॥२५

Colophon . इति श्री रविव्रत कथा समाप्ता ।

१००८. आदित्यवार-कथा

Opening देखें, क० १००७ ।

Closing । देखें, क० १००७ ।

Colophon । इति श्री रवि कथा जी लघु समाप्तम् ।

१००९. आदित्यवार-कथा

Opening । प्रथम सुमिरि जिन चौबीस, चौदह सै त्रैपन जु मुनीस ।
सुमिरौ सारद भक्ति अनत, गुरु देवेन्द्र जु कीर्ति महत॥१॥

Closing । रविव्रत तेज प्रताप भई लछिमी फिरी आई
कृपा करि धरनेंद्र और पद्मावती आई ।

जहाँ ' तहाँ रिद्धि सब छोर जू पाई
मिले कुटुम परिवार भले सज्जन मन भाई।
पढे सुने जे प्रात उठि नरनारी जु सुबुद्धि,
तिनकौ धरनेंद्र पद्मावति देहि सर्वथा सिद्धि ॥

Colophon : इति श्री रविवार कथा सम्पूर्णम्।

१०१०. आकाश पचमी-कथा

Opening : पडिवा प्रथम कला घट जागी, परम प्रतीत रीत रस पागी।
प्रतिपदा परम प्रीत उपजावै, वह प्रतिपदा नाम कहावै ॥

Closing : काष्टासघ सरोज प्रकाश, श्री भूषण गुरु धम निवास।
नाम शिष्य बोलै चग, ब्रह्म ज्ञानसागर मन रग ॥

Colophon. इति आकाश पचमी कथा

१०११. आकाश-पचमी-कथा

Opening श्री जिनसासन पय अनुसरू गणधर निज वदिन करू।
साध सत प्रणमू पाय, जे हुयी कथा अनापम थाय ॥१॥

Closing देखे— क्र० १०१०।

Colophon इति श्री आकाश पचमी व्रतकथा समाप्तम्।

१०१२ भविष्यदत्त-कथा

Opening : स्वामी चद्रप्रभु जिननाथ, नमोचरण धरि मस्तक हाथ।
लाछन चन्द्रौ चद्रमा जासु काया काल अधिक प्रगासु ॥१॥

Closing : यह कथा संपूरन भई, सकल भव्य को मगल भई।
पढ़े सुने जो करे बखाण, सो पावे शिवपुरि पद थाण ॥
॥११६॥

Colophon : इति श्री श्रुतपंचमी कथा भवदत्त चरित्र सपूर्णम् । संवत् १८४८ वर्षे मिति पौस वदि ६ श्री पार्श्वचद्र सूरि गछो श्री गुरुजी श्री १०८ श्री चद्रभाण जी तत् शिष्य लिख्यतु ज्ञासिरदारमल्लेन श्री मफातपुरनगरमध्ये चतुरमासकृतम् ।

१०१३ चदकथा

Opening : सिद्धि सुबुद्धि दातार तुव गौरीनंदकुमार ।
चद कथा आरम्भ कीयो सुमति दियो अपार ।।

Closing उबुधरेषा अचपला जोग, तीजा और परमला भोग ।
. ... आपणो राज ।।

Colophon . इति चदकथा सपूर्णम् ।

१०१४ चतुर्दशीकथा

Opening दखे क्र० ६६८ ।

Closing : देखे– क्र० ६६८ ।

Colophon श्री चतुर्दशी व्रत कथा समाप्तम् ।

१०१५. चतुर्वचनोच्चारिणी कथा

Opening : विक्रमादित्य।रूप परदेशिद्विजाच्चतुर्वचनानि ।
वाचयति यस्तस्मात् हारयित्वा तमेव परिणमति ।।

Closing : चतुर्वचनां महोत्सवेन परिणीय स्वनगरे समानीय भोगा-
नुभवन कुर्वन् कर्म्मणाकाल महाश्रेयो युवतो अभूत् ।

Colophon इति चउबोली कथा सपूर्णम् ।

१०१६. दानकथा

Opening · देव नमौं अरहत सदा अरु सिद्ध समूहन को चितलाई,
सूरि अचारज की प्रनमौं, प्रणामौं जु उपाध्याय के नित पाई ।

साधुसमों निरग्रन्थ मुनी गुरु, परम दयाल महा सुखदाई,
नि पक्ष गुरु एन मैं सुनमू इनकैं सुमरें भवताप नसाई ॥१॥

Closing : दान कथा पूरण भई, पढ़ै सुनें सब कोय ।
दुख दरिद्र नासै सबै, तुरत महासुख होय ॥७६॥

Colophon : इति श्रीदानकथा भारामल्लकृत सपूर्णम् ।
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, क० २६ ।

१०१७. दशलाक्षणी कथा

Opening : धर्म जु दश लाछन कहे तिनको कहू बखान ।
जो जिय निहचै चित्त धरें ताको होय कल्यान ॥१॥

Closing : इह विध व्रत नर जो करैं, पावें शिव पद थान ।
बूडे दुख संसार के, भैरौं कहै बखान ।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम् ।

१०१८ दशलाक्षणी कथा

Opening : ऋषभनाथ प्रणमू सदा गुरु गनधर के पाय ।
तीन भवन विख्यात है सब प्रानी सुखदाय ॥१॥

Closing : सत्रह से इक्यावनवा भादव मास सुखमार ।
शुक्ल तिथ त्रयोदशी सुभ रविवार विचार ॥६१॥
भूला चूका होय जो लीजो सुकवि सुधार ।
मोह दोस दीजे नही करी जु भव हितकार ॥६२॥

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम् ।
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, पृ० २८ ।

१०१९. दशलाक्षणी कथा

Opening : प्रथम नमन जिनवरनैं करू, सादर गणधर पद अनुसरू ।
दशलाक्षिण व्रतकथाविस्तार, भाषूं जिन आगम अनुसार ॥१॥

Closing : भट्टारक श्री भूवणकीर, सकलशास्त्र पूर्ण गम्भीर ।
तस पद प्रणमी बोलैसार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ।।५१।।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा सम्पूर्णम् ।

१०२०. दशलाक्षणी कथा

Opening : देखें— क० १०१६ ।

Closing : देखें—क० १०१६ ।

Colophon : इति श्रीदसलाक्षणी व्रत कथा संपूर्णम् ।

१०२१. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening : देखें—क० १०१६ ।

Closing : देखें—क० १०१६ ।

Colophon इति दशलाक्षणी व्रत कथा ।

१०२२. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening : — .. ..
पंचामृत अभिषेक उदार ।
जिन चौविस सतरमो भडार,
अष्ट विध पुजा करो परकार ।।१७।

Closing : देखें—क० १०१६ ।

Clolophon : इति श्री दसलाक्षणी व्रत कथा समाप्तम् ।

१०२३. दर्शनकथा

Opening : नमों देव अरहंत पद, नमौं सारदामाय ।
नमौं गुरु निरग्रन्थ कौ, अघहर मंगल दाय ।।

Closing : दरसन कर पूरन भयौ मनोवति को सुखदाय ।
ताम कथा फल पायकै शुभ गति लई सिवदाय ।।५७०।।

Colophon इति श्री दरसन कथा सम्पूर्णम् ।

विशेष— २०१६ पर उल्लिखित पद के Author भारामल्ल है। लगता है कि पद इसी से संयुक्त है अतः इसका भी लेखक भारामल्ल को ही होना चाहिए है।

१०२४. धर्म-पापबुद्धि कथा

Opening : अयो यानगरे राजा सिंहसेनो राज्य करोति।
तन्मत्रीबुद्धिसेनो धर्म्मन्याय मत्र करोति।
राजा दुराचारासत्यपरधनदारहरणलक्षणान्याय विदधाति।

Closing : . तपो विधाय यथा स्व स्वर्गेषु जग्मु ।
सर्वत्र धर्मबुद्धि करणीया। सर्वलोकस्वायमुपदेश ।

Colophon इति धर्मपापबुद्धयो कथा सपूर्णम् ।

१०२५. धूपदशमी कथा

Opening : पच परम गुरु वदन करू, ताकरि मम अघ सब हरू ।

Closing श्रुतसागर ब्रह्मचार को ले पूरव अनुसार।
भाषासार बनायके सुखत खुशियाल अपार ॥१४३॥

Colophon इति सपूर्णम्। संवत् १६४८ भादवा सुदी २ लिखाइत धंमराज जी लिखित मदनगोपाल ने कलकत्ता जैन मंदिर मध्ये ।

१०२६ दुधारसव्रत-कथा

Opening : प्रथम नमौं श्रीवीरजिनंद वदौं सदगुरु पद अरविंद ।
जासु प्रसाद कहूं शुभकथा, गोतम गणधर भाषी यथा ॥

Closing श्रेणक आगल गौतम स्वामि एह कथा भाषी अभिराम।
ए दुधारस व्रतनी कथा पद भनै मैं भाषी तथा ॥४३॥

Colophon : इति दुधारस व्रत की कथा समाप्तम् ।

१०२७. हरिवंशपुराण

Opening सिद्ध सपूर्ण तत्वार्थं सिद्धे कारणमुत्तमम् ॥
प्रशस्त दर्शनज्ञान चरित्रप्रतिपादनम् ॥

Closing · सकोडी कर चरणे उग्रग्रीवा अहो मुहादि ॥
हीज सुहपावें लहा त सुह पावेहि तुह्य हु जनए ॥

Colophon · इतिश्री हरीवस पुराण की भाषा चौपाई बध सपूर्णम् ।
देखे, जे० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६ ।

१०२८. हरिवंशपुराण

Opening : देखे, क्र० १०२७ ।

Closing ·· · और अरिष्ठा पाचवां नरक उस विषे इद्रन की भूमि की मुटाई कोस ३ । और श्रेणीवद्धो की कोस ४ । और प्रकीर्णको की कोस सात ७॥ २१॥

Colophon अनुपलब्ध

१०२९ हरिवंशपुराण

Opening महाधीर बहुश्रुत विराजै श्रुतकेवली जिनश्रुतका व्याख्यान करैं और वा मडप के समाप चार मडप · ·· ।

Closing : देखते मनुष्य होय निरजन पद पावेंगी सातवी पटरानी गौरी · ।

Colophon · अनुपलब्ध

१०३०. जम्बूचरित्र

Opening श्री अरिहत नमो सदा, अरी न आवै पास ।
अष्टकर्म दूरे टले आठी गुन परकाम ॥

Closing　　उपर रचा मुबराज ने, श्री सीमधर देव ।
भाव भगति चित लायके सब जन करते सेव ।५२३।।

Colophon　　इति जम्बूचारित्र जी सम्पूर्णम् । लिखित राज्य कुमारचद आरामपुर नगरे स्वगृह सवत् १९३३ मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्या ७ तिथौ रविवासरे निजपठनार्थ पुन भव्यजीव पठनार्थम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

१०३१ लब्धिविधानकथा

Opening　　प्रथम नमौं श्री जिनवर पाय दूजै प्रणमौं सारदमाय ।
लब्धि विधान तणी सुभ कथा भाखू जिन आराम छै यथा ।१।।

Closing　　श्री भूषण गणनायक गीर　　　होमी सीव ।।५९

Colophon　　इति श्री लब्धि विधान कथा समाप्तम् ।

१०३२ महावीर-पुराण

Opening　　इण विधि कहिनी जबु कुमार मुनि सो कहयो निरधार ।
मागी के षिजनू एकनारी मरनू चाहियौ ततकार ।२१।

Closing　　यातै श्री जिनराज के चरण कमल सिरनाय,
राखौ भवि उरके विषै सुरग मुक्ति पदपाय ।।६३।।

Colophon　　इत्यार्षे त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीतानुसारेण श्रीउत्तरपुराणस्य भाषाया श्रीवर्द्धमानपुराण पारम्भन तम् । इति श्री उत्तरपुराण समाप्तम् । शुभ सम्वत् १८८९ शाके १७३४ मासोत्तमेमासे शुक्लेपक्षे त्रयोदश्या बुधवासरे पुस्तकमिद पूर्णम् । रघुनाथ मर्मगे लेखि पट्टनपुरगायत्राः मध्य निवसति । लेखक पाठकयो मगलमस्तु ।

१०३३ नेमिनाथ विवाह

Opening　　एक समे जो समुद्र विजै छारि कामधनेम को व्याह रचो है
गावत मगलाचार वधु कुल मे सबके जो उछाह मचो है,

तेल चढ़ावन को जुवती अपने-अपने कर थाल सचो है,
नेग करैं सब व्याहन को घर मडप चित्र विचित्र खिचो
है ।१।।

Closing : नेम कुमार ने जो गली घो दिन छपन ता छदमस्त रहो है,
केवल ज्ञान भएव प्रभु को सब आठवो भूत महानुमहो है,
सात मैं वष विहार कीयो उपदेश ते धम महानुमहो है,
निर्वाण गये मुनि पाष सैं छपन लाल विनोदिने सग
गही है ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ जी कोव्याहुला सपूर्णम् ।

१०३४. नि:काक्षित-गुण कथा

Opening : प्रनमू आदि जिनेद को फन गुरु गौतमराय ।
सारदमाय प्रसादतै कहू कथा मन लाय ।।१।।

Closing : नि काक्षित गुन की कथा भैं मैं कही बखान ।
जो निहचै कर पाल है, पावै शिव पद थान ।।

Colophon : इति नि काक्षितगुन कथा समाप्तम् ।७६।।

१०३५ निशल्याष्टमी कथा

Opening : देखे, क्र० १०३६ ।

Closing : काष्टासघ वलात्रगचद श्री भूषण गुरु परमानन्द ।
तस पद पकज मधु करतार, ज्ञानसमुद्र कथा कहैं
बिचार ।।६६।।

Colophon : इति निशल्याष्टमी कथा ।

विशेष - इसमे निर्दुख सप्तमी कथा भी है ।

१०३६ निर्दोषसप्तमी कथा

Opening : श्री जिनचरण कँमल अनुसर, सारद निज गुरु मनमेधरू ।
निरदोष सप्तमीकी कथा, बोलो जिमउ गम छै यथा ।१।।

Closing : ए व्रत जे नरनारी करैं, ते नर भवसागर उत्तरैं ।
अजर अमर पद अविचल लहै, ब्रह्मज्ञानसागर इम कहै॥४१॥

Colophon : इति श्री निरदोष सप्तमी कथा समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ७८ ।

१०३७ पचमी कथा

Opening : वंदो श्री जिनराज के, चरण कमल गुणहीर ।
भव सागर तारण तरण, शरण हरण पर पीर ॥१॥

Closing : हस्तिकंनिपुर मे यह सची, श्री सुरेन्द्रभूषण रची ।
यह विधि अनुपाले जो कोई, सो नरनारी अमर
पद् होई ॥८०॥

Colophon : इति पचमी कथा समाप्ता ।

१०३८ पार्श्वपुराण

Opening मोह महातम दलन दिन तप लक्ष्मी भरतार,
तैं पारस परमेस हो उ सुमति दातार ॥१॥

Closing सवत् सत्रह में समैं और नवासी लीय ।
सुदि असाढ तिथि पंचमी ग्रन्थ समापत कीय ॥

Colophon इति श्री पार्श्वनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री पार्श्वपुराण जी बाबू महावीर प्रसाद मनोहरदास के
वास्ते लेखक लाला चन्नुलाल लिखा सन् १२६३ साल सलोमों
के रोज पूरा हुआ ।
देखे जै० सि० भ० ग्र० क० ६१ ।

१०३९ पार्श्वपुराण

Opening बीज सरिख फलभोगवें जो किसान जगमाहि ।
त्यो चक्री नृप सुख करै धर्म विसारै नाहि ॥

Closing : सोलह कारण भावना परमपुन्य को खेत ।
भिन्न भमो लहो तीर्थङ्कर पद हेत ॥

Colophon अपूर्णलब्ध ।

१०४०. रत्नत्रयकथा

Opening श्री जिन चरण कमल नमूं, सारदे प्रणमी अघ निगमू,
गौतम केरा प्रणमू पाय, जेहथी वहुविधि मगल थाय ॥१॥

Closing यामें मणि माणिक्य भडार पद-पद मंगल जयजयकार ।
श्री भूषणगुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञान बोलें सुविचार ॥४५॥

Colophon इति श्री रत्नत्रयकथा सम्पूर्णम् ।

देखें, जैं० मि० भ० ग्र० I क्र० १०३।२

१०४१. रत्नत्रयकथा

Opening देखें, क्र० १०४० ।

Closing देखें, क्र० १०४० ।

Colophon इति रत्नत्रय कथा ।

१०४२. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखें, क्र० १०४० ।

Closing देखें, क्र० १०४० ।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयकथा संपूर्णम् ।

१०४३ रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening देखें, क्र० १०४० ।

Closing : कुअवरनि स ~ ~ होए।
व्रत दुनीया ले नर सोऐ।
पुण्या तणो संच भडार
पर भव पाव मोक्षि उवार ॥२७॥

Colophon : नहीं है।

१०४४. रविव्रतकथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेश, प्रणमौ भव्य पयोज दिनेश।
सुमरो सारद पद अरविंद, विनकर व्रत प्रगटौ सानंद ।१।

Closing : करम रेख कारणं मति मंद, तंव इहु धर्म कथा अरु ठइ।
मंनि धरि भाव सुणै जो कोइ, सो नर स्वर्ग देवता
होइ ॥१४८॥

Colophon : इति रविव्रत कथा।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० १०५।

१०४५. रविव्रतकथा

Opening : देखें, क्र० १०४४।

Closing : यह व्रत जो नरनारी भानु कीरति मुनिवर यो
कहै ॥२४॥

Colophon इति रविव्रत कथा संपूर्णम्।

१०४६. रविव्रतकथा

Opening : चौबीसंतीर्थंकर जी कू नमस्कार कर मैं रोटतीज कथा व्रत कहिए है। इहु जम्बूद्वीप है तामै भरत क्षेत्र है तामै आर्य खण्ड है, चम्पापुरी नामा नगरी बसै है।

Closing देखें, क्र० १०४५।

Colophon इति रविव्रत कथा सपूर्णम् ।

बिशेष—इसमे रोटरीज व्रत कथा भी सम्मिलित है ।

१०४७ रात्रिभोजन-त्याग-कथा

Opening समोसरन सोभा सहित, जगत पूज्य जिनराज ।
नमू त्रिविध भव उदधि कौं त्यारन विरध जिहाज ॥१॥

Closing कथामाहि चउपई करै कवि बीनती ॥१८॥

Colophon इति रात्रि भोजन कथा तथा नागसिरी चरित्रनी भोजन त्याग व्रतकथा समाप्तम् । मिति पौह शुक्ल पदरस १५ । सवत् १९५१ का । शुभ लिख्यत अमीचद श्रावक जैसवाल पालम का वासी ।

१०४८ रोहिणी-कथा

Opening वासपूज्य जिन नत्वा कथा वक्ष्ये जिनागमात् ।
दुर्गधा च व्रतेनाभूद्रोहिणी पुण्यरोहिणी ॥

Closing श्रीगौतममुखकथा श्रुत्वा श्रेनिक सहर्षेग्रहमागता ।
अन्योपि कोपि रोहिणी विधान करोति नारि वा नरो वा सेवविधान प्राप्नोति ॥

Colophon इति रोहिणी कथा ।

१०४९ रोहिणी-कथा

Opening वासुपुज्य जिनराज भवदधि तरण जिहाज सम ।
भव्य लहे सुख साज नाम लेत पातिक हरे ॥

Closing रोहिनि व्रतु पाल जो कोई, सो नर नारि अमर पद होई ।
मन वच काय सुध जो धरै क्रमते मुक्ति वधु सुख भरै ॥

Colophon . इति रोहिनी कथा समाप्तम् ।

१०५०. रोहिणी-व्रत-कथा

Opening . वासुपूज्य जिनराज कौं वदो मन वच काय ।
ता प्रसाद भाषा करौं सुनौ भविक चित लाइ ॥

Closing : जो यह व्रत निहचै धरै, करै रोहिणी माय ।
निहचै थिर मन जो धरै, तो जीव मुक्ति होय ।।७६।।

Colophon : इति श्री रोहिणीव्रतकथा समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ११०

१०५१. रोटतीज-कथा

Opening : चौवीसो जिन को नमौ श्री गुरु चरण प्रभाव ।।
रोटतीज व्रत की कथा कहौं सहित चित चाव ।।

Closing : गणधर इद्र न करि सकैं तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीति निहारिके कीजै आपसमान ।।

Colophon : इति सम्म्पूर्णम् ।

१०५२. रोटतीज-कथा

Opening : इह जबू द्वीप हैं तामैं भरत क्षेत्र है, तामैं आर्य खड है, धन्यपुरी नाम नगरी वसै है ।

Closing : और जो कोइ भव्य स्त्री या पुरुष रोटतीज व्रत करै भलि गति पावै ।

Colophon : इति रोटतीज व्रत कथा ।

१०५३ रोटतीज-कथा

Opening : देखें, क्र० १०५२ ।

Closing : देखें, क्र० १०५२ ।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्ता ।

१०५४. रोटतीज-कथा

देखें, क्र० १०५२ ।

Closing : देखें, क्र० १०५२ ।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्तम् ।

१०५५. सलूनाकथा

Opening : प्रणवहि प्रथम जिनेन्द्र चरण चित लाइए,
प्रथम महाव्रत धर्म सुताहि मनाईए ।
प्रथम महामुनि लेव सुधर्म धुरधरो,
प्रथमधर्म प्रकासन प्रथम तीर्थंकरो ॥

Closing : मुनि उपसर्ग निवारनी कथा सुनै जो कोय ।
करुणा उपजै चित्त मैं दिन मगल होय ॥१८॥

Colophon : इति श्री विनोदीलालकृत श्री सलूना कथा समाप्तम् ।

१०५६. शीलकथा

Opening : पार्सनाथ परमातमा वदौ जिनपद राइ ।
मोही धर्मवाश न करो कही कथा मनलाइ ॥१॥

Closing : सील कथा पूरी भई पढ़ै सुनै नित सोई ।
दुख दरिद्र नासै सबै तुरत महा सुख होई ॥२६॥

Colophon : इति श्री सील कथा मल्लसेनाचार्यकृत संपूर्णम् ।

१०५७ शीलव्रतकथा

Opening : प्रथमही प्रणमौं श्री जिनदेव ... जिनराज अनूप ।१।

Closing : जो देखी सोई लिखी सुद्ध असुद्ध न जान ।
पंडित अरथ विचारिकै पढ़ियो सुद्ध सुजान ॥५३॥

Colophon : इति सील कथा संपूर्णम् ।

विसेष—यह भी जो २०१८ पर उल्लिखित है इसी से सम्बन्धित है । अतः
इसका भी लेखक भारामल्ल ही होना चाहिए । दोनो प्रतो को

पढ़ने से ऐसा लगता है कि पहले कथा वगैरह लिखने के बाद पद लिखने की परिपाटी हो ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १२८ ।

१०५८. शीलवतीकथा

Opening . जीवितादप्यधिकत्वेन पालितो नियमोऽपुनर्भवाय भवेत् ।

Closing ततोऽनर्थमूल त विप्र शीलवती सत्कृत्य बहुमानात्सद-कृतवान् ।

Colophon · इति शीलवती कथा सपूर्णम् ।

१०५९ सोलहकारणकथा

Opening : श्री जिन चौविसौ नमू, सारद प्रणमि अवनिगमू ।
निज गुरु केरा प्रणमू पाय, सकल सत प्रणमी सुखथाय ।१।

Closing : यामे सकल भोग सयोग, टरै आपदा रोग विरोग ।
श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञानसागर कहै सार ।३६।

Colophon : इति श्री सोलहकारण कथा समाप्तम् ।

१०६०· सोलहकारणकथा

Opening देखें, क्र० १०५९ ।

Closing : देखें, क्र० १०५९ ।

Colophon : इति सोलहकारण कथा सपूर्णम् ।

१०६०. शोडशकारणकथा

Opening : देखें, क्र० १०५९ ।

Closing . देखें क्र० १०५९ ।

Colophon : इति षोडशकारण कथा सपूर्णम् ।

१०६२. श्रावणद्वादशीकथा

Opening : प्रथम नमू श्री जिनवर पाय, प्रणमू गणधर सारद माय ।
सद् गुरु पद पकज मन धरु, सार कथा बारसनी करू ।।१।।

Closing : रोग सोग सतापह टलै, मनवांछित फल पूरण मिलै।
श्री भूषण सुत वाए लहै, ब्रह्मज्ञानसागर हम कहै ।।

Colophon : इति श्रवणद्वादशी कथा ।

१०६३. श्रीपालचरित्र

Opening : प्रणम्य सिद्धचक्र च सद्गुरु निजमानसे ।
श्रीपालचरित्र वक्ष्ये सुगम शिष्यहेतवे ।।

Closing : जीवराजेन रचितं श्रीपालचरित शुभम् ।
प्रीतसुन्दरेनाशुलिखित श्री सद्गुरुप्रसादत ।।

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे गद्यबद्ध चतुर्थ प्रस्तावः । शुभं भूयात् ।
स० १६०५ रा० मि० आसोज शुक्ल त्रयोदशी दिवसे मगलवारे लिपी
कृतेय ऋषि श्री विक्रमपुर मध्ये चउम्मासीस्थिता. ।

१०६४ श्रीपालचरित्र

Opening : श्री अरिहंत अनंतगुण, धरीये हिय मे ध्यान ।
केवल ग्यान प्रकाश कर दूर हरण अग्यान ।।१।।

Closing : कहै जिनै हरष भविक नर सुण ज्यो नवपद महिमा थु णिज्यो रे ।
गुण पंचासें ढालें गुणि ज्यों निज पति कठिण लु णिज्यो रे ।।

Colophon : इति श्रीपाल महाराजा चोपई समाप्तम् ।

१०६५. सुगंधदशमी-कथा

Opening : श्री जिन शारद मन मैं धरु सद गुरु मैं नित वदन करु ।
साधु सत पद बदो सदा, कथा कहू दशमीनी मुदा ॥१॥

Closing : ए व्रत जे नर नारी करै, ते भवसागर वेगैं तरे ।
छाडैं पाप सकल सुख भरै, ब्रह्मज्ञानसागर उच्चरै ॥

Colophon : इति सुगध दशमी कथा ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १४५ ।

१०६६. सुगधदशमी कथा

Opening : सुगध दशमी व्रत सुनि कथा, वर्द्धमान प्रकाशी यथा ।
पूरब देश राजग्रह नाम, श्रेणिक राज करे अभिराम ॥१॥

Closing : हेमराज चीयन यो कही विश्व भूषण प्रकाशी सही ।
मनवचकाय सुनैं जो कोई, सो नर स्वर्ग अपर पति होई ॥३८॥

Colophon इति सुगंधदशमी कथा समाप्ता ।

१०६७. सुगंधदशमी-कथा

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखें, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री सुगधदशमी कथा जी समाप्तम् ।

१०६८. सुगधदशामी-कथा

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखें क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री सुगंध दशमी कथा समाप्तम् ।

१०६९. स्वरूपसेनकथा

Opening : कौसांबीवास्तव्यो राजाजयसेनो जयावती प्रियस्तस्यपुत्र-
द्वयमभूत् । ज्येष्ठो रूपसेनो लघुर्वेवसेन। ।

Closing : सूरसेनोपितया सहसंसारिक सुखमनुभूय
प्राप्ते स्वरूपेण स्वपत्न्या सहितो दीक्षाम् ॥
भार्यायालोचितदुःखकर्म्मा ··· ··· आससाद ॥

Colophon : इति मिथ्ये स्वरूपसूरसेन कथा सपूर्णम् ।

१०७०. वीरजिणंद

Opening : वीर जिनंद समोस राजी वद मेघकुमार,
सुण देसण वइराणीउ जी इह ससार असार रि माई उन
मति देह मुझ आज ॥१॥

Closing : सप सन सो सौतहागाइ जी
पहुतो अनुत्र विमाण वीर चरण नित सेवसइ जी
ते पामसि भव पार हु स्वामी अम्ह० ॥

Colophon : इति वीर जिणद समाप्त ।

१०७१. विष्णुकुमारकथा

Opening : देखें— क्र० १०५५ ।

Closing : विष्णु कुमार मुनिंद्र की करनी कथा रसाल सुनो ।
भव्य जैन भाव सो कही विनोदीलाल मुनि उपसर्ग निवा-
रनी कथा सुनो ।
जो कोई करूना उपजै चित मै दिन दिन मंगल होय ।

Colophon : इति श्री विष्णु कुमार की कथा सम्पूर्ण ।
देखें, जै० सि भ० ग्र० I, क्र० १५१ ।

१०७२. अरिहंतकेवली

Opening : श्रीमद्वीरजिनं नत्वा वर्द्धमानं महोत्सवम् ॥१॥

Closing : वैरिणां वैरमुक्तश्च मित्रबांधवहेतवे ।
धर्मवृद्धिर्भवेत्तुभ्य सर्वथानात्रसंशय ॥३।

Colophon : इति तकारादि चतुर्थप्रकरणम् ।
इति अरहंत केवली सपूर्णम् । संवत् १६१७ मिति चैत्रकृष्ण १० । बुधवासरे लिप्पीकृत ब्राह्मण रामगोपाल वासी मोजपुर कालकलेपुर मध्ये लिखी । शुभ भूयात् ।

१०७३. आराधनासार

Opening विमलयरगुणसमद्धं सिद्ध सुरसेण वंदियं ।
सिरसा णमिऊण महावीरं वोच्छं आराधनासारं ।१

Closing : अमुणियतच्चेण इमं भणियं जं पि देवसेणेण ।
सोहंत अमुर्णिदा अथिऊ जइ पवयण विरुद्धं ॥

Colophon इति आराधनासारसमाप्त ।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० १६५ ।

१०७४. आराधना प्रतिबोध

Opening : श्री जिनवर वाणी नमैवि गुरुनिर्ग्रंथ पांय प्रणमेवि ।
कहुँ आराधना सुविचार संक्षेपिसारो उद्धार ॥१॥

Closing : जे सुणें नरनारी जे जाइ भवनैपार ।
श्री दिगम्बर इति कह्यो विचार आराधना प्रतिबोधसार ॥

Colophon : इति आराधनाप्रतिबोध सपूर्णः ।

१०७५. अर्थप्रकाशिका

Opening : बहुरि शास्त्र अल्पाक्षर करि प्रधान
कह्या सोहू, अल्पाक्षर सं पूज्यपणा प्रधान है। अर दर्शन पूज्य है।

Closing : वरतो भव्यनि उर विषै स्यादवाद उज्जास।
यातैं निज परतत्व सरिव होय जु अर्थ प्रकाश ॥

Colophon : इति श्री तत्वार्थ सूत्र की अर्थप्रकाशिका नाम वचनिका समाप्त।
शुभ भवतु। कल्याणमस्तु।

१०७६ आत्मानुशासन

Opening : वीर प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोतमुद्योतिताऽखिलपदार्थमनल्पपुण्यम्,
निर्वाणमार्गमऽनवद्यगुणप्रबंधं आत्मानुशासनमहं प्रवर प्रवक्ष्ये ॥

Closing : श्री नाभेयोजिनोभ्रयाद् भूयसे श्रेय सेसव:।
जगद्ज्ञान जलेयस्यद याति कमलाकृति ॥

Colophon : इति श्री गुणभद्राचार्य कृत आत्मानुशासन काव्य प्रबंध संपूर्णम्।
लिखित पंडित परमानंदेन टकैत नामनगरे, संवत् १६२८
का मार्गसिरमासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्यां गुरुवासरे उपाध्याय
विद्य वरिष्ठ श्री १०८ भट्टारक राजेन्द्रकीर्तिजित् पठनार्थं
परमानंद शुभभूयात्। श्रीरस्तु।
देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० १३२।

१०७७. बनारसी विलास

Opening : प्रथम सहस्रनाम सिन्दूर प्रकरधाम बावनी सवैया वेद निरनै
पचासिका।
श्रैसठि सिलाका का मारग गंध करन की प्रकृति कल्याण मंदिर
पारुवदन सुभासिका।

पैडीकर्म्म छतीसी पिव्वइ ध्यान बतीसी आध्यात्म बतीसी
पचीसीग्यान रासिका ।
सिव की पचीसी भवसिन्धु की चतुरदसी अध्यात्म फागति
षोडस निवाणिका ।१॥

Closing , सत्रह में एकोतरे समै चैत सितपाख ।
दुतिया सो पूरन भई यह बनारसी भाष ॥

Colopohn : इति बनारसी विलास संपूर्णं । शुभभूयात् संवत् १८६०
माघीममे मासभाद्रमासे शुक्लेपक्षे एकादश्या सोमवासरे ।
पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मणे लेखि । पट्टनपुर मध्ये आलमगंज
निवास । पुस्तक सख्या श्लोक अनुष्टुप तीनहजार छपै
(३६००) लिखि आरे में बाबू परमेष्ठी सहाय का ।

१०७८. बारह भावना

Opening : पंच परम पद वंद हूँ, मन वच सीसनिवाय ।
भावें बारह भावना, निज आतम लव लाय ॥

Closing भूला चूका होय जो, भव्य जन लेहु सुधार ।
मोह दोस दीजै नहीं, भैरौं कहै बिचार ॥
श्री जिन धरम न विसारियै ॥

Colophon इति श्री बारह भावना जी समाप्तम् ।

१०७९ बारह भावना

Opening : राजा राणा छत्रपति हाथिन के असवार ।
मरना सबको एकदिन अपनी अपनी बार ॥१॥

Closing जांचे सुरतरु देय सुख चिंतत चिंता रैन ।
बिन जांचे बिन चितये धर्म सकल सुख देन ॥

Colophon इति बारह भावना सम्पूर्णम् ।

१०८०. बारह भावना

Opening : आदिदेव जिनपें नमों, बंदो गुरु के प य ।
बरनौं बारह भावना सुनऊ चतुर चित लाय ॥१॥

Closing : जहाँ सवर तहाँ निर्जरा, जहाँ आश्रव तहाँ बंध ।
इतनी कला विवेक की और बात सबंध ॥१५॥

Colophon : इति ।

१०८१. बीस तीर्थंकर नामावली

अक्षरमात्रं पदस्वरहीन व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षन्तव्य को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥

Closing : नियमप्रभ जी, वीरसेन जी, महाभद्र जी, जयदेव जी, अजीत-
वीर्य जी ॥२०॥

Colophon : इति श्री बीसतीर्थंकर के नाम संपूरण ।

विशेष— इसी में भविष्यत चौवीसी भी अन्तर्भूत है ।

१०८२ ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत बहुरि श्री सिद्ध नमिज्जै ।
आचारिज उवज्झाय तासु पदवंदन किज्जै ।
साधु सकल गुणवंत संतमुद्रा लखि वंदी ।
श्रावक प्रतिमा धरन चरन नमि पाप निकंदौ ।
सम्यक्तवंत स्वसुभावधर जीव जगत महिहो ।
जिन जिन नित त्रिकाल वदत भविक भाव सहित सिर नाईनित
॥१॥

Closing : बहुत बात कहिये कहाँलगी यहै जीव त्रिभुवन कौ धनी ।
प्रगट होइ जब केवल ग्यान शुद्ध सरूप वहै भगवान ॥

Colophon : इति श्री भैयाभगोतीदास कृत ब्रह्मविलास सम्पूर्णम् । बासी-

मासे उत्तमफाल्गुनमासे तिथौ ६ गुरुवारक दिन पुस्तकसमाप्तम् । लिख्यत काशीमध्ये राजमंदिरसीतला घाट देवि क दरवाजा । लिख्यत गौड़ ब्राह्मण शिवलालक हस्त लिखत जोसीवर वर जीवण । पुस्तक लाला शकरलाल जी लिखाईत पठनार्थ उपकारार्थं श्री भगवान समर्पणमस्तु । ग्रथ सख्या ४८०० ।

मगल लेखकानां च पाठकाना च मगलम् ।
मगल सर्वलोकानां भूमिपतिर्मंगलम् ।।
देखें--(१) जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १८६ ।

१०८३ ब्रह्म विलास

Opening : देखें, क्र० १०८२ ।
Closing : देखें, क्र० १०८२ ।

Colophon इति श्री भैयाभगौती दासकृत ब्रह्मविलास संपूर्णम् । श्री संवत् १८६७ । शाके १७३२ मासाना मासे उत्तम माघ मासे शुक्लपक्ष तिथौ । १५ । भृगुवासरे पुस्तक समाप्त भई । लिख्यत गौड़ ब्राह्मण शिवलाल काशीमध्ये राजमदिर सीतलाघाट । पुस्तक लाला मनुलाल जी की पठनार्थं परोपकारार्थंम् ।
यादृश पुस्तक ' न दीयते ।।१।।
लेखिनी पुस्तिका '' मर्दता ।।२।।
जले रक्ष थले — पुस्तक ।।४।।
ग्रथ संख्या ४८०० चारहजारआठ सौ
पत्र संख्या–११८ ।। श्री पार्श्वनाथाय नम ।
मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मगलम् ।
मगलं सर्वलोकानां भूमिभूपतिर्मंगलम् ।

१०८४. चैत्यवंदना

Opening : वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके, सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम् ॥१॥

Closing : णवकोडि — ... अकिट्टिमा वंदे ॥

Colophon : इति चैत्य वंदना ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२७ ।
(२) रा० सू० IV, पृ० ३८४, ३८७, ४३२ ।

१०८५. चैत्यवंदना

Opening : सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणां च निवासे ग्रहगणपटले ताराकाणां विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणध्वस्त सान्द्रांधकारे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत् चैत्यानि वंदे ॥

Closing : जन्म-जन्म-कृत पाप जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात् ॥१२॥

Colophon : इति सपूर्णम् ।
देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३२ ।

१०८६. चातुर्मासव्याख्या

Opening : स्मारं स्मारं स्फुरद्‌ज्ञानधामवीरं-जगत्तम् ।
कारं कारं क्षमांभोजे गौरवं प्रणिति पुनः ॥१॥

Closing : अक्षयादितृतीयायाः व्याख्यानं बौध्यप्राप्तम् ।
अलेखि सुगमं कृत्वा क्षमाकल्याणपाठकैः ॥१॥

Colophon : इत्यक्षयातृतीया व्याख्यानम् । ग्रंथाग्रमनुमानतः श्लोका सप्तति।
॥६७॥

विशेष - इसमें चतुर्मास के साथ ही अष्टान्हिका व्याख्या, दीवाली-व्याख्या, सौभाग्य पचमी व्याख्या, ज्ञानपचमी व्याख्या, मौन-एकादशी, पौष—दशमी व्याख्या, मेरु तेरस व्याख्या, होलिका व्याख्या अक्षयतृतीयादि व्याख्या का समावेश किया गया है।

१०८७. चौदहगुण स्थान

Opening · गुण आत्मीक परिनाम गुणी जीव नाम पदार्थ ते आत्मीक परिनाम तीन जात के। शुभ, अशुभ, शुद्ध तिन ही परिनाम के मापक चौदह स्थानक जीवन जाननाम्।

Closing . जथा पाषाणतै सर्वथा भिन्न भया सुवर्ण नि: कलंक शोभै त्यौं अपनी अनंत शक्ति करि विराजमान केवलग्यान ॥२॥ केवल दर्शन ॥२॥ अनंत वीर्य ॥३॥ छाइक सम्यक्त ॥४॥ चैतन्य भानु ॥५॥ ' · · परमात्मा कहीये।

Colophon : यह चौदह गुन स्थान का स्वरूप संक्षेप मात्र वर्णन जिनवाणी अनुसार कथन कर पूरन किया।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २८४।

१०८८. चौदह गुणस्थान

Opening · तिस मुक्त के स्थान जाने कौं इह चौदह सीढी है सो प्रथम मिथ्यात गुन स्थान ही में यह जीव अनादिकाल से पड़ा आया है तहाँ कछु भी इसको अपना भला बुरा होने का ग्यान नहीं हुआ सो मिथ्यात का पांच प्रकार का भेद है—

Closing · जन्म मर्न इत्यादिक संसार का अनेक दुखकर रहित हुआ, अजर अमर कौं प्राप्त हुआ।

Colophon इति श्री चौदहगुणस्थान की चरचा सम्पूर्णम्। समाप्तम्। शुभभवतु।

१०८९. चत्वारिदंडक

Opening : चत्तारिमंगल अरिहंतमगलं सिद्धमगल ।
साहुमगल केवलीपण्णत्तोधम्मोमगल ॥१॥

Closing : वदेहिणिम्मलयरा आचेइं अहिय पयासता ।
सायर इवगंभीरा सिद्धसिद्धि मम दिसतु ॥८॥

Colophon : इति थोस्सामिदंडक सपूर्णम् ।

१०९०. चौबीस दण्डक

Opening : वदौं वीर सुधीर कौ महावीर गंभीर ।
वर्द्धमान सन्मति महादेव देव अतिवीर ॥

Closing : अंतहकरण जु सुख होय, जिन धरमी अभिराम ।
भाषा कारण करण कूं, भाषी दौलतराम ॥५७॥

Colophon : इति संपूर्णम् ।

१०९१. चौबीस दण्डक

Opening : देखें— क्र० १०९० ।

Closing : देखें—क्र० १०९० ।

Colophon : इति श्री चौबीस दडक चौपाई संपूर्णम् ।

१०९२. चौबीस दण्डक

Opening : प्रथम दंडकनि के नाम तहाँ नारक १, भवनवासी देव १०, ज्योतिषी १, व्यतर १, वैमानिक १, पृथ्वी १, अप १, तेज १, वायु १, ···· · ·· ·· ।

Closing : … — … तैजकाय वायुकाय विषैभी उपजे है ऐसे चौबीस दंडकनि का कथन लिख्या सो त्रिलोकसार · आदि ग्रन्थनि ते सौधि करि लेवे ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१०६३ चौबीसठाणा

Opening : गइइंदियं च काए जोए वेए कषायणाणेय ।
संयमदसणलेस्सा भव्विया समत्तसण्णिआहारे ।।१।।

Closing : अपकाय । वायकाय । तेजकाय । पृथ्वीकाय ।
वनस्पती । वेइन्द्री । तेइन्द्री । चौइन्द्री । जलचर ।
पक्षी । चौपदा । उरपद । देव । नारकी । मनुष्य ।

Colophon इति श्री चौबीस ठाना की चरचा सम्पूर्णम् । मिति पौष कृष्ण बुधवार । सम्वत् १८७४ ।

दोहा— करि कटि ग्रीवा नयनदुख तनदुख बहुत सुजान ।
लिख्यो जाति अति कवित तैं सब जानत आसान ।।
शुभ भवतु ।

१०६४. चर्चा-संग्रह

Opening धर्म्मधुरधर आदि जिन, आदि धर्म्म करतार ।
अमू देवअचरण तैं सबै विधि मंगलसार ।।१।।

Closing : एक-एकपाखंडी के उपरि एक एक अच्छरा नृत्य करैं ऐसैं सब मिलि सताईस कोड होय छै ऐसा जानना ।

Colophon : इति चर्चासंग्रह समाप्तम् । शुभं भवतु ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० १९२ ।

१०६५. चर्चासमाधान

Opening : अयोवीरजिन चद्रमा उईअपूरब जासु ।
कलिजुग काले पाव में कीनो तिमिर विनास ॥१॥

Closing : देवराजपूजतचरण असरण सरण उदार ।
चहु सव्व मगलकरण प्रियकारणि कुमारि ॥१६॥

Colophon : इति चरचा समाधान ग्रथ भूधरदास कृत समाप्त. ॥ सवत् १८६३ । माघ शुक्ल ११ ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० क्र० १६६ ।

१०६६. चरचानमाधान

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखें, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री चरचा समाधाननाम ग्रंथ सम्पूर्णम् । संवत् १८४१ समये अषाढमासे शुक्लपक्षे शुभदिने इद पुस्तक लेखनीयम् ।

१०६७. देशास्कंध

Opening : नम सर्वज्ञया तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगवान महावीरे ।

Closing : बम्साना सम्पादया सवियार्ण कप्पई निमन्थार्ण
वा ·· ·· तच्चेववायणवेत्तय ॥

Colophon : इच्चेयं संवच्छरियं थेरकप्पं अहासुत्त अहाकप्प अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणव फासित्ता पालित्ता सोभित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता आणा अणुपालित्ता आच्छगइया समणा निग्गंथा तेणेव भवग्गहेणेणं सअत्थं सउभय सवावरण ···· ····
इति बेमि पज्जो सवणाकप्पो सम्मत्ते दसासु असकधस्स अट्ठम-

अक्षयणं प्रथाग्र श्लोक १२१६ संवत् १७३५ प्रथम ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे सौम्यवारे सप्तमीकर्मवाद्यां श्रीमत् बृहत् खरतरगच्छा तुच्छ युगप्रवरपदधर भट्टारक १०४ श्रीजिनचंद्रसूरिणादाना शिष्येण विनयवता क्षमासमुद्रेण कल्पसूत्रप्रतिलिखति स्म श्रीराज द्रंगे श्री ।

१०९८ दोनवावनी

Opening : वंदो अरि जिनंद व्रत तीरथ परगारयौ ।
णमो श्रेयस नरिंद दान तीरथ अभ्यास्यौ ॥

Closing : रत्नत्रै आभरन विराजै वीरनंद गुरु गुन समुदाय ।
तिनके चरन कमल जुग सुमिरत भयो प्रभावज्ञान अधिकाय ।
तब श्री पद्मनंदनै कीनै दान प्रकाश काव्य सुखदाय ।
पद्मनंद बनाइ दानबावनी द्यानत राय ॥

Colophon इति श्री दानबावनी सम्पूर्णम् ।

१०९९ दोनवावनी

Opening देखें, क्र० १०९८ ।

Closing देखें, क्र० १०९८ ।

Colophon इति श्री दानबावनी सम्पूर्णम् ।

११००. दा-शील-भावना

Opening प्रथम जीनेसर पाय नमीं यामी सुगुरु पसाय ।
दान शील तप भावना बोली सुबहु संवाद ॥१॥

Closing : दान शील तप भावना रच्यौ संवाद भणतां गुणतां भावसुरै ।
रीद्धि समृद्धि सुप्रसादौरै घमै हीयेधरौ ॥१॥

Colophon इति श्री दान शीलतप भावना सम्पूर्णम् ।

११०१. देवागम

Opening : देवागमनभोयान चामरादिविभूतय ।
मायाविष्वपि दृश्यते नातस्त्वमसि नो महान् ॥१॥

Closing : जयति जगति ' समुपोसते ॥

Colophon इति श्री समन्तभद्रपरमार्हताचार्यविरचित देवागमसूत्र सम्पूर्णम् ।

दोहा : श्री देवागम ग्रंथ को पौष कृष्ण भव जान ।
... — .... एक परमान ॥१॥
लिपिपूरन पुस्तक कियो शुभमुहुर्त शनिवार,
हरिदास सुत अजित को आरा देस मझार ॥२॥
सो जयवंतो नित रहो जब लग सूरजचंद,
यह जिन सासन त्रिजग हित पूरन सिव सुखकंद ॥३॥
शुभ भूयात् । शुभम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४१४ ।

११०२. दिगम्बरआम्नाय

Opening श्री भद्रबाहु स्वामी पीछे दिगम्बर सम्प्रदाय मे केतेक वर्ष अंगनि के पाठी रहे ।

Closing संप्रदाय में जथावत आचार का तो अभाव ही है जो कहीं होय तो दूर क्षेत्र में होयगा, परन्तु मोक्षमार्ग की प्ररूपणा तो प्रतिमा के महात्म्य तै वर्तै है ।

Colophon : इति दिगम्बर आम्नाय ।

११०३. धर्मग्रंथ

Opening : मंगल लोकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महंत ।
साधु केवली कथित वृष सरन अरण भगवंत ॥

Closing : स्याद्वाद् आगम निर्दोष अन्य सर्व ही है जु सदोष ।
स्याग दोष गुण धरे विचार हेतु विषय त्याग निर्धार ।।

Colophon : इति श्री धर्मरत्न संपूर्णम् ।

११०४. धर्मग्रन्थ

Opening : .... बोइन्द्रिका न्यारा-न्यारा मानना ।

Closing : ... -- एकेन्द्रिय तो सर्वत्र हैं ही, अर कर्मभूम --

Colophon : अनुपलब्ध ।

११०५. धर्मामृतसार

Opening : अनंतर अविनाशी भगवान ऋषभपुराण पुरुषोत्तम तिनिकूं प्रणाम करि महापुराण की पीठिका प्रगट करिए है ।

Closing : अर नाभिराज कमल मंडित तलाव की उपमाकूं धरें उदय होणहार भगवान रूप सूर्य ताकि अभिलाषा करता निरंतर निरखता संतापरमउदयरूप अनुरूपर्ध को धारतामया ।

Colophon : श्री श्री श्री ।

११०६. धर्माष्टक

Opening : मैं देव निति अरिहंत चाहूं सिद्ध कौं सुमरण करौं ।
मैं सुर गुरु मुनी तीन पदमय साध पद हिरदै धरौं ।।१।।

Closing : यह भावना उत्तम सदा भावूं सुम सुनो जिनराज जी,
तुम कृपानाथ अनाथ खानत दया करनी न्याय जी ।
दुष्ट कर्म विनाश ज्ञान प्रकाश मोकूं कीजिए,
करि सुगति गमन समाधि मरण सुभगति चर्ण की दीजिये ।।८।।

Colophon : इति धर्माष्टक भाषा सम्पूर्णम् ।

११०७. धर्मपरीक्षा

Opening : पणमूं अरहंत देवगुरु निरगंथ दयाधरम ।
भवदधितारन अवर सकल मिथ्यात मथि ॥

Closing : भनत गुनत यह भावरि अहनिसि होइ आनन्द ।
धरमसुण्यातै उपजै यामैं परमाणन्द ॥७४॥

Colophon : इति श्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहरकृत सम्पूर्णम् । शुभ संवत् १८७१ । शाके १७३६ पौष शुक्ल नवमी भृगुवासरे । पुस्तकमिदं सम्पूर्णमेति । लेखकाक्षर रघुनाथ पाण्डेय पट्टनपुर मध्ये गायघाट स्थाने ।

११०८. धर्मरत्न

Opening : मंगल लोकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महंत ।
साधु केवली कथितवर धरम शरण जयवंत ॥१॥

Closing : श्रुतकेवलि गुरु के अवगाढ़ केवलि प्रभु के परम अवगाढ़ ।
आत्मानुशासन के माहि, इति दस भेद सुकथन कराही ॥

Colophon : नहीं है ।

११०९. धर्मरत्न ग्रन्थ

Opening : देखें—क्र० ११०८ ।

Closing : धर्मरत्न की ज्योति फैलो बहु दिस
जब तक जिन शासन उद्योत जयवंतो वर्तो सदा ॥

Colophon : नहीं है ।

११११०. धर्मरहस्य

Opening . पचनि में कहिये परमेश्वर पचहु अक्षर नामदिये है।
उ नमकार सबै सिद्ध-ऊपर पचनि ते-चलपत किये है।
लोक अलोक त्रिकाल मे नाहि कोई हीन की समदेव हिये है ।१।

Closing धर्म पचास न विस्तउ मंडलत भरत-त्रिराग स्वभाव कथा है।
आपनि औरनि को हितकार पढ़ो-अरनार सुभाव तथा है।
अक्षर अर्थ की भूलि परि जहाँ सोध तहाँ उपकार जथा है।
द्यानत सज्जन आप विर्चरत होय बारधि शब्द मथा है।

Colophon : इति धर्मरहस्य कवित्त बावन सम्पूर्णम्।

११११. धर्मसार सतसई

Opening : वीर जिनेश्वर प्रणमु देव, ··· ····
··· — सुमिरत जाके पाप नसाय ।१०॥

Closing : गुन धीर — · बल वीर ॥१०१॥

Clolophon : इति श्री धर्ममार भट्टारक श्री सकलकीरत उपदेशक पंडित सीरोमण दास विरचिते श्री पंचकल्यानक महिमा सपूरनं लिखतं धरमसनेही नै। इति श्री धरमसार ग्रंथ सपूर्णं। संवत् १८३२। शाके १६६७ मीति वैसाष सुदि सोमवासरे सपूर्ण।

११११२ द्रव्यसंग्रह

Opening : जीवमजीवं दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं।
देविंदविंदवंदं वंदे तं सव्वदा सिरसा ॥

Closing . दव्वसंगहमिणं मुणिणाहा दोससंचयचुदासुदपुण्णा।
सोधयंतु तणु सुत्तधरेण णेमिचंदमुणिणा भणियं जं ॥५८॥

Colophon : इति श्री नेमिचंद्रविरचित द्रव्यसंग्रहं समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २१३ ।

११९३. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें—क्र० ११९२ ।

Closing : देखें—क्र० ११९२ ।

Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादकः तृतीयोध्याय- इति श्री द्रव्यसंग्रह जी समाप्तम् ।

११९४. द्रव्यसंग्रह

Opening : वर प्राणपरित्यागो न वरं मानखंडनम् ।
प्राणक्षये क्षण दुख मानखंडे दिने दिने ॥१॥

Closing : देखें—क्र० ११९२ ।

Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोध्याय. । इति द्रव्यसंग्रह समाप्त ।

११९५. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० ११९२ ।

Closing : संवत् सत्रह सौ इकतीस । माघ सुदी दसमी शुभ दीन ॥
मंगलकरण परम सुखधाम । द्रव्यसंग्रह प्रति करु प्रणाम ॥

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह कवित्तबद्ध संपूर्णम् । संवत् १८७१ पौष शुक्ल एकादश शनिवार को लिखा ।

११९६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० ११९२ ।

Closing : .... विरुद्ध भाषटाली करी सांचो सूत्र भाव कास्यो कह विनय ॥

Colophon : इति धर्मार्थी पन्नालाल बालाबोधे द्रव्यसंग्रह सूत्र समाप्तम् ।

११९७. द्रव्यसंग्रह

Opening : तहाँ प्रथम या ग्रंथ की पीठिका ऐसें जो या ग्रंथ मे तीन अधिकार है तहाँ पहिला तो षट्द्रव्यपंचास्तिकाय की प्ररूपणा का अधिकार है तहाँ आदिगाथा तो मंगल अर्थ है नहाँ एक गाथा उक्त च सब द्रव्य के लक्षण का है। ... ।

Closing मंगल श्री अरहंत वर मंगल सिधि सुसूरि ॥
उपाध्याय साधु सदा, करो पाप सब दूरि ॥१॥

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह ग्रंथ समाप्ता ।

१११८. द्रव्यसंग्रह

Opening · देखें, क्र० १११२ ।

Closing देखें, क्र० १११२ ।

Colophon : इतिद्रव्यसंग्रहसूत्रं समाप्तम् ।

१११९. द्वादशानुप्रेक्षा

Opening : जिनवर कासि ... — सुणऊ जीव सुलक्षणा ॥१॥

Closing · .... रयणत्तय गुणु ॥

Colophon : इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्ता ।

११२०. ईर्यापथ सामयिक

Opening : ॐ नि· संसोह जिनानां शरणमनुपमं श्रीपरीतैतिभक्त्या,
स्थित्वाकत्वानिविष्ट्य वरमपरिकृतोक: सर्वहन्तयुग्मम् ।

भाले संस्थाप्यबद्धा मम दुरितहरं कीर्तिवः सकर्मबन्धम्,
निवादूर सवान्त क्षयरहितममुक्षानमानु जिनेन्द्रम् ॥
Closing : पापिष्ठेन दुरात्मना जड़धिया मायाविनालोभिना,
रागद्वेषमलीमसेवमनसादु सकर्म्मवं निर्मितम् ।
त्रैलोक्याधिपते जिनेंद्रभवत् श्रीपामूलेंधुना,
निंदादूरमहू जहामि सतत निर्वृ'त्तबे कर्मणाम् ॥
Colophon : इति ईर्यापथ सम्पूर्णम् ।

११२१. गतिलक्षण

Opening : स्वर्गच्युतानामीहजीवलोके चत्वारिनित्यमुदव वसंति ।
दानप्रसंगो मधुरा च वाणी देवार्चनं सद्गुरु सेवन च ॥
Closing : बह्वाशी नैव सतुष्टो, मायालुप्तप्रपचकः ।
मूढस्य मलालसर्श्चैव तिर्यग्योन्या मतोनरः ॥
Colophon : इति गतिलक्षणं समाप्तम् ।

११२२. गोम्मटसार

Opening : वंदौं ज्ञानानंदकर नेमिचंद गुनकंद ।
माधव वंदित विमलपद पुन्य पतोनिधिनंद ॥१॥
Closing : अथयाप्ति मैं मिश्रगुनस्थान नाही तातै इहाँ लब्धा का मिश्र
गुनस्थान विर्षे देव बिना तीन गति हैं इत्यादिक यथा सभव
अर्थ आमिर्वचनिकरि कहिए हैं, अर्थ सोजानिना ······· ।
Colophon : इति आचार्य गोम्मटसार द्वितीयनाम पंचसग्रह ग्रन्थ की जीव-
तत्व प्रबोध का नाम संस्कृत टीका कै अनुसारि सम्यग्ज्ञान
चंद्रिका नामा भाषा टीका ··· — ··· ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २४४ ।

११२३. ध्यान के आठ अंग

Opening : जिनम सयलजगह । · — ··· चतुर्वंतब ॥

Closing : जैसे ज्ञान के आठ अंग हैं सो धर्मात्मा जीवन करि धारवे योग्य है ।

Colophon : इति ग्यान के अष्टअंग सम्पूर्णम् ।

११२४. हुणवन्त अणुप्रेक्षा

Opening : सिद्धाणिजोय जीव वणस्सई कालु पुग्गमाच्चेव ।
सव्वमलोगागास छच्चेव अणतया भणिया ॥

Closing : इयचारियाइ सुणेवि — ... — ...
... ... — राहवेण सहसुअकालेहिं ॥

Colophon : इति हुणवन्त अणुप्रेक्षा समाप्तम् । पंडित बछराज लिखितम् ।

११२५. जिन गायत्री त्रिकाल सध्या

Opening : अथोच्यते त्रिवर्णानां शौचाचारविधिक्रमं ।
प्रातरेव समुत्थाय स्मृत्वास्तुत्वा जिनेश्वरम् ॥१॥

Closing : — संध्योपासनं ॥६॥ चेति सत्कर्माणि कर्मेण कुर्व्वीत नित्यशः नमो र्हते भगवते सपार मागरविमलानाम अर्हं जलविर्मंधामि स्वाहा ।२॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ।

११२६ जिनगुणसम्पति

Opening : संस्तुवे सर्वदा देवं गोपिशां गौपतिं परम् ।
दर्शनादर्प्यंन पापानां त्रैलोक्यं त्रिगुणायते ॥१॥

Closing : इति व्रतमहिमानं विदितपुराणं भक्तिलिख्य भो विबुधजना. ।
कुरुत सलीलं व्रतमतिरम्यं शिवसौख्य यदि प्राप्तुमनाः ॥७॥

Colophon : इति जिनगुणसम्पत्ति विधान समाप्त. । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।
शुभमस्तु ।

११२७. जिनमहिमा

Opening : श्री जिनवर नाम की महिमा अगम अपार ।
धरि प्रतीति जे जपत, ते सफल करत अवतार ।।
Closing . अद्भुत अतिसै तुम धरे वीतराग निज लीन ।
पूजक सहजै उच्चह्वं निंदक सहजै हीन ।।७।।
Colophon इति जिनमहिमा सपूर्णं ।

११२८ जीवराशि क्षमावाणी

Opening हिवरागी पद्मावती जीवराश षिमावं •• ।
- जे मैं नीक विराधिया ।।
Closing रामवयराडी जे सुनै ---- तत्तकाल ।।३२।।
Colophon इति जीवराशि सिक्षावाणी समाप्तम् ।

११२९ णनपचीसी

Opening : सुरनरतिर्यंग्योनि मैं निरहै निगोदिभवत ।
महामोह की नीद मैं सोए काल अनत ।।१।।
Closing . कहे उपदेश वाणारसी चेतन अब कछु चेति ।
आप समझावै आप कू जपै कर्म के हेति ।२५।।
Colophon . इति श्री ज्ञान पचीसीसपूर्णम् ।

११३०. ज्ञानार्णव-वचनिका

Opening : पिंडस्थं पदस्थ च रूपस्थ रूपवर्जितम् ।
चतुर्द्धाध्यानमाम्नातं भव्यराजीवभास्करै. ।।१।।
Closing : अक्षर पदकू अर्थ रूप ले ध्यान मैं,
जैं ध्यावै तब मन रूप एकता मयं,

ध्यान पदस्थ जु नाम कह्यो मुनीराज मैं ।
जे या मैं हू लीन लहै निज काज मै ॥१॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्राचार्य विरचित योगप्रदीपाधिकार ज्ञानार्णव-नाम संस्कृत ग्रन्थ की देश भाषामय वचनिका विषै पदस्थध्यान [illegible]रण समाप्त भया । श्रीरस्तु ।

११३१. कर्मप्रकृति ग्रंथ

Opening पणमिय सिरसा णेमि गुणरयणविहूसणं महावीरं
सम्मत्तरयणणिलय पयडिसमुकित्तण वोच्छं ८६ ॥१॥

Closing . पाणवधादीसु रदो जिण पूयामुक्खमग्गविग्घयरो ।
अज्जेइ अतराय ण लहइ ज इच्छिय जेण ॥

Colophon इति श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तदेव विरचितायां कर्म्मप्रकृतिग्रंथ, समाप्तः ।
देखें, जि० र० को०, पृ० ७२ ।

११३२. कर्म-बतीसी

Opening : पर्म निरंजन परम गुरु परम पुरुष परधान ।
बन्दौ परम समाधिमय भयभजन भगवान ॥१॥

Closing · यह परमारथ पथ गुन, अगम अनंत बखान ।
कहत बनारसी दास इम जथा सकत परवान ॥३२॥

Colophon इति ध्यान बतीसी संपूर्णम् ।

११३३. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : तिहुवणतिलयं देवं वंदित्ता तिहुवणिदपरिपुज्जम् ।
वोच्छं अणुवेहाओ भविय जणाणंदजणणीओ ॥

Closing : मुनि श्रावक के भेदतै, धरमदोय परकार ।
ताको सुनि चिन्त्यो सतत, गहि पावो भवपार ।।

Colophon : इति स्वामि कार्तिकेय अनुप्रेक्षा समाप्तम् मिति चैत सुदि ७ संवत् १६३८ वार मगल ।
इति श्री

११३४. लघुतत्त्वार्थसूत्र

Opening : दृष्टं येन चराचरं केवलज्ञान चक्षुषा ।
प्रणमामि महावीरं वदे कांतां प्रवक्षते ।।१।।

Closing : त्रिविधो मोक्षमार्गहेतवः ।१३। चचविधनिर्ग्रंथा ।।१४।। त्रिविधा सिद्धा ।१५।। द्वादशसिद्धस्यानुयोगनामानि ।१६।। अष्टौरेसिद्धगुणा. ।।१७। द्विविधा सिद्धाः ।।१८।। वैराग्य चेति ।।१९।।

Colophon इति लघुतत्त्वार्थं सम्पूर्णम् ।
विशेष — इसके पहले हेत्र में ही लिखा है कि अब 'अर्हत्प्रवचन' कहेगे । अत इसका नाम भी वही होना चाहिए ।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० २८० ।

११३५. लघुसामायिक

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभावने ।
नम· श्रीवर्द्धमानाय वर्द्धमानजिनेशिने ।।१।।

Closing : एवं सामायिकं सम्यक् सामायिक बाढ़ित ।।
वर्तनामुक्तिमानस्य कस्य पूर्णयतेर्मनः ।।१४।।

Colophon . इति श्री लघु सामायिक सम्पूर्णम् ।

११३६. लघु सामायिक

Opening : सिद्धवस्तुवचो भक्तया सिद्धान्प्रणमत. सदा ।
सिद्धकार्यं शिव प्राप्त सिद्धि ददतु नोऽव्ययम् ॥१॥

Closing : देखें, क्र० ११३५ ।

Colophon : इति लघु सामयिकम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६६ ।

११३७ लश्या स्वरूप

Opening आर्तरौद्रसदाक्रोधी मत्सरीधर्मवर्जित ।
निर्दयोवैरसयुक्त ' कृष्णलेश्याधिकोनर ।१।

Closing ' किन्हाए जाई नरय नीलाए थावरो होई कानुहुए तिरिय गई ।
पीताए मानुसो होई, पो माए देव मइ सुक्काए पावई सामयं ठाणं

Colophon : इति लेश्य स्वरूप सम्पूर्णम् ।

११३८ लीलावती प्रकीर्णक

Opening : प्रीति भक्तजनस्य यो जनयते विघ्न निर्विघ्नरमृतंस्तंवृ दारकवृ द वदितपदं नत्वामतगाननम् ।
पाटीं सदणितस्य वच्मिचतुरप्रीतिपदास्फुटा संक्षिप्ताक्षरकोमला-मलपदैर्लालित्यलीलावती ।१॥

Closing : ... ' एक का बीसवाला रहा रहन दे और सोलह रहन दे अैसा अंक राखें और मिटाय डालें । अब एकका भाग सोलह मैं देइ पाये सोलह दश अंक के सोलह दाडियं पायें ।

Colophon : इति भास्कराचार्य विरचितायां भणित - - लीलावत्यां प्रकीर्णकानि समाप्ता ।

११३६. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : प्रथम सुमरि अरहंत को सिद्धन को धरिध्यान ।
सरस्वता सीम नमाइकैं, बंदौ गुरु जु ग्यान ॥

Closing : ग्रथ अनूपम रच्यो यह है ग्रथिनि की सारिथ ।
भूग्धि हाथि गहेहु भवि अधिक जतन सौं राखि ॥

Colophon इति मिथ्यात्व खण्डन सम्पूर्णम् । शुभ सवत् १८७६ मीति चैत्र सुदि ।६। रविवासरे उपदेश ब्रह्मपद्मसागर जी लिखित अनुश्रावक आरा नगर ।
श्रीरस्तु ।

विशेष— इसके बाद एक छप्पय भी दिया हुआ है ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २८५ ।

११४०. मोक्ष मार्ग

Opening : मगलमय मंगलकरण वीतराग विज्ञान ।
नमो ताहि जाते भए अरहतादि महान् ॥

Closing : जैसे बावरे कै भी हस्त पदादि अग होहैं । परन्तु जैसे मनु क्षेते से न होहै । तैसे मिथ्या दृष्टिनि कै भी व्यवहार रूप निसकितादि अंग हो है, परन्तु जैसे निश्चय की सापेक्षा लिए सम्यक्तकै होइ तैसे न हो है ।

Colophon ; नहीं है ।

११४१ मोक्षमार्ग पैडी

Opening : इक्क समैं रुचिवंत जी गुरु अक्खै है सुनमल्ल ।
जो तुम अदर चेतना वहै तु साटी अल्ल ॥१॥

Closing : भव थिति जिनकी घटि गई तिनकौं यह उपदेश ।
कहत बनारसीदासयो मूढ़ न समुझैलेश ॥२२॥

Colophon : इति मोक्षमार्ग पैडी समाप्ता ।

११४२. मोक्षमार्ग पैडी

Opening : देखें, क्र० ११४१ ।

Closing : देखें, क्र० ११४१ ।

Colophon : इति मोक्षपैडी संपूर्ण। ।

११४३. मृत्यु महोत्सव

Opening : मृत्युमार्गंप्रवृत्यस्य वीतरागो ददातु मैं ।
समाधिबोधिपार्थेय यावन्मुक्तिपुरीपुरम् ॥

Closing : स्वर्गादिव्यविचित्रनिर्म्मलकुले संस्मर्यमानाजनैं,
भुत्वा मुक्तिविधायिनां बहुविधिं वांक्षानुरूप फलम् ।
भुक्त्वा भोगमहर्निश परकृतं स्थित्वा क्षणमंडले,
पात्रावेशविवर्जनामिवमृतं संतो लभंतिस्तत ॥

Colophon : इति मृत्युमहोत्सव सम्पूर्णम् समाप्ता ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २७० ।

११४४. मुक्तिसूक्तावली

Opening : देवलोक ताको घर आंगन राजा ॠद्धि सेवंतसुपाय ।
ताके तन सौभागआदि गुन केलि विलास करि नित आय ॥
सो नर उतरत भवसागर निरमल होइ मोक्षपद पाय ।
करत भाव विधि सहित बनारसि जो जिनवर हरजिमन लाइ
॥१॥

Closing . सोलहसैइक्यानवैं रितुग्रीष्म वैशाख ।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सितपाख ॥१०४॥

Colophon : इति मुक्तिमुक्तावली भाषा समाप्ता ।
श्री: सवत् १६६८ वर्षेकार्त्तिकादिप्रतिपदायां शनिवासरे श्री आगरामध्ये लिखित लेखकेन केनचित् । लेखक पाठकयो· शुभभवतु । इति श्री ।

विशेष— इस ग्रन्थ की अन्तिम पंक्ति के अनुसार सवत् १६६१ है लेकिन Colophon मे १६६८ लिखा है ।

११४५. नवकार महात्म्य

Opening . ब्राह्मी ॥१॥ चदनबालिका ।२। भगवती राजीमति ।३। द्रूपदी ।४। कौशल्या ।५। मृगावति ।६। ·· ·· ·· ।

Closing । अरि करि हरिसाइण डाइण भूत वेताल,
सवि पाप प्रणासै थास्यै नवलमाल ।
इण सुमरण सकट दूरि टलइ ततकाल,
जपै जिनगुण प्रभू सूरिवर सीस रसाल ॥७॥

Colophon । इति श्री नवकार माहात्म्यसिकाय समाप्तम् ।

विशेष — इसमे सोलह सतियों के नाम भी दिये गये हैं ।

११४६. नयचक्र

Opening । गुणानां विस्तरं वक्ष्ये ········ ··· — ।
नत्वावीरंजिनेश्वरम् ·· ·· - — ।

Closing : तत्र संश्लेषरहित वस्तुसबंधविषय नयचरितासद्भूतव्यवहार: यथा देवदत्तस्य धनमिति श्लेषसहितवस्तुसबंध ··· यथा जीवस्यशरीरमिति ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापद्धति । श्री देवसेनपंडितविरचिता नयचक्रपरिसमाप्ता. ।

११४७. नयचक्र

Opening : देखें, क्र० ११४६ ।

Closing : देखें, क्र० ११४६ ।

Colophon इति सुखबोधार्थमालापद्धति श्री देवसेनपंडित विरचिता । इति श्री नयचक्र समाप्तम् ३०६ श्लोक अनुष्टुप निश्चयेन । इति श्री ।

११४८ नयचक्र वचनिका

Opening वदो श्री जिन के वचन स्यादवाद नयमूल ।
ताहि सुनत अनुभव तहाँ है मिथ्या निरमूल ॥१॥

Closing सत्रह सै छब्बीस कै सवत् फाल्गुन मास ।
उजली तिथि दशमी जहाँ कीनो वचन विलास ॥

Colophon · इति श्री नारायणदास हैमराज कृत नयचक्र वचनिका समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २९६ ।

११४९ नयचक्र वचनिका

Opening . देखें, क्र० ११४८ ।

Closing देखें, क्र० ११४८ ।

Colophon इति श्री नयचक्र पंडित नरायनदास उपदेशशिष्य हेमराज कृत सामान्य वचनिका सपूर्णम् । इति श्री नयचक्र जी की वचन का सम्पूर्णम् । मिति ज्येष्ट वदि ६ । बुधवार । संवत् १९६२ । मु । चदेरी ।

११५० निर्वाणकाण्ड

Opening : अठ्ठावयम्मि उसहो चपासवासुपुज्जजिणणाहो ।
उज्जत णेमिजिणो पावाएणि ण्वुदो महावीरो ।।१।।

Closing जोइपठयतियाल णिव्वुई ककपीभावसुद्धीए ।
भु जिनरसुरसुक पठइ सो लहइ णिव्वाण ।।

Colophon इति सम्पूर्णम् । शुभ ।

११५१. निर्वाण काण्ड

Opening . वीतराग वंदो सदा, भाव सहित सिरनाय ।
कहुं काण्ड निर्वान की, भाषा विविध बनाय ।।१।।

Closing सवत् सत्रह सै एक ताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशाल ।
भैया वदन करे त्रिकाल, जै निर्वानकाण्ड गुणमाल ।।२२।।

Colophon इति निर्वाणकाण्ड भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री शुभ इति ।

११५२ पचविसतिका

Opening : सव्वमलमायउ सिद्ध सिद्धमति हर्यागिदनदपुज्ज ।
णमि ससिपुरवीर पणमिय सिय सुद्धिभवमहण ।

Closing . मोहाकुमुइणि चद भवदुहसायरण आण पत्तमिण ।
धम्म विलासमुहई भणिद जिणदसवम्हेण ।।२६।।

Colophon : इति धर्मव्यसतिका लिख्व सम्पूर्ण करी ।

११५३. पच परमेष्टी

Opening : इस जीव के संसार में पाँच ही परमइष्ट है । तातैं इनको पंच
परमेष्ठि कहिए । तिनका स्वरूप सामान्यपनै लिखिए । ।

Closing ·　　वस्त्र का त्याग ।१। दतवन का त्याग । खड़े होय अहार ले ।१। लघु भोजन एक बेर ले । एव सप्त ए अठाईस गुन साधु महाराज जी का कहया ।

Colophon　　इति श्री समुच्चय पंचपरमेष्टी की चर्चा स्वरूप सपूर्णम् ।

११५४. परमात्मप्रकाश

Opening :　　चिदानदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय नित्य सिद्धात्मने नम ।

Closing :　　परमपयगयाण भासओदिव्वकाउ,
भणति मुनिवराण मुक्खदो दिव्व जोउ ।
विसयसुहरयाण दुल्लहो जोहु लोए ।
जयउ सिवसरूवो केवलो कोण्टिबोहो ॥३४६॥

Colophon :　　इति श्री योगीन्द्रदेवविरचित परमात्मप्रकाश, समाप्त ।

११५५ परमात्मप्रकाश

Opening :　　देखें, क्र० ११५४ ।

Closing　　देखें, क्र० ११५४ ।

Colophon :　　इति परमात्मप्रकाश' समाप्त । ग्रन्थाग्रं ४५१ श्लोक अनुष्टुप । श्री । श्रीरस्तु । लेखकपाठकयो शुभ भूयात् ।

११५६. परीक्षामुख वचनिका

Opening　　श्रीमत् वीर जिनेस रवि, तम अज्ञान नसाय ।
शिवपथ वरतायो जगति, वदो मैं तसु पाय ॥१॥

Closing :　　कोटि जीव तुल्य कौन गणना मैं गणिये तौउ हम इस ग्रंथ की टीका करे हैं सो जैसे नदी का जल नवीन घट विषेकिछा-

लिये सोह शीतल होय पीने वाले को पुरुषनि के चित को प्रिय लागे तैसे तिस प्रभाचन्द्र के वचन ही अपूर्व --- --- ।

Colophon नहीं है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ४६८ ।

११५७. प्रश्नमाला

Opening आदि अन चौबीसलौं बदौ मन वच काय ।
भव्यन कौ उपदेश दें करौ मगलाचार ॥१॥

Closing । इस प्रश्नमाला को अपने कठ मे पहिरें ते भव्यात्मा कल्यान के वांछित सुबुधी जुग भौमो में सोना पावेंगें । ऐसी जान इस प्रश्नमाला को धारण करहु ॥

Colophon इति श्री हिष्टतारगनाम ग्रथमध्ये अनेक ग्रथान के अनुसार प्रश्नमाला कथन वरननौ नाम सधि सपूर्णम् ।

विशेष— इसके बाद एक दोहा भी दिया गया है ।

११५८ प्रवचनसार

Opening । सर्वव्याप्येकचिद्रूपस्वरूपाय परात्मने
स्वोपलब्धिप्रसिद्धाय ज्ञानानदात्मने नम. ॥१॥

Closing । व्याख्येय किल विश्वमात्मसहित — एक पर चित् ॥

Colophon । इति तत्वप्रदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्ति समाप्तम् । शुभ अस्तु । सवत् १६६२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे ५ शनीवासरे काष्टासंघे नदीतट ' भट्टारक श्री रामसेन्यान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री चंद्रकीर्ति भट्टारांराजकीर्ति तस्य शिष्य ब्रह्मघन श्री स्वहस्तेनालिखितम् । शुभ भुयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I क० ३१२ ।

११५९. प्रवचनसार

Opening : देखें—क्र० ११५८।

Closing : देखें—क्र० ११५८।

Colophon : अनुपलब्ध।

११६०. प्रवचनसार

Opening : स्वय सिद्ध करतार करैं निज करम सरम ...
— एक विध अजरअमर

Closing : — मूतिक पदार्थ को जानें है अति चचल है अनंतज्ञान की महिमा ते गिरा है अत्यन्त विकल है महामोह .... — ।

Colophon : नही है।

११६१. प्रायश्चित्त ग्रन्थ

Opening : जिनचन्द्र प्रणम्याहमकलक. समन्तत ।
प्रायश्चित प्रवक्ष्यामि श्रावकाणा विशुद्धये ॥

Closing : प्रायश्चित य करोत्येव देव जाते दोषे तत्प्रशांत्यर्थमार्यं
रास्ट्रस्यासौ भूमि यस्यात्यनोपि स्वस्तावास्यावस्थितं
श तनोति ॥९०॥

Colophon : इति अकलंकस्वामिनिरूपित प्रायश्चित्तग्रन्थं सपूर्णम्।
देखें—जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३२१।

११६२ पाप-पुण्य माहात्म्य

Opening : बर्द्धमान जिनवर नमू, मन बच सीस नवाय।
फुन गुरु गोतम कौं नमू, जातैं पातक जाय ॥१॥

Closing . सत्रै सै इक्यानवें, पोष सुदी तिथ दूज ।
सुभ नक्षत्र पूरन करी, जिन बांनी कू पूज ॥
जे नर सुर घर गावहीं, तथा सुनै मन लाय ।
जिनबांनी सरधा करैं अन सिद्धगत जाय ॥६।

Colophon इति अष्टद्रव्य सेती जिन पूजा करी समाप्तम् ।

११६३. पुण्य माहात्म्य

Opening पूरब पुन्न कियौ जिन मोय, तेरा वस्तु जु प्रापत होय ।
मानुष जनम जु पावै थाय, उत्तम कुल मै उपजी आय ॥१॥

Closing । शक्र समान तपस्या करै, दुष्ट शारमीमैं तर करै,
इतने गुन निरमल जिस जोय, तासौ नमस्कार मम सोय ॥८॥

Colophon । इति श्री पुण्य महात्तम समाप्तम् ।

११६४ सम्यक्त्व कौमुदी

Opening । परम पुरुष आनन्दमय चेतनरूप सुजान ।
नमी सिद्ध परत्मा जग परकासक भान ।

Closing : चद सुर पांनी ··· ··· तब लग जैन प्रकाश ॥४६॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमदी कथा सादा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदय भूप अर्हदास सवादिकसर्ग गमनचरनतनाम एकादश परिच्छेद । इति श्री सम्यक्त्व कौमदी सम्पूर्णम् । सबत् १८४६ वर्षे मिति ज्येष्ट सुदि ३ वार मगल श्रीपार्श्वचद्र सूरि गच्छे श्री १०८ श्री बद्रभाण जी तत् शिष्य लिखत् भासिरदारमल्लेन श्री सफातपुर नगरमध्ये ।
देखे, जैं० सि० भ० ग्र० J, क्र० ११४ ।

११६५ समयसार गाथा

Opening . वीतराग जिन नत्वा ज्ञानानंदैकसंपद. ।
वक्ष्ये समयसारस्य वृत्ति तात्पर्यसंज्ञिकाम् ॥१॥

Closing · सुद्धोसुद्धादेसो णायव्वो परमभावदरिसीहिं ।
ववहारदेसिदो पुणजेदुअपरमे ठिदा भावे ॥१८॥

Colophon · इति समयसार गाथा सम्पूर्णम् ।

११६६ समयसार नाटक

Opening : करम भरम जग तिमिर हरन खग उरग लखन पगसिव मग
दरसी ।
निरखत नयन भविक जल बरखत हरखत अमित भाविक
जन दरसी ॥
मदन कदन जित परम धरम हित सुमिरत भगति भगत
सबदरसी ।
सजल जलद तन मुकुट सपत फन करम दलन जिन नमन
बनारसी ॥१॥

Closing · समैसार आतमदरब नाटक भाव अनंत ।
सोहै आगम नाम मै परमारथ विरतत ॥७२७॥

Colophon इति श्री परमागमसमैसारनाटकनाम सिद्धान्त सपूर्णम् । श्रीरस्तु ।
कल्याणमस्तु । शुभभवतु ।
देखें, जै० सि० भ० ग्रं० I, क्र० ३४२ ।

११६७. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ११६६ ।
Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम्।
संवत् १८८४ भादौ शुक्ल तेरस सौमवासरे जवाहरमल्ल
स्वाध्याय हेतवे ।

११६८. समयसार नाटक

Opening देखें, क्र० ११६६ ।

Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्णम् ।
रघ्नचद्र वसु ससि अवधि भादव सित ससिवार ।
द्वितिया तिथि पोथी उभय पूरन भई सवार ॥१॥
समयसार नाटक अगम ब्रह्मग्यात विश्राम ।
पढ़त सुनत सुपस उपजै भावित आसाराम ॥२॥
संवत् १८४० कातिग शुक्ल १ रवि दिने लिखित महुकमरामेण
पठनार्थमात्मागम: । शुभमवतु ।

११६९ समवशरण

Opening समोसरण मंडित नमौ परमागम जिनरूप ।
सुरनरपति वंदित चरण, महिमा अगम अनूप ॥१॥

Closing . इह विधि श्री जिनराज जगनायक सासुत मुकत ।
अहिनिसि मंगलकाजे पढत सुनत सब कहुकरी ॥३०॥

Colophon . इति श्री समोसरणभेद ।

११७० समुद्घात

Opening : सातसमुद्घात कहै वेदना समुद्घात ॥१॥ कषाय समुद्घात ॥२॥
मारणांतिक समुद्घात ॥३॥ वैक्रिय समुद्घात ॥४॥ तैजस
समुद्घात ॥५॥ आहारक समुद्घात ॥६॥ केवलि समुद्घात॥७॥

Closing अट्ठाईस योजन एकसौअट्ठाईस धनुष सण्ठयोत्तर अंगुल इतनी जबूद्वीपकी परिधि ।

Colophon · नहीं है ।

११७१. षट्दर्शन

Opening । शिवमत बोध सुवेदमत नैयायिक मत पक्ष ।
मीमांसकमत जैनमत षट् दरसन पर लक्ष ॥१॥

Closing रायपवानी ६ पुनीतचावन १० लौचन वड्या ११ घरघरमी १२ कवित्त १३ राग १४ वृन्दवनवारन १५ पेड़नैबाई १६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

११७२ षट्पाहुड

Opening । काऊण णमोयार जिणवरवसहस्सवड्ढमाणस्स ।
दंसणमग्गं वोच्छामि जहा कम्म समासेण ॥

Closing · अरहंतो सुहभत्ता ---- · पुणा केरिय अणं ॥४८॥

Colophon इति श्री कुंदकुंदाचार्य विरचित शीलपाहुड़ समाप्तम् । संवत १७०५ वर्षे बैशाखमासे शुक्लपक्षे तिथौ द्वादशी १२ संवत्सर श्रीराम ।

११७३ षट्पाहुड

Opening : देखें, क्र० ११७२ ।

Closing एव जिण पण्णत्त मोक्खस्स य पाहुडं सुभत्तीए ।
जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ सासय सुक्खं ॥

Colophon : इति श्री कुन्दकुन्दाचार्यविरचितं मोक्ष-पाहुड षष्ठ समाप्तम् ।

११७४. षट्लेश्याभेद

Opening . कृष्ण नील कापोतले पीत पदम सुक जान ।
सुभ असुभ जु कर्म के ए षट् भेद बखान ॥

Closing यह षट् विध लेश्या कही सुनो भविक दे कान ।
असुभ जान निर वारिये भैरो कही वखान ॥

Colophon इति श्री षट् लेश्या आरती ।

११७५. सामायिक

Opening देखें क० ११३६ ।

Closing देखे, क० ११३६ ।

Colophon इति सपूर्णम् ।

११७६ सामायिक

Opening पडिक्कमामि भंते इरिया वहियाणं विराहणाए अणागुत्ते अइगमणे ।

Closing गुरव पातु वो नित्य ' मोक्षमार्गोपदेशका ।

Colophon . इति सामायिक समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ३६५ ।

११७७. सामायिक

Opening । देखें—क० ११७६ ।

Closing । देखें—क० ११७६ ।

Colophon · इति सामायिकम् ।

११७८. सामायिक

Opening : देखें, क्र० ११३६ ।

Closing : देखें—क्र० ११३६ ।

Colophon : इति लघु सामायिक संपूर्ण । आव्य १०८ दीर्जे ।

११७९ सामायिक

Opening : नमः श्रीवर्द्धमानाय निर्द्धूतकलिलात्मने ।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्यादर्पणायते ॥१॥

Closing : अथय पौर्वान्हिकदेववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण,
सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतम् ।

Colophon इति लघुसामायिकसंपूर्णम् ।

११८० साधाचार

Opening : वंदौं देव युगादि जिन, गुरु गणधर के पाय ।
सुमरू देवी सारदा रिद्ध सिद्ध वरदाय ॥१॥

Closing : मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी ।
मंगल कुंदकुंदाद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम ॥

Clolophon : इति साधाचार जिनमत की संपूर्णम् ।

११८१. साततत्त्व

Opening : जीव ।१। अजीव ।२। आस्रव ।३। बंध ।४। संवर ।५।
निर्ज्जरा ।६। मोक्ष ।७। एहि सात तत्त्व है इनमे पुन्य और
पाप मिलिकैं नौ पदारथ कहिए हैं ।

Closing : इस पाप का सरूप विचार कर के त्यागनों जोग है। एही नौ पदारथ समान रूप कहा। विशेष निर्वंतं होय है ।१॥

Colophon : इति श्री साततत्व नव पदार्थ की चरचा संक्षेप मात्र जनाया है सो संपूर्णम्। शुभं भवंतु।

११८२. सिद्धान्तसार

Opening : तीन जगतपति जिनकी धर्मराज के नायक शिवसुखदायक हैं। इस पचगुरु को प्रणाम करि कैं आवै भवन उदधिकौं कथन सुनौं भाषु अवै ॥१॥

Closing : जे इहु मध्य सुलोक विर्षं जिनराज के मंदिर है अचखण्डन। श्री निर्वाण सुभूमि जहाँ न समोक्ष यये करिकर्म विखण्डन। जेइ सर्भवकी अमजाणये सबकौ करि भूषित आनन। तै इय सायक देहु मुझै करि जोरि करौ सबकौं नित बंदन ।२५॥

Colophon : इति श्री सिद्धान्तसार दीपक महाग्रंथे भट्टारक श्री सकलकीर्ति प्रणीतानुसारेण नथमलकृत भाषाया मध्यलोक वर्णनोनाम दसमोध्यायाधिकार ॥१०॥

११८३. सिंदूर-प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening : सोभित तप गजराज सीस सिंदूर पूरब विबोध। . . . . . बनारसि जोरि कर॥

Closing : सोरह सै इक्यानवै रितु ग्रीष्म वैसाख। सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सितपाख ॥३॥ नामसुक्तिमुक्तावली द्वाविंशति अधिकार। सतसि लोक परवान सब इति ग्रंथ विस्तार ॥४॥

Colophon : इति श्री सिंदूरप्रकरण सुक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ समाप्तम् । संवत् १८०३ वैशाख सुदी १४ बृहस्पतिवासरे लिखित यति लालचन्द पठनार्थं लाला गोवरधनदासजी ।

विशेष — दि० जि० ग्र० र०, के अनुसार इसके लेखक सोमप्रभाचार्य है तथा टीकाकार हर्षकीर्ति है ।

११८४ सिन्दूर-प्रकरण

Opening : सिंदूरप्रकरस्तपकरि · पार्श्वप्रभो पातु व ।
Closing : कि जातं बहुभि' करोति हरिणी यानिर्भर्या ।।
Colophon : इति सिंदूरप्रकरणम् सम्पूर्णम् । लिखित पंडित परमानन्देन मिति चैत्र कृष्णे पचम्या शुक्रवासरे रात्रौ श्री जिनचैत्यालये संवत्सर १९२८ का । शुभ भूयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५२९ ।

११८५ सिन्दूर प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening : देखें क्र० ११८३ ।
Closing : देखें, क्र० ११८३ ।
Colophon : इति सिंदूरप्रकरण सूक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ सम्पूर्णम् ।

११८६ शीलव्रत

Opening : समजुपीय चतुर — ·· · परनारिसौं ॥१॥
Closing : सीयल गुण कहणकौं ·· वषानै ॥
Colophon : इति श्री सील कथा समाप्तम् ।

११८७. श्रावकाचार

Opening : राजत केवलग्यान · — सहज सुभाय ॥१॥

Closing : एक सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताते तू अंगीकार । कर और ताके अनुसार देवगुरुधर्म का सरूप अंगीकार कर श्रद्धान कर ।

Colophon : इति कुदेवादि का वरणन संपूर्ण । इति श्रावकाचार ग्रंथ संपूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ३८३ ।

११८८ श्रावक प्रतिक्रमण

Opening : जीवप्रमादजनिता, प्रचुराप्नदोषा,
यस्मात्प्रतिक्रमणत, प्रलय प्रयाति ।
तस्मात्तदर्थममल मुनिबोधनार्थम्,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥

Closing : अक्खरपयत्थहीन मत्ताहीन च जं मए भणिय ।
त खमउ ·· दुक्खक्खयं दितु ॥

Colophon : श्रावकप्रतिक्रमणं समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ३७६ ।

११८६ श्रावक प्रतिष्ठाक्रमापण

Opening : देखें, क० ११८८ ।

Closing : देखें क० ११८८ ।

Colophon : इति श्रावकप्रतिक्रमापणम् ।

११६०· श्रावकव्रतसंध्या

Opening : अपवित्र, पवित्रो ······ ··· शुच्यते ॥

Closing : श्रीमत्सिद्धजिनं प्रणमामि सततं ज्ञानामृत भूषणम् ।
वंदे श्री जिनसेवकं प्रतिदिन संध्या त्रिकाल कुरु ।।

Colophon इति श्री संध्या सपूर्णम् ।

११६१. श्रावकव्रतसंध्या

Opening देखें, क० ११६० ।

Closing देखें, क० ११६० ।

Colophon इति जैनसंध्या सपूर्णम् ।

११६२ श्रावकव्रतविधान

Opening वारा व्रत श्रावग तने, तिनको करू बखान ।
जो जिय निहचै चित्त धरैं ताको होय कल्यान ।।१ ।

Closing वरत जु वारैं इम कहैं, सुनो भविक दे कान ।
मो निहचै धर पालीयो भैरो कहै बखान ।।

Colophon : इति श्रावक व्रत समाप्तम् ।

११६३. श्रीपालदर्शन

Opening ॐ नमः सिद्ध मन धरसंत, उदघाटै जुगपाट तुरंत ।
घर वार भरमें भजिगयो, पुन्यहि फलतें वरसनभयो ।

Closing तीर्थंङ्कर वंदौ जिनदेव, सीसनवाय करोपद सेव ।
शुद्धभाव जाके मन भयो सम्यक्दृष्टि मुकतहि गयौ ।।

Colophon . इति श्रीपालदर्शन सम्पूर्णम् ।

११६४. श्रीपालदर्शन

Opening : देखें, क० ११६३ ।

Closing : देखें, क० ११६१ ।

Colophon : इति श्रीपाल बरनन सम्पूर्णम् ।

११६५. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : तैसे जे मुनि सम्यक सहीत चारित्र के धारक थे सो कोई कर्म की जोरा वरी तैं मोह की प्रबलता करि सम्यक राजपद छूटि गया हो — ।

Closing : आगे अक्षर ज्ञान कहीए है सो उह प्रज.व समास के अन्तभेद मे एक भेद और मिलाइए तब अक्षर ज्ञान है सो वह अर्थाक्षर नाम ज्ञान है सो ए सर्व श्रुतिज्ञान के संक्षेप में भाव म्ह अक्षर ज्ञान है ।

Colophon नहीं है ।

११६६. तत्वसार

Opening ज्ञाणग्गिदट्ठकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धसब्भावे ।
णमिऊण परमसिद्धे सुतच्चसारं पवोच्छामि ॥

Closing सोऊण तच्चसारं रइयं मुणिणाहदेवसेणेण ।
जो सद्दिट्ठी भावइ सो पावइ सासयं सोक्खं ॥

Colophon : इति तत्त्वसार समाप्तः ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ३६१ ।

११६७. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्यं द्रव्यषट्क — — सर्वे. शुद्धदृष्टिः ॥

Closing : तवयण वयधरण - ... निवारेइ ॥

Colophon : इति दशाध्याय सूत्र उमास्वामी कृत संपूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४०४ ।

११९८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening . देखें—क्र० ११९७ ।

Closing देखें, क्र० ११९७ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र सपूर्णम् ।

११९९ तत्त्वार्थसूत्र

Opening देखें, क्र० ११९७ ।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्तारं - उमास्वामीमुनीश्वरम् ॥

Colophon इति उमास्वामिकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

१२००. तत्त्वार्थसूत्र

Opening · देखें, क्र० ११९७ ।

Closing ... ...धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्र-प्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतरसंख्या

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमो मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय ।

१२०१. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Closing : देखें, क्र० ११९९ ।

Colophon . इति श्री तत्त्वार्थ उमास्वामीकृत सूत्र जी समाप्तम् । सवत् १९२७ मीति भाद्रपद कृष्ण पक्ष ।४। चद्रवासरे लिखित नीलकठ दासशर्माऽह । श्रीकृष्णाय नम ।

१२०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारकर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ।।

Closing देखें क्र० ११९७ ।

Colophon इति तत्वार्थसूत्र समाप्त ।

१२०३ तत्त्वार्नसूत्र

Opening देखे, क्र० ११९७ ।

Closing : देखे, क्र० ११९९ ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सूत्र समाप्तम् ।

१२०४ तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Closing देखें, क्र० १२०१ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र सम्पूर्ण ।

१२०५. तत्त्वार्थसूत्र

Opening . देखें क्र० ११ ७ ।

Closing : तपश्चरण करिबो, व्रत धरिबो, सयम शरणको करिबो ······
·· ··· चतुरगति के दुख ते छूटे।

Colophon : इति समाप्ता।

१२०६. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क० ११९७।
Closing : देखें, क० ११९७।
Colophon : इति।

१२०७. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे क० ११९७।
Closing : देखें, क० १२०५।
Colophon : नही है।

१२०८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क०, ११९७।
Closing : अरिहृतभासियत्थ गणहरदेवेहि गथियं सम्म।
पणमामि भत्तिजुतो सुदणाणमहोवह सिरसा।
Colophon : इति सम्पूर्णम्।

१२०९ तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क० ११९७।
Closing : णवमे सवरनिज्जर दसमे मोक्ख वियाणेहि।
इय सत्ततत्त्वभणिय, दहसुत्ते मुणिदेहि ॥९॥

Colophon : इति श्री उमास्वामि विरचित तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।
सवत्सर १९३७ । मिति माघ बदी १२ वार बृहस्पति । इति ।

१२१०. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७ ।
Closing : देखें, क्र० १२०५ ।
Colophon : नही है ।

१२११. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७ ।
Closing : देखें, क्र० ११९६ ।
Colophon : इति श्री दशाध्यायसूत्र उमास्वामीकृत सम्पूर्णम् ।

१२१२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० १२०२ ।
Closing : देखे, क्र० १२०० ।
Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय समाप्त ॥

१२१३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११ ७ ।
Closing : देखे, क्र० १२०० ।
Colophon : इति तत्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय समाप्त ।

१२१४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७ ।

Closing : देखें, क्र० ११६७ ।

Colophon इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम् । श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ८ भौमवासरे, सवत् १६५५ श्रीरस्तु ।

१२१५ तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० १२०२ ।

Closing : पढमे पढम णियमा विदिए बिदिय च सव्वकालम्मि ।
अपुणु खाईयमम्म जम्मि जिणा तम्मि कालम्मि ।

Colophon इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्यायः समाप्तः । श्री पटणा-मध्ये साहुब बिलदाश तस्य पुत्र साहुभगवतिदास तस्य पुत्र आलम-चन्द पठनाय सम्वत् १७७२ वर्ष कार्तिक कृष्ण नवमी तिथौ सोम दिने सम्पूर्णम् ।

१२१६ तत्वार्थसूत्र

Opening देखें क्र० ११६७ ।

Closing देखें, क्र० १२०५ ।

Colophon : इति श्री समाप्त ।

१२१७ तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening श्री वृषभादि जिनेश्वर अंत नाम शुभवीर ।
मनवचकाय विशुद्ध करि वंदौं परम शरीर ।

Closing : समयसार अध्यातमसार प्रवचनसार रहसि मनधार ।
पचास्तिकाया ए जीन, नाटकत्रयी कहावै पीन ।
तत्वारथ सूत्तर की टीका, सर्वारथसिद्धि नाम सुठीक
दूजीन तत्वारथ वार्तिक श्लोकरूप वार्तिक तार्तिक ।

Colophon : नहीं है।

१२१८. त्रेपनक्रिया

Opening : अस्पष्ट ।
Closing : अस्पष्ट ।
विशेष— यह ग्रथ एक गुटका है जो बहुत ही अस्पष्ट है। बीच के पत्र भी अपठनीय हैं।

१२१९. त्रेपनक्रिया

Opening : जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।
... .. सव्वसाहूण ।
Closing : अस्पस्ट ।
Colophon : अस्पष्ट ।

१२२० त्रिकाल चतुर्विशति

Opening : निर्व्वाण जी ।१। सागरजी ।२। महासाधु जी ।३। विमल प्रभु जी ।४। सुद्धाय जी ।५। श्रीधर जी ।६। श्रीदत्त जी ।७। अमलप्रभ जी ।८।
Closing : कदर्प्प जी ।२०। जयनाथ जी ।२१। श्री विमल जी ।२२ दिव्य-वाद जी ।२३। अनतवीर्यजी ।२४।
Colophon : इति त्रिकाल चतुर्विंशति का नाम सपूर्णम् ।

१२२१ त्रिवर्णाचार

Opening : त्रैलोक्ययात्रां करितु प्रवीणा धर्मार्थकामा प्रभवति यस्याः ।
प्रसादतो वर्त्तत एव लोके सारस्वति सा ऽस्तु त्मनोह्र ॥१॥

Closing : सारस्वत्या प्रसादेन काव्यं कुर्वन्ति पंडिता ।
ततस्सैपा समाराध्या भवत्या शास्त्रे सरस्वति ॥

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविंदविनिर्गते श्रीगौतमर्षिपादपद्माराधकेन श्री जिनसेनाचार्येन विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययनसारोद्धारे ग्रहिधर्मदेवपूजा निरूपणीयोनाम पचम पर्व्व. ।

१२२२. त्रिलोकसार

Opening : त्रिभुवनसार अपार गुन गायक · · ।
श्री अरहंत महंत ॥१॥

Closing सुखनाम निराकुलता का है । निराकुलता वीतराग भावनितै हो है । तातैं परम वीतराग भावरूप शुद्धात्म रूप जनित परम आनंद की प्राप्ति करहुँ ।

Colophon इति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४२७ ।

१२२३ वचनिका

Opening वंदो श्री वृषभादि जिनधर्मतीर्थंकरतार ।
नमै जासपद इद्रसतं शिवमारग रुचिधार ॥१॥

Closing : हे करुणानिधान मेरी रक्षा करहु । तब भगवान कहते भये । हे राम शोक न करि, तूबल देव हैकैं एक दिन वासुदेव सहित इन्द्र की नाई पृथ्वी का राज करि । जिनेश्वर का व्रत धरि ।

Colophon नहीं है ।

१२२४ वैराग पचीसी

Opening : रागादिक दोषन तजैं, वैरागी जो देव ।
मन वचसीसनवाय के,कीजै तिनकी सेव ॥

Closing : एक सात पचास मैं सब वर सुखकार ।
पोष सुकल तिथि धर्म , जै जै निमपनिवार ॥

Colophon : इति श्री वैराग्य पचीसी सम्पूर्ण ।

१२२५ योग

Opening : यह आत्मा ससार अवस्था मे जीवात्मा कहावै है और जब यह ही अपनी अतरग बाह्य स्वरूप द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप सकल सामग्री के पावै है ।

Closing भाल आदि दश ध्यान मैं ध्येय थापि मन लाए ।
प्रत्याहार जु धारणा यह ध्यान विधिसार ॥१॥

Colophon इति श्री शुभचन्द्र आचार्य विरचित योगम् ।

१२२६. योगीरासा

Opening : आदि पुरुष युग आदि ··· आदि जती आदि नाथो ।
आदि जगत गुरु जोग पयासिउ । जय जय जय जगनाथो

Closing , योगीरासा सीखो रे श्रावक दोस न कोई लीजै ।
जिणदास त्रिविध करि जपई सिद्धह सुमिरण कीजई ।

Colophon , इति योगी रासा सम्पूर्णम् ।

देखें, रा० सू० III, पृ० ४२ ।

१२२७ अक्षर बत्तीसी

Opening : कहे करम बस कीजै, कनक कामिनी दृष्टि न दीजै ॥

Closing , यह अक्षर बत्तीसिका रची भगवती दास ।
बाल ख्याल कीनौ कछु लही आतम परकास ॥

Colophon : इति अक्षर बत्तीसी सम्पूर्णम् ।

१२२८. अक्षर बावनी

Opening : ॐ सु अलख परब्रह्म को धरौ सदाचित ध्यान ।
जा प्रसाद निहचै मनुज होत सुकृत को थान ।।१।।

Closing : हरष होत प्रभु दरस तें लहत अनेक अनद ।
लक्ष्मी चद्र समान जस सुविध सीस सुखचद ।।४५८।।

Colophon : इति श्री अक्षर बावणी जी समाप्तम् ।

१२२९ अन्यमत श्लोक

Opening : अहिंसा सत्यम तेय त्यागो मैथुनवर्ज्जनम्
पञ्चस्वेतेषु धर्म्मेषु सर्वे धर्मा प्रतिष्ठिता ।।१।।

Closing : अनुदिते नभसा देवस्य महर्षयो माहर्षिभि जुहुया जनकस्य जनस्य सायणा रक्षा भवतु शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु वृद्धिर्भवतु स्वस्तिर्भवतु श्रद्धाभवतु ·· ।।

Colophon : नही है ।

१२३० अठाईरासा

Opening : वरत अठाई जे करै ते पावै भवपार प्राणी ।
जबूद्वीप सुहावणो लख योजन विस्तार प्राणी ।।१।।

Closing : मन वच काया जे पढ़ै ते पावै भवपार ।
विनयकीरत सुखभूषणे जनम सफल ससार प्राणी ।।

Colophon : इति श्री अठाई रासजी समाप्तम् ।

१२३१ अढाईरासा

Opening : देखें, क्र० १२३० ।

Closing : देखें, क्र० १२३० ।

Colophon इति अढाई पूजा रासौ सपूर्णम् । शुभ भवतु ।

१२३२. बारहमासा

Opening विनवे उग्रसेन की लाडिली समुझावहु मोहि ये हे सगरी ॥१॥

Closing बारह मास पूरे भये प्रनि उत्तम लाल बिनोदि गाई ।

Colophon इति बारहमासा समाप्तम् ।

१२३३. बारहमासा

Opening देखे - क्र० १२३२ ।

Closing देखे— क्र० १२३२ ।

Colophon इति श्री बारहमासा जी समाप्तम् ।

१२३४ चन्द्रशतक

Opening : अनुभौ अभ्यास मैं निवास शुद्ध चेतन कौ,
अनुभौ सरूप शुद्धबोध कौ प्रकाश है ।
अनुभौ अनूप रूप रहत अनत ग्यान,
अनुभौ अतीत त्याग ग्यांन सुख रास है ।
अनुभौ अपार सार आपही कौ आप जानैं
आपही मैं व्यापदीसैं जामैं जड़ नास है ।

अनुभौ अरूप है सरूप चिदानन्द चंद,
अनुभौ अतीत आठ कर्म सौ अफास है ॥१॥

Closing : गुण ठाणौ मिथ्यात अबुत तन छुटै च्यारगत
सासादन गुण थान नरक तजि होई तीन रत।
मिश्र थीन सजोग तहाँ जीव मरहि न कोई
थुनि अजोग गुन थान छुटैं प्रगटै सिव सोई
सपत सेव गुण थे छुटे एक गत देव की
कह्यो अरथ गुरु ग्रथ मैं सति वचन जिन सेवकी ॥

Colophon. इति श्री चदशतक समाप्तम्।

१२३५. चर्चाशतक

Opening : जैं सरवग्य अलोक लोक इक अइवत देपै।
हसतामल ज्यों हाथ लीक ज्यौं सरव बिशेषै।
छदो हर्व गुणपरज काल त्रय वर्तमान सम।
दर्पण जेम प्रकाश नाश मल कर्म महातम।
परमेष्ठी पांचो विघनहर मंगलकारी लोक मैं।
मन वच काय निरनायभुव आणंद सौं धो धोक मैं॥१॥

Closing : चरचा मुख सो भनैं सुनैं प्रानी जहि कानन।
केई सुने घरि जाहि नांहि भाषै फिरि आनन।
तिनि को लखि उपगार सार यह सतक बनाई।
पढत सुनत ह्वै बुद्ध सुद्ध जिनवानी गाई।
इसमे अनेक सिद्धान्तको मथन कथनं द्यानत कह्या।
सब माहि जीवको नाम है जीव भाव हम सरदह्या॥१०४॥

Colophon : इति चरचा शतक समाप्तम्।

१२३६. चौबोल पचीसी

Opening : दरब खेत अरकाल भाव दरव षट तेरे नव।
ग्यायक दीनदयाल से अरिहत नमौं सदा।

Closing कवित्त बनाए सावनि सुनाए मन भाए गाए गुन ग्यान ।
घरचा कूप अनूपम बानी हृतभूप चिद्रूप निसान ।
गोमटसार धार धानत नैं कारन जीव तत्व सरधान ।
अक्षर अरथ अमिल जो देखौ लेखो सुद्ध छिमा उर आंन ॥२५॥

Colophon इति दरब चौबोल पचीसी सपूर्णम् ।

१२३७. दसबोल पचीसी

Opening छप्पय—एक सरूप अभेद दोय ·· ·· ।
जिह तिह विध भवजल तरौ ॥१॥

Closing : वृषभसेन गुणसेन ·· – ´ यह पुद्गलमरजायहै ॥२५॥

Colophon इति दसबोल पचीसी सपूर्णम् ।

१२३८. दसबोल पचीसी

Opening : देखें, क० १२३७ ।

Closing देखे, क० १२३७ ।

Colophon इति दसबोल पचीसी सम्पूर्णम् ।

१२३९. दशथान चौबीसी

Opening : रिषभदेव रिषभदेव छीर गंभीर धीर धुनि ।
धार वीस जगदीस ईस ते ईस दुगुन गुन ।
सुरघ ठांम मिथ नाम मातपुरतात बरन तन ।
आव काय सुघचिह्न मुकुत आसन दस बरनन ।

असगाय पुख उपजाय बुद्ध पाय करो मगल अमर ।
सिरनाय नमौं जुग जोर कर भो जिनद भो तापहर ॥१॥

Closing जै जै मल्ल ब्रह्मचरिज अटल बल सकम वनाए ।
एक एक जिन स्वाम नाम दस दस गुन गाए ।
सुनत सुनत चित चुनत धुनत दुख सतत प्रांनी ।
द्यानतराय उपाय गाय जिन पाय कहानी ।
गव जनम जरामृत नहि मग एक उषवविगर ।
सिरनाय नमौ जुग जोरि कर भो जिनद भो तापहर ॥३०॥

Colophon इति श्री दसथान चौवीसी सपूर्णम् ।

१२४० ढालगण

Opening देव धरम गुरु वंदिके कहू ढाल गण सार ।
जा अवलौकै बुद्धि उर उपजे सुभ करतार ॥१॥

Closing अब जनमे नाही या भवमाही गनके माई सनजानी ।
तुमको जो ध्यावै तुमपद पावे कवी कहावै अधिकानी ॥६२॥

Colophon . इति श्री ढालगण सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१२४१ ढालगण

Opening । देखे, क्र० १२४० ।
Closing । देखें, क्र० १२४० ।
Colophon . इति श्री ढालगण सम्पूर्णम् ।

१२४२. दोहा

Opening : अपनी पद न विचार कै अहो जगत के राइ ।
भवबन छाय कहा रहे सिवपुर सुधि बिसराइ ॥१॥

Closing : रूपचद सद्गुरुनिकी, जनु बलिहारी जाइ ।
आपुन वे सिवपुर गए, भव्यनु पथ दिखाई ॥१०१॥

Colophon : इति श्री पडित रूपचद विरचिते दोहरा परमारथी समाप्तं ।
शुभ भवतु ।

१२४३. दोहावली

Opening : जिनके वचन विनोदते प्रगटै शिवपुर राह ।
ते जिनेंद्र मगल करा नितप्रति नयो उछाह ॥१॥

Closing : जो सम्यक्त सहित ... सोना और सुगन्ध ॥

Colophon : नही है ।

देखे, जै सि. भ० ग्र० I क्र० ५०८ ।

१२४४ दोहावली

Opening : देखे, क्र० १२४३ ।

Closing : देखे, क्र० १२४३ ।

Colophon : नही है ।

विशेष— चार जगह दोहावली शीर्षक देकर दोहे लिखें गये हैं । चारो में चार-चार पत्र हैं जिनमे एक समान दोहे दिये गये हैं ।

१२४५. दोहावली

Opening : देखे. क्र० १२४३ ।

Closing : देखें, क्र० १२४३ ।

Colophon : नहीं है ।

१२४६ द्विपञ्चाशतिका

Opening : अतिसूछिम करि · ··· · · लेपचे छांनियै ॥२२॥

Closing बावन कवित एतौ मेरी मतिमान लए।
हस के सुभाइ ग्याता गुण गहि लीजियो ॥४५२॥

Colophon : इति श्री बनारसीदास नामांकित द्विपचाशतिका समाप्ता।

१२४७ फुटकर-काव्य

Opening . अब हम देव का सरूप जिन सिद्धान्त के अनुसार वर्णन करते हैं सो सर्व सभासद सज्जन महासयो कू श्रद्धान करण योग्य है।१॥

Closing : देहे निर्ममता गुरौ विनयता नित्य श्रुताश्यासता।
चारित्रोज्वलतामहोपशमता सम्मारनिर्वेरता ··· ·· ॥

Colophon अनुपलब्ध।

१२४८. ज्ञानसूर्योदयनाटक

Opening : अनाद्यनतरूपाय पचवर्णात्ममूर्त्तये।
अनतमहिमाप्राप्त सदाकार: नमोस्तु ते ॥१॥

Closing : अस्पष्ट।

Colophon : इति श्रीवादिचद्र आचार्यकृत श्री ज्ञानसूर्योदयनाटक सपूर्णम् श्री पाठकाना शुभ भूयात्। श्रारस्तु कल्याणमस्तु लिखित पंडित परमानंदेन मिति माघ कृष्ण तिथौ तृतीयायां रविवासरे संवत् १६२८ का लक्ष्मणपुरसमीपे पंतुरनगरे जिन चैत्यालये।

देखें, रा० सू० III, पृ० ८६।

१२४९ जैन-रासौ

Opening . अर्हंता छियाला सिद्धा अट्ठ सूर छत्तीसा।
उवझाया पणवीसा अट्ठाईसा हुवेई साहूण ॥

Closing : जे नर आप घात कर मरो होइ तिरजच विहु गति फिरै।
संसारा दुख भोगवी विख आपु धतुरौ धाई '' — ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

रा० सू० III, पृ० १४१,

१२५०. जकडी

Opening : अब मन मेरे वे सुनि सुनि सिख सयानी।
जिनवर चरनो वै करि करि प्रीत सज्यानी ॥

Closing : धन्य धन्य सतगुर के नायक सब सुखदायक तिहुपन मे।
जिन सो समझ परी सब भूदर सदा सरन इस भाव बन मैं ॥

Colophon : इति सिस्य जकडी सपूर्णम्।

१२५१. जोगीरासो

Opening : आदि पुरुष जो आदिज गोत्तमु, आदि जति आदिनाथो।
आदि जगत गुरु जोग पयासिउ जय जय जय जगनाथो ॥

Closing : योगीय रसौ सिखहु रे श्रावग दोसुण को लीजै।
जो जीनदास हत्रि विधि हिए सिखह सुमिरणु कीजै ॥४२॥

Colophon : इति जोगीरासु समाप्ता।

रा० सू० III, पृ० १६५।

१२५२ कवित्त

श्री जिनराज गरीबनेवाज सुधारन काज सबै सुखदाई।
दीनदयाल बड़े प्रतिपाल दया गुनमाल सदा सिरनाई ॥
दुरगति टारन पाप निवारन हौ भवतारन की भवताई।
बारंबार पुकार करौ जन की बिनती सुनिए जिनराई ॥

Colsing　हो दीनबन्धु श्री पति करुना निधान जी।
ये मेरि विथा क्यो न हरो बार क्यो लगी ॥

Colophon : इति।

१२५३. कवित्त

Opening .　श्री जिनवर के नाम की महिमा अगम अपार।
धरि प्रतीति जे जपत हैं सफल करत अवतार ॥१॥

Closing :　अद्भुत अतिसै तुम धरै वीतराग निज लीन।
पूज्यक सहिजै उच्चहै निंदक सहिजै लीन ॥६॥

Colophon . इति सम्पूर्णम्।

१२५४ कवित्त

Opening　भौ जल माहि भरयो चिरजीव सदीव अतीत भव स्थिति गाठी।
राग विरोध विमोह उदैव सुकर्म्म प्रकृति लगी अति गाठी।
पेच पर्यो दिढ पुग्गल सो इह भाँति सही बडी आपद गाठी।
सम्यक् ध्यान भज्यो जबही तबही सवकर्मनि की जडकाठी ॥

Closing ·　कहुँ वेदवके कहुँ आप सुनि वेके कहुँ आप जो जायकै
कहुँ इष्ट कहु मित्र है।
कहुँ जोग विधि जोगी, कहुँ राज रस भोगी कहुँ वैद कहुँ रोगी
कहु कटक कहे मिष्ट है।
कहु लता के छाया कहु फूल के फूल्यौ कहु भौर कै भल्यौ कहु
रूपके दिखाए है।
सकल निवासी अविनासी सर्वभूत वासी गुपत प्रगासी आपै
सिख आपै सिष्ट है।

Colophon : इति कवित्त।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ५०६।

१२५५ कृपणपचीसी

Opening : एक समदेहरा में पंचसब जुरे हुते सघ इनवात जिहां जातकी चलाई है ।
चालो भले गिरिनारि नेमनाथ परिस्येवेको जनम सफल तिहा कीर्ति बढाई है ।।
तहां एक बैठी हुती किरपण पुरिषनार उने सुनी बात आनि घर मे चलाई है ।
सुनि हो पियारे पिउ जोधारे आवै जिनु हमैं तुमे दोउ बोलो चली वन आई है ।।१।।

Closing · कहे लालविनोदी भव सुनो धन पाय जस लीजिये ।
करिजाज प्रतिष्ठा जग्य जिनसुदान सुपात्रा दीजिये ।।

Colophon इति श्री कृपणपचीसी समाप्तम् ।

१२५६ मालपचीसी

Opening । सुरलोकासमुतीर्ध्या सौधर्मेण निर्मिता ।
माघे चैत्रे वृहद्‌द्वारे भव्यैर्माला प्रतिष्ठिते ।।१।।

Closing माला श्री जिनराज की पावै पुन्य सजोग ।
जस प्रगटै कीरति बढै धन्य कहै सब लोग ।।३६।।

Colophon : इति मालपचीसी ।

१२५७ नाममाला

Opening · त नमामि पर परमगुरु कृष्ण कमल दल नैन ।
जग कारन करुना निधै गोकुल जाको ऐन ।।१।।

Closing । जमल जुगल जुग द्वंद है, उभय मिथुन बिबिधीय ।
जुगल किसोर सदा बसौ, नददास के हीय ।।२५६।।

Colophon : इति श्री नंददासेन कृता मानमजरी नाममाला सपूर्णम् । शुभम् अस्तु । पाठकस्य शुभ भूयात् । संवत् १८०६ । शाके १६७१ ॥ पौष वदि अष्टमी गुरुवासरे पुरैनिआ नगरे फतेहपुर ग्रामे श्री खेदु पाण्डेय पुस्तकमिद लेखि ।

१२५८ नवरत्न-कवित्त

Opening . धन्वतरि छिपनकअमरघटकर्प्पवेताल ।
वररुचि-सकु-वराहमिहरकालिदासनवलाल ॥१॥

Closing कुलवत पुरुष कुलविधि तजै वधु न मानै बन्धु हित ।
सन्याम क्षरिधन सग्रहै ए जग मे मूरख विदित ॥

Colophon इति नवरत्न कवित्त समाप्त ।

१२५९ नेमिचन्द्रिका

Opening अस्पष्ट ।

Closing अस्पष्ट ।

विशेष— यह ग्रथ एक गुटका है, जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के कुछ पत्र पढे जा सकते हैं ।

१२६०. नेमिचद्रिका

Opening आदिचरण हिरदै धरो, अजित चरणचित लाइ ।
सभव सुरत लगाइकै अभिनदन मनु लाइ ॥१॥

Closing : तो होई ब्याह को साज काज बहुविधि सो कीन्हो ।
देस देस प्रति नृपति सबनि को ·· ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२६१· नेमिचंद्रिका

Opening : देखें, क्र० १२६० ।

Closing : नेम चंद्रिका जे पढ़ै ताकी पुन्य प्रकाश ।
आसकरन लघु वीनवै जिनवानी को दास ॥२१६॥

Colophon : इति नेमचंद्रिका सपूरन ।

१२६२. नेमिनाथ बारहमासा

Opening : देखें, क्र० १२३२ ।

Closing : देखें, क्र० १२३२ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ राजुलमती का बारहमासा प्रतीकुनर सपूर्णम् ।

देखें, रा० सू० III, पृ०

१२६३ नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समै जो समुद्र विजै द्वारका मह नेम को ब्याह रचो है ।
गावत मगलचार वधू कुल मै सपके जो उछाह मचो है ।
तेल चढ़ावन को युवति अपने अपने कर थाल सच्यो है ।
नेग करे सब ब्याहन को घर मडप चित्र विचित्र खिंचो है ।

Closing : नैम कुमार ने जोग लियो दिन छप्पन लो छदमस्त रहो है ।
केवलज्ञान भयो प्रभु को तब आठविधु तम दान मही है ।
सात सै वर्ष विहार कियो उपदेशते धर्म महा मही है ।
निर्वान गये मुनि पाँच सै छप्पन लाल विनोदिक ने सग गही है ।

Colophon : इति श्री नेमिनाथ का ब्याहुला समाप्तम् ।

देखें रा० सू० III, पृ० ८४ ।

१२६४ नेमिनाथ विवाह

Opening : देखें, क्र० १२६३ ।

Closing : देखें, क्र० १२६३ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का ब्याहुला सम्पूर्णम् ।

१२६५. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखें, क्र० १२६३ ।

Closing : देखें, क्र० १२६३ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का व्याहुला समाप्त ।

१२६६ पखवारा

Opening : पड़िवा पथम कला घटि जागी परम प्रतीत रोग रस पागी ।
प्रति प्रतिपदा प्रीत उपजावै वहै प्रतिपदा नाम कहावै ।।१।।

Closing : पून्यो पूरण ब्रह्म विलासी पूरण गुण पूरन परगासी ।
पूरण प्रभुता पूरण वासी कहै जती तुलसी बनवासी ।।

Colophon : इति पखवाराजी समाप्तम् ।

१२६७. परमार्थजकडी

Opening : अरहत चरन चित ल्यावो, फुनि सिद्ध सिव कर ध्यावो ।
वदौ जिन मुद्राधारी निर्ग्रंथ जती अविकारी ।।१।।

Closing : न अघाय यौं हीरमै निस दिन ए कछि नहूं ना चुके ।
नहि रहै वरज्यो वरजदेख्यो बार बार तहां धुके ।
श्री जिन सिद्धान्त सरोज सु दर ताहि मध्य लगाईए ।
रामकृष्ण ग्ल.ज याकी कीए एही सुख पाईए ।।८।।

Colophon : इति श्री रामकृत जकरी संपूर्णम् ।

देखे, रा० सू III, पृ० १३७ ।

१२६८ पिंगल

Opening : मुरलीधर श्रीधर सुकवि मानि महामन मोद ।
कवि विनोद मो यह कियो उत्तम छंद विनोद ।।१।।

Closing : रूपक घनाक्षरी मे गुर लघु नियमन कृतिल बरन वर रचिये चरन चारि ।
कीजे बिसरामतित आठ आठ अक्षर पैं अत एक लघु तौ नियम करि करि धारि ।
या विधि सरस भाग गुण गुरु सेसनाग कीनो कविराजनि के काज बुद्धि कै विचारी ॥
भाषा सिंधु तरिवेको आधे छंद करिबेको पिंगल बनायो पढियै से सुद्ध कै सुरि ॥

Colophon : इति श्री कवि विनोद मुरलीधर श्रीधर कृतौ वर्नवृत्त परिच्छेदो-नाम षोडसमो विनोद ।

दोहा— बीरमा परथा परथ रस रस बसु ससिवामक ।
सुभ भद्रा मित पक्ष दिण अगारक मतिवक ॥१॥

अपर च — तिथित्तनिदुभ पुनर्बसुबेला लाभ बिराजु ।
राम सहाय लिखितमिद पिंगलग्रथ सुसाजु ॥२॥
इति श्री पिंगल समाप्तम् । शुभम् अस्तु ।

१२६६. राजुल-पचीसी

Opennig प्रथम सुमरौं अरिहत देव ···· सौं विनती करी ॥

Closing । यह लाल विनोदी गावै सुनत सब जन गहवरे
राजुलपति श्री नेमि जिन सब सघ कौं मंगल करे ।२६॥

Colcphon . इति श्री राजुल पचीसी जी समाप्तम् ।

देखें, रा० सू० III, पृ० ८५, १३१, १४६ ।

१२७०. राजुल-पचीसी

Opening : देखें, क० १२६६ ।

Closing : देखें, क० १२६६ ।

Colophon : इति राजुल पचीसी संपूरन ।

१२७१. राजुल-पचीसी

Opening सुनु भविजन हो प्रथम ही प्रथम जिनेन्द्र चरन चित ल्याइए ।
सुनु भविजन हो सारद गुरु हि मनाइ जादो राय गाईए ॥१॥

Closing गावै विनोदीलाल हरषित भविक जनन सुनावई ।
और गावै नर नारी सोउ अमर पद पावई ॥२५॥

Colophon : इति राजुल पचीसी संपूर्णम् ।

१२७२ राजुलपचीसी

Opening देखें, क्र० १२६६ ।

Closing देखे, क्र० १२६६ ।

Colophon इति श्री राजुल पचीसी समाप्तम् ।

१२७३ राजुलपचीसी

Opening : बंदी वे प्रथमही •• राजमति जस गाई सो जीवे ॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon . इति सपूर्णम् ।

१२७४. रिस्ता

Opening : कीते श्रीनायक मीनी हिए व्यापत है ।
तिहारे दर्शन .... पाप नासत है ॥

Closing गहे जिननाथ को — जागे है ॥

Colophon इति रेषता समाप्त. ।

१२७५. रिस्ता

Opening : मुझे है चाव दर्शन का निहारोगे तो क्या होगा ।
गही अब तो सरन तेरी उबारोगे तो क्या होगा ॥

Closing : हरो दुख मो तमा अबही, लगा जू सग साग है ।
प्रभु यह अरज चित्त धरियें नवल बेरा तुम्हारा है ।

Colophon : इति रेषता । इति श्री पूजा जी की पोथी जी समाप्तम् ।
सवत् १८५३ शाके सत्रै सै अठारे आश्विन सुदी ६ वार बुद्ध को
लिपकरी नजबगढ मध्ये पूज्य रिषि श्रीश्री पूज्य रिषि महाराज
जी पेमारिष जी शिष्य हसराज जी तत् शिष्य रामसुख लिखा-
पितम् ।

१२७६. रिस्ता

Opening : मेरा मन महावीर सो लगा ।
खड़े हाथ जोर के आए, दरस टुक दीजिए हमको ।
सरन है आज जिनवर का ॥१॥

Closing : एक बुरा कुगुर उपदेश सुणै मति माना ।
तेरी अलप उमर खिरि जाय नरक उठ जाना ॥

Colophon : इति समाप्तम् ।

१२७७. रूपचन्दशतक

Opening : अपनो पद न विचारहू, अहो ज
मब वन छाया कहा रहे, सिव

Closing : रूपचद सद् गुरनिकी जनु वा
आपुन वें सिवपुरी गए, भ

Colophon : इति श्री पाण्डे रूपचद शतक समाप्तम् ।

१२७८. सतसइया

Opening : श्री गुरनाथ प्रसादतैं होय मनोरथ सिद्ध ।।
— — ज्यौं तरू वेलि दल फूल फलन की वृद्धि ।।

Closing : आई अवधि विवेक की देखी कोन अनथाय ।।
काम कनक कै पीतरैं हस अनादर भाय ।।

Colophon इतिश्री वृदावन जी कृत सतसइया चैत्र शुक्ल १५ सवत् १६५३ गुरुवार आठ बजे रात्रि को आरामपुर मे बाबू अजित दास के पुत्र हरीदास ने लिखकर पूर्ण किया ।

विशेष-- डा० नेमिचन्द्र शास्त्री कृत तीथङ्कर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा नामक पुस्तक मे वृन्दावन की प्रवचनसार, तीस चौबीसी पाठ, चौबीसी पाठ, छन्दशतक, अर्हत्पाशाकेवली वृन्दावनविलास आदी ग्रथो का उल्लेख है लेकिन सतसइया का कोई उल्लेख नहीं है ।

१२७९. समकिताधिकार

Opening : श्री ॐकार हियइ धरी लहि सरसति सुपसाय ।
समकित गुण फल वर्णउ इह पर भवि सुखदाय ।।१।।

Closing : विजय दशमी श्री मृठापुर वर सघ सुकल सुखदाई जी ।
वाचक मानव दइ सुखदायक सुणतां लील वधाई जी ।।

Colophon : इति समकिताधिकार श्री अरहदास सबन्ध । सबत् १७०२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे दशम्या दिन गुरुवार लिखित श्री काला कुन्है ग्रामे । शुभ भवतु न सदा श्री । श्री ।

१२८०. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री जिनवर के पूजोपद सरस्वति सीस नवाय ।
गनधर मुनि के चरन नमि भाषा कहो बनाय ।।६।।

Closing : ब्यालीस मुनी अनागार । मुक्त भये जग के आधार ।।
पाहि कूट को दूरस न करे । कोड उपवास तनो फलभरे ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२८१ सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : देखें, क० १२८२ ।

Closing : समोसरण में जायकै बदे वीर जिनेन्द्र ।
अहो नाथ तुम दरसन तें कटैं करम के फद ।।८४

Colophon : नही है ।

१२८२. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री ससेवित चरण कमल जुग सब सुख लाइक ।
श्री सिवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनाईक ।
अनमित सुख उद्योत कर्म्म बैरी घनघाइक ।
ज्ञान भान परगाम पद सब सुखदाइक ।
ऐसैं महत अरिहत जिनन्द निसि दिन भावसौ ।
पाऐ प्रमाण अविचल सदन बीतराग गुन चावसौ ।।१।।

Closing : बीस हजार बरष बीतत मानसीक तह असन करत ।
दस दुनि पखवारे गए परिमल सहि ··· ··· ।।

Colophon : Missing.

१२८३. शिखरमाहात्म्य

Opening : पचगुरु को नमो धोकर सीसनवाय ।
श्री जिन भाषित भारती तसको नमो पाय ।।१।।

Closing　　रेवा सहर मनोग बसैं श्रावग भव्य सब ।
आदित्य ऐश्वर्ययोग तृतीय पहर पूरण भयौ ॥३७॥

Colophon　　इति श्री सम्मेद शिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति तच्छिष्य लालचद विरचिते सुवरवरकूटवर्णनो नाम एकविंशतिम सर्ग समाप्त । सम्पूर्णमिति ।

दोहे —　　सम्वत् अष्टादश शतक बानवे अधिक सुजान ।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी बुधे पूरण भये गुणखान ॥ ॥
रघुनाथ दूज के लिखे भव्यन के धर्म काम ।
वाचै सुनै मद्दर्दहै पावै सर्व सुखधाम ॥

१२८४ शिखरमाहात्म्य

Opening .　　अजितनाथ सिद्धवर कूट । अस्सी कोडि एक अरब चौवन लाख मुनि सिद्ध भयै बतीस कोटि उपास का फल इस कूट के दर्शन का फल है ।

Closing　　पार्श्वनाथ सुवणभद्रकूट । सम्मेदशिखर सुवर्ण कूट ते पार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि एक करोड चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सो ब्यालीस मुनि सिद्ध भये इस कूट के दर्शन ते सोरा करोड उपास का फल है ।

Colophon :　　अनुपलब्ध ।

१२८५· सोलहकारणरासा

Opening ;　　वीर जिनेस्वर नमसकरी ··· · जहाँ हेमप्रभ घन यसा ॥१॥

Closing :　　सकलकिरत ए रासा कीयो ए सोलह कारण ।
पढ़ै गुणैं जे समलैं तिण शिव सुहकारण ॥७॥

Colophon :　　इति सौलहकारण रासा जी समाप्तम् ।

१२८६ श्रुतपचमीरासा

Opening : बरत अठाई जे करै ते पावै भवपार प्राणी ।
जबूद्वीप सुहामणो लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुणै, मन वच रुचि भ्रावहि ।
सुख सपति आणंद लहै, वछित फल पावहि ॥१०१॥

Colophon : इति श्रुतपचमी रासा ।

विशेष—इसके साथ अठाई रासा भी है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५१६ ।

१२८७ श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नम सिद्ध समघर संत उदघाटे जुग पाट तुरन्त ।
उघटवार भरम भजि गयो पुण्य फलै दरसन तुम भयो ॥१॥

Closing : बिनुथुलै सोहै प्रतिबिंब भवि जन प्रीति बाढै अनद ।
अजयना — · ·· · ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखे, रा० सू० III, पृ० १४३ ।

१२८८. सुभाषितावली

Opening : पारास्सार प्रवक्ष्यामि कथित ग्रथकोटिभि ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥१॥

Closing : मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतेषु पश्यति तद्विदो विदु ॥

Colophon नहीं है ।

१२८९. बाहुबलि

Opening : दोऊ सूर महासुभट भरतबाहुबल वीर ।
अति साज चले रण लरिवेकौं अतिधीर ।।

Closing : सत्रै सै चलहोत्तरै भादो सुदि बुधवार ।
सुकल पक्ष तेरस भनी गावै मंगल च्यार ।

Colophon : इति श्री भरत बाहुबलि भाषा समाप्तम् ।

१२९०. विवेक-जकडी

Opening : चेतन तैरो वानौ चेतन दानौ चेतन तेरी जाति वेवेही
हातै मति खोई जाति विगोई रह्यो प्रमादनि भाति वेवेहो ।।

Closing : कुंदकुंद आचारज गुरुवयणहिं मूरख थिनन सभालै ।
आपन औगुण सहज सुनिर्मल जो जिनदास सुपालै ।।

Clolophon इति विवेक जकरी ।

१२९१ व्यवहारपचीसी

Opening : सम्यग् पदधारी तीनलोक अधिकारी क्रोध लोभ परिहारि ऐसौ महाराज है ।
सबकौं समान गिना राग दोश भाव विना ताही पास तिना सक-सो को सिरताज है ।
ताही को बषाण्यो धर्म सोई सांच सोई पर्म और को कह्यो अधर्म झूठ को समाज है ।
सिवपुर वाट के बटाउनि को संवल है सुख को दिवैयो महाकाज माहि माज है ।।१।।

Closing . चाहत धन सतान मानताहि बहे है ।।२६।।

Colophon : इति श्री व्यवहार पचीसी समाप्तम् ।

१२६२. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : इत्थं यथा तव विभूतिरभूजिनेंद्र धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभादिनकृत. प्रहतान्धकार तादृक्कुतोग्रहणस्य विकाशनोपि ॥ ॥

Closing : श्री भक्तामरजी की महिमा बहुत भारी है भारी जानना यामे जेति सिद्धि अरु मंत्र है सो सपूर्ण सिद्धि मंत्र उपकार के वास्ते एक एक काव्य के एक-एक मंत्र का थोडा-थोडा फल विध सुधा लिखा ऐसा जानना ।

Colophon : इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मानतुगाचार्य विरचित समाप्त ।

१२६३. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणामुद्योतक दलितपापतमोवितानम् । सम्यक प्रणम्य जिनपादयुग युगादा वालवन भवजले पतितां जनानाम् ।

Closing : ऋद्धि मंत्र जपिवा यंत्र पूजनात् अष्टोत्तरशत जाप नित्य कीजै दिन ४६ सर्व वस होवें जिसको नामचितें सो वस होवें व्रत कीजै ॥४८॥

Colophon : कुछ नही है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५५५ ।

१२६४. चौबीस-तीर्थंकर-मंत्र

Opening : ॐ ह्री श्री चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे फुट विचक्राउरूमेर्ईमवा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : अमोघ लक्ष्मी मिले ताज संग्राम व्यापार सर्वत्र जय होय तथा वार ७ नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्धि होय ॥

Colophon : इति मंत्र सम्पूर्णम् ।

१२९५ गायत्रीमंत्र

Opening : ॐ भूर्भुवः स्व तत् सवितुर्वरेण्य भर्गोदेवस्य धीमही धीयोयोनः प्रचोदयात् ।

Closing : भूतप्राणायाम प्रवर्तकेन तीर्थङ्करदेवेन वृषभसेनादिगौतमाते गणेशमहर्षिणा गायत्रीछंदसा गायत्रीसमाख्यनाऽनेन दिव्यमत्रेण । त आदि ब्रह्माण तुष्टु दुरितिसक्षेपेण ननु निरूपित

Colophon इति गायत्रीव्याख्या सम्पूर्णम् ।

१२९६ घटाकर्णमंत्र

Opening : ॐ घटाकर्णो महावीर सर्वव्याधिविनाशका ।
विस्फोटकभय प्राप्ति रक्ष रक्ष महाबलः ॥१॥

Closing : नकाले मरण तस्य न च सर्प्पेण डस्यते ।
अग्नि चोरभय नास्ति ॐ ह्रीं श्री घंटाकर्णो नमोऽस्तुते ॥४॥

Colophon : इति घटाकर्ण मंत्र ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५६५ ।

१२९७. घकाकर्णमंत्र

Opening देखें, क्र० १२९६ ।

Closing देखें क्र० १२९६ ।

Colophon -ति घटाकर्ण मंत्र ।

१२६८. होमविधि

Opening श्री शांतिनाथममरासुरमर्त्यनाथ
भास्वति किरीटमणिदीधिति पादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशांतिकरणं प्रणवं प्रणम्य
होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुत्क्षपामि ॥

Closing । शांतिनाथ नमस्कृत्य सर्वविघ्नोपशांतये ।
सर्वभव्योपशांत्यर्थं होमायमुच्यते ॥

Colophon । इति होमविधान सम्पूर्णम् ।

१२६९. जैनगायत्री

Opening । आनादिनिधन मत्र पचत्रिंशत् तदक्षरम् ।
पचाक्षरमिति ब्रूयात् चतुर्दशमथापि च ।।३।।

Closing । अनादिनिधनो मत्रो गायित्रीमत्रसयुता ।
नित्य च जाप्यते योऽस्य महामगलदायकम् ।।१०।।

Colophon : इति श्री जैनगायित्री सम्पूर्णम् ।

१३००. जैनसंकल्प

Opening । ॐ यजमानाचार्यप्रभृतिभव्यजनाना स धर्मश्रावणाया-
रोग्यैश्वार्याभिः वृद्धिरस्तु ··· — — ।

Closing : — ··· देवोहं अमुकमंत्रस्य सत्यष्टोत्तर - ··· अमुक
लाभाय जप करिष्ये ।

Colophon । नहीं है ।

१३०१. जिनेन्द्र-स्तोत्र

Opening : तनो गधकुटीमध्ये जिनेन्द्राय हररःमयीम् ।
पूजयामास गधार्धं रभिषेकपुर सरम् ॥

Closing : लक्ष्मीवानभिषेकपूर्वकमसो श्रीवज्रजघो विभुः
द्वात्रिंशमुकुटप्रबद्धमहितक्ष्माभृत् सह ··· ।

Colophon : इति स्तोत्र समाप्तम् ।

१३०२. कामदा-यत्र

Opening दिवाली के रात को लिखना भोजपत्र पर अष्टगन्ध सो
भुजा मे बाध राखै ।

Closing · अगर मिश्री घी इन सबकी धूप देय ।

Colophon . लिखत मुन्नीलाल दिल्ली वाले ।

१३०३ क्रियाकाण्डमंत्र

Opening : ॐ भूर्भुव स्व अर्हं असि आउसा सम्यक्‌दर्शनज्ञानचारित्रधारिकेभ्यो
नम । बार १०८ नित्य जपिये ।

Closing मध्यम तर्जनीऽनामिका अगरीनिजीवन स्वास ।
अगुष्ठासो जपमाल रूचि गुणे एक बहुतास ॥

Colophon · नही है ।

विशेष— यह ग्रथ इतना पुराना एव सडा हुआ है कि पढा नहीं जा
सकता ।

१३०४ महालक्ष्मी

Opening . मत्र— ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरू कुरू
स्वाहा ॥

Closing : दिन २१ तक जप करना, धूप खेवना गुगुल, अगर, तगर, नागरमोथा, छरुछरीला, कपूर, गिरीदाख, बदाम छोहारा, मिश्री घी, का होम करना लक्ष ॥१२५०००। सर्वसिद्धि होय शत्रुभय मिटे लक्ष्मी मिले ।

Colophon . कुछ नहीं है ।

१३०५. मत्र

Opening · ॐ नमो वृषभनाथ मृत्युजयाय सर्वजीवशरणाय परममत्राय पुरुषाय चतुर्वेदायतताय ...
मम सर्व कुरु-कुरु स्वाहा ॥१॥

Closing ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हसमहाहस. परमहस. कोहस. अर्हहस पक्षिमहाविपक्षि ह्लू फट् स्वाहा ।

Colophon इति मत्र सम्पूर्णम् ।

१३०६. मत्र

Opening : ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल महाग्निस्थभय-२. ॐ क्रो प्रो प्री प्र. ठ ठ स्वाहा ।

Closing । अभिषेक सुद्धि तिहका नाला तलै न्हावै-उपवास १०० एक भक्त करै जु पाली पाणी देय वैं का हाथ को अहार लेणू नहीं ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१३०७ मंत्रसग्रह

Opening । ॐ ह्रो ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः अमिआउसाय नम अपराजित मत्रोय विघ्न नाशय नाशय कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : ॐ छो छो छो छ अस्मिम्पात्रे अवतर अवतर स्वाहा ।
विधि ॥ पेडा ३ ॥ बार १०८ ॥ मन्सो पठको आनाही-
बोमेता . ।

Colophon : नही है ।

१३०८ मंत्रयत्र

Opening : ॐ क्रो क्रौं क्रो क्रो क्रो मही अमुकी नामान्या पतत्याः सर्वत्र-
जयसौभाग्य प्रियवल्लभत्व पतिपूजादिसौख्य ... ... — ।

Closing : ... नीबू को चूहा के विलमे गाडिये उपर जूती तीन
नाम लेके मारिये दिन तीन ताई जूती मारिये नाम लेता जाईये ।

Colophon इति मत्र यत्र समाप्तम् ।

१३०९ नमोकारमत्र

Opening : कहा सुर तरु कहा चिन्तावलि कामधेनु कहा रसकुप कहा पारस
के पाए ते ।
कहा रसपायें औ रसायन कमाये कहा कौन काज होते तेरो
लक्ष्मी कै आऐ ते ॥

Closing कान्हबल खाईवेको कान्ह के कमाईवे को कान्हबल लगाइवे को
काहु के उधार के ।
कहत विनोदीलाल जपतहो तिहुकाल मेरे है अतुलबल मत्र नव-
कार को ॥

Colophon : इति णमोकार मत्र माहात्म्य समाप्तम् ।

१३१० पद्मावतीदडक

Opening ॐ नमो भगवते त्रिभुवन सकरी ।
सर्वाभरणभूषिते पद्मासने पद्मनयने ॥१॥

Closing : जृंभे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि · · मां रक्ष पद्मे ॥८॥

Colophon : इति पद्मावती बडक सपूर्णम् ।

१३११. पद्मावतीकल्प

Opening : कमठोपसर्गदलन त्रिभुवननार्थ प्रणम्य पार्श्वजिनम् ।
वक्ष्येभीष्ठफलप्रदभैरवपद्मावतीकल्पम् ॥१॥

Closing अपराजितेक वा अमुकी मोहय-मोहय स्तम्भिनी ··· ···
मम वश्यं कुरु-२ स्वाहा ।

Colophon · नहीं है ।

१३१२. पद्मावतीकल्प

Opening · ॐ अस्य श्री पद्मावती मंत्रस्य सुरासुरविद्याधर-नागेन्द्र-महाऋषि-पतिर्वृद्धगायत्री छंद श्री पद्मावती देवता कमलबीज वाग्भव शक्तिप्रणवकीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थ जपे विनियोग ।

Closing · जृंभे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि रमणे मर्द मर्द प्रमर्द दुष्टे निकांधकारे दह दह दहने हेल ··· ह्रां ह्रीं
ह्रौं ह्रः प्रसन्ने-प्रहसित वदने रक्ष मां देवि पद्मे ।

Colophon : इति श्री पद्मावतीपटल पद्मावतीकल्प समाप्तम् ।

१३१३. पद्मावतीकवच

Opening : देखें क्र० १३१२ ।

Closing : इद कवचं ज्ञात्वा पद्मायां स्तौति यो नरः ।
कल्पकोटि शतेनापि न भवेत्सिद्धिदायिनी ॥१८॥

Colophon : इति पद्मावती कवचम् ।

१३१४ पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री पंचमुखी पद्मावतीकवचस्तोत्रस्य श्रीरामचंद्रऋषिकृत अनुष्टुपछन्दः पंचमुखीपद्मावती देवता ॐ अं मुनिसुव्रति इति बीज ॐ चिन्तामणिपार्श्वनाथ इति शक्ति ॐ धरणेन्द्र इति कीलकं श्री रामचन्द्र तव प्रसादसिद्धयर्थे सकललोकोपकारार्थे पंचमुखीपद्मावती स्तोत्रं जपे विनियोग ।

Closing : नववारं पठेन्नित्यं राजभोग समाचरेत् दसवार पठेन्नित्य त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम् ।
एकादश पठेन्नित्य सर्वसिद्धिर्भवेन्नर कवचम्परमेनैव महाबल-मन्वितम् ॥

Colophon इति पंचमुखीपद्मावतीकवच सपूर्णम् ।

१३१५. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री मंत्रराजस्य परमदेवता पद्मावतीचरणाम्बुजेभ्यो नम ।

Closing . ॐ ह्रीं श्री पद्मावत्यै महाभैरवी नमः ।

Colophon : इति पद्मावतीकवच सम्पूर्णम् ।

१३१६ पद्मावतीकवच

Opening · देखें—क्र० १३१४ ।

Closing · साक्षात् शिव पद का दाता ये इष्ट मंत्र है, जिसके जपने से सर्व मंगल होय है ।

Colophon : नहीं है ।

१३१७. पद्मावतीकवच

Opening : देखें, क्र० ११९४।
Closing : देखें, क्र० ११९४।
Colophon : इति श्रीरावचन्द्रऋषिकृत पंचमुखीपद्मावती कवच समाप्तेम्।

१३१८. पद्मावतीमंत्र

Opening : ॐ णमो जिणाण ह्रीं ह्री ह्रौ ह्रू ह्रौ ह्र.।
Closing : अथवा मू गा के जाप दे लाल वस्त्र पहेर लीजे।
Colophon : इति श्री पद्मावतीदेवी मंत्र सपूर्णम्।

१३१९. पद्मावतीमंत्र

Opening : ॐ आं क्रो ह्रीं क्ली पद्मावती देवी ह्रू क्लीं ह्री नम। जाप्प १०००००० कीजे।
Closing : अत्रसाहननुजनामवृषभ — कालछबा निरमश ॥
Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम्।

१३२०. पद्मावतीपटल

Opening : ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथधरणेंद्रसहिताय ... त्रैलोक्य सहारिणा चामुंडा।
Closing : ह्रा ह्रो प्ली प्लू ह्रा ह्रां पद्मावती धरणी धरणींद्र आज्ञापयति स्वाहा।
Colophon : इति पद्मावती पटल संपूर्णम्।

१३२१. पन्द्रह्यन्त्र-विधि

Opening : आड्तरैं की चाल है भणौं की घोड़े की चाल पहली सु नवको हूं में भरियैं एक अंकसु माड कै नव अक सु माड कै नव अक लिखियै नव को हूं में इसकी विशेष विधि कहियै दस बार लिखै तो लौक सर्वमोहित हुवै वीस वेर लिखै तो आर्कषण हुवै तीस बार लिखै तो पृथ्वी मे जय पावै ।

Closing : दग्धामाषनील चैव शर्कराघृतसयुतम् ।
कृष्णपक्षे तु चाष्टम्या बलि दत्वा मविरर्कं ? ॥४३॥

१३२२. पार्श्वनाथस्तोत्र-मत्र

Opening : श्रीमद्देवेन्द्रवृंदामलमुकुटमणिज्योतिषा चक्र ।
.... पार्श्वनाथोत्र नित्यम् ॥

Closing . इत्थ मंत्राक्षरोत्थं वचनमनुपम पार्श्वनाथस्य नित्यम् ।
- स्तौति तस्यैष्टसिद्धि ॥

Colophon इति पार्श्वनाथ स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३२३ पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : ॐ नमो चन्डोग्र पार्श्वनाथ-तीर्थंकराय धरणेन्द्रपद्मावती सहिताय ।

Closing · · घोरोपसर्गविनाशनाय हूं फट् स्वाहा ।

Colophon · इति चडोग्रपार्श्वनाथस्तोत्र सपूर्णम् ।

१३२४. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : पार्श्वं व पातुवो नित्यं जिम: परमशंकर: ।
नाथ परमशक्तिश्च शरण सर्व — ॥

Closing त्रिसंध्य य पठेन्नित्य नित्यमाप्नोति सश्रिय। ।
श्रीपार्श्वपरमात्मे ससेवध्व भोबुधासुकृत् ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

१३२५ प्रातगायत्री

Opening पार्वत्युवाच देवेधिदेव देवाधिदेवदेवश परमेश्वर पुरातन वदुरवपरयाप्रीत्याविप्राणो सधि वदन मद्भक्ताना हिताथाय वराण परमेश्वर सन्ध्यासध्यानयुक्त च सूर्याध्यादि सुमाधन ।

Closing : इति महावाक्य ॐ गायत्री चैकपदी द्विपदी चतुष्पदपदसिनहि पद्यस नमस्तेतुरीयाय पदाय तुसीय पदर्शिताय नमो नम. एव चतुर्थाश्रमेन गृहस्थानां प्रसगेन प्रदर्शित ॥

Colophon : अथ प्रातगायत्री विषये तत्पूर्ण समाप्त । सवत् १८२५ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे ६ शनिवासरे पुस्तक लिख्यते हरयस मिश्र । कासि जी मे लिखी ।

१३२६ सकलीकरणविधान

Opening : स्नानानुस्नानशुद्धोधृतशितशुद्धो ऽन्तरीयोत्तरीय,
सकल्पाचम्य प्राणाधिति समभृत परिसेचन तर्पण च ।
आचम्या तस्य शुद्धि पुनरपि सतत शान्तमत्र षडांगम्,
दिवस ज पाश्रिव रं परमजपयुत स्ताभदिक्षरक्षयभुः ॥

Closing . ॐ णमो अरिहंताणं णमोसिद्धाण णमो आयरियाण ।

णमोउवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

इति पचपद जपेत् ।

Colophon . जिनवरदासस्य पठननिमित्तं लिखित टीकारामेन आरानगर मध्ये शुभम्भूयात् लेखक-पाठकयो आयुरारोग्यमस्तु ।

१३२७ सामयिकविधि

Opening . विधिपूर्वक पडिलेहय उपगरण प्रमार्जित स्थानकइ स्थापनाचार्य धापितई ।

Closing . ज्ञानपचमी तपग्रहण कुजमालाविधि ॥२७॥ पोसहपडिक्कमणा वावण विधि ॥२८॥ इत्यादि ।

Colophon नहीं है ।

१३२८ शान्तिनाथ-मंत्र

Opening ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये,

ॐ नमो शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वपापप्रणाशाय - - ।

Closing । सपूर्ण जप सख्या अड़तालीस लक्ष प्रमाण निष्ठा मना जपै पश्चात् सपूर्ण सिद्धि स्वयमेव पावै ।

Colophon । नहीं है ।

१३२९ सरस्वती-मंत्र

Opening . ॐ अर्हन्मुखकमलनिवासिनी पापाहंमक्षयंकरी

... . मम विद्यासिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी नम धारकस्य भाण्डागार ऋद्धि वृद्धिमतधमसपूर्णं पूरय पूरय प्रताप विजयी कुरु कुरु स्वाहा ।

जाप सवालक्ष १२५००० दशास होम पचामृत को करें तो प्रभाव वृद्धि होय ।

Colophon : इति विजयप्रतापमंत्र सम्पूर्णम् ।

१३३० सरस्वतीमंत्र

Opening : ॐ ह्री श्री वाग्वादनी सरस्वती सारदा बुद्धिवर्द्धनी देवी कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : इति । मंत्र अष्टोतर शत नित्य जपेत् विद्या प्रकास होइ ।

Colophon नही है ।

विशेष— इसमे मात्र एक ही मंत्र है ।

१३३१. सरस्वतीमंत्र

Opening : ॐ ह्री श्री क्ली ब्लौ वद वद वाग्वादिनी भगवति सरस्वति परमब्रह्म मुखीद्भूते श्रुतांगिदेवि द्वादशांगेयो नम । मम विद्या-प्रसाद कुरु तुभ्य नम ॥१॥

Closing : ॐह्री अर्हं णमोपादाणुसारिणं ॥८॥
ॐ ह्री अर्हं णमो संभिन्न सोदराणम् ॥९॥

Colophon : नही है ।

१३३२. सरस्वतीस्तोत्र

Opening : ॐ ऐं ह्रीं श्री मन्त्ररूपे विबुधगननुतेदेवदेवेन्द्रवंद्ये ।
.... — मनसि सदा सारदे तिष्ठदेवी ॥१॥

Closing : ॐ ह्रीं क्लीं कूं श्रीं ह्रीं रो नम लक्ष जापते सिद्धि होय ।

Colophon . इति सारदा स्तुति ।

१३३३ सोलहकारण मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धये नमः ।
Closing ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः ।
Colophon : संपूर्णम् ।

१३३४ सूतक-विधि

Opening : इम सूतक देव जिनंद कहै, उत्पति विनास द्विभेद लहै ।
जनमैं दस वासर को गनिए, मरिहै तब बारह को भनिए ।।१।।
Closing : ग्रंथ संस्कृत तैं यहै भाषा कीनीसार ।
जो मन संशय उपजै देखौ मूलाचार ।।२४।।
Colophon : इति श्री मूतक विधि समुच्चय सूतक विधि संपूर्णम् ।

१३३५ तंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : ॐ ह्रिं ह्रीं ह्रः ह्रः ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्र असिआउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं " नमः आचार्य श्रीरविसेनकस्य रक्षा दृष्टिदोषनाश कुरु-कुरु स्वाहा ।
Closing ॐ ह्रीं एकमुखी रुद्राक्षस्य शिवभाडागारे स्थिताय मम ईप्सित पूरय पूरय श्री आकर्षय दुष्टारिष्ट निवारय निवारय ॐ ह्रीं नमः पीतपुष्पैर्जाप १०००० पश्चाद् नैवेद्य दसांस होम एकमुमुखी रुद्राक्ष ··· ~ ।

१३३६. त्रिवर्णाचार मंत्र

Opening : ॐ ह्रां ह्रिं ह्रीं ह्रः ह्रः ह्रें ह्रैं ह्रें ह्रौं ह्र असिआउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः ।

Closing : लिखे उत्तराभिमुखी पद्मासन वीत पुष्पते पूजे ।
७२००० प्रयोग लक्ष्मी के वास्ते ।

Colophon : इति कुबेर मन्त्र ।

१३३७. वशीकरण-अधिकार

Opening : अथात सम्प्रवक्ष्यामि " प्रशस्यते ॥

Closing : राज्ञां कुले विवादे च अपेक्षास्त्यत्र मशय ।
मानोन्नतिर्भवेतस्य यन्त्रराजप्रमादत ॥

Colophon : इति ।

१३३८. वश्याधिकार

Opening : अत पर देवि तव ब्रवीमि दौर्भाग्यह वृणि च कामिनीनम् ।
यन्त्राणि सौभाग्यविवर्द्धनानि समोहनानि प्रियकामुकानाम् ॥

Closing : सुभगाहरत्नपत्नी पति प्रियवरा भवेत ।
ललिताख्य महायन्त्र स्त्रीणा सौभाग्यकारकम् ॥

Colophon इति ।

१३३९. व्रत-मन्त्र

Opening : ॐ ह्रीं असिआउसा दसपूर्व्वीण सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : पत्र नैव करीय दारवटपे दोषो वसतस्य किम्,
विदु नैव पतन्ति चातक मुखे मेघस्य किं दूषणम् ।
नालोकाय दिपस्यते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् ।
यत्पत्र विधुना ललाटलिखते तन्मार्यतक्षय. ॥१॥

Colophon : श्रीरस्तुमिद शुभं भवतु ।

१३४० विसर्जन-मन्त्र

Opening : सुभ्राक्षतप्रसवसकुलरत्नदीपं मानिक्यरत्नमयकाञ्चनभाजनस्थं ।
श्री ज्वालिनीचरणतामरसद्वयाग्ने सन्मंगलात्तिकमहं त्ववतार-
यामि ॥१॥

Closing : जयजय जयदंवे ज्वालिनिलष्टर्धिवे गजगमनविलंवे नागयुगेध्र-
नितबे ।
हतघनुजगदंवे भालखण्डेन्दुबिंबे नतजनुविकरवे याहिमत्तावलबे ॥

Colophon , इति विसर्जन सपूर्णम् ।

१३४१ विवाह-विधि

Opening : या सदन गच्छेत् मण्डपे तोरणान्विते ।
कन्याया जननी वेगादागत्य पूजयेद्वरम् ॥१॥

Closing : कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे ।
चपायां वसुपूज्यसज्जिनपते सम्मेद ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३४२ यत्रमन्त्रसग्रह

Opening गहं हेमान्निपुरे मदीयनेत्रो निवान कुरुविश्वनेत्रे
गृहस्व वलि च पूजा ।

Closing : चौदश अदीतवार के दिन मद भांडार्न मैल जैतो मदपाणी
भवति ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१३४३. यत्रमन्त्रसग्रह

Opening ॐ मं म ख ख पि पि रं र क्रां क्रा ध्री ध्रीं अमुकस्यो च्चाटय-२,
मारय-मारय चूरय-चूरय दुष्टि भृशं कुरु-२ स्वाहा । "

Closing : पद्मपुत्री विसहरी एक सहस्र " बार सात पढनै तमाखो मारो जै सर्व विष उतरै ।

Colophon : नहीं है ।

१३४४. अष्टांगहृदय

Opening : इति ह्यस्माद्गुरानेयाद्यो महर्षयः
जातमात्र विशोध्यो स्वास्वालसैंधसर्पिषा ।
प्रसूतिश्लोशित चानुबला तैलेन सेचयेत्
अश्मनोर्वादन चास्य कर्णमूले समाचरेत् ॥

Closing : चिकित्सितं हित पथ्य प्रायश्चित्त भिषज्जितम् ।
भेषज शमन शस्त पर्यायै स्मृतमौषधम् ॥

Colophon : इति चिकित्सिते द्वात्रिंशोऽध्याय । इति वाग्भट्टविरचितायां अष्टांगहृदयसंहितायां चिकित्सास्थान चतुर्थं समाप्तम् ।

देखें, रा० सू० III, पृ० २४६ ।

जि० र० को०, पृ० १६ ।

१३४५ चिकित्साशास्त्र

Opening : संखा होची पुष्टाईइ लीजइ । दुधसू पीजइ सर्वरोग जाइ ॥१॥

Closing : बिन्दु आठ कइ द्रोण प्रमाण, दुई द्रोणे इक सूर्य की मान ।
दोई सूर्य की द्रोणी इक भाखी, बिन्दु द्रोणी इक खारी दाखी ॥

Colophon नहीं है ।

विशेष— इसकी लिपि भिन्न २ लोगो द्वारा लिखी गई है जिससे यह संग्रह ग्रंथ मालूम पड़ता है ।

१३४६ चिकित्सासार

Opening : च्यारिटाकनि लोफर ल्याइ । तीनि पाव जल मैं औटाइ ॥
अरध रहै जल से छिनवाइ । खाड टांक चालीस मिलाइ ॥
ताको नरम किमाम बनाइ । घोट डबसो सीसे पाइ ॥
दसरती ली लोफर नित । हर सिर पीर कास ज्वरपित ॥

Closing : सास की दवा—धतूरा पचांग कूट के चिलम मैं पीवै हुक्के की तरह से सास जाय हुचकी जाय, पेट दरद जाय ।

Co'ophon : नही है ।

१३४७ ज्वरहर-यत्र

Opening उवरेत्यादिना केवल ज्वरकृतदाहमेव नोपशामयति किंत्वपरा ।१।

Clo ing इदं ज्वरहर यत्र मया प्रोक्ता तवानघे ।
उपकाराय लोकानां साधूनां च हिताय वै ।
गोप्य त्वया सदा भद्रे साधुभ्या नैव गोपयेत् ॥२२४॥

Co'ophon : इति ।

१३४८. कुट्टककरण छाया व्यवहार

(pening : भाज्यो ' ' वृष्टमुछिष्टमेव ॥१॥

Closing : - बुद्धिजौजातो गुणएवराशिस्तेनांगीकृत ॥१४॥
पचगुणो ॥७०॥ हर ॥६३॥ हृतशेष ॥१४॥ दशगुणे ॥१४०॥ हर ॥६३॥ हृतशेष ॥१४॥ एव बहुत्वे गुणनामैक्य भाज्य अआाणामैक्यमग्रं प्रकल्प्यसाध्यम् ॥

Colophon · इति भास्कराचार्य विरचितोलीलावायां कुट्टकाध्याय समाप्ता ॥

१३४६. मदनविनोद निघटु

Opening : बीज श्रुतीनां सुघन मुनीनां बीज जडानां महदादिकानाम् ।
आग्नेयमस्त्र भवपातकानां किंचिन्महश्यामलमाश्रयामि ॥१॥

Closing : ···· यो राजा मुखतिलक. कट्टारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मिते च ग्रंथेस्मिन्मदनविनोदनाम्नि सपूर्णो --- प० गुणगणमिश्रकोऽय ॥

Colophon इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ मिश्रपवर्गस्त्रयोदश ॥१३॥ इति मदनविनोदे निघटौ समाप्तम् ।
सवत् १६१२ का० सु० लिखापित श्री मानसिघ जी —
पठनार्थं लिख्योस्यो लालखाजादन ॥

१३५० नाडीप्रकाश

Opening नाडी तीन प्रकार के है । इगला चद्रमा है सो वाया है । पिंगला सूर्य है सो दाहिना है । दोनो चले सो सुख मन है । कृष्ण पक्ष सूर्य का है । शुक्ल पक्ष चद्रमा का है ।

Closing . दो नव भृकुटी श्वेत श्रवन पाँच तारका जान ।
तीन नाक जीह्वा एके का सभेद पहचान ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३५१· निदान

Opening प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारकम् ।
स्वर्गापवर्गयोद्वारे त्रैलोक्ये शरणं शिवम् ॥१॥

Closing ·· प्रकृत्यां समधातु. समग्निश्च समदोषमलक्रिय.
प्रसन्नात्मेंद्रिय मना: स्वस्थामित्यभिधीयते ॥

Colophon : इति निदान ग्रं र समाप्त । शुभमस्तु । सवत् २७५६ ।

विशेष— यह ग्रथ माधव निदान मालूम होता है, जिसके लेखक माधवाचार्य हैं।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० ११८ ।

१३५२ पंचदशविधान

Opening : अथात. सत्रवक्षामि सुन्दरीयत्रमुतमम् ।
तदक तु प्रवक्षामि श्रृणु यत्नेन साम्प्रतम् ।।१।।

Closing इनरीयुगन करके मो राजा-प्रजा मर्वसकारी सिद्ध होय ।

Colophon : नही है ।

१३५३. रामविनोद

Opening सिद्धि बुद्धि दायक सकल गवरि पुत्र गणेश ।
विघ्न विनाशन सुखकरन हरखाधारि प्रणमेश ।।

Closing : द्रोनि मनक को चार ˙ — राम विनोदी विनोद सौ ।।

Colophon इति श्री रामविनोद भाषा समाप्तम् । सवत् १६०६ मार्गोत्तमे मासे वैशाषमासे शुक्लपक्षे द्वितीयाया बार भौमवारे का लिखि के सपूर्ण भई मितन्त गोती सघई लाला छेदीलाल तस्य पुत्र उजागर लाल तस्य पुत्र जेठे रतनलाल लघुपुत्र बदलीदास ने पोथी लिखी पठनार्थ अपने हित हेतवे बस अग्रवाल का है ।
यादृश पुस्तक — — दीयते ।।१।।
जल रक्षेत् ˙ ˙ पुस्तकम् ।।२।।

१३५४. रूपमगल

Opening : जमालगोटा अर मिरच बराबरी आदी का रस मैं गोली करे मिरच प्रमाण सध्या प्रात· खाय ।

Closing : नित्यज्वरवालानें दीजें पाडी का मूत्रसू ते जरावा ताने दीजें निब-कार ससू चोथावालाने दीजें इति सर्वज्वर जाय ।

Colophon : इति मगलरूप सपूर्णम् । शुभं भूयात् ।

१३५५. शारदा-तिलक सटीक

Opening : श्री तीर्थेश जिनाधीश केवलज्ञानभास्करम् ।
प्रणम्याभ्युदये ध्यात्वा वक्ष्ये मूत्रपरीक्षणम् ॥१ ॥

Closing : पानट २ सुपेदकथट २ अफीमट १ इकत्र कर गोली करनी मासे १ प्रमाण तदलोदकेन समीप अतिसार जांहि ।

Clolophon इति श्री सारदातिलक ग्रथ समाप्तम् । लिखितमिद नित्यानन्देन नारनौल मध्ये लिखायत पडितजी श्री चेतनदास जी-कस्मिन्सम्वत्सरे सवत् १६७६ का० वर्षे कार्तिक शुक्ल २ गुरुवा-सरे अलिखदिद पुस्तक यथा स्यात् तथा । श्रीरस्तु

१३५६ सारंगधर सहिता

Opening : श्रियं सदद्याद्भवतां पुरारिर्यदंगतेज प्रसरे भवानी ।
विराजते निर्मलचन्द्रिकायां महौषधीव ज्वलिता हिमाद्रौ ॥१॥

Closing विविधगदार्ति दरिद्रया ? नाशन याहग्निमपि चकार वियोगरत्नैः ।
बिलसतु शारगधरस्य सहिता सा कविहृदयेषु सरोजनिर्मलेषु ॥

Colophon : इति श्री दामोदरसूनुना शारङ्गधरेण विरचितायां सहितायां चिकित्सास्थाने नेत्रप्रसादनकर्मविधिरध्यायः समाप्तोयमुत्तर खड।

१३५७ वैद्यभूषण

Opening : सिव सुत पद प्रणमित सदा रिद्ध सिद्ध नित देइ ।
कुमति विनासन सुमतिकर मयन सुदन कहेइ ॥

Closing : वैद्य ग्रंथ प्रमाण सब कूढ़ लिया सब लोक ।
छह से सही सब जरा का आधार ।।

Colophon : इति श्री केशवदासपुत्रेण नयनसुखेन विरचिते वैद्यमहोत्सवे स्त्री पुरुष रोग चिकित्सा सप्तम समुद्देश समाप्ता। संवत् १७६६ वर्षे मिती आषाढ़ सुदि १५ मगलवार लिखित पूज्य स्थिविर जी ऋषि श्री गणेश जी तत्शिष्यणी लिखित आर्यासुस्यालो शुभ भवति ।

१३५८. वैद्यमनोत्सव

Opening : प्रणम्य नित्य शिवसूनुमृद्धिद सिद्धि ददातिवितयानि धिय ।
कुबुद्धिनाश सुमति करोति मुद तथा मगलमेव कुर्यात् ।।१।।

Closing : चतुर्भिराटकै द्रोण कलसोप्यल्वणोमत: ।
उम्मनश्च घटोराशि द्रोणपर्यायवाचक ।।६।।

Colophon : इति परिभाषा । इति श्री वैद्यमनोत्सव मन्मिश्रविरचित वैद्य-मनोत्सव सपूर्णम् । संवत् १६७६ मिति पौष कृष्ण सप्तम्या गुरुवासरे नारनौलमध्ये कायस्थपुरे लिखितमिद पुस्तकं नित्यानद ब्राह्मणेन लिखायत पडित श्री चेतनदास जी । श्रीरस्तु ।

१३५९ योगचितामणि

Opening . यत्र विश्रासमायांति तेजांसि च तमांसि च ।
महीयस्तदय वदे चितानदमयमहम् ।।

Closing : यथा योगप्रदीपोस्ति पूर्वं योगशत यथा ।
तथैवाय विजयतां योगचिन्तामणिश्चिरम् ।।

Colophon : इति श्रीमन्नागपूरीयतपोगणनायक श्रीहर्षकीर्तिसूरि संकलिते वैद्यकसारो श्रीयोगचितामणी सार संग्रहे मिश्रिकाध्याया सप्तमा

समाप्ता। इति श्री योगचिंतामणि शास्त्र समाप्ता।
सूत्रार्थं मिलिनैन ग्रंथमान ६५०० सवत् रामगणोदधित् प्रमिते सवत् १७६४ वर्षे मार्गशीर्षमासे कृष्णपक्षे तिथौ एकादश्या सोमवारे लिखितम्। पूज्य श्री ऋषि स्थिवीर जी श्रीगणेश जी पूज्य आर्या जी श्री राजो जी लिखितम्।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५९६।

१३६० यूनानी चिकित्सा

Opennig विघन विघ्न) विनासन देवकूँ, प्रथम करु परनाम ॥१॥

Closing हरताल३ अरद ८ दिरम सुर्ख ८ दिरम, करूरवाई ८ दिरम माजू २० दिरम, अगार ४ दिरम, कुट ३ दिरम, फटकडी ४ दिरम, अकाकिया २॥ दिरम, गुलनार ३ दिरम कूट छान कै बीच मिरके कं गलावै २ हप्ते बीच धूप के रखै बाद कर्म करै।

Colophon . नहीं है।

१३६१· आचार्य-भक्ति

Opening सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरूपाग्निजालबहुलविशेषान्।
गुप्तिभिरभिसपूर्णान् मुक्तियुत सत्यवचनलक्षितभावान् ॥

Closing : इच्छामि भंते आयरियभक्तिकाउस्सग्गोकउ तस्सालोचेउ सम्मणाण सम्मदसणसम्मचरित्त जुनाण, पचविहाचाराणं आयरियाग आयारादिसुदणाणो वदेसियाण उवझायाण तिरयणगुण पालणरयाण सव्वसाहूणं णिच्चकालं अच्चेमि, पुज्जेमि वंदामि। सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झ ॥

Colophon : इति आचार्य भक्ति: ।

देखें, जि० र० को०, पृ० २५ ।
जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०१ ।

१३६२. आदिनाथ स्तुति

Opening : जाके चरनारविंद पूजत सुरिंद इन्द्र देवन के वृंदचंद
सोभाअतिभारी है ।
कहत विनोदीलाल मन वच तिहूं काल ऐसे नाभिनंदन को
बंदना हमारी है ॥१॥

Closing : तुम तो जिनंददेव जगतै .... -- ...
.... त्रिभुवननाथ गति मेरि यौ बनाई है ॥

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तुति समाप्तम् ।

१३६३. आदिनाथ आरती

Opening आदिनाथ तुम जगताधार, भवसागर उतारन पार ।
मैं तुम चरन कमल को दास, आदि नाथ मेरी पूरो आस ॥१॥

Closing तुम अनंत गुन है प्रभु कैसें पाऊं पार ।
थोडी कर मानौं घरी भैगे कहैं बखान ॥७॥

Colophon . इति श्री आदिजिन आरती समाप्तम् ।

१३६४. आदिनाथस्तोत्र

Opening आदिनाथ जगन्नाथं पार्श्वं वंदे गुणाकरम् ॥१॥

Closing : तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीविलसति लालया ।
क्षुद्रोपद्रवभूतादि नश्यते व्याधिवेदना ॥७॥

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६४६ ।

१३६५. आदित्यनाथ-आरती

Opening : आदि जिनेश्वर महि परमेश्वर त्रिभुवनपति जिन आदिभयो ।
नाभिराम मरूदेवी नदन नगर अयोध्या जनम लीयो ।।

Closing : जो जिनवर ध्यावें भावसा भावें मन वच काया भाव धरे ।
पाप निकन्दन भवय भजन मुक्तिवरागना मो वरए ।।२२।।

Colophon इति श्री आदिनाथ जी की आरती समाप्तम् ।

१३६६ अम्बिकादेवीस्तोत्र

Opening ॐ ह्रीं जय जय परमेश्वरी अंबिके अभ्रहस्तेमहासिंहयानस्थिते
सर्वलक्षणलक्षिताङ्गे जिनेन्द्रस्य भक्ते कले निष्कले
निर्मले नि प्रपञ्चे ।

Closing : अत्रेदतावलवत्ता माहृशां भवतीत्यश
श्रीधर्मकल्पलतिके प्रसिद्धवरदेविके ।।४।।

Colophon : इति अंबिकादेवी स्तोत्र सम्पूर्णम् शुभमस्तु पौषमासे शुक्लपक्षे
तिथौ ४ श्री संवत् १९५' ।

१३६७. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धप्रियैं प्रतिदिन प्रतिभासमानैं,
जन्मप्रबन्धमथनैः प्रतिभासमानैं ।
श्रीनाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,
प्राप्तेजयैः जनुपदवीक्षणेन ।।

Closing । वुष्टि वेशनया जनस्य मनसे ········ सतामीशिता. ॥

Colophon । इति श्रीदेवनन्दाचार्य कृत चौबीस महाराज ···· काव्य महा-स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० १।
जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२।

१३६८. आरती

Opening । जै जै जै श्री आदिजिनेश्वर जुगला धरम निवारण जू।
नाभिराय मरुदेवी नन्दन ससार सागर तारण जू। जं जै. ॥१॥

Closing । जे पढ़ै पढावै मन सुद्ध ध्यावै इह आरत सू सफल भैया ॥१२॥

Colophon । इति श्री निर्म्मल कृत आरती समाप्तम् ॥

१३६९ आरती

Opening · अष्टदरबकरसब एकठा जीमना आरती मनाहो।
जिन जी के चरण चढाइ श्री जिन पूजो जो भाव सौं ॥१॥

Closing : इयणर दवें जिय सूयसत्तिय जिणचउवीस विधा भत्तिया
ए जिणवर जो अणुदिणुलापइ सो ससारिनपकइ आवइ ॥१॥

Colophon । इति आरती संपूर्णम् ।

१३७०. आरती

Opening : आरती श्री जिनराज तुम्हारी
करम दलन संतन हितकारी ॥ आर० ॥
सुर नर असुर करत तुम सेवा
तुम हो सब देवनि के देवा ॥ ॥१॥ आर० ॥

Closing : छवी इग्यारह प्रतिमाधारी
श्रावक वंदित आणदकारी । इ० ।
सातमी आरती श्री जिनवाणी
द्यानत स्वर्ग सुमति सुखदाणी ॥४॥ इ० ॥

Colophon : इति आरती संपूर्णम् ।

१३७१. आरती

Opening : आरती श्री जिनवीर की सुनि पीय श्रेणिकराई ।
जनम जनम सुख पाइये दुरित सकल मिटि जाई ॥१॥

Closing जिन आरती कीजै ... वति साहेन निकलक ॥

Colophon : इति आरती समाप्तम् ।

१३७२. आरती संग्रह

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनंद की ।
सब सुखदायक आनंद कंद की ॥ टेक ॥

Closing . जय-जय आरती शान तुम्हारी ।
तोरे चरन कमल की मैं जाव बलिहारी ॥

Colophon ; इति आरती श्री शान्तिनाथ की सम्पूर्णम् ।

१३७३. अष्टक

Opening : पद्मतीर्थनिम्नगादि दिव्यमोदजीवनैं
कुंकुमादि मलसार चंदनादिमिश्रितैः ।
कामधेनुकल्पवृक्षचित्यरत्नसंयुकम्
स्वर्गमोक्ष संपदान् तं [illegible] ॥१॥

Closing :　इत्थ श्रीजिनराजमार्गविदित ·· ·· वासर प्रत्यहम् ।

Colophon :　अनुपलब्ध ।

१३७४. भजन

Opening :　सुर तरनी परिदोहि सउरे लाघउ नरभवसा ।
आलइ जनम महारजो काई करजोरे मनमाहि विचारकि ।।१।।

Closing :　आरम छाडी आतम रे, पीय सजम रस पूरि ।
सिद्ध वधू सउजिम रमउ इम बोलइ रे श्री विजई देवसूर वि ।।
।। चेतो रे चित प्राणी ।१५।।

Colophon :　इति सझाय समाप्ता ।
बडे न हुजउ गुन बिना, बिरद बडाई पाई
कहत धतूरै सू कनक, गहनौ गढयो न जाई ।।१।।
कनक कनक तैं सौगुनौ, मादकता अधिकाई
इति पाइयै बोराइ जगु उहि खाइ बोराई ।।२।।

१३७५. भजनावली

Opening :　अवश्यावश्यानी त्रिजगजननी शान्तिरूपे,
तुही आधारा रासुजस तव जगमे अनूपे
नहि पारावारा गुन सुजस अरू च स्वरूपे ।
तुही कर्त्ता धर्त्ता नृपहि पहर काहि भूपे ।।१।।

Closing :　पनकारनि सुखहारनि दुखदुर्गति ग्रहवरने वरना ।।
जसु की माय अजितहू कि तुहि काहि उपजन वरना ।।७३।।

Colophon :　इति सम्पूर्णम् ।

१३७६. भजनावली

Opening :　ध्यान मे जिनके सभी आराम होना चाहिए ।।
हवस सब अब की दफा सब काम होना चाहिए ।।१।।

Closing : मनमानता वरदान की दातार तु ही है ॥
तजिरी सदैव कसीस अजित को नूर ये ही है ॥
Colophon : नहीं है ।

१३७७. भजनावली

Opening : जै जै जै जिन चद वद दुख दहने वारा,
भी भयकर हार सार सुख सपति सारा ।
दीनानाथ अनाथ नाथ सब जिय हितकारी
असरन सरन सहाय होत जन सुनत पुकारी ॥१॥
Closing : भुजवारि उदार भडार अपार ।
सभी सुखसार समस्त भरो वो ।
दरसे परसे पद पक जई ।
सुखधाम सुदाम ललाम सहो वो ॥
Colophon : नहीं है ।

१३७८. भजनावली

Opening : करो जी मेहर जिनराज ।
Closing : अज्ञानवत अनत चेतन शुद्ध अप्पा जोवही ।
असरान परी क्या कहूं जी ··· ॥
Colophon : नहीं है ।

१३७९ भजन

Opening : छल बुज सम हि भाव ही कौरव को नहि अत ।
भागी भारी भीर हरी जहां जहां सुमिरन्त ॥
Closing : जिनराजदेव कीजिये मुझ दीन पै करुना ।
भवि वृ द कों अब दीजिये यह शील का शरना ।

Colophon इति श्री शीलमहातम जी भाषा वृन्दावन कृत सम्पूर्ण ।

विशेष— इसमे भजन के अलावा 'सील महातम' वृन्दावन कृत भी सकलित है ।

१३८० भक्तामरस्तोत्र

Opening . भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्योतक दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगयुगादा-
वालम्बन भवजले पतिता जनानाम् ॥१॥

Closing : स्तोत्रश्रज तव जिनेन्द्रगुणैर्निबद्धा,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कठगतामजस्त्रम् ।
त मानतुग मवमा समुपैतिलक्ष्मी ॥४८॥

Colophon । इति श्री भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०७ ।

१३८१ भक्तामरस्तोत्र

Opening । देखे, क्र० १३८० ।

Closing । देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति भक्तामर सम्पूर्णम् ।

१३८२. भक्तामरस्तोत्र

Opening · देखें क्र० १३८० ।

Closing देखें, क्र० १३८० ।

Colophon । इति श्रीमानतुंगाचार्य विरचित भक्तामरस्तवन समाप्तम् ।

१३८३ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing देखें क्र० १३८० ।

Colophon इति श्री मानतुंगाचार्य विरचित भक्तामरस्तोत्रसमाप्तम् ।

१३८४ भक्तामरस्तोत्र

Opening · देखें, क्र० १३८० ।

Closing देखे, क्र० १३८० ।

Colophon इति भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३८५ भक्तामरस्तोत्र

Opening देखें, क्र० १३८० ।

Closing . देखें क्र० १३८० ।

Colophon इति भक्तामरस्तोत्रम् ।

१३८६ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing । देखे, क्र० १३८० ।

Colophon इति भक्तामरस्तोत्रम् संपूर्णम् ।

१३८७ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखें—क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री भक्तामर संस्कृत श्री समाप्तम् ।

१३८८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : भक्तामर टीका सदा पढ़ै सुनै जो कोई ।
हेमराज मित्र सुख लहै तस मनवांछित होई ॥१॥

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पंडित श्री रत्नविमल लिपि-कृता सम्पूर्णम् । भादो सुदि ७ शनिवासरे । संवत् १८४६ ।

१३८९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखें, क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम् ।

१३९० भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखे क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्य विरचिते भक्तामर स्तोत्रसंपूर्णम् ।

१३९१ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : अस्मिन् लोके य पुरुष तां मालां कंठगता अजस्र निरंतर धत्ते धारयति त पुरुषं मानतुंग इव सा लक्ष्मी समुपैति या लक्ष्मी मानतुंगेन प्राप्ता सा लभते ।

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य पंडित शिवचन्द्ररचित बालावबोध टीका समाप्ता ।
मिति फाल्गुन-शुक्लादारभ्य चैत्रकृष्ण द्वितीयायां पंडित शिव-चन्द्रेण कृता इयं संपूर्णम् ।

१३९२. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क० १३८० ।
Closing : देखें, क० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तवन समाप्तम् ।

१३९३ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क० १३८० ।
Closing : देखें क० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र संस्कृत श्रीमानतुंगाचार्य कृत सम्पूर्णम् ।

१३९४ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे क० १३९५ ।
Closing : देखे, क० १३९५ ।
Colophon : इति श्री भाषा भक्तामर जी समाप्तम् ।

१३९५ भक्तामरस्तोत्र

Opening : आदि पुरुष आदीस जिन, आदि सुविधि करतार
धरमधुरधर परम गुरु नमो आदि अवतार ॥१॥
Closing : भाषा भक्तामर कियौ हेमराज हित हेत
जे नर पढैं सुभाव सौं ते पावैं शिव खेत ॥४६॥
Colophon : इति श्री भक्तामर स्तोत्रभाषा बंध सपूर्णम् ।

१३९६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क० १३९? ।

Closing : देखें, क्र० १३९५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्र सपूर्णम् ।

१३९७ भक्तामरस्तोत्र

Opening देखें, क्र० १३९५ ।
Closing देखे, क्र० १३९५ ।
Colophon . इति भाषा भक्तामर जी सम्पूर्णम् ।

१३९८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३९५ ।
Closing : देखे, क्र० १३९५ ।
Colophon इति श्री भक्तामर की भाषा समाप्ता ।

१३९९. भक्तामरस्तोत्र

Opening · देखें, क्र० १३९५ ।
Closing · दखे, क्र० १३९५ ।
Colophon इति भक्तामर स्तोत्र भाषा समाप्तम् ।

१४००. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३९५ ।
Closing देखे, क्र० १३९५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्रभाषा समाप्तम् । मिति वैशाख वदि १४ संवत् १९३९, वार आदित्यवार । शुभम् श्री ।

१४०१ भक्तामरस्तोत्र

Opening देखे, क्र० ११६५ ।

Closing देखें क्र० ११६५ ।

Colophon इति श्री भाषा भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४०२ भक्तामर वचनिका

Opening : देव जिनेश्वर वंदिकरि वाणी गुर उर लाय ।।
स्तोतर भक्तामरतणी करू वचनिका भाय ।।
मानतुंग वरसूरनैं रच्यो भक्ति उर धारि ।।
श्री जिनेन्द्र अनुभावतैं बधन घरैं उतारि ।।

Closing संवत्सर शत अष्टदश सत्तरि विक्रमराय ।।
कातिक वदि बुद्ध द्वादसी पूरण भई सुभाय ।।

Colophon : इति श्री मानतुंग आचार्यकृत भक्तामर नाम देशभाषामय वच-
निका समाप्त ।।

१४०३ भक्तामर वचनिका

Opening . देखे क्र० १४०२ ।

Closing · देखें, क्र० १४०२ ।

Colophon . इति श्री मानतुंगाचार्यकृत भक्तामरनाम देशभाषामय वचनिका
समाप्तम् ।

१४०४. भक्तामरस्तोत्र

विशेष— यह पूर्णत जीर्ण-शीर्ण है ।

१४०५. भक्तामर-टीका

Opening : जो देवनमृमुगुटि सुभरत्नकांति तीर्तोविकास करि ते जिनपाद दीप्ति ।
जो पाप रूप तम घोर समूल छेदी नेदी बुडी भव जली जनहो जुगादि ॥१॥

Closing मा.ड्या मनात भरला मुनि शक्र मुति तो स्तोत्र पाठवदला गुरु पुन्यकीर्ति ।
मीबोलहा चिनमिले जिनमागराला करी क्षम f नविती दुध पडि गल्ला ॥५॥

Colophon इति श्री देवेन्द्रकीर्ति प्रियशिष्य जिनसागर कृत भक्तामर स्तोत्र महाराष्ट्रभाषा सपूर्णम् ।

१४०६ भक्तामरस्तोत्र

Opening · धराम् निकल ता मदिर जाणो ।
जदि रसता माहि उच्चार करणो ॥

Closing : देखें, क्र० १३८० ।

Colophon इति श्री मानतुंग नामा आचार्य विरचित आदिनाथ देवाधिदेव भक्तामरस्तोत्र सपूर्णम् ।

१४०७ भक्तिसग्रह

Opening सिद्धान् उद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान भावोपलब्धि ॥

Closing : सुगइ गमण समाहिमरण जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झ ।

Colophon : इति सप्तभक्तय समाप्ता ।

विशेष — इसमें सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति, आचार्यभक्ति, निर्वाणभक्ति, योगभक्ति, नदीश्वर भक्तिया संकलित हैं ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४० ।

१४०८. भैरवाष्टक

Opening . अतिताक्षणमहाकाय कल्पातपवनोपम् ।
भैरवाय नमस्तुभ्य मानभद्रतमोहर ॥

Closing , अपुत्रो लभते पुत्र बद्धो मुचति बंधनात् ।
राज्यचोरभय नैव भैरवाष्टककीर्त्तनात् ॥११॥

Colophon इति श्री भैरवाष्टकस्तोत्र मपूर्णम् ।

देखें — जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६३५ ।

१४०९ भैरवाष्टक

Opening देखें, क्र० १४०८ ।

Closing चाहै तो १ लाख जाप करै दिन ३ उपवास के पारने चूर, मावा, हलवा, लाल वस्त्र, लाल माला, कनर का फूल करणा तेज प्रताप आपि करे ।

Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

१४१० भैरवस्तोत्र

Opening : य य य यक्षरूप दशदिसचरित भूमिक पायमानम्,
स स स सहारमूर्तिशिरमुकुटजटाशेखर चद्रबिम्बम् ।
द द द दीर्घकाय विकृतनखमुख उर्ध्वरोम करालम्,
प प पं पापनाश प्रणमतसतत भैरव क्षेत्रपालम् ॥

Closing : भैरवाष्टकमिद पुण्य छ मास पठते नर. ।
स याति परमस्थान यत्र देवो महेश्वर. ॥६॥

Colophon : इति क्षेत्रपाल स्तोत्र सपूर्णम् ।

१४११. भूपाल-चतुर्विशति-स्तोत्र

Opening : श्रीलीलायतन मह्रीकुलगृह ······ जिनाध्रिद्वयम् ॥
Closing · हे देव अद्य मया गम्यते पुन पुन बार बार दर्शन भूयात् ।
Colophon ; इति श्री पंडित शिवचद्रनिर्म्मापित भूपालचतुर्विशतिकाया बालावबोध टीका सपूर्णम् । मिति फाल्गुन शुक्लादारभ्य चैत्र कृष्ण द्वितीयाया पंडित शिवचद्रेण कृता इय पचस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् समाप्तम् । श्री । मिति चैत्रकृष्ण सप्तम्यां सोमवासरे सवत्सर १९२७ का सम्पूर्णम् लिखित पडित परमानदन पठनार्थम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र I, क्र० ६४२ ।

१४१२ भूपाल-चौबीसी

Opening । देखे, क्र० १४११ ।
Closing । दृष्टस्त्व जिनराज ··· · भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥
Colophon · इति श्री भूपालचौबीसी समाप्तम् ।

१४१३ भूपाल-चौबीसी

Opening : देखें, क्र० १४११ ।
Closing : देखे, क्र० १४१२ ।
Colophon । अनुपलब्ध ।

१४१४. भूपाल-चौबीसी

Opening । देखें, क्र० १४११ ।
Closing । देखें, क्र० १४१२ ।

Colophon . इति भूपाल चतुर्विंशतिका ।

१४१५. भूपालस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४११ ।

Closing : उपसम इव मूर्तिलसिर्त – –· – चरिष्टमोयस्यधि-
न्वति वाच ।।२७।।

Colophon · इति श्री भूपालस्तोत्र समाप्त ।

१४१६ भूपाल-चौबीसी-स्तोत्र

Opening · देखें, क्र० १४११ ।

Closing : देखे, क्र० १४१२ ।

Colophon इति श्री भूपालचौबीसी सम्पूर्णम् ।

१४१७· भूपालस्तोत्र

Opening · परमातम सम्यक वरन परमभावना सार ।
श्रीभूपाल वरेस कवि करत सुपर हितकार ।।१।।

Closing : यह विधि श्री जिन विमल करि भूपाल थुति नरिंद ।
जय जीवन जीवन लम्यौ हीर अबाध अनिंद ।।२७।।

Colophon : इति भूपाल चौबीसी सम्पूर्णम्

१४१८. भूपाल-चौबीसी-भाषा

Opening : देखें, क्र० १४१७ ।

Closing : देखें, क्र० १४१७ ।

Colophon : इति भूपाल चौबीसी भाषा जी समाप्तम् ।

१८१९. बीस विरहमान-आरती

Opening आरती कीजै बीस जिनंद की, विदेह क्षेत्र थानक सुखकंद की ।
श्रीमंदर जुगमंदर स्वामी, बाहु सुबाहु प्रभु शिवगामी । आरती॥

Closing अजितवीर्य प्रभु है सिरनामी, भैरो सरन चरन तुम स्वामी ।।आरती

Colophon इति श्री बीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१८२०. ब्रह्म-लक्षण

Opening : ब्रह्मचर्या भवेन्मूलं सर्वेषां ब्रह्मचारिणाम् ।
ब्रह्मचर्यस्य भंगेन व्रतं सर्वनिरर्थकम् ॥

Closing दृष्टिपूतं — नवमं ब्रह्मलक्षणम् ॥

Colophon : नहीं है ।

१८२१. चैत्यालय-स्तोत्र

Opening : इष्ट जिनेंद्रभवनं भवतापहारी प्रकारराजविराजमानम् ।१॥

Closing : द्रष्टमपाद्य मणिकाचनचित्रतुंग सकलचन्द्रमुनिंद्रवंद्यम् ॥१०॥

Colophon : इति चैत्यालय स्तोत्रम् ।

१८२२. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening श्रीचक्रेचक्रभीमे ललितवरभुजे लीलया दोलयन्ति,
चक्रं विद्युत्प्रकाशं ज्वलितसतमुखं खगेंद्राधिरूढे ।
तत्त्वैरुद्भूतभावे सकलगुणनिधे त्वं महामंत्रमूर्त्ते
क्रोधादित्यप्रतापे त्रिभुवनमहिमापाति मां देविचक्रे ॥१॥

Closing : यं स्तोत्र मत्रकृत प(ठि)ति नियमतो भक्तिपूर्वं शृणोति,
त्रैल वय तस्य वस्य भवति बुधजने वाक्पटुत्व च दिव्यम् ।
सौभाग्य स्त्रीषु मध्ये खगपतिगमने गौरितत्वप्रसादात्,
डाकिन्यो गुह्यगावाद् इह दधति भय चक्रदेव्यास्तवेन ।।८।।

Colophon इति चक्रेश्वरी स्तोत्रम् ।

देखे, रा० सू० IV, ३८४, ३८७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२१ ।

१४२३ चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : देखें क्र० १४२२ ।

Closing देखें, क्र० १४२२ ।

Colophon : ईति चक्रेश्वरी स्त्रोत्र सम्पूर्णम् ।

१४२४ चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

Opening प्रभुभव्यराजी राजीदिनेश शुभ शकर सुन्दर श्रीनिवेशम् ।
सुरैर्दानवैर्मानवै, लिप्तमेव जिन नौमि चद्रप्रभ देवदेवम् ।।

Closing चन्द्रप्रभ नौमि यदंगकान्ति जोत्स्नेति मत्वा द्रवेतेदुकातान्
चकोरयुथव्पवति ? स्फुटति कुष्टोपि पक्षे किलकैरवनानि ।।

Colophon · इति श्री चद्रप्रभुस्वामी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

१४२५· चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण है ।

१४२६. चारित्र-भक्ति

Opening : येनेंद्रान् भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान्,
भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तुंगोत्तमांगान्नतान् ।
स्वेषां पादपयोरुहेषु मुनयश्चक्रुः प्रकामं सदा,
वंदे पंचतयंतमद्यनिगदन्नाचारमभ्यर्चितम् ।।१।।

Closing : इच्छामि भंते चरित्तभत्तिकाउस्सग्गो काउ तस्सा लोचउ
— — जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।।

Colophon इति आचोना चरित्र भक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५१ ।

१४२७. चतुर्विंशति-स्तोत्र

Opening : आदौ नेमिजिनं नौमि संभवं सुविधिं तथा ।
धर्मनाथं महादेवं शांतिं शांतिकरं सदा ।।१।।

Closing सकलगुणनिधानं यंत्रमेनं विशुद्धं,
हृदयकमलकोषे धीमता ध्येयरूपम् ।
जगति विदिततत्त्वो यः स्मरेत् शुद्धचित्तो,
भवति सुखनिधानं मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ।।

Colophon : इति चतुर्विंशति-स्तोत्रम् ।

१४२८. चतुर्विंशति स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२७ ।

Closing : देखें, क्र० १४२७ ।

Colophon : इति चतुर्विंशतिस्तोत्रम् ।

१४२९ चतुर्विंशतिस्तोत्र

Opening देखें, क्र० १४२७ ।
Closing : देखें, क्र० १४२७ ।
Colophon : इति चतुर्विशति. स्तोत्रम् ।

१४३०. चतुर्विंशति-जिन-स्तोत्र

Opening : आदिनाथ जगन्नाथ अरनाथ नथानमि ।
अजित जितमोहारिं पार्श्वं वंदे गुणागरम् ॥१॥
Closing भवभिसुखमनेक तस्य यो मानवश्च
विमलमतिमनिद्य स्तोत्रमेतद्वितद्र ।
पठति परमभक्त्या प्रातरुत्थाय शश्वत,
मुनिरभिकृतभक्तिर्मेघराजो बभाण ॥८॥
Colophon इति श्री चतुर्विंशति जिनान स्तोत्र समाप्तम् ।

१४३१. चौबीस-तीर्थंकर-पद

Opening अब मोहि तारो दीनदयाल सब ही मत देखे ।
मै जित तित तुमही नाम रसाल ॥१॥ अब ॥
Closing : पाठक श्री सिद्धिवर धन सदगुरु विलास,
पाठक तिहि विध सौं श्री जिनराज मल्हाए । ५। इहि० ॥
Colophon . इति श्री चौबीस तीर्थंकराणां पदानि सपूणम् ।

१४३२. चिन्तामणिस्तोत्र

Opening : किं कर्पूरमयम् सुधारसमयम् किं चन्द्र.चिर्मयम्,

किं लावण्यमय महामणिमय कारूण्यकेलिमयम् ।
विश्वानंदमय महादयमय शोभामय चिन्मयम्,
शुक्लाध्यानमय वपुर्जिनपते भूयाद्भवालवनम् ।।१।।

Closing : इति जिनपति पार्श्वपार्श्वाख्य यक्षम् ।
प्रदलित दुरीतोघ-प्रीणीत प्राणसध्यम् ।
त्रिभुवनजिनवाध्य दानचिन्तामणीम,
शिवपदतरुबीज व्याधिबीज ददातुम् ।।१२।।

Colophon : इति चिंतामणि स्तोत्रम् ।

१४३३ चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening नरेन्द्र फणेन्द्र सुरेन्द्र अधीश सतेन्द्र सुपूज्य नमो नायसीस
मुनिन्द्र गणेन्द्र नमो जोरिहाथ नमो देवि चितामणि पार्श्व-
नाथम् ।।

Closing : गणधर इन्द्र न करि सके तुम विनती भगवान ।।
द्यानत प्रीति निहारके कीजे आप समान ।।

Colophon . इति सम्पूर्णम् ।

१४३४. चितामणिपार्श्वनाथ—स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४३२ ।

Closing : मदनमदहर श्री वीरसेनस्य शिष्यै
सुभगवचनपूरै राजसेनप्रणुतै ।
जपति पठति नित्य पार्श्वनाथाष्टक य,
स भवति शिवभूम्यां मुक्तिसीमतिनीश ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथाष्टकं समाप्तम् ।

१४३५ चौबीस-जिन-आरती

Opening : रिषभ आदि चौबीस जिन लक्षन लेहु विचार ।
जो कछु सुने सु कहत हूँ, भव्य जन लेहु सुधार ।

Closing : लक्षन जिनवर के कहे भव्यजन लेहु सुधार ।
भूला चूका फिर धरौ भैरौं कहै विचार ।।

Clolophon इति श्री चौबीस जिन लक्षन आरती ।

१४३६ चौबीस-जिन-आरती

Opening अतिपरमपवित्र जनितसुचित्र वरविचित्रमगलकरणम् ।
प्रणमामि जिनेन्द्र प्रणतशतेन्द्र भवसमुद्रतारणतरणम् ।।१।।

Closing परमजिनेश्वरा भुविपरमेश्वरा कालत्रयकल्याणकरा ।
मघप्रभवत चरणभजत विस्तरन्तु मगलमधिरा ।।

Colophon . इति चौबीस जिन चिह्न आरती समाप्तम् ।

१४३७ चौबीस–दडक–विनती

Opening : वदो वीर सुधीर कों महावीर गभीर ।
वर्द्धमान सनमत नमो, महादेव अतिधीर ।।१।।

Closing . अताकरन जो सुद्ध होय, जिन धरमी अभिराम ।
भाषा कारन करन कों, भाषो दौलतराम ।।५६।।

Colophon : इति श्री चौबीस दंडक बिनती सपूर्णम् ।

१४३८. दर्शन–ज्ञान–चारित्र–आरती

Opening : सम्यक दरसन ग्यान व्रत, इन बिन मुकत ना होय ।
[illegible] ।।

Closing : इय अम्बु विचारवि भवभय हारवि,
करि विचित्त सुयसस्स मणु।
भवि भवियण थ्रणउ सुह सपण्णउ
लहइ सग्गु मोक्खविसयलु ॥

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा क्षिमावाणी समाप्तम् ।

१४३९ दर्शन-स्तुति

Opening देखें, क्र० ११६३ ।

Closing · देखें, क्र० ११६३ ।
शुद्ध भाव ताके मन भयो सम्यक दृष्टी मुकति हि गयौ ॥

Colophon : इति दर्शन स्तुतिसमाप्तम्

१४४० दर्शनाष्टक

Opening : अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य, देव त्वदीय चरणाम्बुजवीक्षणेन ॥
अद्यत्रिलोकतिलक प्रतिभासतो मे, ससारवारिधिरिय चुलक प्रमाणम् ॥

Closing अद्याष्टक पठेद्यस्तु गुर्णैर्निदितमाधव ।
तस्य सर्वार्थससिद्धि जिने० ॥११॥

Colophon : इति दर्शनाष्टकम् ।

१४४१. देवस्तवन

Opening श्रीमद्देवपतिप्रसन्नमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा,
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती ।
ससारागमदोषविस्तरणतः सेवासमीपस्थित ॥१॥

Closing : इन्द्रमपि भगवति वृत पुष्पालंकारलंकतम् ।
स्तोत्र कंठ करोति यश्च विव्यश्रीस्त समाश्रयति ॥३६॥

Colophon इति देवस्तवनम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५७ ।

१४४२ एकीभाव-स्तोत्र

Opening : एकीभाव गत इव मया य स्वय कर्मबधो,
घोर दु खं भवभवगतोदुर्निवार करोति ।
तस्याप्यस्य त्वयि जिनरवे भक्तिरुन्मुक्तचेत्,
जेतु शक्यो भवति न तया कोपरस्तापहेतु ॥

Closing : वादिराजमनुशाब्दिकलोके, वादिराजमनु तार्किकसिंह ।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनुभव्यसहाय ॥२६॥

Colophon : इति श्री वादिराज विरचिते श्री एकीभावस्तोत्रसमाप्त ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५८ ।

१४४३. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : देखें क्र० १४४२ ।

Colophon : इति श्री एकीभावस्तोत्र सपूर्णम् ।

१४४४. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : देखें, क्र० १४४२ ।

Colophon : इति एकीभावस्तोत्रम् ।

१४४५ एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।
Closing : देखें, क्र० १४४२ ।
Colophon इति श्री वादिराजमुनि विरचिते एकीभावस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४४६ एकीभाव-स्तोत्र

Opening देखे, क्र० १४४२ ।
Closing देखे, क्र० १४४२ ।
Colophon इति एकीभावस्तोत्र समाप्तम् ।

१४४७ एकीभाव-स्तोत्र

Opening देखें, क्र० १४४२ ।
Closing देखें, क्र० १४४२ ।
Colophon : इति श्री एकीभाव स्तोत्र समाप्तम् ।

१४४८. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।
Closing : धूपैसुगंध कृष्णागरुचंदनोघौ ।
कृत सुगंध कृतसारमनोहरानी ।। तीर्थंकरा. ।।
Colophon : अनुपलब्ध ।
विशेष— एकीभाव के पहले भूपाल चतुर्विंशति करीब १०-११ पत्र में हैं ।

१४४९. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें क्र० १४४२ ।

Closing देखें, क्र० १४४२।

Colophon इति वादिराजमुनिकृत एकीभावस्तोत्र समाप्तम्।

१४५० एकीभाव-स्तोत्र

Opening देखें, क्र० १४४२।

Closing विद्वांस अक्षरमात्रापदस्वरहीन सोध्यता अल्पज्ञानेन बालोपकाराय केवल मया रचिता न तु ज्ञानगर्वेण।

Colophon इति एकीभाव टीका सपूर्णम्।

१४५१ एकीभाव-स्तोत्र

Opening वादिराज मुनिराज को वढतो सुहित उद्गार।
स्वरूप रूप अनुभौ कथा, कहत सुपर हितकार॥

Closing वादिराज मुनिराज अनुशाब्दिक तार्किक लोक।
काव्यकार सहकार जग जीवन हीर सुधोक॥

Colophon इति श्री एकीभाव भाषा जी समाप्तम्।

१४५२ एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४५१।

Closing : देखें, क्र० १४५१।

Colophon इति श्री एकीभाव सपूर्णम्। श्री।

१४५३. गणधर-स्तुति

Opening : इति प्रमाणभूतेय वक्तृ श्रोतृ परंपरा महाधियम् ।

Closing : स्वयम्भुवज्रिरोप्येन मुनिवृ दारकं रत्नदा ।
प्रसादितो गणेंद्रोभूद्दक्तिग्राह्या हि योगिन. ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४५४. गौतमस्वामी-स्तोत्र

Opening ॐ नमस्त्रिजगन्नेतु वीरस्याग्रजमूनवे ।
समग्रलब्धिमाणिक्य रौहणायेंद्रभूतये ॥१॥

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रं तेस्मरतोन्वहँम् ।
श्री जिनप्रभसूरिस्त्वं भवसर्वार्थसिद्धये ॥८॥

Colophon : इति श्री गौतमस्वामिस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४५५. घंटाकर्ण-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखें क्र० १२६६ ।

Colophon . इति घंटाकर्ण स्तोत्रम् ।

सदर्भ के लिए भी देखें, क्र० १२६६ ।

१४५६. गुरुभक्ति

Opening : वंदौ दिगंबर गुरु चरन जग तरन तारन जान ।

जे भरम भारी रोग को है राजवैद्य समान ।।
जिनके अनुग्रह विन कहु नही कटै करम जञ्जीर ।
ते साधु मेरे उर वसौ मेरी हरो पातक पीर ।।

Closing : करजोरी भूधर विनवै कब मीलेवै मुनीराज ।
आस मन की तव पुरै मेरे सरे-सगले काज ।।
ससार विषम विदेह मै विना कारन वीर ।
ते साधु मेरे मन वसौ मेरी हरो पातक पीर ।।८।।

Colophon इति गुरु भगती सपूरन ।

१४५७. गुरुभक्ति

Opening : ते गुरु मेरे उर वसै ते भव जलधि जिहाजु ।
आप तिरै पर तारहि, अैसे श्री ऋषिराज । ते गुरु ।।

Closing : देखे, क्र० १४५६ ।

Cloophon : इति गुरुस्तुति सपूर्णम् ।

१४५८. गुरुविनती

Opening : देखें, क्र० १४५७ ।

Closing : वे गुर चरन जहाँ धरै जग मै तीरथ होय ।
सो रज मम माथे लगे भूधर मागै एह ।।१४।।

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१४५६ गुणावलि

Opening : श्री अरिहंत अणत गुण, सेवइ सुरनर इंद ।
पाय कमल जसु प्रणमता, लहीयै परमाणंद ॥१॥

Closing : श्रीखेम साखं सोभता वा शांति हरष मुणिंद,
तसु सीस कहै जिन हर्ष मुनि गुरु नामै हो दिन-२ आणंद ॥

Colophon इति श्री गुणावली चौपई सम्पूर्णम् ।

१४६० गुणाष्टक

Opening : गुणाधीश योगी मुनि ··· सकल जन के काम शरते ॥

Closing : सुनो नामै याते ··· ··· ··· आदि परमा ॥

Colophon : इति परमानन्द कृत गुणाष्टक सम्पूर्णम् ।

विशेष— गुणाष्टक के बाद कुछ फुटकर श्लोक संकलित हैं ।

१४६१. जैनपदसंग्रह

Opening : णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण ।
णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ॥
एसो पंच णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाण च सव्वेसिं पढम हवइ मगलम् ॥

Closing : ये रे सावलिया तेरा नाम जप छुट जात भव भावरिया ।
— — जो भवसागर से तरिया । येरे ॥

Colophon : नही है ।

१४६२. जिनचैत्य-नमस्कार

Opening : सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यन्तराणां निकाये,

नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे,
श्रीमतत्तीर्थं कराणा प्रतिदिवसमह तत्र चैत्यानि वदे ॥१॥

Closing — इन्द्र श्री जैन चैत्य स्तवमिदमनिश ·· प्रणमता चित्त-
मानदकारी ॥

Colophon — इति श्री जिनचैत्यनमस्कार समाप्त ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३२ ।

१४६३ जिनदेव स्तुति

Opening — जिनराजदेव कीजिये मुक्त दीन पै करूना ।
भविवृ द को अब दीजिये यह शील का शरना ॥ टेक ॥
सुचिशील के धारा मे जो स्नान करे है ।
मल कर्म को सो धोय के सिवनार वरे है ॥ टक ॥
व्रतराज सो वेताल व्याल काल डरे है,
उपसर्ग वर्ग घोर कोट कष्ट टरे है ॥ जिनराज ॥१॥

Closing — जस सील का कहने मे थका सहस वदन है ॥
इस सील से भव पाय भयाकर मदन है ।
यह सील ही भविवृ द को कल्यान प्रदन है
दस पैड ही इस पैड से निर्वान सदन हैं ॥१४॥ टेक ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४६४. जिनपजर-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्री अर्हं
सिद्धेभ्यो नमो नम । ॐ ह्रीं श्री अर्हं आचार्य्येभ्यो नमो

नम.। ॐ ह्री श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नम.। ॐ ह्री श्री अर्हं श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नम ॥१॥

Closing : श्री रुद्रपल्लीय वरेण्य गच्छे देवप्रभाचार्यपदाब्जहस.।
वादीन्द्रचूडामणिरेव जैन जीयादसौ श्रीकमल प्रभाख्य ॥

Colophon : इति जिनपजर स्तोत्र समाप्तम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७६।

१४६५ जिनपजर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४६४।

Closing : वात सक्नुच्छ य ' मनोव छितपूर्णाय ॥२४॥

Colophon इति जिनपजरस्तोत्र सम्पूर्णम्। पडित अजयचन्द्र।

१४६६ जिनपजर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४६४।

Closing : अस्पष्ट।

Colophon इति वज्रपिंजरस्तोत्र समाप्तम्।

१४६७. जिनरक्षा-स्तवन

Opening श्रीजिन भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याह्लाददायकम्।
जैनरक्षामह वक्ष्ये देहिना देहरक्षकम् ॥१॥

Closing : राकायां ? तु विधातव्यामुद्यापनमहोत्सवम्।
पूजाविधि समायुक्त कर्तव्य सज्जनैर्ज्जनै. ॥२१॥

Colophon : इति जिनरक्षा स्तवनम्।

१४६८. जिनसहस्त्रनाम

Opening : पंच परम गुरु को नमो उरधरि परम सु प्रीति ।
तीरथराज जिनंद जी चौबीसों धरि चित ।

Closing : सिखिरचंद कृत पाठ यह, बन्यौ अनुपम रास ।
जो पढ़सी मन लायके, पासी सौख्य सुवास ।।

Colophon इति श्री जिनसहस्त्रनाम पूजा पाठ भाषा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु ।
मकरमासे शुक्लपक्षे तिथौ-२ चद्रवासरे ·· ··· ।
सूबा औधदेश मुल्क हिन्दुस्तान मे प्रसिद्ध जिला है नबावगज बाराबकी नाम है ।
टिकइत नगर सुथाना डाकखाना जानो तासु डिग पूरब सरैयां-भलो ग्राम है ।
वास स्थान लेखक सु भगवान दीन नाम अन्नजल के स्ववस आयो यहि ठाम है ।
भोज नृप देश जिले शाहाबाद आरा नग्र राय जी बुलाकचद-मदिर मुकाम है ।।१।।
श्री सहस्त्रनाम पाठ जी को चढाया श्री चद्रप्रभु स्वामी जी के मदिल मे व्रत उद्यापन का मुमम्मात ······· कुंअर भार्य्या बाबू रामा प्रसाद अग्रवाल श्रावक दिगम्बर आम्नाय धारक आरामपुर नग्रनिवासी मिति भादौं सुदी ८ सवत् १९५९ ।

१४६९. जिनेन्द्रदर्शन स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४० ।

Closing जन्मजन्मकृत पापं जन्मकोटिसमर्जितम् ।
जन्ममृत्युजरान्तक हन्यते जिनदर्शनात् ।।१४।।

Colophon : इति जिनदर्शन संस्कृत सम्पूर्णम् ।

१४७०. जिनदर्शन

Opening प्रभु पतितपावन मैं अपावन चरन आयो शरण जी,
यों विरद आप निहार स्वामी मेट जामन मरण जी ।

Closing . या श्रद्धा मोही उर भई, कीजे तुम पद सेव ।
नवल नवल गुण गाय कै जै जै जै जिनदेव ॥

Colophon : इति श्री नवलकृत जिनस्तुति भाषा सम्पूर्णम् ।

विशेष— प्रारम्भिक स्तुति कविवर बुधजन कृत है ।

१४७१. जिनदर्शन

Opening : देखें, क्र० १४७० ।

Closing जाँचो नहीं सुरवास - दीजीए शिवनाथ जी ॥

Colophon : इति श्री भाषा जिनेदर्शन सम्पूर्णम् ।

१४७२ ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening ॐ नमोभगवते चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशाकशंखगोक्षीरहारधवल ।
गोत्राय घातिकर्म्मनिर्मलोच्छेदनाय जाति जरामरणविनाश-
नाय ।

Closing आं क्रों क्षं क्षू क्षों क्ष ज्वालामालिनी ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चंद्रप्रभतीर्थंकर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल
दुखहरन मंगलकर विजयकर स्तोत्र संपूर्णम् ।

विशेष— इसके आगे एक मंत्र भी दिया गया है ।

देखें, जै सि० भ० ग्र० I क्र० ६७६ ।
रा० सू III, पृ० २३६ ।

१४७३. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७२ ।

Closing : भृ गारतांगेलवरदर्प्पणे चामराणी श्रकचदनादिनवरत्नविभूषितांगे दैत्यास्तितापरिजनैं करकजयुग्मे ॥६॥

Colophon ; अनुपलब्ध ।

१४७४ ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening देखें, क्र० १४७२ ।

Closing दहदह पच पच छिद छिद भिद भिद ह्रा ह्री ह्रूँ ह्रूँ फुट स्वाहा । अनेन मन्त्रेण होम कुर्यात् सहस्र १२००० अनेन मन्त्रेण गजेन्द्र नरेन्द्र सर्वशत्रू वशीकरण पूवमत्र स्मरणोति

Colophon : इति श्री ज्वालामालिनी स्तोत्रमत्रविधि कल्प सम्पूर्णम् ।

१४७५ ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७२ ।

Closing : अट्टहास्य खड्गेन छेदय छेदय, भेदय भेदय डरु डरु छरु छरु स्फुट भ्र द्रां आ को क्षी क्षू क्षी ज्वालामालिनि ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सपूर्णम् ।

१४७६. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

विशेष— पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण ।

१४७७. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening देखें, क्र० १४७२ ।

Closing । तस्याभरण पीतवर्णं खड्गत्रिशुलपाससरामनायुधं उत्तमासनेन स्थापित तस्याग्रे जाप्य रक्तपीतउज्वलफलानि मध्यरात्रे – – ।

Colophon । अनुपलब्ध ।

१४७८ ज्वालामालिनी

Opening । स्नेहाच्छरण प्रयाति भगवन् पादद्वय ते प्रजा,
हेतुस्तत्र विचित्रदु खनिचय ससारघोरार्णव ।
छायानुराग रवि ॥१॥

Closing . छेदय छेदय भेदय भेदय डरु डरु छरु छरु
हरु हरु स्फुट स्फुट घे घे ..
– ज्वालामालिन्या ज्ञापयते स्तोत्र ।

Colophon इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

विशेष — इसमे शान्त्याष्टक भी गर्भित है ।

१४७९. कल्याणमदिर-स्तोत्र

Opening । कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमङ्घ्रिपद्मम् ।
ससारसागरनिमज्जदशेषजन्तु पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥

Closing जननयनकुमुदचंद्र प्रभास्वुरा: स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरात्मोक्ष प्रपद्यन्ते ॥

Colophon इति श्री कल्याणमदिर संस्कृत समाप्तम् ।

देखें जै० सि० भ० ग्र० I, ६८२ ।

१४८०. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर जी संस्कृत समाप्तम् ।

१४८१. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening देखें क्र० १४७६ ।
Closing देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र जी सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१४८२ कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८३ कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८४. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।

Colophon : इति श्री कुमुदचन्द्राचार्य्यविरचित श्री कल्याणमदिरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४८५ कल्याणमदिर-स्तोत्र (सटीक)

Opening देखे, क्र० १४७६ ।

Closing । अस्मिन् श्लोके स्तोत्रकर्ता कुमुदचद्राचार्यस्य नामोऽपि प्रकटो जात ।

Colophon इति कुमुदचद्राचार्यकृत कल्याणमदिरस्य अर्थावबोध टीका पडित शिवचद्र निर्म्मापिता अलमगमत् ।

१४८६ कल्याणमदिर-स्तोत्र

Opening परमजोति परमातमा परमज्ञान परवीन ।
वदौ परमानन्द मैं सो घट-घट अतरलीन ।।

Closing : यह कल्याणमदिर कियौ, कुमुदचद्र की बुद्धि ।
भाषा कियो बनारसी, कारण समकित शुद्ध ।।

Colophon इति कल्याणमदिर पूरन ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६१ ।

१४८७ कल्याणमदिर-स्तोत्र

Opening श्री नवकार जपो मन रगैं श्री जिनशासन सार री माई ।
सर्व मगल मैं पहिलो मगल जपता जय जयकार री माई ।।१।।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमदिर भाषा संपूर्णम् ।

१४८८. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मदिर स्तोत्रभाषा सपूर्णम् ।

१४८९. कल्याणमदिर

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री भाषा कल्याणमन्दिर जी समाप्तम् ।

१४९० कल्याणमदिर

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मदिर की भाषा सपूर्नम् ।

१४९१. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : श्रीमत्सर्वज्ञदेवनिजमुकुटतटाभ्यतरे सदधानम्,
चचच्चामीकराभ खचित्रमणिशतै भूषणंभूंषितांगम् ।
स्फुर्जत्काम्याभिलासप्रदममलतर वेत्रयष्टिंदधानम्,
स्तोष्ये श्री क्षेत्रपाल जिननिलयगत विघ्नविध्वसदक्षम् ॥

Closing : ॐ आं क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न-सपरिवारसहितमो क्षेत्रपाल येहि तिष्ट तिष्ठ ठः ठ· मम सन्नि-हितो भव भव वषट् स्वाहा, इति ठः ठ स्वस्थान गच्छतु स्वाहा।

Colophon · सपूर्णम् ।

१४६२ क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४६१ ।

Closing इम स्तव यो मतिमानधीते श्रीक्षेत्रपालस्य गरिष्टमूर्ते,
भक्त्यातिकाल सतत पवित्र भवत्यसौ सारदचन्द्रकीर्ति ॥

Colophon इति क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४६३ क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १४०८ ।

Closing . भैरवाष्टकमिद — — भैरवाष्टककीर्तिनात् ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४६४ क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening ॐ ह्री नमो भगवति पद्मावती हा हा कात्यायनी हू हू योगिनी
नवकुलनागबधिनी अवतर-२ आगच्छ-२ — ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् बद्धो मुञ्चति बधनात् ।
त्रिसध्य पठते यस्तु सर्वसिद्धिमवाप्नुयाद् ॥१६॥

Colophon : इति श्री क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४६५. लघुसहस्रनाम

Opening : स्वयभुवे नम. तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूत वृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये ॥१॥

Closing : नामाष्टकसहस्राणां ये पठंति पुन पुन. ।
ते निर्व्वाणपद यान्ति निश्चयेननात्रमसय ॥

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी सम्पूर्णम् ।

१४९६ लघुसहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १४९५ ।

Closing : देखें, क्र० १४९५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१४९७. लघुसहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १४९८ ।

Closing : देखे, क्र० ०४९५ ।

Colophon इति श्री लघुसहस्रनाम स्तोत्र सपूर्णम् ।
सवत् १८४२ वर्षे शा० १७०७ प्रवर्त्तमाने श्रावण वदि ३० गुरौ ।

१४९८. लघुसहस्रनाम

Opening : नम त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञायमात्मने ।
वक्ष्ये तस्यैव नामानि मोक्षसौख्याभिलाषया ॥१॥

Closing : देखें क्र० १५९५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७ ० ।

१४९९. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : लक्ष्मीमहस्तुल्य सती सती सती ।
प्रवृद्धकालो विरतो रतो रतो ।

जराहजा जन्महृता हुता हता ।
पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।१।।

Closing : तर्के व्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौसले,
विख्यातो भुवि पद्मनदिसुधियस्तत्त्वस्य कोश निधि ।
गभीर यमकाष्टक भणति य: सम्भूयसा लभ्यते ।
श्री पद्मप्रभुदेवनिर्मितमिदं स्तोत्रं जगन्मङ्गलम् ।।

Colophon : इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० , क्र० ७३७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४०-१४१ ।
जि० र० को०, पृ० ३३४ ।

१५००. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४९९ ।
Closing : देखें, क्र० १४९९ ।
Colophon : इति लक्ष्मीस्तोत्रम् ।

१५०१ लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४९९ ।
Closing : देखें, क्र० १४९९ ।
Colophon : इति श्री लक्ष्मीपार्श्वनाथस्तवनम् ।

१५०२. महावीर आरती

Opening आरती करी जिनवीर की, सुन पिया सेनिकराय ।
जन्म-जन्म सुख पाईए, दुरित सकल मिटि जाय ।।१।।

Closing : जिन आरती कीजै सुख लहीजे छीजै कर्म कलंक ।
सीवपुर पाईजै सो नर पूजि जै भक्ति सहित निकलंक ।।

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१५०३. मडलोद्धार-स्तोत्र

Opening : सपूर्व्वं सूरिभिराम्नात क्षेत्रपालसपर्यका ।
तथाह् मडम वक्ष्ये सर्वविघ्नोपशांतये ॥१॥

Closing : यथापूर्व्वं मया श्रुत्वा तथा एव मया कृतम् ।
क्षेत्रपालविधि दिव्यां विघ्नदु खप्रणाशकम् ।

Colophon : इति मडलोद्धार स्तोत्रम् ।

१५०४ मंगल आरती

Opening : मगल आरती कीजे भोर विघन हरन सुभ करन किशोर । टेक ।
अरहंत सिद्ध सूर उवझाय साधु नाम जपिये सुखदाय ॥१॥

Closing : कहे कहाँ लो तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।
करो आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण स्थान की ॥करो ॥

Colophon : इति आरती महावीर जी की सम्पूर्णम् ।

१५०५. मणिभद्र-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४०८ ।

Closing : जाप एक लाख पचीस हजार करें १२५००० दिन तीन में जब उपवास के सरने धरमो बनाये था लाल वस्त्र जाप माला कनेर फूल · · ।

Colophon : नहीं है ।

१५०६ मंगलाष्टक

Opening : श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट 'कुर्वं तु ते मंगलम् ॥१॥

Closing इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं · कुर्वं तु मंगलम् ॥१०॥

Colophon · इति मंगलाष्टक संपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७०५ ।

१५०७ मंगलजिन-दर्शन

Opening : जै जै जिनदेव के देवा, सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।
अद्भुत हैं प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलपमति मेरी ॥

Closing निस्तार के तुम मूल स्वामी बडे भागन पाइए ।
रूपचंद चिंता कहा जिन चरण सरणनि आइए ॥

Colophon इति रूपचंद कृत जिनगुण विनती सम्पूर्णम् ।

१५०८· मुनीश्वर विनती

Opening वंदौ दिगम्बर गुरु चरण जग तरण तारण जान,
जे भरम भारा रोग को हैं राजवैद्य महान ।
जिनके अनुग्रह बिन कवि नहि करे कर्म जजीर,
ते साधु मेरे उर बसे मेरी हरो पातक पीर ॥१॥

Closing · कर जोड भूधर वीनमैं वे मिलैं कब मुनि राय ।
इहैं आस मन की कब फलैं मेरे सरे सगले काज ।
संसार विषम विदेस मे जे बिना कारन वीर ॥ ते साधु० ॥८॥

Colophon । इति साधु विनती सम्पूर्णम् ।

१५०९· नमस्कार

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपाल का नमस्कार समाप्तम् ।

१५१० नमस्कार

Opening : देखे, क्र० १२८७ ।

Closing : देखे, क्र० १५०९ ।

Colophon : इति श्रीपालजी कृत नमस्कार समाप्तम् ।

१५११ नदीश्वर-भक्ति

Opening : त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणि ... विरहित-निलयान् ॥१॥

Closing : अन्यत्र स्वपन् जाग्रन् तिष्टन्नपि पथि चलन् ... स्तोत्र सुकृती ॥११॥

Colophon : इति सपूर्णा ।

देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७०८ ।

१५१२ नदीश्वर-भक्ति

Opening : देखे, क्र० १५११ ।

Closing : ... दुक्खखओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइ गमण समाहि-मरण जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इति नदीश्वरभक्ति समाप्ता । इति सप्तभक्तय. समाप्ता ।

१५१३. नरक-विनती

Opening ।　आदि जिनद जु हारीयै मन धरि अधिक उल्हासो जी ।
मन वच काया शुद्ध सुकीजै निज अरदासो प्रभु नरकतना
दुख दोहिल ।।१।।

Closing　प्रभु पतितपावन करण भावन श्री गुणसागर भाइयै ।
इह लोक सुख परलोक शिवपद स्वामि सुमिरण पाइयै ।।

Colophon ।　इति श्री नरक विनति स्तवन सम्पूर्णम् ।

१५१४. नारायणलक्ष्मी-स्तोत्र

Opening　ॐ अस्य श्री नारायणहृदयस्तोत्रमत्रस्य भार्गवऋषि अनुष्टुप् छद
श्रीमन्नारायणो देवता श्रीमन्नारायण प्रसादसिद्धयर्थे जपे
विनियोग ।

Closing .　श्रीध्यायेत्वा प्रहसितमुखो कोटिवालार्कभासम्,
विद्युद्वर्णा वरवरधरा भूषणाढ्यां सुशोभाम् ।
बीजापुर सरसिजयुम विभ्रती स्वर्णपात्रम्,
भर्त्रायुक्तां मुहुरभयदां मह्यमप्यच्युतश्री: ।।१०५।।

Colophon　इति श्री अथर्वणा रहस्ये उत्तरभागे श्री महालक्ष्मीहृदय सपूर्णम् ।

१५१५ नवग्रह-स्तोत्र

Opening ।　जगद्गुरु नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।
ग्रहशांति प्रवक्षामि लोकानां सुखहेतवे ।।

Closing　भद्रबाहु. महाश्चैव पंचमश्रुतकेवली ।
तेन विद्यानवादार्त्वं ग्रहशांतिरुदीरित: ।।२१

Colophon ।　इति नवग्रह स्तोत्रम् ।

देखो, जि० र० को०, पृ० २०६ ।

१५१६. नवग्रह-स्तोत्र

Opening : अर्कचन्द्रकुजसौम्य — — — जिनपूजनात् ॥१॥

Closing भद्रबाहुरूवाचेद पचमश्रुतकेवली ।
विद्याप्रवादत पूर्वाद्ग्रहशांति विधि श्रुता ॥११॥

Colophon इति नवग्रह शाति स्तोत्रम् ।

१५१७ नवकारढाल

Opening पहिलो लोक अलोक ए ढाल छै समरौ श्री नवकार
सार पूरब तणो नव निध सिद्ध आनै सदा ए ।
महिमा मोयी जास सकट सवि टलै मिनय मनोरथ सपदा ए ॥

Closing दिन-२ अधिकी संपदा ए मनवछित सुखथाय । नमु न० ।
दया कुशल वाचक बढै धर्ममदिर गुण गाय ॥२३। नमु न० ॥

Colophon : इति श्री नवकार चउढालीयो सम्पूर्णम् ।

१५१८ नवकार-स्तोत्र

Opening · हस्तावल बोहंता पापाद्वा मचराचरस्य जगत ।
मजीवन मत्रराट् ...... ॥१॥

Closing · अन्यच्च .. सुकृति ॥१२॥

Colophon ; इति पच नमस्कार स्तोत्रम् ।

१५१९ नवकारमत्र-स्तोत्र

Opening । ॐ परमेष्ठी नमस्कार सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्र पंजराभि स्मराम्यहम् ॥१॥

Closing : यश्चैनां कुरूते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा ।
तस्य न स्यादुव व्याधिरधिश्चापि कदाचन ॥८॥

Colophon : इति नवकार मंत्र स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७ ६ ।

१५२०. नेमिनाथ आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनंद की ।
सब सुखदायक आनंद कंद की ॥ आरती० ॥१॥

Closing : भैरौं सरन चरन तुम आयौ ।
भव भव मैं प्रभु होइ साहायो ॥ आरती ॥६॥

Colophon : इति भैरौजी कृत आरती ।

१५२१ नेमिनाथ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णतया जीर्ण है ।

१५२२. निजामणि

Opening : सकल जिनेश्वर देव हूमत पाये करिने सेव ।
निजामणि कहु सार जिन क्षपक तरे ससार ॥१॥

Closing : श्री सकलकीर्त्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्त्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणे सार ए निजामणी भवतार ॥५४॥

Clolophon इति श्री ब्रह्मचारी जिनदास विरचिते क्षपक निजामणि संपूर्णम् ।

१५२३. निर्वाण-भक्ति

Opening : विबुधपतिखगपनरपति धनदोरगभूत यक्षपतिमहितम् ।
अतुलसुखविमलनिरूपमशिवमचलमनामयं प्राप्तम् ।

Closing देखें, क्र० १५१२।

Colophon : इति निर्वाणभक्तिः।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१७।
जि० र० को०, पृ० २१४।

१५२४. निर्वाणकाण्ड

Opening : वीतराग वंदौ सदा, भाव सहित सिरनाई।
कहूँ कांड निर्वाण की भाषा विविध बनाई।

Closing संवत् सत्रहसै इक ताल आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
भैया वंदन करै त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल॥

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड समाप्ता।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१५।

१५२५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५२४।

Closing : देखें, क्र० १५२४।

Colophon : इति निर्वाणकांड भाषा संपूर्णम्।

१५२६ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५२४।

Closing : देखें, क्र० १५२४।

Colophon : इति श्री भाषा निर्वाणकाण्ड सम्पूर्णम्।

१५२७ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५२४ ।
Closing : देखें, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाड भाषा सम्पूर्णम् ।

१५२८. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५२४ ।
Closing : देखे, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा समाप्तम् ।

१५२९ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें क्र० १५२४ ।
Closing देखे, क्र० १५२८ ।
Colophon इति श्री निर्वाणकाण्ड समाप्तम ।

१५३० निर्वाणकाण्ड

Opening . देखे क्र० १५२४ ।
Closing : तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजै तहाँ ।
मन वच काय भाव सिरनाई वदन करौ भविक सिरनाई ॥
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा सपूर्णम् ।

१५३१ निर्वाणकाण्ड

Opening : अट्ठावयम्मि उसहो चपाएवासुपुज्ज जिण-णाहो ।
उज्जते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो । १॥

Closing जो पढइ तियाल णिव्वुइ कडपि भाव सुद्धीए ।
भु जदि णरसुरसुक्ख पच्छा सो लहइ णिव्वाण ॥

Colophon इति निर्वाणिकाड समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१४ ।

१५३२. निर्वाणकाण्ड

Opening . देखे क्र० १५३१ ।

Closing देखे, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति श्री णिव्वाणकाड की गाथा सपूर्णम् ।

१५३३. निर्वाणकाण्ड

Opening देखे, क्र० १५३१ ।

Closing : देखे, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकांड समाप्तम् ।

१५३४ निर्वाणकाण्ड

Opening देखें, क्र० १५३१ ।

Closing देखें, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणकाड सपूर्णम् ।

१५३५. निर्वाणकाण्ड

Opening · देखें, क्र० १५३१ ।

Closing : देखें, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणकांड सम्पूर्णम् ।

१५३६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५३१ ।
Closing : देखें क्र० १५३१ ।
Colophon : इति निर्व्वाणकांड प्राकृत सपूर्णम् ।

२५३७ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५३१ ।
Closing देखें क्र० १५३१ ।
Colophon . इति निर्वाणकाण्ड गाथा समाप्ता ।

१५३८ निर्वाणकाण्ड

Opening श्री अर्हंत अनत गुन सिद्ध सूर उवझाय ।
सर्वसाधु के चरण जुग वंदो मन वचकाय ॥१॥
Closing : देखें, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकांड भाषा समाप्तम् ।

१५३९ निर्वाणकाण्ड

Opening : रावण के सुत आदिकुमार,
मुक्त गये रेवा तट सार ।
कोडि पाच अरु लाख पचास,
ते वंदो ॥
Closing देखें, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति निर्व्वाणकांड सम्पूर्णं ।

१५४०. ॐकार स्तुति

Opening : ॐकार बिस्फुरच्चन्द्रकलाबिंदुमहोज्वलम् ।
नामाग्राक्षरनिस्पन्न पचाना परमेष्ठिनाम् ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षाणा दातार विश्वपूजितम् ।
हृत्कजकर्णिकासीन ध्यायेत् ध्यानी शिवाप्तये ॥

Closing : सर्वावस्थासु सर्वत्र महामत्र शिवार्थिभि. .... ।
- - - सहस्रत्रअकोटिभि. ॥

Colophon : नही है ।

१५४१. पद

Opening मोह यारी हिरदै भाय श्री जिनराज की ।
जा जानी तै सब सुख उपजै, गोई हमै सुहाय ॥ श्रीजि० ॥

Closing सेवक जान दया कर स्वामी, फिर न फिरो भव फेरी ॥प्रभु०

Colophon . इति पद ।

१५४२ पद

Opening अब चल सग हमारे, तोहें बहुत जतन कर राखो रे काया ॥ टेक
निस दिन पल पल रहे है एकठे अब क्यू नेह निवारे रेकाया॥१॥

Closing जिनवर नाम सार भज अतम काया भरम संसारे ।
सुगुर बचन परतीत धरत सुख आनद भए हैं हमारे रीकाया
॥ अब चल ॥

Colophon इति पद चेतावनी सम्पूर्णम् ।

१५४३ पद

Opening . आज गई थी समवसरण मा जिनवचनामृत पीवा रे।
आवा श्री परमेसर वदन कमल छवि हरखे निरखेवा रे
।।आवा ।।१।।

Closing · परम दयाल कृपाल कृपानिधि इतनी अरज सुणीजै
परम भगति जिनराज तुहारी अपणी कर जाणीजै ।३।। कु० ।

Colophon इति श्री जिन कुसलसूरि जी गीतम् ।

१५४४. पद

Opening ; मिल जाओ · गुरु के वचन मोती कान मैं ।

Closing सात विसन आगे आवागवन निवारो ।। वृ० ।।

Colophon । सम्पूर्णम् ।

१५४५ पद

Opening बिना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेकरारी है ।। बिना ।।
चौरासिलाप मे भटको बहुत सी देहधारी है ।
मुसीबत जो पडी मुझपै प्रभु को खुद निहारी है।। बिना ।। ।।१।।

Closing देव त्वदीय तव दिव्यघोषम् ।।४।।

Colophon : इति काव्य सपूर्णम् ।

१५४६. पद

Opening : देखो मतलब का ससारा, देखो मतलब का ससारा ।। टेक ।।

Closing । भाग चदमा चद या प्रकार जीव लहै सुख अपार याको निहार
स्याद्वाद की उचरनी
परनति सब जीवन की तीन भात वरनी ।। परनति० ।।४।।

Colophon इति पद सम्पूर्णम् । मिति भादव वदी ३ वार सनिश्चरवार सम्वत् १६४८ का । लिख्यत अमीचद श्रावक पालमग्राम मध्ये ।

१५४७ पद

Opening . तुम भजौ निरजन नाव मुक्ति पद पाई ।
ये अचल अखडित जोति सदा सुखदाई ।। टेक ।।

Closing अब जैनधर्म हितकार सदा मैं चाहूँ ।
अरु लख चौरासी माहि फेरि नही आऊँ ।।
कोई जिनवं यू निणदास भावनी गाई ।। तुम भजौ ।।

Colophon इति पद मरहटी समाप्तम् । शुभ भूयात् मिति भादव सुदी ११ वार सोमवार सवत् १६४८ लिख्यत अमीचद श्रावक पालमग्राम का वासी ।

१५४८ पद

Opening : दिन बारन बोल दुनिया मीनष जमारोपाय जी ।।

Closing : षतरी मारग जावतार साम मिल गया चोर,
षतरी बाण भया ··· ।।

Colophon अनुपलब्ध ।

१५४९ पद

Opening : नेमि सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।
सतु खग दिवारि सील को न कियः जोर जुगली मो तारी लगीहो।

Closing : ... नेम सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।

Colophon : पद सपूर्णम् । सवत् १६१६ मिति चैत्र बदी १५ । बाबू हरलाल जी अग्रवाल गागिलगोत्रस्य पुत्र बाबू बधनलाल जी तस्य पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायन जी भार्या मधुवन बीबी पुस्तक लिखापित आरे मध्ये सपूर्णम् ।

१५५० पद

Opening . मुझे है चाव दर्शन का ·· उबारोगे तो क्या होगा ।।

Closing : अधम उद्धार पूरन के · नीकारोगे तो क्या होगा ।।

Colophon इति पूर्णम् ।

१५५१ पद

Opening शरण पिया जैओ होगी रघुवीर ।।

Closing : · मेरी बार क्यो विलम्ब करो रे ।।

Colophon . नही है ।

१५५२ पद

Opening : तारण वाला न कोई ए जी का ।
आप तरे आप ही ए तोरे देखो चित मे जोई ।
लाख बात की बात है चेत न जाने सिवसुख होइ ।।ए जी का ।।१।।

Closing : वादि न क्यो न विचारी चेतन अवहु होहु खरे ।
जब सुध आवे चेतन प्यारे की तब सब काज सरे ।। ए चेतन ।।

Colophon : नही है ।

१५५३. पद

Opening किये आराधना तेरी हिये आनंद व्यापत है ।
तिहारे दर्शन देखे सकल ही पाप नाशत है ।।१।।

Closing : दुर्लभ है नर अवतार नहि बार बार श्रावक — ··
— ··· सब साधुन ने भाई ।।१२।।

Cloophon : इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्तम् ।

विशेष— पद के साथ ही द्वादशानुप्रेक्षा भी संकलित है ।

१५५४ पद

Opening जाके वदन पइयत हैगी मुक्ति महासुख खानि ।। माधुरी ।।

Closing सबही चाहे भोग सजोग, तैं मिल तैं तजि लीनौं जोग ।
सील बरत चित्त मैं दृढ राखि, जग भाषौ तेरी उत्तम साखि ।

Colophon : इति ।

१५५५. पद

Opening : कर जोडी माथ नाए नमो: बेरी बेरी ।
हे वीर पीर हरिये सिताबी से अब मेरी ।। टेक ।।

Closing : प्रभु जी तुम तीन ज्ञानधारी,
सच्चे होगे ब्रह्मचारी,
तजी तुम राजुल सी नारी,
भगे हो गिर के तपधारी,
धर्मचदनी रामचद गावै जिन शरण लिया,
हम को छांडि चले सखी री साजना ।।५।।

Colophon . इति सम्पूर्णम् ।

१५५६. पद

Opening प्रात भयो सुमिरि सुमिरि देव पुण्यकाल जातरे
चूकत जो औसर ते पीछैं पछितात रे ।। प्रा० ।।

Closing : माधुरी जिनबानि चलो री सुनिहु,
विपुलाचल परि बाजे बाजेत भुनक परी मेरे कान ।
बर्द्धमान तीर्थंकर आयेरी, बदे निज गुर जानि ॥

Colophon : नहीं है ।

१५५७. पद

Opening : सिद्धचक्र की सेवा कीजे, नवपद महीमा धारी हैं ।
अरीहंत सिद्ध श्री उवझाया सकल साधु गुन भारी हैं ॥

Closing अरज सुना बेहरमान बदो नितमेव रे
चेतन को तार लेव मन वीमारो टेव रे ॥ प्र० ॥

Colophon : इति पद सम्पूर्णम् ।

१५५८ पद

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतनं दुखहरण तुम्हारानाना हैं ।
मत मेरी बार अबार करो मोही देहु विमल कल्याना है ॥ टेक ॥

Closing हो दीनानाथ अनाथ हित जन दीन अनाथ पुकारी है
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोही विथा विरतारी है,
ज्यो आप अवर भवि जीवन की तत्काल विथा निरवारी है,
त्यो वृंदावन कर जोर कहैं प्रभु आज हमारी ही बारी है ॥टेक।

Colophon . इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१५५९. पद

Opening : मोह नीद मेरी ... है, भोत दीना नै जाया । जीन ॥१॥

Closing अस्पष्ट ।

Colophon : नहीं है ।

१५६०. पदसंग्रह

Opening : किये आराधना तेरी, हिये आनंद वियापत है।
तिहारे दरस के देखे सकल ही पाप नासत हैं ॥१॥

Closing : केवल मैं सुकल मैं अचल सो मैं अचल मैं हूं।
जिनद बकस रिधि सिधि मैं मिलि अटल रहूँ।

Colophon : इति पदसम्पूर्णम्। मितिमाघ बदी १।

१५६१. पदसंग्रह

Opening : भजन तो बनता नही, ध्यान तो लगता नही मन तो सैलानी ॥
खाने को तो अच्छा चाहिये, और ठंडा पानी
चाबने को पान बीडा और पीकदानी
ऊँचे नीचे महल चाहिये ताबु आसमानी ॥

Closing : तीन खंड के नाथ धनी तुम हरि ल्याये जो परनारी।
यह कैसे छूटे लगा कलंक कुल मे भारी ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१५६२ पद-विनती

Opening : सुमरण ही मैं तारे प्रभु तो ॥ सु० ॥

Closing : जिनराज छवि मनमोह लियो
महाराज सबो मन मोह लियो ॥ टेक ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१५६३ पद-हजूरी

Opening : घरी धन आज की आई सरे सब काज मो मन के ॥

Closing : तीन लोक को रावन अधिपति लक्ष्मन हाथ मरो।
द्यानत की अर्ज वीनती आमन मरन हरो ॥

Colophon : पद संपूर्णम् ।

१५६४. पद होली

Opening : सम्मेद शिखर सुखदाई री मोको सम्मेद शिखर सुखदाई ॥ टेक ॥
बीसतीर्थंकर बीस कूट मे कर्म काटि सिद्ध पाई ।
तिनके चरण कमल नित वदौ मन वच तन लवलाई,
पाप सब जाई पलाई ॥ १ ॥

Closing : चेत चेतन बेचेन तुम्हे बार बार समझाई ।
कहत शिखर मन वच तन सेती भज ले श्री जिनराई ।
याहि ते शिव सुख पाई ।
ऐ चेतन तुम्हे चेत न आई ॥ ६ ॥

Colophon इति सम्पूर्णम् ।

१५६५ पद्मावती अष्टोत्तर शतनाम

Opening : नमोनेकातदुर्न्दर्मारध्टतदृशभानुवे ।
जिनाय सकलाभीष्ट ध्यायनि.कामधेनवे ।

Closing , दिव्य स्तोत्रमिद महासुखकर आरोग्यसपत्करम्,
भूतप्रतपिशाचराक्षसभय विध्वसनिर्णाशनम् ।
आनरसते ? वांक्षित सुनिलय सर्वेपि मृत्यु जय ,
विव्य व्याप्तकर कवि च जनक स्तोत्र जगन्मगलम् ।

Colophon इति पद्मावती अष्टोतरशतनामावली सपूर्णम् ।

१५६६ पद्मावती स्तोत्र

Opening श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटमुकुटतटीदिव्यमाणिक्यमाला,
ज्योतिर्ज्वालाकराला स्फुरति मुकुटिकाघृष्टपादारविंदे ।

व्याघ्रोल्का सहस्त्रज्वलदलनशिखा-लोलपाशांकुशासम्,
आ क्रो ह्री मन्त्ररूपे क्षपितवलमरे रक्ष मां देवि पद्मे ॥१॥

Closing आह्वान न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजा अर्च्चा न जानामि मम क्षमस्व परमेश्वरी ॥३३॥

Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२२ ।
जि० र० को०, पृ० २३८ ।
Catg of Skt. & Pkt Ms, P. 665

१५६७ पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।

Closing ... न सम्मगणाद् व्रजति नितरां ... दु भिक्षदावानलम् ॥

Colophon , इति श्री पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६८ पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।

Closing . आयुर्वृद्धिकरी जयामयकरी सर्वार्थसिद्धिप्रदा,
सद्य प्रत्ययकारिणी भगवती पद्मावती ता स्तुवे ॥३६॥

Colophon इति पद्मावतीस्तोत्र समाप्तम् ।

१५६९ पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५६६ ।

Closing : पठितं भणित गुणितं जयविजयरम -निबन्धन परमं,
सर्वव्याधिहरस्तोत्रं त्रिजगत पद्मावतीस्तोत्रम् ॥३३ ।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्रम् ।
सन्दर्भ के लिए देखें, क्र० १५६६ ।

१५७० पद्मावती-स्तोत्र

Opening . चचच्चामकशशांकपूर्णवदना सयोज्य हस्तद्वयम् ।।१।।

Closing : लक्ष्मीवृद्धिकरा जगत्सुखकरा ... पद्मावती पातु व ।।

Colophon इति पद्मावतीस्तोत्र सपूर्णम् ।

१५७१. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : ॐ जयतीभद्रमाताङ्की सर्वपापप्रणाशनी ।
सर्वदुखक्षयकारी महापद्मे नमोनम ।।१।।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थं लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्या सुखार्थी लभते सुखम् ।

Colophon इति पद्मावतीस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५७२ पद्मावती -स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५६६ ।

Closing भव्या कुर्वन्ति मां पूजा मद्भक्त्याभीष्टसिद्धये ।
एव पूजाविधिर्लोके जीयादाऽऽचन्द्रतारकम् ।।

Colophon : इति इष्टप्रार्थना पुष्पाञ्जलि इति पद्मावतीपूजा समाप्तम् ।

१५७३. पद्मावती-स्तोत्र

Opening जिनसासनी हसासनी पदमासनी माता ।
भुजचारते फलचारदे पद्मावती माता ।।

Closing जिनधर्म्म से डिगने का कही आपरे कारन
तो लीजियो उबार मुझे भक्ति उदारन ।
न कर्म के सजोग सो जिस जोनि मे जावो ।
तहा दीजियो सम्यक जो शिवधाम को पावो ।।

Colophon. इति पद्मावती-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२१ ।

१५७४ पद्मावती सहस्रनाम

Opening प्रणम्य परमा भक्तया देव्याः पादाबुजस्तिद्या ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्षे तद्भक्तिसिद्धये ।।१।।

Closing भो ? देवि ! भो मात सक्ष्यम्यति प्रीतिफलाप्नोति।।१३५।।

Colophon. इति पद्मावतीस्तोत्र सहस्रनामस्तवन सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४२ ।

१५७५ पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १५७४ ।

Closing भो देवी भीमा · न क्षम्यति प्रीतिपलायने किम् ।

Colophon : इति श्री पद्मावती सहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

१५७६. पद्मावती सहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १५७४ ।

Closing : देखें, क्र० १५७४ ।

Colophon नही है ।

१५७७ पद्मावती-सहस्रनाम

Opening · श्रीमत्पार्श्वेणमानम्य पद्मावत्यामहाश्रिया ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये भक्त्या मनोमुदा ।।१।।

Closing : भक्त्या पठत्विद स्तोत्र हितोपकृतमुत्तमम्,
आचन्द्रता क जीयात्सद्भव्यसुखहेतवे ।।३४।।

Colophon : इति पद्मावती सहस्रनाम समाप्त. ।

१५७८ पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १५७४ ।

Closing : जयना पूजिता पूज्या पद्मावतीसमन्विता ।
ते जना सुखमाप्नोति यावत्मेरुजिनालय ।।१४।।

Colophon : इति पद्मावती उद्यापन पचांग पूजा समाप्तम् ।
लिखित पडित सेवाराम, सवत् १८२७ कुवार कृष्णपक्षे नौमि शुक्रदिने लक्ष्मणपुरनगरे कौशलदेशे ।

१५७९. पद्मावती-विनती

Opening देखे, क्र० १५७३ ।

Closing : देखें, क्र० १५७३ ।

Colophon : इति श्री पद्मावती जी की बीनती सपूर्णम् ।

१५८०. पद्मावती-विनती

Opening : देखें, क्र० १५७३ ।
Closing : देखें, क्र० १५७३ ।
Colophon इति पद्मावती जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१५८१. पद्मनदिपचविशितिका

Opening : हृदय भुवि - " सुभव्यम् ॥
Closing : ताते धर्मकु धारणकर पुण्य का सचय करो ।
Colophon : नही है ।

१५८२. पंचनमस्कार-स्तोत्र

Opening देखें, क्र० १४७८ ।
Closing देखें, क्र० १५१८ ।
Colophon : इति पचनमस्कार-स्तोत्रम् ।

१५८३. पचनमस्कार

Opening : ॐ नम: सिद्धेभ्य। । अथ कतिपय पचपरमेष्ठिना सप्रादाया- .. . लिख्यते पंचनामादि पदानां पचपरमेष्ठ ... ... ।
Closing अस्पष्ट ।
Colophon : नही हैं ।

१५८४ परमेष्ठीस्तोत्र

Opening : देखें, क० १५१६ ।
Closing · देखें, क० १५१६ ।
Colophon इति श्री परमेष्टीस्तोत्रम् ।

१५८५ परमानन्द-स्तोत्र

Opening : परमानदमयुक्त निर्विकार निरामयम् ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितम् ।
Closing काष्टमध्ये यथा वह्नि शक्तिरूपेण तिष्ठति ।
अयमात्मा शरीरेषु यो जानाति स पडित ।
Colophon । इति श्री परमाणद स्तोत्र समाप्त ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४४ ।
Catg, of Skt, & Pkt Ms P 665

१५८६ परमानद-स्तोत्र

Opening देखे, क० १५८५ ।
Closing । देखे, क० १५८५ ।
Colophon इति श्री परमानद स्तोत्रं समाप्तम् ।

१५८७· पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening । देखें, क० १३२२ ।
Closing । देखे, क० १३२२ ।
Colophon : इति पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५८८. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : अजरअमरपार बारदुर्वरिवार गलितबहुलस्वेद सर्वतत्त्वानुवेदम् ।
कमठमदविदार भूरीसिद्धान्तसार विगतवृजनयूथ नौमि य पार्श्वनाथम् ॥१॥

Closing : तीरथपति पारसनाथतिलो भणता यसवासरवासभलो
मनमित्र सुकोमल होइ मिलो अमची प्रभुपारस आसफलो ॥१४॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ चितामणि स्तोत्रम् ।

१५८९. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णत जीर्ण-शीर्ण है ।

१५९०. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : श्यामो वर्णविराजतेतिविमले श्यामोपिसर्पोस्मृत,
श्यामो मेघ निर्घरोपि च घटाश्याम चराग्निखिलम् ।
वर्षामूसलधार-वीरमखिल कायोत्सर्गे नता,
धरणेद्रो पद्मावती युगस्वर श्री पार्श्वनाथ नम ॥१॥

Closing : इद स्तोत्र पठेन्नित्य त्रिसध्य च विशेषत.,
ग्रहे भवति कल्याण पार्श्वतीर्थ स्तवेन च ॥८॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५९१. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३२२ ।

Closing : देखें क्र० १३२२ ।

Colophon । इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५९२. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening । नरेन्द्र फणीन्द्र सुरेन्द्र अधीस सतेन्द्र सुपूज्य नमो नायशीशम् ।
मुनीन्द्र गणेन्द्र नमो जोरि हाथ नमो देवचिन्तामणि पार्श्व-
नाथम् ।।

Closing । गणधर इन्द्र न कर सकैं तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीत निहारिकैं कीजै आप समान ।।१०।।

Colophon इति पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५९३. पार्श्वनाथ-स्तुति

Opening जाकी देह मरकतमनि सो उद्योत अति आनन पे कोटि काम-
देव छवि हटकी ।
अंबुज के पत्र सो विशाल दृग लाज भरे सीस पे सरगफन सोभा
है मुकुट की ।।

Closing । तुम तो करुना निधि नायक हो मेरी पीर हरो दुखददन की,
कर जोरि के लालविनोदी कहे वलि जाऊँ मे वामा के
नदन की ।।

Colophon · इति श्री पार्श्वनाथ जी की स्तुति समाप्तम् ।

१५९४. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening । ॐ ह्रीं मात श्री पद्मावते नमः, ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वना-
थाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय - ।

Closing । जो निय कठे धारइ कम्पमिमं कप्परुखु सारित्थ ।
अविकप्प सोकामिय कप्पण कप्पट्टु मो सुहई ।।२३।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ मंत्र सहित स्तोत्रम् ।

१५९५. पार्श्वनाथाष्टक

Opening : क्षीरजलनिधिनीरनिर्मलमिश्रदिमकरवासयम्,
धाराश्रय भृ गारभरिकरीजन्ममरणविनासनम् ।
पूज्यभवजीवसौख्यदायक दुरितकल्मषखडनम्,
श्रीपार्वनाथ सुदेवजिनवर मूलनायक वदनम् ।

Closing : नीरचन्दन ... मूलनायकवंदनम् ।

Colophon : इति पार्श्वनाथाष्टकम् समाप्तम् ।

१५९६ पार्श्वनाथाष्टक

Opening : क्षीर पयोनिधि को जल उज्वल निर्मल सीतल सू भरिझारी ।
पाप मिटे जिन मत्रह के सुधि जिनाश्र पदांबुजधारकरी ।।
अति सु दर देउ लगाव मनोहर श्रीमूलनायक पार्श्वभरम् ।
शत इद्र समचित पादयुग सुभवांबुधि तारन पापहरम् ।।

Closing : दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपांगना सेवित पादपद्मम् ।
श्रीपार्श्वनाथो पुरुषोत्तमो य ददातु सर्व समीहितानि ।।१६।।

Colophon. इत्याष्टक जयमाला समाप्त ।

१५९७ पार्श्वजिन आरती

Opening : स्वामी पार्श्वकुमार हू करु वीनती आपीए ।
तुम त्रिभुवन पतिसार मैं तुम सरन चरन गहिए ।।१।।

Closing : श्री जिनधर्म प्रभाव मनवछित फल पावई ए ।
भैरो पर होय सहाय अपनी ऊंड ? निबाहयगी ए ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वजिन आरती ।

१५९८. प्रत्यगिरा सिद्धि-मंत्र-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री या कल्पयतिनो अबध ब्रह्मणा अपिनिर्णय ।

Closing : यस्य देवे च मंत्रे च गुरौ च त्रिषु निर्मला,
न व्यवछिद्य ते भक्तिस्तस्य सिद्धिरदूरतः ।।

Colophon : इति श्री रूद्रजामले पार्वती स्वरसवादे छराजोगमूलपाणि तत्र विनिगते प्रत्यगिरा सिद्धमत्रस्तोत्र मपूर्णम् ।

१५९९ ऋषिमडल-स्तोत्र

Opening आद्य ताक्षरमलक्ष्यमक्षर व्याप्य यत् स्थितम् ।
अग्निज्वालाममताद् बिन्दुरेखासमन्वितम् ।।१।।

Closing इति स्तोत्र महास्तोत्र स्तुनीनामुत्तम पदम्,
पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभते पदमव्ययम् ।।६३।।

Colophon इति ऋषिमडल स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७४६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४७ ।
Cagt, ot Skt & Pkt Ms P 629

१६००. ऋषिमडल-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५९९ ।

Closing . देखे, क्र० १५९९ ।

Colophon इति ऋषिमडलस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६०१. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opennig देखें, क्र० १५६६ ।
Closing देखे, क्र० १५६६ ।
Colophon . इति श्री ऋषिमडलस्तोत्र समाप्तम् ।

१६०२. ऋषिमडल-स्तोत्र

Opening . देखे क्र० १५६६ ।
Closing दृष्टेशामर्हतेबिंबे भवेत्सप्तमके ध्रुव ।
पदमाप्नोति विश्रस्त परमानदसपदा ।।
Colophon . इति रिखीमडल स्तोत्र सपूर्णम् ।
विशेष— इसके साथ एक मत्र भी लिखा है ।

१६०३ ऋषिमडल-स्तोत्र

Opening आद्य पद शिरोरक्षेत्पर रक्षतु मस्तकम् ।
तृतीय रक्षेन्नेत्रे चतुर्थ रक्षेच्च नासिकाम् ।।६।।
Closing यावच्चद्रार्य्यमा च - सद्विमानाकुलागा ।।
Colophon अनुपलब्ध ।

१६०४ साधु वंदना

Opening : श्री जिन भाषित भारती सुमिरि आनि मुखराग ।
कहों मूलगुन साधु के परमिति विशति आठ ।।
Closing . अट्ठाईस मूलगुन जो पाले निरदोष ।
सो मुनि कहत बनारसि पावैं अविचल मोक्ष ।।
Colophon . इति साधु वदना समाप्ता ।

१६०५ सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing वागटी जिनसेनेन जिननामानि सार्थकम्,
अष्टाधिकसहस्राणि सर्वाभीष्टकराणि च ॥११॥

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र समाप्तम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३ ।

१६०६ सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening देखे, क्र० १४६५ ।

Closing . देखे, क्र० १६०५ ।

Colophon इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् । सम्वत् १६८६ का मिति कुवार सुदी लिपीकृत बुजीरामेण आरा मध्ये । श्रीरस्तु ।

१६०७ सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening देखे, क्र० १४६५ ।

Closing देखे, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् ।

१६०८ सहस्रनाम-स्तवन

Opening ; प्रभो भवाङ्गभोगेषु ······ शरण्य करुणार्णवम् ।

Closing एतेषामेकमप्यर्हन्नाम्नामुच्चा · जिनायात. ॥

Colophon : इत्याशाधरसूरिकृत जिनसहस्रनामस्तवन समाप्तम् ।

१६०६. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : श्रीमान् स्वयभूर्वृषभ शम्भव शम्भुरात्मभू ।
स्वयप्रभ प्रभुर्भोक्तिविश्वभूरिपुनर्भव ॥१॥

Closing देखे, क० १६०५ ।

Colophon · इति श्री जिनसेनाचार्यप्रणीत जिनसहस्रनामस्तवन सम्पूर्णम् । सवत् १८०२ वर्षे मीति आसाढ सुदी ४ मथेनभाउ परताप-गढ़ मध्ये लिखतम् ।

१६१० सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : परम दव परनाम करि, गुरुको करो प्रणाम ।
बुद्धि बल वरनो ब्रह्म के सहस अठोतरनाम ॥

Closing . सगुन विभूति वैभजी सेसुखी ससबुद्ध ।
सकल विश्वकर्मा .... विश्वलोचन शुद्ध ॥

Colophon इति श्री दुरतिदलन नाम नवम सतक सपूर्णम् ।

१६११ सहस्रनाम

Opening तुम स्वयभु अनादि निद्ध अजन्मा सो तिहारे ताईं नमस्कार होहु । तुम आपकू आप करि आप विषै उपजाय प्रगट भये हो । उपजी है आत्मवृत्ति जिनकै अर अचित्य है वृत्ति जिनकी ।

Closing · भगवान स्वयभु समस्त नहाति के स्वामी जगतपति विहार करै हो तिनकू इन्द्र के मुख तें ए प्राथना के वचन नीसरे ते पुनरुक्त समान होते भये । २६ ।

Colophon : इति श्री भाषा सहस्रनाम सपूर्णम् ।

१६१२ समन्तभद्र-स्तोत्र

Opening . नताखडलमौलीनां यत्पादनखमडलम ।
खडेन्दुशेखरीभूत नमस्तस्मै स्वयभुवे ॥

Closing अर्ह सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधूनिह ।
पचनमस्कारो भवभवे मम सुद्द धतु ॥ ॥

Colophon . इति समतभद्रस्तोत्र सपूर्णम् ।

१६१३ सम्मेदशिखर स्तुति

Opening मै आयो सरणते तेरे ।

Closing मो करणी प नजर न दीजे छीमा करो प्रभु मेरे ।
दीनबन्धु तुम पतित उधारण सेवक चरण गहो रे । मैं आयो० ॥

Colophon । इति सम्मेदशिखर की पद सपूर्णम् ।

१६१४ सम्मेदाचल-स्तोत्र

Opening । सम्मेदशैल भक्तिभरेण नौमि ॥१॥

Closing तीर्थनामुत्तम तीर्थं निर्व्वाणपदमग्रिमम् ।
स्थानानामुत्तम स्थान सम्मेताद्रे सम नहि ॥२३॥

Colophon . इति सम्मेदाचलमहात्मस्तोत्र समाप्तम् । श्रीरस्तु संवत् १८२८ वर्षे आषाढ द्वितीय वदि अष्टम्यां आदित्यवारे लिखत लक्ष्मणपुर-मध्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालय । शुभ भवतु ।

१६१५ सन्ध्या

Opening : वामे वहुत कुशान् प्रणव मायव्या रात्रा कुर्यात् ।

Closing .. — तत. प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।

Colophon इति सध्या समाप्ता ।

१६१६ शातिजिन-आरती

Opening · आरती कीजै स्वामी शात जिनद की ।
सब सुखदायक आनद कद की ॥
विश्वसैन राजा जी के नदन ।
दर्सन करत मिटै भवफदन ॥

Closing । भैरौं जे नर आरती गावै ।
मन वछित फल सोई पावै ॥ आरती० ॥

Colophon । इति श्री शांति जिन आरती समाप्तम् ।

१६१७ शाति-स्तुति

Opening । जय जिनवर गुन रतन निधाना, परमपूज सर्व तम भाना ।
मोह महागिर वज्र सुयेवा, सुर नर असुर करै तुम सेवा ॥

Closing । हे जिनवर मैं जायो ये ही होहु सकल कल्यान अछेही ।
मैं निज आतमीक गुन पावो सिधालै मे सिघ सु जावें ॥

Colophon । इति शांति जी पूर्ण भई ।

१६१८ शातिनाथाष्टक

Opening । सकलगुणनिधानं सर्वसत्वे समानं मदनमदविनाश मुक्तिकान्ता निवास
मरुजकमलमित्र सर्वविघ्नपवित्र अनुपमसुख लक्ष्मी वर्द्धता
शांतिनाथः ॥१॥

Closing   शांत्याष्टक सुरनरेण सेव्यमानम्,
भव्येषु ये परिपठन्ति समस्तनीयम् ।
ते स्वर्गसौख्यमनुभूय मनुष्यलोके,
धर्मार्थकाम-ममता-द्यहीयास्तिमान ॥

Colophon .   इति शांतिनाथाष्टकम् ।

१६१९ शारदाष्टक

Opening .   ॐकार धुनि सुनि सुनि अरथ गनधर विचारैं ।
रचि आगम उपदिसैं भविक अब मसैं निवारैं ॥
सो सत्यारथ सारदा तासु भगति उर आनि ।
छंद भुजग प्रयातमैं अष्ट कहौ बखानि ॥१॥

Closing   जे हित हेतु बनारसी दहि धर्म उपदेश ।
ते सब पावहि परम सुख तजि ससार कलेस ॥८॥

Colophon   इति श्री शारदाष्टक समाप्त ।

१६२० शारदा-स्तुति

Opening .   देवी श्रीश्रुतदेवते भगवति त्वत्पादपंकेरुहा   मपूजयामीधुना ॥

Closing   अरिहंत भासिय   णमहोदिह सिरसा ॥

Colophon   इति सारदा-स्तुति अष्टक-जयमाल समाप्तम् ।

१६२१. सरस्वती स्तुति

Opening .   जन्ममृत्युजराद्यवारण   समयसारमहं परिपूजये ॥१॥

Closing :   मलयकीर्तिनामापि सत्स्तुति पठति य सतत मतिमासुर ।
विजयकीर्तिगुरो इहसादर स्मुमतिकल्पलता फलमश्नुते ॥६॥

Colophon ।   इति सरस्वतिस्तुति ।

१६२२. सरस्वती-स्तोत्र

Opening : नमस्ते सारदा देवी जिनास्यांबुजवासिनीम् ।
त्वामह प्रार्थये नाथे विद्यादान प्रदेहि मे ॥१॥

Closing : सरस्वती मया दृष्टे देवी कमललोचना ।
हंस स्कंध समारुढा वीणापुस्तकधारणी ॥१२॥

Clolophon इति सरस्वति-स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७६८ ।

१६२३ सरस्वती-स्तोत्र

Opening जयत्यशेषामरमौलिलालित सरस्वतित्वत्पदपंकजद्वयम् ।
हृदिस्थित यज्जनजाडयनासन रजो विमुक्त श्रयतीत्यपूर्वताम् ॥

Closing कु ठास्तेपि बृहस्पतिप्रभृतयो यस्मिन् भवति ध्रुवम्,
तस्मिन् देवि तव स्तुतिव्यतिकरे मदानराके वयम् ।
तद्वाक-चापले मे तदा श्रुतवतामस्माकमेव त्वया,
क्षन्तव्य मुखरत्वकारम ो येनाति भक्तिग्रह ॥३१॥

Colophon : इति श्री सपूर्णम् ।

१६२४ शास्त्र-वनती

Opening वदो तु शास्त्र जिनेस भाषित महासुर्ग निधान ।
जा सुनत सब अज्ञान भाजत होत ज्ञान महान ॥

Closing : ते शास्त्र जो मेरे मन बसो, मेरी हरो भो भव पीर ॥६।

Colophon : इति शास्त्र की विनती सपूर्णम् ।

१६२५. सिद्धि भक्ति

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्म्मप्रकृति-समुदयान साधितात्मस्वभावान्
वदे सिद्धिप्रसिद्धै तदनुपमगुणप्रगटाकृतिनुष्ट ।
सिद्धि, स्वात्मोपलब्धि, प्रगुणगुणगणो छादिदोपापहाराद्योग्यो-
पादान् युक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धि ॥१॥

Closing सुगइगमण समाहिमरण जिनगुणसम्पत्ति होउ मज्झ ॥

Colophon . इति सिद्धभक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७७० ।
जि० र० को०, पृ० ४३८ ।

१६२६. सीता-विनती

Opening : प्राणी डारे अरहत का गुणगाय अरे प्राणी,
जब लग सास शरीर मे जी ॥१॥

Closing रामचद्र मुकति पधास्यातौ सीता सुरपति थाय जी
जो नरनारी ए गुण गावै तो देव ब्रह्म पदपाय जी ।

Colophon इति सीता जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१६२७ श्रीपाल-विनती

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Clos gn : देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपालविनती सपूर्णम् ।

१६२८ श्रीपाल-विनती

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपाल राजा की बिनती सम्पूर्ण ।

१६२९. श्रुतभक्ति

Opening स्तोष्ये सज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोकविलोकन लोलितसल्लोकचनानि सदा ॥१॥

Closing . सुगइ गमण समाहिमरण जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥

Colophon · इति श्रुतज्ञान भक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७७३ ।

१६३०. स्तोत्र

Opening : प्रभु-नव्यराजी ··· चन्द्रप्रभ देवदेवम् ॥

Closing : सर्वपापविनिर्मुक्त सुभगोलोकविश्रुत: ।
वांछित फलमाप्नोति लोकेस्मिंस्तत्र संशय ॥

Colophon : इति श्री शारदायास्तोत्रम् ।

१६३१. स्थापना आरती

Opening · सुखयसयलमष्टि जिमजिणवर सुरणरफणपति सेविय ।
तिम चारित्रसयलधम्मदपर सामय पदवरसेविय ॥१॥

Closing : इह भविय णसावहो शिवसुहयावहो चारित्रहुजयमालवरा,
इह भवि उहहरहो परभवसुलहो सामय कम्मठठ नियरा
॥२५॥

Colophon : इति श्री तेरह प्रकार आरती समाप्तम् ।

१६३२. स्तुति

Opening : हुए प्रभात सुऐं नित उठत है, दर्शन प्रभु चरनन चित चहत है।
वारवकि भई छार रहेष के चाव दर्शन प्रभिभूत मे धरे ॥१॥

Closing : यह भजन भये सपूर्ण सीता के बनवास की।
हरि कही धरी प्रीत प्रभुचरन ए चित लाई के ॥

Colophon इति श्रावण शुक्ल सं० १९६५ शनिवार हरीदास ने आरा मे लिखे है।

१६३३ सुप्रभात-स्तोत्र

Opening : श्री नाभिनदन जिनोजितसभवेस देवोभिनदन जिनो सुमतिः जिनेन्द्र. ।
पद्मप्रभो प्रणतदेव-सुपार्श्वनाथ चद्रप्रभोस्तु सतत मम सुप्रभातम् ॥१॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपरमार्थविदाम्वरेण .... कैवल्य वस्तुविशदं जिन सुप्रभातम् ॥४॥

Colophon इति सुप्रभातस्तोत्रम् ।

१६३४ सूर्यसहस्रनाम

Opening . तुहिण किरण विप पोसयत्यसुमाली,
जयति कमललक्ष्मी भाषयत्यसुमाली ।
रजतविरद भीतिमोदयन् कोकवृ दम्,
मुखरनरनागे सर्वदा वदनीये ॥

Closing : तेजोनिधिवृहतेहा वृहत्कीर्त्तिवृहस्पति ।
अहिमान् श्रीमान् श्री सूर्यदेवं नमोस्तुते ॥

Colophon : इति श्री सूर्यसहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५२ ।
जि० र० को, पृ० ४५२ ।

१६३५ स्वयंभू-स्तोत्र

Opening येन स्वयबोधमयेन लोका आस्वासिता केचन वित्तकार्ये ।
प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे तमादिनाथ प्रणमामि नित्यम् ॥१॥

Closing : यो धर्मं दशधा करोति पुरुष स्त्रीवाकृतपरस्कृतम्,
सर्वज्ञ ध्वनिसंभव त्रिकरण व्यापारशुध्यानिशम् ।
भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजलिदापयन्,
नित्य सश्रियमातनोमि शकल स्वर्गापवर्गस्थिते ॥

Colophon : इति श्री स्वयभू समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० , क० ७८३ ।

१६३६ स्वम्भू-स्तोत्र

Opening देखें, क० १६३५ ।

Closing देखें, क० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयभू समाप्त: ।

१६३७. स्वयभू-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १६३५ ।

Closing : देखें, क० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयभू सस्तुत सम्पूर्णम् ।

१६३८. स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : मानस्तम्भासरासि पीठिकाग्रे स्वयम्भू ॥
Closing . ये संस्तुता विविधभक्तिः विमलां कमला जिनेन्द्रा ॥
Colophon : अनुपलब्ध ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ७८४ ।

१६३९. विनती

Opening : करुना ले जिनराज हमारी करुना ले महाराज । टेक ॥
Closing : इति जिनमाला अमल रसाला जो भव्य जन कंठ धरइ ।
.. सुर शिव सुन्दर बरइ ॥
Colophon इति पूजन समाप्ता. ।
विशेष— ग्रन्थ में पूजा भी संकलित है ।

१६४०. विनती

Opening . हो दीन बंधु श्रीपति करुनानिधान जी ।
यह मेरी विथा क्यों न हरो बार क्या लगी ॥१॥
Closing : करुना निधानबान को अब क्यों न निहारे ।
दानी अनतदान के दाता हो सम्हारो ॥
वृषचदनदवृ द को उपसर्ग निवारो ।
संसार विषमसार से अवपार उतारो ॥
Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४१. विनती

Opening : देखें, क्र० १६४० ।

Closing : देखें, क० १६४० ।

Colophon . इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१६४२. विनती

Opening : त्रिभुवनपति स्वामी जी करुणानिधानामी जी,
सुनो अंतरजामी मेरी विनती जी ॥१॥

Closing : दुष्टन देहु निकास साधन को रख लीजै ।
विनवै भूदरदास ए प्रभु ढील न कीजै ॥१२॥

Colophon . इति सपूर्णम् ।

१६४३. विनती

Opening : तारि तारि जिनराज मनवच तन विनती करो ।
मैं जग बहु दु ख पाय मुख ते किम वरनन करो ॥१॥

Closing : ज्यो जानै त्यो तारि विरद आपनो जान कै ।
हम कितना हि निहार टेक पकर तारो सही ॥१०॥

Colophon : इति विनती सोरठा सम्पूर्णम् ।

१६४४. विनती

Opening : भवविघन विनासनो दुरीय नरासनो अवसानै सरण तुंही ।
जिन सासन जा-यो इन्द्रज मा-यो पहिलै पूज तुमरि करी ॥

Closing · सदा जिनबिंब धरैं निज भाल सदा जिन सेवैकतरिमंहात्मा ।
संज्ञानसायर विबद्धैमचन्द्रमूर्ति जीवाज्जिनेंद्रवरक प्रविराजमान ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६४५ विनती

Opening : श्रीपतिजिनवर करूणायतन दु:खहरण तुम्हारा बाना है।
मत मेरी बार अबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है ।।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हि ... प्रभु आज हमारी बारी है।
।। टेक ।।

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४६ विनती

Opening : चलो रे मनवा मांगीतुंगी दर्शनकरस्यां प्रभु जी का।
सिद्धक्षेत्र की करो बंदना दुख टलि जावै दुरगति का ।।
विषम घाट पहाड़ विच परवत ऊँचा मांगीतुंगी का।
इस पर मुनिवर मुक्ति गया है कोड़ निन्यानव गिनती का
।। चलो रे ।।

Closing : उगणीसै की साल जेठ सुदि करी जातरा पचसका।
हरषकीर्त्ति कहै सुद्ध भाव सो मेरो चरण जिनेश्वर का । चलो ।
।।१३।।

Colophon : इति मांगीतुंगी की विनती सपूर्णम् ।

१६४७. विनती

Opening : तुम तरणतारण भवनिवारण भविक मन आनन्दनम् ।
श्री नाभिनंदन जगत वंदन आदिनाथ निरंजनम् ।।

Closing : मै अधीन परवस परै बिके तुम्हारे हाथ ।
इतनो करिकैं जानियै लाख बात की बात ।।

Colophon : इति श्री विनती सपूणम् ।

१६४८. विनती

Opening : देखें, क्र० १६४२ ।

Closing : भव भव सुख पावै जी, प्रभु हो हूँ सहाइ जी ।
पार उतारी वो जी ॥

Colodhon : विनती सम्पूर्णम् ।

१६४९. विनती

Opening : हो दीनबन्धु श्रीपती करुना निधान जी
यह मेरी वोथा क्यो न हरो ········· ॥ टेक ॥

Closing : करुनानिधानवान को ‒ ‒ अब पार उतारो ॥ टेक ॥

Colophon : इति विनती सपूर्णम् ।

१६५०. विनती

Opening देखें, क्र० १६४२ ।

Closing देखें, क्र० १६४२ ।

Colophon . इति भूदरदास कृत विनती समाप्तम् ।

१६५१. विनती

Opening : देखें, क्र० १६४० ।

Closing : तेरे दास निहारै नीरमै कीजिए जी नर नारी गावै जी ।
भव-भव सुख पावै जी, प्रभु होउ सहाईं पार उतारीए जी ।

Colophon ; इति विनती संपूर्णम् ।

१६५२ विनती त्रिभुवन स्वामी

Opening : देखें, क्र० १६४२ ।

Closing : नर नारी गावै जी, भव भव सुखपावे जी ।
प्रभु होहु सहाई जी, पार उतारिए जी ।। १६ ।।

Colophon : इति विनती सपूर्णम् ।

१६५३. विषापहार-स्तोत्र

Opening : स्वात्मस्थित सर्वगत समस्त व्यापारवेदी विनिवृत्तसग ।
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्य पायादपायात्पुरुष पुराण, ।।

Closing : वितरति विहितार्था – सुखानियशो धनजय च ।।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

देखें, जै सि० भ० ग्र० I क्र० ७८५ ।

१६५४ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनजयविरचिते श्री विषापहारस्तोत्र समाप्त ।

१६५५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५६· विषापहार-स्तोत्र

Opening देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : नि शेषत्रिदशेंद्रशेखरशिखा रत्नप्रदीपावली,
सांद्रीभूतमृगेन्द्रविष्टरतटी माणिक्य दीपावली ।
क्वेय श्री क्वचनिस्पृहत्वमिदमित्थानि यशो धनजयं च ॥४०

Colophon . इति श्री धनजयकृत विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

१६५७ विषापहार-स्तोत्र

Opening . देखें, क्र० १६५३ ।

Closing — येन तेन प्रकारेण विहिता पुन. त्वयि विषये
नुति विषया नमस्कारपूर्वकस्तुति युक्ता. च भक्तिः विद्यते ।४०॥

Colophon . इति श्री विषापहार स्तोत्रस्य बालावबोध टीका सपूर्णम् ।

१६५८. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनजयसूरि विरचित विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५९· विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३

Colophon : इति विषापहारः ।

१६६०. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।
Closing : देखें, क्र० १६५३ ।
Colophon : इति विषापहार स्तवन समाप्तम् ।

१६६१. विषापहार-स्तोत्र

Opening : विश्वनाथ विमल गुन विरहमान वंदौ गुनबीस ।
ब्रह्मा विस्नु गनपति सुन्दरी वरु दानी देहूँ मोहि वागेसुरी ॥
Closing : भय भंजन रंजन जगत विषापहार अभिराम ।
सबै तजि सुमिरौ सदा सासी जिनेश्वर नाम ॥
Colophon : इति विषापहार सपूर्णम् ।

१६६२. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।
Closing : देखें, क्र० १६६१ ।
Colophon : इति श्री विषापहार भाषा समाप्तम् ।

१६६३. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।
Closing : देखें क्र० १६६१ ।
Colophon : इति श्री विषापहार स्तुति संपूर्णम् ।

१६६४. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखें, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र भाषा सम्पूर्णम् ।

१६६५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति विषापहार स्तोत्र भाषा सपूर्णम् ।

१६६६. विषापहार-स्तोत्र

Opening : आतमलीन अनत गुन, स्वामी परमानद ॥
सुर नर पूजित तासु पद बदो ऋषभजिनद ॥

Closing : भयभजन भजन दुरित विषापहार सुभाव ।
वैरिन मे सुमिरो सदा श्री जिनवर के नाम ॥

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६७ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६६ ।

Closing : देखें, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६८. वृहत्सहस्रनाम

Opening : स्वयभुवे नमः ········· ··· चित्तवृतये ॥

Closing : इतिप्रबुद्धतत्त्वस्य स्वयमतुं जिगीयत ।
पुनरुक्ततराबाच प्रादुरासन जितकर्मो ॥

Colophon : इति श्री वृहत् सहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१६६९. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६३८ ।

Closing : अनादि के कर्म कलक पक धाई चिह्निलायकौ
अपुनर्भव की लक्ष्मी देह इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon : इति श्री स्वामी समत भद्र पर्माहिताचार्य विरचित वृहत् स्वयभू सम्पूर्णम् ।

१६७०. वृहत्स्वयभू-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६३८ ।

Closing : देखें, क्र० १६६९ ।

Colophon : इति श्री स्वामी समतभद्र पर्माहिताचार्य विरचित वृहत्स्वयभूस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६७१. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६३८ ।

Closing : ये संस्तुताविविधभक्तिसमंतभद्रै रिन्द्रा दिभिर्विनतमौलि मणिप्रभाभि। ।
उद्योतितांघ्रियुगलं सकलप्रबोधास्तैभोवशतु विमलां कमला-
जिनेन्द्रा: ॥

Colophon : इति स्वयम्भु वचा समंतभद्र कृत समाप्ता. ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८४ ।

१६७२. योग-भक्ति

Opening : थोसामि गणधरराणं अणयोरगण गुणेहिं तच्चेहिं ।
अजलि मउ लिय हथो अभिवदतो सविभमेण ॥१॥

Closing : इच्छामि भते जोगभत्ति काउ सग्गो ·· ·· सम्पत्ति होउ मज्झ ।

Colophon : इति योग-भक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८०० ।

१६७३. अभिषेक विधि

Opening : श्रीमन् मदिरसुन्दरे शुचिजलैर्धौते च दर्भाक्षतै,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितत्वत्पादपुष्पस्त्रजा ।
इन्द्रोह निजभूषनार्थममल यज्ञोपवीत दधे,
मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥

Closing : वरुनदेवमाह्वानयामहे स्वाहा ॥५॥ पवन ·· · ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६७४. आदिनाथ-पूजा

Opening : परमपूज्यवृषभेस स्वयम्भूदेवजू,
पिता नाभि मरुदेवि करैं सुर सेवजू ।
कनक वरन तन तु ग धनुष पन सत तनो,
कृपा सिंधु ·ल आइ तिष्ठ मम दुख हनो ।

Closing : इत्थं श्री जिनराजकर्ममहिमास्तोत्रं पठेद्यः पुमान्,
प्रात· प्रातरुदात्तभावसहित सम्यक्त्वपुण्याश्रितः ।
श्रीमीर्देवेश्वरकाम तस्सलंपदा यत्प्राप्यते तत्सुखम्,

तत्प्राप्नोति पर पद स्मतिमानानदमुद्राकित, ।।

Colophon । इति चमत्कार आदिनाथ स्वामी पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७५ आदिनाथ-पूजा

Opening : सुषमदुषमतिथि मेटि कर्म प्रभु थापहि, नृप पद तजि वैराग्य भये प्रभु आपही ।
ऐसो आदि जिनेश आदि तीर्थ करा, आह्वाहन विधि करु त्रिविध नमके धरा ।।

Closing यह निज सार अपार जो भविजन कंठधरिहैं ।
तेनिजर मरणावलि नासि भवावलि रामचद्र सिव तियपाई ।।

Colophon · इति श्री आदिनाथ जी की पूजा समाप्तम् ।

१६७६· आदित्यवार-पूजा

Opening । इक्ष्वाकुबसकुल मडणअश्वसेनो तदुद्वलनम, प्रतिवताजिनवामदेवी ।
तस्या जिन विमलभूति सुरेन्द्रबद्य त्रैलोक्यनाथ जिनपार्श्वपद नमामि ।।१।।

Closing । इति रवि व्रत पूजा सुरपद पूजा जे करते नव वर्ष सही ।
मनवचक्रमधावहि सो सुरपद पावही पार्श्वनाथ फल देतमही ।।

Colophon । इति रविव्रत पूजा समाप्तम् ।

१६७७. आदित्यवार-उद्यापन

Opening . श्री पार्श्वनाथ प्रणमामि नित्यं, सुरसुरै पूजितपीठबंद्यम् ।
रविव्रतोद्यापनक प्रवक्ष्ये भव्याय नून महतादरेण ।।१।।

Closing : रविव्रतमहापूजाश्लोकपिंडीकृताधुना ।
पश्चात्माविने मया विप्र लेषकं विस्तरपंका ।।

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषणविरचिते । आदित्यवार-व्रत उद्यापन विधि पूजा समाप्ता ।

१६७८ अकृत्रिम-चैत्यायल आरती

Opening : सकल सुहकारण दुग्वारणं ·· सुरसुन्दरम् ।

Closing : इह णदीसर भावऊ- पूज्य सुहावऊ · ··· चन्द्रकीर्ति सुहावऊ ।।

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल समाप्तम् ।

१६७९. अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य

Opening : वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।
यावन्ति चैत्याययतनानिलोके, सर्वाति वंदे जिनपुंगवानाम् ।
अवनितलगताना कृत्तिमाकृत्तिमानां,वनभवनगताना दिव्यवैमानिकानण
इहमनुजकृताना देवाराजार्चितानां जिनवरमिलयानां भावतोह
स्मरामि ।।१।।

Closing : द्यौ कुन्देन्दु ··· ·· ·· प्रयछतुन ।।१।।

Colophon : इति अकृत्तिमचैत्यालय जयमाल सम्पूर्णम् ।।

१६८०. अकृत्रिम-चैत्यालय-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६७९ ।

Closing : भव भावन चालीसा वतरदेवाणहुंति बत्तीसा ।
कप्पामरचउवीसा चंदो सूरो णरो तिरिओ ।।

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालये जिनबिंबेभ्यो नम ।

१६८१ अनन्तजिन-पूजा

Opening : क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्न ······ विघ्नविनाशनम् ॥
Closing : भवतन की प्रतिपात करै सबैजीवन कौं काज सरैया ।
नरनारी पूजित क्षेत्रपाल सदा मनवांछित आस भरैया ॥
Colophon : इति कवित ।

१६८२ अनन्तपूजा-विधि

Opening : एकादशी कै दिन पूजन कर व्रत थापन करैं
तथा आचमन करैं तथा द्वादशी के दिन ऐसे ही करैं ।
Closing जीव समासा ।१४।। अजीव ।।१४।। गुणस्थान ।।१४।। मार्ग ।१४।
भूत ।।१४।। रज्जू ।।१४।। पूर्व ।।१४।। प्रकीर्णक ।।१४।।
मल ।।१४।। ग्रंथ ।।१४।। कुलकर ।।१४।। नदी ।।१४।।
प्रकृत ।।१४।। रत्न ।।१४।। चतुर्थदश पदार्थ चितन व्यौरा ।
Colophon : इति अनतपूजन विधि ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८०४ ।

१६८३. अनत पूजा विधि

Opening : भाद्रपद शुद्ध त्रयोदशी से रात्रि अनतव्रतद्ध ेइजे, मायास्नान
करावे, शुभ्रवस्त्रनेसावे अष्टदलकमलकरावे ।
Closing : ॐ ह्रीं श्री यसमस्मैददत्तानतफल नित्य वंयाचे मत्र ।
Colophon . इति अनतपूजनविधि सम्पूर्णम् ।
विशेष— ५१।२३ मे यज्ञोपवीत मत्र हैं, जो इसीका अग है ।

१६८४. अरिहंत-दक्षिणी

Opening : गगा सिन्धु के निर्मल नीरा स्वर्णभृगार धरविहीरा ।
जन्म मृत्यु जराकृत दूर ॥

Closing अस्पष्ठ—(जीर्ण)

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६८५. अष्टवीजाक्षर-पूजा

Opening : पूर्वपत्रे ऐं दक्षिणपत्रे श्रीं पश्चिमपत्रे ह्रीं उत्तरपत्रे क्लीं
ईशानपत्रे क्रौं अग्नियपत्रे ह्रूं नैऋत्यपत्रे क्रौं पवनपत्रे
ज्रौं कुबेरपत्रे य इत्यादि अष्टवीजाक्षरस्थापनम् ।

Closing : विद्यादेव्या इमा कामान् कुरुध्व परान् ॥१०॥

Colophon : इति पूर्णार्घं वृहत् द्रव्येन अर्घ ददात् ।
इति षोडशविद्यादेवता पूजनविधानम् ।

१६८६. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : सवौषडाहूय ··· ··· प्रतिमा समस्ता ॥

Closing : यावति जिनचैत्यानि विद्य ते भुवनत्रये ।
तावति सतत भक्त्या त्रि परीत्य न माम्यहम् ॥१८॥

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा समाप्ता ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६० ।
जि० र० को०, पृ० २० ।

१६८७. अष्टान्हिका-पूजा

Opening देखें, क्र० १६८६ ।

Closing : देखें, क्र० १६८६ ।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा सपूर्णम् ।

१६८८. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : आहूय सर्वौषडिति प्रणीत्वा ताम्या प्रतिष्ठाप्य सुनिष्ठितार्थान् ।
वषट् पदेनैव च सन्निधाय नदीश्वरद्वीपजिनान्समर्च्चे ॥१॥

Closing आरतिय जोवइ कम्मइ धोवइ सग्गावबग्गह लहु लहइ ।
ज जमण भावइ त सुह पावइ दीणु विकासुण भासुइ ॥१८॥

Colophon . इति अष्टान्हिकाया पूजा समाप्ता ।

देखें दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१ ।

१६८९· अष्टान्हिका-पूजा

Opening : मध्ये मडपमालिख्येद्वरतरे — तदच्चा तत: ॥१॥

Closing आयुर्दैर्घ्यंकरीवपूर्व ·· भवता देवाईतामर्हता ॥

Colophon : इति श्री नदिश्वर पन्क्तिवध पूजा समाप्ता ।

१६९० अष्टान्हिका-पूजा

Opening : तीर्थोदकैं मणिसुवर्णघटोऽपनीतै:,
पीठे पवित्रवपुषि प्रविकल्पितार्थे ।
लक्ष्मीसुता गहनबीजविदर्पगर्भ,
सरयापयामि भुवनाधिपति जिनेन्द्रम् ॥

Closing : नदीश्वर जिन धाम प्रतिमा महिमा को कहै ।
द्यानत लीन्हो नाम यहीभक्ति शिव सुख करै ॥१०॥

Colophon : इति नदीश्वर द्वीप अष्टान्हिका जी की पूजा जयमाला भाषा संस्कृत सहित सम्पूर्णम् ।

१६९१· अठाईपूजा

Opening : सरब पर्ब में बड़ो अठाई परब है,

नदीश्वर सुर जांहि लेयवसु दरब हैं ।
हमें सकति सो नांहि इहा कर थापना ।
पूजैं जिण ग्रह प्रतिमा है हित आपना ॥

Closing : नदीश्वरजिनधाम प्रतिमा महिमा को कहै ।
द्यानत लीनौ नाम यही भगत सब सुख कर्तं ॥१६॥

Colophon : इति श्री अढाई पूजा जी समाप्तम् ।

१६६२. बाहुबलि-पूजा

Opening बाहुमान जो षडबली चक्रेस की,
लखी अनित ससार सबे विच्छेद की ।
धरो दिगवर भेष शान्तमुद्रा धरी,
घातअघात जेहान ठय थिर लक्ष्मीवरी ॥

Closing · पूजन पत्रकुमार तणी जे नरकरैं,
हरमत हरवलचक्रसक्रपद ते धरे ।
सुरगादिक सुखभोग तिरथपद पायही,
धर्मं अर्थनहिकाम मोक्ष सुरपायही ॥

Colophon : इति श्री पचकुमार की पूजन सम्पन्नम् ।

विसेष— इसमें बाहुबलि पूजन और पचकुमार पूजन दोनो हैं ।

१६६३. बाहुबलि-मुनि-पूजा

Opennig . देखें, क्र० १६६२ ।

Closing : जे नर पढ़े विसाल मनोरत सुद्धसों ।
ते पावैं थिर वास छूटैं संसार सो ॥
ऐसो जान महान जैन जिन धर्म को ।
देय अक्षै भडार ध्याऊ अलख ध्यान को ॥२४॥

Colophon : इति श्री बाहुबल मुनी की पूजा सम्पूर्णम् ।

१६६४. भैरो-राग

Opening : भली कीनी भौर भये ।
आए हो भवन हमारे, भली कीनी ये ।।

Closing आस करै उरगदास, नाथ चरण तुम्हारे ।। भली० ।।

Colophon : इति भैरो ।

१६६५. बीस-तीर्थंकर-अर्घ्य

Opening . श्री मंदिर आदि जिनंद बीसो सुखकारी ।
सुविदेह माँहि अभिनंद पूजत नरनारी ।।
थिति समवसरन के माँहि त्रिभुवन जन तारक ।
हम पूज अर्घ चढाय आनन्द के कारक ।।

Closing : इह वर्तमान सुखकर दक्षिण देस महा,
तह श्री गुरु सुगुन भंडार राजन है सुमहा ।
वसुदेव जथो वितल्याय है त्रिभुवन स्वामी,
हय पूजन पद सिरनाय कीजे सिवगामी ।।१।।

Colophon · इति ।

१६६६. बीस विरहमान-पूजा

Opening : पूर्वापर विदेहेषु विद्यमानजिनेश्वरा ।
स्थापयामि अहमत्र सुद्ध सम्यक्त्वहेतवे ।।१।।

Closing : श्रीमंदिरा दिपं देवमजितवीर्यमुत्तमम् ।
भूयात् भव्यसतां सौख्य स्वर्गमुक्तिसुखप्रदम् ।।

Colophon , इति श्री बीसविरहमान पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१६६७. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६६ ।

Closing : देखें, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति श्री बीरहमान पूजा समाप्तम् ।

१६६८. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे क्र० १६६६ ।

Closing : ये बीस तीर्थ करन की सेव तुम्हारी कीजिये ।
कर जोरि सेवक विनवै मुक्ति श्रीफल लीजिए ।।

Colophon : इति श्री बीस विरहमान पूजा समाप्ता ।

१६६९ बीस विरहमान-पूजा

Opening : देखे क्र० १६६६ ।

Closing : देखें, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति श्री बीस बिरहमान पूजा सपूर्णम् ।

१७००. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६६ ।

Closing : तुमकौं पूजा बदना करै धन्य नर सोय ।
सारदा हिरदैं जो धरै सो भी धरमी होय ।।६।।

Colophon : इति श्रीबीसविरहमान पूजा भी समाप्तम ।

१७०१. बीस-विद्यमान-पूजा

Opening । देखें, क्र० १६६६ ।

Closing । देखें, क्र० १६८६ ।

Colophon । इति श्री बीसविरहमान पूजा समाप्तम् ।

१७०२. बीस-तीर्थंकर-जकडी

Opening । श्री मदरजिण वदस्पा जग सारहो, पु डरीकजिणराय ।
जबूदीप विदेह मै जमसार हो मेरि पूरबदिसिभाय ॥

Closing । सातमा जिन समयगामी मोरिव जेसु दिगबरा ।
भावना भावै हरख सेती होइ मुक्ति स्वयवरा ॥

Colophon । इति बीस बिरहमान की जखडी सम्पूर्णम् ।

१७०३. बीस-विरहमान-आरती

Opening । प्रथम श्रीमदर स्वामी जुगमधर त्रिभुवण धारिए ॥१॥

Closing । इम बीस जिनवर सघ सुखकर सेव तुम्हारी कीजियै ।
करि जोर सेवक वीनवै प्रभु मणवछित फल दीजियै ॥

Colophon · इति वीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१७०४ बीसतीर्थंकर-जयमाला

Opening । देखें, क्र० १७०३ ।

Closing प्रभुजी आनद सदेस ध्यावो शिव सुख पाइये ।
एबीस जिने सुर संग जिनकी सेव नित प्रति कीजिये ॥१॥
करि जोर घत्ती करे विनती मुक्तिफल पाइरे ॥

Colophon : इति बीस तीर्थंकूर की जयमाल संपूर्णम् ।

१७०५. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : सुभ अतिसय चउतीस प्रतिहारज अधिकाहीं ।
अनतचतुष्टययुक्त दोष अष्टादस नाही ॥
अह्वानन विधि कहूँ थाय सिध सुध करि मनही ।
लोक मोह तम हरत दीप अद्भुत ससि जिनही ॥

Closing : बसुद्रव्य लै सुखभावतें जजूं तिहारे पाय ।
देहु देव शिव मुझ ३ वै अहो चदद्युतिराय ॥१४॥

Clolophon इति श्री चद्रप्रभु जी की पूजा सम्पूर्णम् ।

१७०६ चन्द्रप्रभुपूजा

Opening वरचरित चार गुन अकलधार भवपार बसे हैं ॥
हे निजगतार सहज ही उदार शिवनार रसै हैं ॥

Closing चद जिनन्द जजन्त तन्त सुख सेवति होई ।
चद जिनन्द जजन्त निराकुल दद न कोई ॥
चद जिनन्द जजन्त बहुन्त सबै मिलि आवै ।
चद जिनन्द जजन्त अजित नित हर्ष बढ़ावै ॥

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभोजिनदेव की पूजा सम्पूर्ण ।

१७०७. चारित्रपूजा

Opening . देवश्रुतगुरुनत्वा कृत्वा शुद्धिमिहात्मन: ।
सम्यक्-चारित्र-रत्नस्य वक्ष्ये संक्षेपतोर्चनम् ॥

Closing : अप्पउ आलस्सउ पगुल वि जिणवर भासियय ।
तिण तई विणु मुत्ति ण भणइ जणिपु ॥

Colophon : इति चारित्रपूजा ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६३ ।

१७०८ चारित्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १७०७ ।

Closing : विरम-विरम मगान्मुंच मुंच प्रपंचम ।
विसृजमोहंसृजब विद्धि विद्धि स्वतत्त्वम् ।
कलय कलय वृत्त पश्य पश्य स्वरूपम्,
कुरु कुरु पुरुषार्थं निवृतानंदहेतुः ॥१४॥

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते चारित्रपूजा समाप्ता ।

१७०९ चारित्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १७०७ ।

Closing : देखें, क्र० १७०७ ।

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते । रत्नत्रयपूजा जी समाप्तम् ।

१७१०. चतुर्विंशति-यक्षिणी-पूजा

Opening : चतुर्विंशतियक्षेशान् पूज्यामि सदादरात् ।
आह्वानयामि तिष्ठेत्र जिनयज्ञे स्थिरा भवेत् ॥१॥

Closing : ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिकुलदेव्याय जिनसासने सर्व्वविघ्नोपशान्त्यर्थं जिनयज्ञविधाने पूर्णार्घं दद्यात् ।

Colophon   इति चतुर्विंशतियक्षिणी पूजा ।

१७११ चतुर्विंशति मातृका पूजा

Opening :   आद्य तीर्थकृता सर्वा सर्व्वविघ्नप्रशान्तये,
प्रणम्य शिरसा जैन स्थापना प्रवदाम्यहम् ॥१॥

Closing   दिव्यै नीरैश्चदनैरक्षतैस्तै   कृतोय सुभोर्घ ॥

Colophon   इति चतुर्विंशतिजिनमातृका पूजनविधानम् ।

१७१२. चतुर्विंशति-तीर्थ कर-पूजा

Opening :   सुभिरमत्रभवेभवत पदांबुजनताजनताजनताम्पति ।
इति नतोस्मि भवत्यहमन्वह   दिने ॥

Closing   ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय धरनेन्द्रपद्मावती सहितअतुलबलवीर्यपराक्रमाय दुष्टोपसर्गविनाशनाय इद जल गध पुष्प अक्षत नैवेद्य दीप धूप फल अर्घ महाअर्घ निर्प्वयामि ।

Colophon .   अनुपलब्ध ।

१७१३ चतुर्विंशति-तीर्थ कर-पूजा

Opening :   वृषभ आदि अतवीर चतुर्विंशति जिना,
ध्यान खड्ग गही हने कर्म वसु दुर्जना ।
वसुगुण जुत तसुथराव ये नव छारिकै,
अह्वानन विधि करू गुणोघ उचारिकैं ॥१॥

Closing :   जो को इह व्रत भावी करो, ते नर मुकत पथह धरो ।
श्री भूषन पद प्रनमी सही कथा ग्यानसागर मुनी कही ॥

Colophon : इति श्री अनतव्रत कथा समाप्तो । रामचन्द्रेण लिपि कृत आरामध्ये लाला बिजन लाल जी लिखापितम् । लेखकपाठकयो शुभ भवतु ।

विशेष — इसमे कई पूजाएँ सग्रहीत हैं ।

१७१४ चतुर्विशतितीर्थं कर-पूजा

Opening : रीषभ अजित सभव ... पूज्य पूजत सुरराय ॥

Closign : भुक्ति-मुक्ति दातार चौबीसों जिनराजवर ।
तिन पद मन वच धार जो पूजे सो शिव लहै ॥

Colophon . इत्माशीर्वाद' इति श्री समुच्चय चतुर्विशति पूजा सपूर्णम्
सं० १६५० ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८१६ ।

१७१५ चतुर्विशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७१४ ।

Closing . देखें, क्र० १७१४ ।

Colophon : इति श्री समुच्चय चतुर्विशति पूजा समाप्तम् ।

१७१६. चतुर्विशति-तीर्थ कर-पूजा

Opening देशकालादिभावज्ञो निर्म्मम: शुद्धिमान्वर ।
सान्दारायादिगुणोपेत: पूजक: सोत्रशस्यते ॥

Closing : यावच्चन्द्रदिवाकर ... कल्याणकोटिप्रदम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विशति तीर्थङ्कराणा सस्कृत पूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ११६ ।

१७१७. चतुर्विंशतिजिन जयमाला

Opening : वदितानमर ... पूरा इव ॥१॥
Closing : अनणुगुणनिबद्धा ... लक्ष्मीवधूनाम् ॥
Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिन जयमाला समाप्ता । संवत् १६३२ वर्षे चैत्र शुदि ११ शनौ ।

१७१८ चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७१३ ।
Closing : ए नाम जिनेश्वर दुरितक्षयकरि जो भविजनकं वि धरई ।
हुये दिव्य अमरेश्वर पुहिमे नरेश्वर रामचन्द्र शिवतिय वरई ॥२५॥
Colophon : इति श्री चौबीसतीर्थङ्कर पूजा समाप्तम् ।

१७१९. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : श्री वृषभादि विरांतिमा चौबीसह जिनराय ।
आह्वानन ठांई करू, तिन बेर गुणगाय ॥१॥
Closing : जे जिव कुट्टक पट्ट तजि सुभभावन तैं जिन पूज्य रच्चावै ।
ते जिव ह्वै धरणे द्र खगेन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र तणो पद पावै ॥
Colophon : समाप्त. ।

१७२०. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : सिद्ध बुद्धि दायक ... पदकज ॥
Closing : वृषभ आदि चौबीस जिनेश्वर ध्यावही ॥
अब करैं गुणगाय सुर बजावही ॥

Colophon ।　इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा सम्पूर्णम् ॥

१७२१· चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening　देखें, क्र० १७२० ।
Closing :　देखे, क्र० १७२० ।
Colophon .　इति श्री चउबीस तीर्थङ्कर जी की पूजा सपूणम् । चौधरी रामचद्र जी कृत । सवत् १८३१ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ पचम्या । शुभम् ।

१७२२ चौबीसी-पूजा

Opening　देखे, क्र० १७१८ ।
Closing ।　देखे, क्र० १७१४ ।
Colophon　इति श्री समुच्चय पूजा सम्पूर्णम् ।
इह पुजन जी की पोथी श्री व्रतजी के उद्यापन मे बाबू परमेसरी सहाय जी की भार्या धनसी कुँअर ने चढाया गागील गोत्र मीति फाल्गुन वदी १२ सन् २२८३ साल?

१७२३· चतुर्विंशति तीर्थंकर पद

Opening ।　आदिदेव रिषभ जीनराज ····· स्याची सेव ॥
Closing .　चौवीसवा श्रीमहावीर — गौतम शीर ॥
Colophon ·　इति चतुर्विशति पद सपूर्णम् ।

१७२४ चिन्तामणि-पूजा

Opening .　जगद्गुरु जगद्देव जगदानददायकम् ।
जगद्व द्य जगन्नाथ श्री पार्श्व सस्तुवे जिनम् ॥

Closing : दीर्घायु सुभपुत्रवनिता आरोग्यसत्सपदम्,
प्राज्यक्षमा पतिसज्यभोगसुरता सद्गेहभूषादय ।
भूयासुर्भवता गजाश्वानगर ग्रामप्रभुत्वादय,
श्री चिंतामणिपार्श्वनाथवररतो मागल्यमोक्षोद्यता ॥

Colophon : इति इति श्री चिंतामणि पूजाव्रत समाप्तम् । लिखित सभूनाथ अयोध्यामध्ये सहादति ग्वा० सूवाके लसगरमध्ये स० १७६३ मगसिर सुदि १३, शनिवार ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ८२७ ।
जि० र० को०, पृ० १२३ ।

१७२५ चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, क० १७२४ ।

Closing देखे, क० १७२४ ।

Colophon : इति श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ वृहत्पूजा विधान विधि समाप्ता । सवत् १८१६ माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पचम्या बुधवासरे लिखित ज्ञानसागर पठनार्थं फकीरचदजी । पोथी लीखी सहजादपुर मध्ये लिषीतोय शुभ भूयात् । श्रीरस्तु ।

१७२६ चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, क० १७२४ ।

Closing : कल्याणोदयपुष्पवल्लि श्रीपार्श्वचिंतामणि ॥

Colophon : इति श्री चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा सम्पूर्णम् ।

१७२७. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, १७२४ ।

Closing : इति जिनपतिविव्यः स्तोत्रलक्षातरेण ··· सर्व्वदान्वेषनीयम् ॥

Colophon इति श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजनविधाने पीठिका स्तवन समाप्तम् ।

१७२८ चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : शान्त विदूर्ध्वरेफ सजायते पूजयेद्यः ॥१॥

Closing · इह वर जयमाला पास-जिन-गुण-विशाला — वछिय बहुपयारम् ॥१२॥

Colophon इति चितामणि पार्श्वनाथपूजा ।

१७२९. चिन्तामणि-जयमाल

Opening : तिहुयण चूडामणे भविय कमल दिनेस ···· जिणेसरहम् ।

Closing अस्याग्रे पुण्याहवाचना वाचनीय पुनर्शान्तिजिन ससिनिर्मलवक्त्रमित्यादिपठनीयम् ।

Colophon : इति वृहद् चितामणि पार्श्वनाथ पूजा समाप्ता । सवत् १८२५, पुषमासे शुक्लपक्षे तिथि त्रयोदश्या शुक्रदिने लिखित पडित सेवाराम कोशलदेशे तिलोकपुरनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये । श्रीपार्श्वनाथ के भडार की पोथी परसौं लिखी निज पठनार्थं वा भव्य जीवस्य वाचनार्थं वर्धिता जिनशासन शुभ भूयात् लेखकपाठकयो ।

अनित्य जीवितं लोके अनित्य धनयौवनम् ।
अनित्य पुत्रदाराश्च धर्मकीत्तियसस्थिरः ॥

१७३०. दर्शनपाठ

Opening · दर्शन देवदेवस्य दर्शन पापनाशनम्,
दर्शन स्वर्गसोपान दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥

Closing : जन्म-जन्मकृत पाप, जन्म कोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरांतका, हन्यते जिन दर्शनात् ॥१२॥

Colophon : इति श्री दर्शन सम्पूणम् ।

१७३१. दर्शनपाठ

Opening देखें, क्र० ७१३० ।

Closing देखें, क्र० १७३० ।

Colophon इति दर्शनस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१७३२ दर्शनपाठ

Opening : देखें, क्र० १७३० ।

Closing . देखें, क्र० १७३० ।

Colophon : इति जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१७३३. दर्शनपूजा

Openign : चहु गति फन विषहर नमन, दुख पावक जलधार ।
शिव सुख सदा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ॥१॥

Closing : सम्यक् दरसन रतन गहीजै •— इहा फेरि न आवनां ॥२३॥

Colophon इति दरसन पूजा ।

१७३४ दर्शनपूजा

Opening परस्याभिमुखीश्रद्धा सुद्धचैतन्यरूपत ।
दर्शनं व्यवहारेण निश्चयेनात्मन पुन ॥

Closing : अतुलसुखनिधान सर्वकल्याणबीजम्,
जननजलधिपोत भव्यसत्वैकपात्रम् ।
दुरिततरुकुठार पुण्यतीर्थं प्रधानम् ।
पिबतु जितुविपक्ष दर्शनाख्य सुधांशु ॥

Colophon : दर्शनपूजा ।

१७३५ दर्शनपूजा

Opening : देखें क्र० १७३४ ।

Closing देखे, क्र० १७३४ ।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१७३६ दसलाक्षणी-पूजा

Opening उत्तमक्षान्तिमाद्यन्त ब्रह्मचर्यसुलक्षणम् ।
स्थापयेत्दशधाधर्ममुतम जिनभाषितम् ॥

Closing करै कर्म की निर्जरा भव पींजरा विनास ।
अजर अमर पद को लहै द्यानत सुख की रास ॥

Colophon इति श्री दसलाक्षनी जी की भाषा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७३७ दशलाक्षणी-पजा

Opening : देखें, क्र० १७३६ ।

Closing देखे, क्र० १७३६ ।

Celophon इति श्री दसलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

१७३८. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७३६ ।

Closing पाप तिमिरहर धमदिवाकर पढं गणे जे धम धनी ।
ब्रह्म जिणदास भासे दशधर्मप्रकाशे मन बाछित फल वुधि धनी ॥

Colodhon : इति दशलाक्षणिक लघु अग पूजा समाप्तम् ।

१७३९. दशलाक्षणी-पूजा

Opening . देखे, क्र० १७३६ ।

Closing यो धर्म दशधा करोति पुरुष स्त्रीवाकृतोपस्कृतम्,
सर्वज्ञ ध्वनिसभव त्रिकरण व्यापार-शुध्यानिशम् ।
भव्याना जयमालया विमलया पुष्पाजलि दापयन्,
नित्य सश्रियमातनोति सकल स्वर्गापवर्गास्थिते ॥

Colophon , इति श्रीदशलाक्षणी पूजा समाप्ता ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १६५ ।
जि० र० को०, पृ० १६८ ।

१७४०. दशलाक्षणी-पूजा

Opening । उतमक्षमा मारदव अरजव भाव हे, सत्य सौच सयमतप त्याग उपाव है ।
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दस सार हैं, चहु गति दुखतै काढ मुकति करतार है । ॥१॥

Closing । देखे, क्र० १७३६ ।

Colophon । इति दशलाक्षणी पूजा ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३२ ।

१७४१. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७३६ ।

Closing : कोहाणलु चुक्कउ होऊ गुरुक्कउ जाइ रिसिदहिं सिट्ठइ।
जगताइ सुहकरु धम्ममहातरु देइ फलाइ सुमिट्ठइ ॥

Colophon इति दसलाक्षणी पूजा।

देखे, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ८३३।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५।

१७४२ दशलाक्षणी-पूजा

Opening देखे, क्र० १७३६।

Closing : देखे, क्र० १७४१।।

Colophon : इति दसलाक्षण पूजा संपूर्णम्।

१७४३. दशलाक्षणी जयमाला

Opening : पयकमलजिणदहि तिहूवणचदह पणवमि भावे गणहरह।
पुण सरसइ वाणी धम्मपहाणी धम्मकहमि जह मुणिवरह ॥

Closing : मूलसघपदृधरो धम्मचन्दगुरो सातिदासुब्रह्म भणइ णिस।
जिणदास हणदणु दहलक्षणगुणु सूरदास तुम करहु थिस ॥

Colophon : इति दसलाक्षणीक गुण जैमाल समाप्त.।

१७४४. दशलाक्षणी व्रतोद्यापन

Opening . विमलगुणसमृद्ध ज्ञानविज्ञानशुद्ध,
अभयवनसमुद्र चिन्मयूख- प्रचडम्।
इत दस विधिमार सजजे श्रीविपार,
प्रथम जिन विदक्ष्य शुद्धताढ्य जिनेसम् ॥

Closing : श्री कैलासनिवासदेववृषभं .... जिन देव सा निधिकरि कल्यानकारी सदा ॥८॥

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी व्रतोद्यापन समाप्ता। श्रीरस्तु कल्याण-मस्तु। शुभ अस्तु।

विशेष — इसके नीचे पूजा सामग्री का विवरण दिया हुआ है।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६।

जि० र० को, पृ० १६८।

रा० सू II, पृ० ६०।

रा० सू० III, पृ० ५४।

रा० सू० IV, ६६५।

जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ८७।

१७४५. दिग्पालार्चन

Opening दिगीसास · ... प्रत्येकमादरात् ॥१॥

Closing : ॐ दसदिशा दिग्पालाय पूर्णार्घं।

Colophon ..ति दिग्पालार्चन विधाण समाप्तम्।

१७४६ देवपूजा

Opening · ॐ जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु।
.... णमो लोए सव्वसाहूण।

Closing : इय जाणिय णामहिं दुरिय विरामहिं पणहविणामिय सुरावलिहिं।
जे अणिहऊ णाइहिं समयकुवा हिं पणविवि अरहतावलिहिं।

Colophon : इति देवपूजाष्टकम्।

देखे, दि० जि० ग्र० र० पृ० १६७।

१७४७ देवपूजा

Opening देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : ... ।

यतीद्रसामान्यतपोध-ाणा भगवान जिनेन्द्र ।।

Colophon इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७४८ देवपूजा

Opening देखें, क्र० १७४६ ।

Closing कीजै मकर नमन जिन मकने सरधा धरो ।

द्यानत सरधावान अजर अमर सुख भोगवै ।

Colophon : इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३७ ।

१७४९ देवपूजा

Opening जय ।३। जयवत प्रवर्तो ।।३।। नमोस्तु ।३। नमस्कार होऊ ।३। णमो अरहताण । अरहंतनि के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो सिद्धाण । सिद्धन के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो आयरिआण। आचार्यणि के अर्थि नमस्कार होऊ । - - . ।

Closing । मेरे औमें प्रभात समय मध्यान्ह समय सध्या समये विषे पूजा करए। सकल कर्म का छय निमित्त भावपूजा वदना स्तुत अर्हत भक्ति प्रतमा भक्ति पंचमहागुर भक्ति करिये कायोत्सर्ग करीये इवे पाप है तिनकू त्यागिए ।

Colophon इति श्री देवपूजा अर्थ स्युक्त सम्पूर्णम् ।

१७५० देवपूजा

Opening : मौगन्ध्यसगतमधुव्रतझक्रतेन,
सौवणमानमिव गधमनिद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृ दवद्यम्,
पादारविंदमभिवद्यजिनोत्तमानाम् ॥

Closing : ये पूजेजिनशास्त्रयमिना भक्त्या सदा कुर्व्वते,
त्रिसन्ध्याणविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयता नरा ।
पुण्याढ्यामुनिराजकिर्तिमहिता भूतास्तयो भूषगा-,
स्तेभव्या सकलविवोधरूरिर सिद्धि लभते परा ॥

Colophon इति श्री देवपूजा सपूर्णम् ।

१७५१ देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing अपराजित मत्रोऽय सर्वविघ्न-विनाशन ।
मगलेषु च सर्वेषु प्रथम मगल मत ॥

Colophon कुछ नहीं है ।

१७५२ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखें, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवतापूजा सम्पूणम् ।

१७५३ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : गुरोभक्ति गुरोभक्ति गुरोभक्ति सदास्तु मे ।
चारित्रमेव ससारवारण मोक्षकारणम् ।।२५।।

Colophon : नही है ।

१७५४ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : ॐ ह्री नैर्म्मलयमतिज्ञानप्राप्नेभ्यो अर्घम् ।।

Colophon अनुपलब्ध ।

विशेष— इसमे चन्द्रप्रभु पूजा मतिज्ञान पूजा के अधूरे पत्र भी है ।

१७५५ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : मिथ्यात तपन निवारण (न) चद समान हो ।
अज्ञान तिमिर कारण भान हो ।
काल कषायन मिटावन मेघ मुनीस हो ।
द्यानत सम्यक् रतन त्रैगुन ईश हो ।।१४।।

Colophon : इति बियालीस बोल आरती समाप्तम् ।

१७५६· देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing अणादि काल के जे कुवादि तिन के मिथ्यात कू दूरि करने वाले
चउबीस तीर्थ कर हैं तिनहि पूज हू ।

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थ कर जयमाल । ॐ ह्री श्री ऋष-
भादि वर्द्धमाने नम. ।

१५७. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।
Closing : देखें, क्र० १७४६ ।
Colophon अनुपलब्ध ।

१७५८. देवपूजा

Opening ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्नानस्थानभू, शुध्यतु स्वाहा इति स्नानस्थान शुचि-जलेन सिंचेत् ।
Closing . श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवद्य विशुद्धहस्त ईर्यापथस्य परिशुद्धविधि विधाय ।
स वज्रपजरगताकृतसिद्धभक्ति – .. – ।।
Colophon अनुपलब्ध ।

१७५९ देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।
Closing : देखें, क्र० १७४६ ।
Colophon : इति देवपूजा समाप्तम् ।

१७६०. देवपूजा

Opening : सर्वारिष्टप्रणासाय सर्वमिष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धिविधानाय श्री गौतमस्वामिने ।।
Closing : देखें, क्र० १७५० ।
Colophon : इति श्री देवपूजा समाप्तम् ।

१७६१ देवपूजा

Opening देखे, क्र० १७४६ ।

Closing देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon । इति श्री जयमाल सपूर्णम् ।

१७६२ देवपूजा

Opening । देखे, क्र० १६४६ ।

Closing देखें, क्र० १७४६ ।

Colophon इति श्री जयमाल सपूर्णम् ।

१७६३ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing । देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon · इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६४ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७५० ।

Colophon इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६५. देवपूजा

Opening ; देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : जे तपसूरा सजमधीरा सिद्धवधू अणुरईया ।
रयणत्तय रजिय कम्मह गजिय ते रिसिवर मइ झाईया ॥

Colophon : इति देवपूजा ।

देखे जै० मि० भ० ग्र० I, क्र० ८४१ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६ ।

१७६६. देवजयमाला

Opening वत्ताणुठठाणे ·· परमपउ ॥

Closing देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति चतुर्विशति तीर्थङ्कर जयमाल सपूर्णम् ।

१७६७ देवप्रतिष्ठा विधि

Opening प्रतिमाबीजमत्र प्रसिद्ध नदुमिसुरामकृतहरिने रूप ········ ।

Closing । ··· सुरमत्रजिनप्रभा ।

Colophon . इति सुरमत्र समाप्त: ।

१७६८ धरणेन्द्रपूजा

Opening पातालवास वरनीलवर्णं फणासहस्राग्वितनागराजम् ।
समाह्वये सत्कमठासन च सस्थापये भूमिधर सुभक्त्या ॥

विशेष— ग्रथ इतना पुराना है कि सभी पत्र आपस मे सटे हुए हैं । अलग करने पर फट जाते है, जिससे Closing और Colophon का पता नही चलता ।

१७६९. धरणेन्द्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १७३० ।

Closing भक्तिर्जिनश्वरे यस्य ... तस्यैतत्सकल भवेत् ॥३५ ॥

Colophon इति नागेन्द्र स्तोत्रम् ।

१७७० धरणेन्द्रपूजा

Opening : धरणयक्षविलक्षणसहसैं क्षितिवरोन्नतकच्छप्रवाहनैं ।

त्रिदशवदितपार्श्वजिनक्रम प्रणितमौलिमणीसदल श्रियैं, ॥१॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपकजसेव्यमान पद्मावतीमजतिवाङ्मनवामभागम् ।

घोपरोपमर्गहनन निजमाणदक्ष त देवशुद्धिमतिग प्रमजामि नित्य म्

Colophon इति पुष्पाजली धरणेन्द्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१७७१ गर्भ कल्याणक

Opening : पणविवि पच परमगुरु गुरु जिनशासन,

सकल सिद्ध दातार सुविघन विनासन ।

सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनं ॥

मगल करि चौसघह पाप प्रनासन ।

Closing : भासियो सुफल सुणि चित्त दपति परम आनंदित भऐ,

छह मास परि नवमास बीते रयग दिन मुखसो गऐ ।

गर्भावतार महत महिमा सुनत सब सुख पाईये,

भणि रूमचद सुदेव जिनवर जगत मगल गाईये ॥८॥

Colophon : इति श्री गर्भकल्याणक भाषा समाप्तम् ।

१७७२ गिरनारपूजा

Opening : श्री गिरनार सिषर परवत पर दक्षिणा दिस मैं सोहै

नेमनाथ जिन मुक्तधाम सब जन मोहै

कोड बहत्तर सात सतक मुनि शिव पद पायो

ता थल पूजन काज भव्य सब अति हरषायो

निस तीरथ राज सुक्षेत्र को आह्वान विधि ठानि कर

पूजा त्रिजोग मन वच तन सुश्रावक जन गुण जानकर ॥

Closing तिहु जग भीतर श्री जिन मदिर बनै अकीर्तम महासुखदाय,
नर सुर खग कर वदनीक जे तिनको भवि जन पाठ कराय ।
धन धन्यादिक सपति तिनकै पुत्र पौत्र सुमोहत भलाय
चक्री सुरखग इन्द्र होय कै करमना स सिवपुर सुषथाय ।

Colophon : इति श्री तीन लोक सबधी पूजा सपूर्णम् ।

विशेष—इसमे सेठसुदर्शन पूजा तथा तीन लाक सबधी पूजा भी सकलित हैं ।

१७७३ गिरनारपूजा

Opening देखें, क्र० १७७२ ।

Closing : जैसवाल वर नित नैन सुख श्रावग ग्यानी ।
रामरतन सु पुत्र भयो धर्मामृत पानी ।।

Colophon इति श्री गिरनार जी की पूजा सपूर्णम् । मीति फाल्गुन सुदी ३ । मदवासरे । लीखित जूनागढ श्री मदिर जी काथेया आनद जी ।

१७७४ गिरनारपूजा

Opening देख, क्र० १७७२ ।

Closing : जे नर वंदत भाव धर सिद्धक्षेत्र गिरनार ।
पुत्र पौत्र सपति लहि पूरन पुण्य भडार ।।

Colophon : इति श्री गिरनार जी की पूजा सम्पूर्णम् । मिति आषाढ सुदी ७ चित्रा नक्षत्र पहला पहर रात्रि विषै ५३३ ।। मुनि के साथ श्री नेमनाथ जी उर्जयत टोक से जा जूनागढ गिरनार परबत पर है, सोरठ देश गुजरात में मुक्त पधारे । नेमपुराण से देखना ।

विशेष—इसमें नीचे चार-पाँच सोरठे भी लिखे गये हैं ।

१७७५ गुरुजयमाला

Opening : भवियभवतारण ··· — पचमहाव्वयह ॥१॥

Closing ॐ ह्री पुलाकवकुसकुमीलनिर्ग्रं थस्नातकेभ्यो नम ।

Colophon : इति गुरुजयमाल सपूर्णम् ।

१७७६ गुरुपूजा

Opening : सपूजयामि पूजस्य पादपद्म युग गुरो ।
तप प्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मने ॥

Closing : तेजर्स्तिव्रजमस्तिचदमचमत्कारैकमवारिकम्
किर्त्तिमारदशुभ्रमानधवला निरसेषदिग्व्यापिनी ।
आयुर्दीघतर निरामद्धवपु लीलाघमणीकृत,
श्रीद श्रीनिकर करोतु भवतामाचार्यभवित सताम् ॥१०॥

Colophon : इति श्री गुरुपूजा सपूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७२ ।

१७७७ गुरुपूजा

Opening दखे, क्र० १७७६ ।

Closing : पावै अमरपद होइ चक्री कामदेव समानिया,
इन्द्र चन्द्र धरनेन्द्र चक्री मन प्रतीत जू आनिया ॥
जै सकल पद सीव सौख्यदाता इनहि छिन न भुलाइये,
कहत लालविनोदी मन वच मनहि वछित पाईया ॥

Colophon : इति श्री जिनगुन जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७७८ गुरुपूजा

Opening . देखे, क्र० १७७६ ।

Closing : देखें, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा समाप्ता ।

१७७९. गुरुपूजा

Opening : देखे क्र० १७७६ ।
Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : सपूर्णम् ।

१७८० गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।
Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा ।

१७८१. गुरुपूजा

Opening : दिव्यमडलके रम्य चतुष्कोणसशोभिते ।
स्थापयामि गुरो पादौ स्व स्व स्थान सिद्धये ।।१।।

Closing : निसर्गविरागाय प्रणमाम्यहम् ।।

Colophon : गुरुपूजा सपूर्णम् ।

१७८२. गुरुपूजा

Opening : काव्यं सकलगुण – सूरो स्थापयाम्यत्रपीठे ।।१।।

Closing : भाव सुद्ध पूजा करौ सेवौ गुरुचित्त लाय ।
तीन काल आरति करौं रिद्धि सिद्धि सुखथाय ।।१७।।

Colophon : इति दादा श्री जिनसकलसूरि जी की पूजा सम्पूर्णत् ।

१७८३ गुरुपूजा

Opening सिद्धान्तसूत्रसकीर्णश्रुतस्कधवने यने ।
आचार्य्यता प्रपन्नस्य पादावभ्यर्चयेन्मुने ॥

Closing · मुनिवर स्वामीनमू सिरनामी दोए करजोडी विनय करू ।
दीक्षा अति निर्मली द्योमुक्षउज्वली, ब्रह्मजिणदास भणि कृपाकरी।

Colophon इति गुरुपूजाजयमाल सम्पूर्णम् ।

१७८४ गुरुपूजा

Opening देखे, क्र० १७८३ ।

Closing । कहो कहाँ लो भेद मैं बुध थोरी गुनभूर ।
हेमराज सेवक हिये भक्ति भरो भरपूर ॥११॥

Colophon । इति श्री गुरुमहाराज की भाषा आरती सम्पूर्नम ।

१७८५ होमविधि

Opening . तद्यथा ॐ ह्री क्ष्वीं भू स्वाहा । पु पाजली ।
ॐ ह्री अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥ क्षेत्रपाल विघि ॥

Closing । इति होमविधि ज्ञात्वा तत्रस्था जिन प्रतिमा सिद्धायतन यत्रानि
पूर्वनिर्मापितजिनग्रहाभ्यतरे सस्थाप्य पुन पुन नमस्कार कृत्वा
नित्यव्रत गृहीत्वा देवान् विसर्जयेत् ।

Colophon । इति होम सपूर्णम् ।

१७८६ जलयात्रा विधि

Opening : प्रथमतडागे गत्वा जलसमीपे ··· ·· पाछै पूजा कीजइ ॥१॥

Closing : पश्चात स्त्रीनि को षोडसाभर्ण दीजै पाछै घट दीजै पाछे छवैया पढत ईसान बेदी मध्य कलश थापी जइ तिसकी विधि आगै विशेष है ।

Colophon . इति जलयात्रा विधि सपूर्णम् । सबोत्तर जलइ सविधि पूर्व लाइयै । श्रीरस्तु । शुभमस्तु ।

१७८७ जिनयज्ञविधान

Opening : नमो अरहंताण, णमो सिद्धाण णमो आयरियाण, णमो उवझायाण णमो लोए सव्वसाहूण ... ।

Closing ॐ ह्री सुद्धदृष्ट्ये नम । ॐ ह्री सुधावलोकिने नम ।

Colophon अनुपलब्ध ।

१७८८ जिनवर विनती

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतन दुखहरन तुमारा ... — ... ।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हितजन दीन अनाथ पुकारी है ।
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोहि विथा विस्तारी है ।।

Colophon विनती सम्पूर्णम् ।

१७८९ जिनगुण-सम्पत्तिपूजा

Opening : वदे श्रीवृषभ देव वृषाक वृषदायकम् ।
षट्धर्मप्रणेतार कर्मभूभृतवज्रकम् ।।

Closing : ये हस्तिनागे पुरिकौरवशो यश्चक्रियायस्य स्तुति चकार ।
दानेश्वरस्व जिनपुगवाय पुन स्तुव श्रेयगणाजिनानाम् ।।

Colophon : इति जिन गुण–सपत्ति-पूजा सम्पूर्णम् ।

देख, जि० र० को०, पृ० १३५।
रा० सू० III, पृ० २०५ ३०८।

१७६०. जिनवाणी-पूजा

Opening : प्रकटति परमार्थे सूत्रसिद्धान्तसारे,
जिनपतिसमयेऽस्मिन सारदासदधानम् ।
जगति समयसार कीर्तितः श्रीमुनिंद्रैः,
स वसतु मम चित्ते सश्रुतज्ञानरूपः ।
जगति समयसार ते पर ज्योतिरूपं,
सुवृतमति विद्यते ज्ञानरूप स्वरूपम् । १।।

Closing अग्यानतिमिरहर ज्ञानदिवाकर पढ़ै गुनै जा ग्यानधनी ।
ब्रह्म जिनदास भासैं विवुध प्रकासैं मनवांछित फल बुध धनी ।।

Clolophon इति श्री शास्त्रजिनवाणी जी की पूजा जयमाल भाषा सस्कृत सम्पूर्णम् ।

१७६१ जबूस्वामी-पूजा

Opening चौबीसो जिनपाय पच परमगुरु वदिके ।
पूज रचो सुखदाय विघ्न हरो मगल करो ।।

Closing ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् श्रीमज्जबूस्वामिन् सकलगुण-विराजमान् जल चदन अक्षत पुष्प नैवेद्य दीप धूप फल अर्घ महार्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

Colophon : इति श्री इति श्री जबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६२ जम्बूस्वामी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७६१ ।

Closing . देखें, क्र० १७६१ ।

Colophon इति श्री जम्बूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६३ जयमालिकापूजा

Opening उच्चलिया सुरसल्लिया पुणभत्तिय कुसुमजलि
अमरिदह सुरिंदहं णिहय दुरिय ज्वाला
पढमविय सुरायण भुवणसामिणा भोमहि पत्ता,
— — — ॥

Closing : तिण्यरह सुहसुयरह पय पकयाणि खत्तिए ।
निरूमतिए विहिज्वातीए चउवीसह सुपवित्तिए ॥

Colophon । इति जयमालिका पूजा समाप्ता ।

१७६४ ज्ञानपूजा

Opening प्रणम्य श्रीजिनाधीशमधीश सर्वसपदाम् ।
सम्यग् ज्ञानमहारत्नपूजां वक्षे विधानत: ॥१॥

Closing दुरिततिमिरहम मोक्षलक्ष्मीसरोजम्,
व्यसनघनसमीर विश्वतत्वप्रदीपम् ।
मदनभुजगमन्त्र चित्तमात्तगसिंहम्,
विषयसफरजाल ज्ञानमाराधयत्वम् ॥

Colophon . इति श्री ज्ञानपूजा जी समाप्तम् ।

१७६५. ज्ञानपूजा

Opening । देखें, क्र० १७६४ ।

Closing । देखें, क्र० १७६४ ।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्रीनरेन्द्रसेन विरचिता सम्यग्ज्ञान पूजा समाप्ता ।

१७६६. ज्ञानपूजा

Opening । देखें, क० १७६४ ।
Closing देखें, क० १७६४ ।
Colophon : इति ज्ञानपूजा ।

१७६७ ज्वालामालिनी-पूजा

Opennig जय ! ज्वाला जगज्योति होति आनन्द विधाई ।
जय ! ज्वाला हर त्रिधा विघन मोद मगल दाई ।।
जय ज्वाला वर अमित शक्ति श्रुति सारद गावे ।
जय ज्वाला पद सुर मुनिन्द्र मति चिन्तित पावे ।।
Closing पूजन सख्या छन्द की ' ' — ।
Colophon । इति श्री चन्द्रप्रभु जिनदेव वा श्यामल यक्ष तथा ज्वालामालिनी महादेवी जी की पूजन स्तुति समाप्तम् ।

१७६८ ज्वालामालिनीपूजा

Opening । श्रीचन्द्रप्रभेशजिनपंकजसेवकिन्या
श्यामाख्या यक्षिसुवरोपादपद्मयुग्मम् ।
चक्राधिपादिमनुजैं खलवद्यमाना,
माह्या नानादिविधिनात्रसमर्चयेऽहम् ।।
Closing । वरमहिषवाहिनि शनचुडगे ।।जय०।४५ ।
Colophon । इति आरती सम्पूर्णम् ।

१७६९. ज्वालामालिनी-पूजा

Opening . देखें, क० १७६७ ।

Closing : राकेंदुविम्बरुचिशोभितदीव्यगात्रं राजीवपत्रनिभपादसुरांग ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८०० ज्येष्ठजिनवर-पूजा

Opening : नाभिरायकुलमंडन ... क्षीर समुद्र भणी ॥१॥

Closing : यावति जिन चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये,
तावति सतत भक्त्या त्रिपरीत्य नमाम्यहम् ॥३०॥

Colophon : इति ज्येष्ठ जिनवर पूजा ।

१८०१ कलशाभिषेक

Opening : सौगन्ध्यसंगतमधुव्रतझङ्कृतेन .... जिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिद पुन्यकरोत्पादकम् ।
जिन गंधोदक वदे ह्यष्टकर्म निवारणम् ॥

Colophon : इति लघु जिन कलशाभिषेक संपूर्णम् ।

१८०२ कलिकुण्ड-पूजा

Opening : चन्द्रावदातैं सरलैसुगंधैरनिंद्यपात्रैर्वरसालिपुंजैः ॥ दुष्टो० ॥

Closing : वरखमिन्दु ... उवसग्गुतिह ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा समाप्तम् ।

१८०३ कलिकुण्ड-पूजा

Opening : ह्रूंकार ब्रह्मरुद्र सुरपरिकलित ... विनाश प्रयुक्तम् ॥

Closing : देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon : इति श्री कलिकुंड पूजा जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६१ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७५ ।

जि० र० को०, पृ० ७४ ।

१८०४. कलिकुण्ड-पूजा

Opening देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon इति कलिकुण्ड पूजा ।

१८०५ कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : सर्पत्सर्पेशदर्पो राजहंसोवनाह ॥१३॥

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा जयमाल समाप्त ।

१८०६ कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्रूँकार ब्रह्मरुद्र ... ... विघ्नविनाशनम् ।

Closing नव विघ्नविनाशन भयहर सब्ब भयाणि ठ्य म्‌ ।

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पूजा समाप्ता । श्री रस्तु ।

१८०७ कलिकुण्ड पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०६ ।

Closing देखें, क्र० १८०६ ।

Colophon इति कलिकुण्ड पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८०८. कजिका-व्रतोद्यापन

Opening : चिद्रूप चिदानन्द अपर निर्जर परम् ।
शान्त कर्म्मातिग पूत पुराण पुरुषोत्तमम् ।।

Closing : अतुलगुणसमग्र स्वर्गमोक्षापवर्गम्,
त्रिभुवनपरिरिद्धि, प्राप्तसर्वं प्रसिद्धिः ।
नमति सुजसकीर्ति कोमलाकीर्य-कीर्ति,
रतनविबुधसार्तं पातु व मुक्तिकार्तं ।।७७।।

Colophon : इति कजिकाव्रतोद्यापन समाप्ता श्रीरस्तु । शुभ अस्तु ।

विशेष— इसके आगे पूजा सामग्री विवरणिका भी है ।

१८०९. कर्मदहनपूजा

Opening लोक सिखर तनछाडि अमूरत ह्वै रहे,
चेतन ग्यान सुभाव गेयते भिन महे ।
लोकालोक सो काल तीन सबविधि धरी,
जानि सो सिद्ध देव जजो हुशुति धनी ।।

Closing : पुत्र प्राप्त करि ऋद्धि सुतरी रोगादिनिवारा धरी,
पापातापहरि प्रबोध सुचरी वक्रीन्द्रभूसोदरी ।
आनन्दाद्द्युत धन्य धाम नगरी मायामय मा री,
चक्र्यमाभवतो सिवस्य भवतु श्रेयस्करी सकरी ।।

Colophon : इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्तम् ।

१८१०. क्षमावणी पूजा

Opening । देवश्रुतगुरुन्नत्वा स्नापयित्वा महोत्सवे ।
ततश्चाष्टविधापूजा कुर्याद्व्रतविधायक ॥

Closign । यश्चैतन्यमचित्यमद्भुतगुणा श्रद्धानमत स्फुरन्,
ज्ञान पचसमस्ततत्वविषय स्वात्मावबोधद्युति ।
तच्चारित्रमनतरगत व्यापारपारगता,
वद तत्रितय त्रिधापतिणत यत्निश्चयान्निश्चितम् ॥१२॥

Colophon इति क्षमावणी अर्घ सम्पूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०' पृ० १७७ ।

१८११ क्षेत्रपाल पूजा

Opening युगादिदेव प्रयजे स्वहव्यै इक्ष्वाकुवशोधरधर्मवेदी ।
चामीकराभाद्युतिकोटिभानु प्रह्वाकृता घातकर्तुर्यभागम् ॥१॥

Closing श्रीमच्छ्रीकाष्टासघे यतिपति तिलके ··· ·· क्षेत्रपाना शिवाय
॥२७॥

Colophon इति श्री विश्वसेनकृता भगवति क्षेत्रपाल पूजा सपूर्णम् । कार्तिक-
मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौणमास्या भृगुवासरे । श्रीसवत्-१६५३

१८१२. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्नत्रक्षेत्राधिरक्षणे ।
बलिं ददामि दिश्यग्ने वेद्या विघ्नविनाशने ॥१॥

Closing आठ्ठो छद गानु मैं जो रच्यो क्षेत्र को ।
मुनिसुभचद्र गावौ छद भैरु लाल को ॥
जैन को उद्योत भैरु समकित धारी ॥१२॥

Colophon : अनुपलब्ध है ।

१८१३ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२ ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् . . . सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।।

Colophon : इति क्षेत्रपाल पूजनविधानम् ।

१८१४ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : वदेहं सन्मति देव सन्मति मतिदायकम् ।
क्षेत्रपानां विधि वक्ष्ये भव्याना विघ्नहानये ।।१।।

Closing : सर्वविघ्नहरायक्षा दक्षालक्षगुणान्विता ।
एते पिंडीकृता यक्षा क्षारध्रमिता मया ।।२६।।

Colophon : इति क्षेत्रपालानां नामांकित स्तोत्र संपूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ६८ ।

१८१५ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखे क्र० १८१४ ।

Closing : शांतिधारात्रय . . . क्षेत्रपानां शिवाय ।।२७।।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१६ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२ ।

Closing · अवसाने राखहु पाप नासहु पहिली पूजा तुम्हरी कही ।
करि पूजा जिनद ही, कमनानद ही विजैपान बहु सिरनवैं ॥

Celophon इति श्री क्षेत्रपाल पूजा सपूर्णम् ।

१८१७· क्षेत्रपाल·पूजा

Opening । देखें, क्र० १८१२ ।

Closing इति प्रवुद्धातस्वस्य स्वय ॰ प्रादुरासनजितकर्मी ।

Colophon इति श्री वृहत् सहस्रनाम समाप्तम् ।

विशेष— इसमे क्षेत्रपालपूजा और वृहत्सहस्रनाम दोनो है। बीच के बहुत से पत्र नही है ।

१८१८ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : प्रणम्य श्री जिनेशानां वर्द्धमान जिनेश्वरम् ।
पूजा श्रीक्षेत्रपालानां वक्ष्ये विघ्नविहानये ॥१॥

Closing लक्ष्मीप्राप्तकरी कलत्रसुखकरी चौरादि शत्रूहरि,
शाकिन्यादिहरी प्रशर्मसुखरी राज्यादिनिवर्द्धनी ।
विद्यानदघनौघनामनगरी विघ्नौघनिर्णाशनी,
पूजा श्री जिनक्षेत्रस्य भवतु सपत्करी चितकरी ॥

Colodhon : इति श्री क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१९ लब्धिविधान-पूजा

Opening । श्रीवर्द्धसानजिनचद्र ·· ·· सतत शुभवस्या ॥१॥

Closing · जिणगुणरयणयरू हियैं देवायरू केवलणाणलहैवि थिरू ।
हुय सिद्ध निरजणु भवभयभंजणु अगिणिय रिसिपु गमुजिचिरू ।८।

Colophon । इति लब्धविधान पूजा ।

१८२० लघुकर्मदहन-पूजा

Opening . तीर्थ कर जिनको नमत सुर नर सत ।
जे वदौ वरतौ सदा येसे सिद्ध महत ॥

Closing . मै मत हीन विवेक नहीं अर प्रसाद मैं लीन ।
थिरता लघ् जग जानककर लघु मत स्व नवीन ॥

Colophon ; इति लघु कर्मदहन विधान सपूर्णम् । मिति अघन सुदी २ सवद् उनैसै अठाईस दसकत परमानद के मुकाम जवलपुर । ठीकाना हनुमान तलाव श्री मदर वड़े दिवाले के पक्षवाड़े मुना-लाल ।

विशेष— इसके बाद कुछ भजन भी हैं ।

१८२१ लघुपचकल्याणक विधान

Opening : वदौ श्री अरहत पद मन वच तन चितधार ।
मगलमय जग मैं प्रगट पार उतारनहार ॥

Closing : तुम दयाल जगतपति सिवदरसी भगवान ।
सिव सेवा फल दीजिये तारापति नित जान ।
सवत् येक पदार्थ ससगत मिलाय कर ठीक ।
पूरन पाठ भयौ सो तब भद्र कृष्न नवमीस ॥

Colophon : इति लघु पचकल्याणक विधान सम्पूर्णम् ।

१८२२. महावीर अर्घ्य

Opening : दिन दिन गुनकर करी सदा बढ़त ज्ञान जिनचन्द ।
बर्द्धमान कही हरी जग्यो मैं पूजौं सुखकद ॥

Closing : ॐ ह्री अतिवीरनामेभ्यो अर्घम् ।

Colophon · सम्पूर्णम् ।

१८२३ मगल

Opening पणविवि पच ... जगत मगल गावई ॥१॥

Closing वदन उदर अवगाहु कलस गति जानिए ... जगत मगल गाईए ॥

Colophon : इति तृतीय मगल सम्पूर्ण ।

१८२४ मत्रविधि

Opening ते चतुर्दशी पुष्पार्क होवै त्यारितादिने उपवास कृत्वा जाप्य १२००० त्रिमध्य अर्द्धरात्रौ । व ४८००० ।

Closing , अनेन मत्रेण होम कुर्यात् सहस्र १२००० । शत्रुनाश भवति । अनेन मत्रेण गजेन्द्रनरेन्द्र सर्वशत्रुवशीकरण पूरम स्मरणीयम् ।

Colophon : इति विधि सम्पूणम् ।

१८२५ मोक्षपैडी

Opening : इक्क समै रुचिवत नौ गुरुवरकै सुनु मल्ल ।
जो इफ अदर चेतना वहै उसाडी अल्ल ॥

Closing : भव थिति जिन्ह की छूटि गई तिन्ह को यह उपदेश ।
कहत बनारसीदास यौं मूढ़ न समुझै लेस ॥

Clolophon : इति मोक्षपैडी समाप्तम् ।

१८२६ नदीश्वर-पूजा

Opening : नदीश्वर पूरब दिसा तेरह श्री जिन गेह ।
आह्वानन तिनका करूँ मन वच तन धरि नेह ॥१॥

Closing : मध्यलोक जिन भवन अकित्रिम ताके पाठपढ़े मनलाई ।
जाके पुण्य तनी अति महिमा वरनन को करि सकै बनाई ॥
ताके पुत्र पौत्र अरु संपति बाढ़ै अधिक सरस सुखदाई ।
इह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ॥

Colophon इति नदीश्वर पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८७६ ।

१८२७. नदीश्वर-पूजा

Opening मध्यैमडपमालिखेद्वर्नरे नदीश्वर मण्डलम् ।
वर्णे पञ्चभिरानत गुणगुरु शक्र सता सम्मत ।
तन्मध्ये चतुरानन जिनवर बिम्बस्य सातास्पद ।
दिव्यैंऽप्टभिरिष्ट-सौख्य-जननं कुर्यात्तदर्च्चा तत ॥१॥

Closing आयु · देवार्हतामर्हणा ॥११॥

Colophon : इति श्री नदीश्वरपूजा समाप्त ॥

१८२८ नदीश्वरद्वीप-पूजा

Opening कर्पूरपूरपरिपूरितभूरिनीर धाराभिराभिरामित: श्रीतहाग्णीभि
नदीश्वरेष्टदिवसानि जिनाधिपानां आनदता प्रतिकृति
परिपूजयामि ॥

Closing इयथुणि वि जिणेसरू महिपरमेसरू · सुक्ख सो पावई ॥

Colophon : इति श्री नदीश्वर द्वीप पूजा जयमाल समाप्त. । लेखकपाठक-
वाचकश्रोतृणा समस्तु शुभ भवतु ।

१८२६. नवग्रहपूजा

Opening : अर्कश्चन्द्रकुजसौम्यगुरुशुक्रशनिश्चर ।
राहुकेतुग्रहारिष्टनासन जिनपूजनात् ।।१।।

Closing कन वछित दाईक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरै ।
ग्रह दुख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौबीसी पूजन करै ।।

Colophon . इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८१ ।

१८३० नवग्रह-पूजा

Opening देखें क्र० १८२६ ।

Closing देखें, क्र० १८२६ ।

Colophon इति श्री केतुअरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मगलमस्तु । श्री वीतराग जी सदा सहाय । इति नवग्रहारिष्टनिवारक चतुर्विंशति जिनपूजा सम्पूर्णम् । नवग्रहशान्ति हेतु चतुर्विंशति जिनेन्द्र पूजन मन शुद्ध सागर जी कृत श्री । शुभ सम्वत् १९१३ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे सोमवारे ।

१८३१ नवग्रह-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८२६ ।

Closing देखें, क्र० १८२६ ।

Colophon इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।

१८३२ नवग्रह-पूजा

Opening : श्रीनाभिसूनो पदपद्मयुग्म नरवासुखाणि ? प्रथम तु तेव,
समसमम्नाकिशिरः किरीट सघच्छविश्रस्तमनीयत वैः ।।१।।

Closing आदित्यादिग्रहासर्वे नक्षत्रासुरासथा ।
कुर्वन्तु मगल तस्य पूजा कर्तृणस्य वा ।।

Colophon इति नवग्रहपूजा जिनसागरकृत सम्पूर्णम् ।

१८३३· नवग्रह-पूजा

Opening . प्रणम्याद्य ततीर्थेश धर्म तीर्थप्रवर्त्तकम ।
भव्यविघ्नोपशान्त्यर्थं ग्रहार्चाविर्ण्यते मया ।।१।।

Closing देखें, क्र० १८२६ ।

Colophon : इति श्री केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा मपूर्णम् । इति नवग्रह पूजा जी सम्पूर्णम् । शुभं अस्तु मगलम् अस्तु ।

१८३४· नवग्रह-पूजा

Opening : ग्रहास शब्दये युष्मानयात सपरिक्षदा ।
अत्रोपवसता तावो जये प्रत्येकमादरात् ।।१।।

Closing : ॐ ह्री नवग्रहेभ्य दक्षिणा प्रदानम् ।

Colophon · इति नवग्रह पूजाविधानम् ।

१८३५· नवकार-पच त्रिशत्पूजा

Opening : श्रीमज्जिनेंद्रवरसायनसारभूत पूज्य नरामरसुखेचरनायकैश्च ।
ध्येय मुनींद्रगणनायकवीतरागं सस्थापयामि नवकारसुमन्त्रराजम् ।

Closing : जय परमणि रजण दुरिय विहडण वरदिवु सुहा ॥

Colophon : इति श्री नवकार पैंतीसी पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८३६ नवपद-कलश-पूजा

Opening : -- जोयन श्री जे अरे पहिलो तीरथराय ।
सोल जोजन ऊचो सही ध्यानधरु चित लाय ॥

Closing : वाणी वाचक जस तणी कोई न थई अधूरी रे ॥२२॥

Colophon : इति इति नवपद कलश पूजा समाप्तम् ।

१८३७. नेमिनाथ जयमाला

Opening : नेमिजी तुम्हारी हठ मानी ॥

Closing : जो एतना करी ... पावै ।

Colophon : इति नेमिजयमाल समाप्तम् ।

१८३८ न्हवण-पूजा

Opening : सौगन्धसंगतमधुव्रतझंकृतेन सवर्णमानमिव गंधनिद्यमाद्यौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृंदवंद्य पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्-
मानाम् ॥१॥

Closing : ... ... जन्मजरामरण ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८३९. न्हवण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८३८ ।

Closing : अरहहा सिद्धा आइरिया उवज्झाया साहु परमेट्ठी ।
एदे पंच णमोयारा भवे भवे मम सुहं दितु ॥१॥

Colophon : इति न्हवणपूजा ।

१८४०. न्हवणकाव्य

Opening : दूरावनम्रसुरनाथकिरीट कोटि संलग्नरत्नकिरणच्छविधू-
सरांघ्रि ॥ ॥
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टै भक्त्या जलं जिनपते बहुधाभि-
सिंचेत् ॥१॥

Closing : य पाडुक -- ल त्वदीय बिंबम् ॥

Colophon : इति बिंब स्थापण मंत्र ।

१८४१ निर्वाण-पूजा जयमाला

Opening : कमलणवेप्पिणु हिये धरेप्पिणु वाएसरेगुणगणहरह ।
णिव्वाणई ठाणइ तित्थसमाणइ पयडमि भत्ति जिनेसरह ॥१॥

Closing : इय तित्थंकर तित्थइ पुण्णवित्तइ पठइ वियाणइ विमनयरे ।
तह पावपणासइ दुरिय विणासइ मंगल सयल पहु तिघरे ॥१७॥

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा की प्राकृत आरती संपूर्णम् ।

१८४२ निर्वाण-पूजा

Opening : अपवित्रपवित्रो वा सर्व्वावस्थागतोपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥५॥

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon . इति णिर्व्वाण पूजा समाप्तम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८४३. निर्वाण-पूजा

Opening ॐ जय जय जय - — — · सव्वसाहूण ॥१॥

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा जी समाप्तम् ।

१८४४ निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय । णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।

... णमो लोए सव्वसाहूण ॥१॥

Closing : कहे कहाली तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।

करो आरता वर्द्धमान की पावापुर निर्व्वाण थान की ॥७॥

Colophon : इति आरती सपूर्णम् ।

१८४५. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा ।

१८४६. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : सवत् सत्रह सै इकताल, आसिन सुदि दसमी सुविशाल ।

भैया वदन करै त्रिकाल, जय निर्वान काण्ड गुनमाल ॥

Colophon : इति निर्वान काण्ड सम्पूर्णम् ।

१८४७ निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाण पूजा समाप्ता ।

१८४८ निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४४ ।

Colophon : इति निर्वाण पूजा सम्पूर्णम् ।

१८४९ निर्वाण-पूजा

Opening : वंदौ श्री भगवान को भावभगत सिरनाय ।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।१।।

Closing : श्री तीर्थङ्कर चतुर बीस भगवान है ।
गर्भ जन्म तपज्ञान भए निरवान है ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५० निर्वाण-क्षेत्र-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४९ ।

Closing : संवत् अष्टादस सही सत्तर एक महान ।
भादौ कृष्ण जु सत्तमी पूरण भयौ सुजान ।।२४।।

Colophon इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१८५१. निर्वाण क्षेत्र-पूजा

Opening । परम पूज चौवीस जहाँ जहाँ शिवथानक भयो ।
सिद्धभूम दशदीश मन वच तन पूजा करो ॥१॥

Closing । ए थल जावै पाप मिटावै गावै धावे भक्ति वढावै ।
जो पुजे सो शिव लहैं ॥

Colophon इति श्री सिद्धक्षेत्रकी पूजा सपूर्णम् ।

१८५२ निर्वाणकल्याणक-पूजा

Opening । देखे, क्र० १८४३ ।

Closing । देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon । इति श्री निर्वाणकल्याणक जी की पूजा भाषा सस्कृत जयलाल सहित सम्पूर्णम् ।

१८५३ निर्वाण-कल्याणक

Opening केवल दृष्टि चराचर देख्यो जारिसो,
भविजन प्रति उपदेश्यो जिनवर तारिसो ।
भव भयभीत महाजन सरन जे आईया
रतनय सुम लछन शिव पय माईया ॥१॥

Closing रचि अगरचदन प्रमुख परिमल द्रव्य जिनजयकारियो ।
पद पतन अग्निकुमार मुकुटानल सुविधि सस्कारियो ।
निर्वान कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पाईये ।
भणि रूपचद सुदेव जिनवर जगत मगल गाईये ॥६॥

Colophon : इति निर्वाण कल्याणक भाषा सम्पूर्णम् ।

१८५४. नित्यनियम-पूजा

Opening सौगन्धसगतमधुव्रत — ।
पादारविंदमभिवद्यजिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : सुखदेवो दुखमेटिवो एहि तुमारीवानी,
मो अधीर की वीनती सुन लीजै भगवान ।
दरसन कीजै देव को आदि मध्य अवसान,
सुरगन के सुखभोगके पावैं पदनिरवान ॥

Colophon इति सम्पूर्णम् ।

१८५५ पदलावनी

Opening शिखर गिर के ऊपर तिर्थङ्कर विराजे ।
आधि रात मे याने देव दुंदुभिबाजे ॥

Closing : समेद शिखर पर्वत केऊपर बीसतीर्थङ्कर मुक्ति गए ।
ककर ककर सिद्ध विराजे असख्यात मुनि मुक्ति गए ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८५६ पद्मावती-पूजाविधान

Opening : देखें, क्र० १८५७ ।

Closing : पायोभिर्दिव्यगन्धै, — पूजयामीष्टसिद्धै ॥१३॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५७. पद्मावती-पूजा

Opening　　श्रीपार्श्वनाथ-जिननायकरत्नचूडा-,
पाशांकुशोरभफलाकितदो चतुष्का' ।
पद्मावती त्रिनयना त्रिफणावतस-,
पद्मावती जयतु शासनपुण्यलक्ष्मी ॥

Closing :　　या देवी रिपचोरवन्हिजमहा सकष्ट सहारिणी,
या रात्रिचरभूतखेचरमहाबेतालनिर्णाशिनी,
रक्ताना धनदायिनी सुखकरा इष्ठार्थ संपादिनी,
सा मा पातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ॥

Colophon ।　　इति पद्मावीपूजा चारुकीर्तिकृत सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८५८ पद्मावती-पूजा

Opening ·　　देखे, क्र० १८५७ ।

Closing　　श्रीमत्पद्मगराजाग्रे वाराधारा करोम्यह
सर्वशोकस्य शात्यर्थ भृ गारनालनिर्गता ॥१०॥

Colophon　　नही है ।

विशेष—　　इसमे पार्श्वनाथपूजा तथा धरणेन्द्रपूजा भी सकलित है ।

१८५९. पद्मावती-पूजा

Opening ।　　श्रीमच्चतुर्द्विदशशोभितदोर्भवाहिनी　　वज्रादिकायुधधरामहमा-
ह्वयामि ॥
सस्थापयामि सुजनैरभिपूज्यमाना पद्मावतीक्षितिनुता फणिराज-
कांता ॥

Closing : नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलम्,
नैरात्म्य प्रतिपद्य नश्यति जना कारुण्य बुध्या मया।
राज्ञ श्री हिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदिग्धात्मना,
बौद्धोघान् सकलान् विजित्य सुगत पादेन विस्फालित ॥१६॥

Colophon इति अकलंकाष्टकम्।

१८६०. पद्मावती-पूजा

Opening : नम श्रीपार्श्वनाथाय ... चतुर्विंशति मगलम् ॥
Closing श्रीपार्श्वनाथपदपकज-सेव्यमान - ... प्रणमामि नित्यम् ॥
Colophon : अनुपलब्ध।

१८६१. पद्मावती-पूजा

Opening : जय कुसुमकु कुमारुणशरीर ... पद्मावती ॥
Closing गभीर मधुर मनोहरतर सद्घोषरत्नाकरम्,
वक्र पूर्णकर सुधाहितकर भक्ताबुज भास्करम्।
नानावर्णसुरत्नभूषितकर ससारसौख्याकरम्।
श्रीपद्मावती देविमूर्त्तिसुभद्र कुर्वन्तु वो मगलम्।

Colophon इति श्री पद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३२।

१८६२ पद्मावती-पूजा

Opening : देखें, १८६१।
Closing : देखें, क्र० १८६१।
Colodhon : इति श्री पद्मावती पूजा समाप्तम्।

१८६३. पद्मावती-व्रतोद्यापन

Opening : नम श्री पार्श्वनाथाय मोक्षलक्ष्मी निवासिने ।
वक्षे पद्मावती पूजा चतुर्विंशतिअगया ॥१॥

Closing ये पूजयती मनकायवाणी तेषां जनानां सुखदायकानि ।
पद्मावतीनामपर पवित्र सद्य पव दान ददाति पूजा ॥६॥

Colophon : इति प्रथमनिरूपम पुष्पाजलिम् ।

१८६४. पचवालयती पूजा

Opening श्री जिनपच अनगजित वासु-पूज्यमल्लनेम ।
पारसनाथ सुवीर अति पूजो चितधर प्रेम ॥१॥

Closing : ब्रह्मचर्य सो नेह धर रचियो पूजन पाठ ।
पाचौं बाल जतीनको कीजै नित प्रति पाठ ॥२७॥

Colophon : इति श्री पचबालजती पूजा सम्पूर्णम् । शुभम्

१८६५ पचकल्याणक-पूजापाठ

Opening श्री चौवीस जिनेस पद वदो मन वच काय ।
जाके ध्यावत भव्य जन भववारिधि तरिजाय ॥१॥

Closing · सात जुगुल नव यक लिखि सवत् श्रावण मास ।
कृष्णपक्ष दसमी दिवस शुक्रवार परभास ॥१३॥

Colophon . इति श्री चतुर्विंशति जिन पचकल्यानक पूजापाठ समाप्तं

१८६६ पचकल्याणकपाठ

Openign : पणविविपचपरमगुरुजिनशासन — — · पापप्रणा-
शनम् ॥१॥

Closing : पावए अष्टौ सिद्ध ··· चउसंघहि गए ॥२५॥

Colophon : इति श्री पच कल्याणक जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ८८६ ।

१८६७ पचकल्याणकपाठ

Opening देखें, क० १८६६ ।

Closing : फुनि हरै पातक टरैं विघन जे होय मगल नित नए ।
भनि रूपचद त्रिलोकपति जिनदेव चउ सघहिगए ॥२६॥

Colophon इति श्री पचकल्याणक सपूर्णम् ।

१८६८. पचकल्याणकपूजा

Opening : सिद्ध कल्याणबीज कलिमलहरण पंचकल्याणयुक्तम्,
स्फूर्यद्देवेन्द्रवर्यै मुकुटमणिगणैर्दीप्तपादारविन्दम् ।
भवत्या नत्वा जिनेन्द्रसकलसुषकर कर्म्मवल्लीकुठारम्,
कुर्वेऽह पूजन वैः प्रबलभवभय शान्तये श्री जिनानाम् ॥१॥

Closing . इति शान्तिधारा अथ—
ये कल्याणकभूषिताः सुरनुता सत्य च बोधान्विता ।
भव्यै सद्विधिनाविधानसमये सपूजिता, सस्तुता ॥
त्रैलोक्येशमहोदरोम्येव सुख ससारक चाप्नुतम्,
मोक्ष चापि दिशतु वैः जिनवरा. सर्वात्मना सर्वदा ॥९॥

Colophon : इति श्री पचकल्याणकपूजा समाप्तम् ।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, क० ८६७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८४ ।

Cagt, of Skt. & Pkt Ms. P. 662.

१८६९ पचकल्याणक-पूजा

Opening . देखें, क्र० १८६८।

Closing : अनेकतर्कसकर्षहृषांतितवुधोत्तमा ।

स्वर्द्धिनी च वयस्कृतिजीवातु श्री प्रतिवर्द्धनम् ॥

Colophon : इति श्री पचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम् । लाला सकरलाल रतनचद के माथे को पुस्तक ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२ ।

१८७० पचकल्याणक-दोहा

Opening . कल्याणक नायकनमू , कलपकुरूह कुलकद ।

कल्मष दुर कत्याणकर, बुधकुलकमलदिनद ॥१॥

Closing तीन तीन वसु चद ये सवत्सर के अक ।

जेठ शुक्ल दशमी दिवस पूरन पढठो निसक ।

Colophon , इति पचकल्याणक के सागीत कवित सम्पूर्णम् ।

१८७१ पचकल्याणक-पूजा

Opening : परमब्रह्मेश्वरस्तेभ्यो नमो निर्वाणसिद्धये ।

येषा नामान्यनतानि कातिभिरपि सस्तुवे ॥१॥

Closing : देह दीप्तप्रकारी सुनाप्तसुकरी चक्रं द्रमपत्करी जन्मादिसुनरी ।

गुणाकरकरी स्वमोक्षधाम्नीकरी रोगाद्यनाशकरी ॥

Colophon इति श्री चतुर्विशतितीर्थङ्कर पूजा पचकल्याणक समाप्तम् ।

१८७२ पचकल्याणक-पूजा

Opening : पच परमगुरु वदि करि पचकुमार मनाय ।

मदन व्याधि मेरी हरो जगत करो सुखदाय ॥

Closing : पूजन पचकुमार ·· — मोक्ष सुरपायहो ।।१७।।

Colophon : इति श्री पचकुमार जिनेन्द्रपूजा सपूर्णम् ।

१८७३. पचकुमार-विधान

Opening : ॐ परम ब्रह्मणे नमो नम । स्वस्ति स्वस्ति, जीव जीव, नद नद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व आनुसाधि आनुसाधि — ।

Closing : ॐ ह्रीं क्रो षष्टिसहस्र सख्येभ्यो स्वाहा । नाग-सतर्पनार्थं ईशान्या दिसि पुष्पाजलि क्षिपेत् ।

Colophon : इति पचकुमार विधान सम्पूर्णम् ।

१८७४ पाच-मगलपाठ

Opening : शिलागतमादिदेवयछनस्नापयन् सुरवरा सुरशैलमूर्न्नि । कल्याणमी सुरदमक्षततोयपुजैं सभावयामि पुर एव तदीय बिम्बम् ।।

Closing : मै मति हीन भगति वसभावन । — — जिन देव वो सर्वहि जयो ।।१५।।

Colophon : इति श्री पचकल्याणक गीतम् ।

१८७५. पाच-मगलपाठ

Opening : देखें, क्र० १८६६ ।

Closing : देखें, क्र० १८१७ ।

Colophon : इति श्री रूपचंद कृत पंच मगल समाप्तम् ।

१८७६. पचमगलपाठ

Opening . देखें, क्र० १८६६ ।

Closing . देखें, क्र० १८६६ ।

Colophon . इति पचमगल सम्पूर्णम् ।

१८७७. पचमेरु-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८७८ ।

Closing : ॐ नदीश्वरद्वीपवावनजिनालयस्थ जिनेभ्यो नम ।

Colophon नही है ।

१८७८ पचमेरु-पूजा

Opening मवौषडाहूयनिवेश्य ताभ्या मानि'यमानीयपडुप:न,
श्रीपचमेरुस्थ जिनालयाना यजाम्यशीति प्रतिमासमस्ता ।।१।।

Closing पचमेरु की आरती पढ़ै सुनै जो कोय ।
द्यानत फल जानै प्रभु तुरत महा सुख होय ।।

Colophon : इति श्री पचमेरु जी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६१ ।

१८७९. पचमेरु-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८७८ ।

Closing : देखें, क्र० १८७८ ।

Colophon : इति पचमेरु की आरती समाप्तम् ।

१८८० पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८७८।

गन्धपुष्पअक्षतदीपधूपै नैवेद्य दुर्वाफलवह्निरघैं ।

श्री पचमेरोस्तु जिनालयाना यजाम्यशीति प्रतिमा समस्तम् ।

Colophon : इति श्री पचमेरु पूजाष्टक समाप्त ।

१८८१. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, १८७८।

Closing भूधर प्रति जेहा कर्म न एहा, भक्ति विषै विठ भव्य जनौ ।

कर पूजा सारी अष्टप्रकारी, पचमेरु जयमाल भणौ ॥१॥

Colophon : इति पचमेरु पूजा ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८५ ।

१८८२. पंचमेरु-पूजा

Opening : जिनान् संस्थापयाम्याह्वानादि विधानत. ।

सुदर्शनाख्यमेरुस्थान् पुष्पांजलि विशुद्धये ॥

Closign : सुदर्शनादिमेरूणां पूजाकारिसुभावहा ।

रत्न-रत्नाकरेणासौ पुष्पांजलि विशुद्धये ॥

Colophon : इति श्री पुष्पांजलि पूजा समाप्तम् ।

१८८३. पंचमेरु-पूजा

Opening : तीर्थंकर के न्हौन जलतैं भए तीरथ सर्वदा,

तातैं प्रदच्छन देत सुरगन पचमेरनि की सदा ।

दो जलधि ढाई दीप में सब गनत मूल विराजही,
पूजो असी जिनधाम प्रतिमा होहिं सुख दुख भाजही ॥१॥

Closing : देखे, क० १८७८ ।।
Colophon : इति पचमेरु पूजा

१८८४ पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

Opening श्रीमन्त्रिलोके तिलकायमान मानुश्रीमव्यमरोजमान् ।
देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवद्यो वदे जिनेन्द्रोविश्रुत विधाता ॥

Closing : ॐ ह्रीं समोशरणादिश्वराय अष्टाविंमतिगुण विराजमानाय श्री मोक्षलक्ष्मीनिवासाय श्री सर्वसाधुपरमेष्टिणो मम सुप्रसन्नवरदा भवतु ॥

Colophon इति पंचपरमेष्ठी अर्घ सम्पूर्णम् ।

१८८५ पंच-परमेष्ठी जयमाला

Opening : मणुयण इद ...... अट्ठावर मगल ।
Closing : अरहा सिद्धा आयरिया उवझाया साहुपंचपमेट्ठी ।
पदे पंच णमोयारो भवे भवे मम सुहं दितु ॥७॥
Colophon इति श्री पंचपरमेष्ठी जयमाल सम्पूर्णम् ।

१८८६ पंच परमेष्टी पाठ

Opening . प्रथम पंचपद को नमों गुरुपद सीस नवाय ।
तुच्छ बुद्धि रचना रचौ सारद सरन मनाय ॥१॥

Closing : जै जै श्री आचार्य नमस्ते, गुन छतीस वपुधार्य नमस्ते ।
तिन पदनमिधरि ध्यान नमस्ते, होतआतमाज्ञान नमस्ते ॥३॥

ॐ ॐ श्री उपझाय नमस्ते, गुन पचीम सुखदाय नमस्ते,
वदय जे धरि भक्ति नमस्ते, " " " " ॥४॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८८७ पच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीमत त्रिजगदेव त्रैलोक्यानंददायकम् ।
चन्द्राक चन्द्रप्रभ वदे स्वस्थप्रारब्धसिद्धये ॥

Closing : धर्माधर्मप्रकाशनैकनिपुणस्त्रैलोक्यविन्माधरो
मोहे भेशमृगेश्वरे गतरिपुर्दे वाधिदेवो जिन ।
ससारार्णवतारकोहतमन्नो धर्मादिभूषो मुनि ,
श्रीदेवेन्द्रसुकीर्त्तिपादनमित कुर्यात्सदा व सुखम् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री धर्म्मभूषण विरचित परमेष्ठिपूजा समाप्ता । शुभमस्तु ।

१८८८ पच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीधर श्रीकर श्रीपते भव्यन श्री दातार ।
श्री सरवज्ञ नमो सदा पार उतारन हार ॥

Closing : सवत एक महस्र नव सतक सो सताईस ।
मादो कृस्न त्रयोदसी बुधवार सो गनीस ॥

Colophon : इति पच परमेष्ठी विधान सम्पूर्णम् ।

१८८९ पंचपरमेष्ठी-पूजा

Opening : ॐ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय साधुभ्यो नम ,
ॐ अथ अरहतदेव के ४६ गुण ।

ॐ ह्री षट् चत्वारिंशत गुण सहिताहंत्परमेष्ठिभ्यो नम ।

Closing : ॐ ह्री वीर्य्यान्तराय कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नम ।

Colophon : नही है ।

१८९० पंच परमेष्ठी-पूजा

Opening : कल्याणकीर्तिकमलाकर सच्च चिद्उज्वलमह प्रकटीकृतार्थम् ।
उच्चैर्निधाय हृदिवीर-जिन विशुद्ध शिष्टेष्टपच परमेष्ठीमह
प्रवक्ष्ये ।।

Closing : स्फुरंतु प्रतापतपनप्रकटीकृताशा।
श्री धर्मभूषणपदांबुजचुम्नावनि ।
कर्त्तव्यमित्युदयत सुयसोभिनदिमूरे
सदतरूदपीकरणैकहेतु ।।८।।

Colophon : इति यशोनदिविरचिता पंचपरमेष्ठी पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।

१८९१ पार्श्वनाथ कवित्त

Opening : प्रभु पारसनाथ अनाथ के नाथ कि जाप जपौ जगवदन की ।
तिहुंलोक के लायक लायक हो सुखदायक आनि निकदन की ।।

Closing : जग मो भै मीत तेरे पथमो परम प्रीति ।
ऐसी जाकी रीति ताको वदना हमारी है ।

Colophon . नही ।

१८९२ पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : .. न्मंडल चारुचतुर्विंशति कोष्टकम् ।
महाराग पचवण रत्नप्रकरसंभृतम् ।।२।।

Closing : श्रीमज्जिनेन्द्रपादाग्रे समस्तलोकशांतये ।
शृंगारनालनिर्वाति शांतिधारा करोम्यहम् ।

Colophon : नहीं है ।

१८९३. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : प्रानत देवलोक ते आये वामादेवी उर जगदाधार ।
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि अंक हरित तन सुख दातार ।।
जरत नाग जुग बोधि दियो तिहि सुरपद परम उदार ।
ऐसे पारस को तजि आरस थापि सुधारस हेत विचार ।।

Closing : पारसनाथ अनाथन के हित दारिद गिरि को वज्र समान ।
सुखसागर वर धन को शसि सम सब कषाय को मेघ महान ।।
तिन को पूजै जो भवि प्रानी पाठ पढ़ै अति आनद आन ।
सो पावै मन वंछित सुख सब और लहै अनुक्रम निरवान ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ पूजा समाप्तम् ।

१८९४ पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्रीं देव पार्श्वनाथ धरणिपतिनुत देवदेवेन्द्रवंद्यम्,
ह्रींकार बीजमंत्र जगदकलिमंत्र सर्वोपद्रवहारी ।
ॐ ह्रां ह्रीं हूंकारनार अघहरनमहाभक्तिरूप जनानाम्,
व्यालीढ पादपीठ शठकमठमति माह्वय पार्श्वनाथम् ।

Closing : कल्याणोदयपुण्यवल्लभवयं संसार सतापभृत्,
तुंगौतुंगभुजंगमंगलफणा माणिक्यमालायते ।
पायात्स्यज्जलभृंगभृंगसहितो नागेन्द्र पद्मावती,
सेव्यसेवक वांछितार्थफलद श्रीपार्श्वकल्पद्रुम ।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा ।

१८९५ पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : सुद्ध तीर्थ पवित्र निर्मल पुण्य हिमकर शीतले ।
मिलि सुगंध जगत पावन जन्म दाघ विनासने ॥
परम श्री जिनपाद पंकज विगत कल्मषदूषणम् ।
श्री पार्श्वनाथमहं यजेवर फणि लाक्षन भूषणम् ।

Closing : जलादिगंधाक्षतचारुपुष्पै, नैवेद्यसद्दीपकधूपफलार्घदानैं ।
श्री लक्ष्मिसेनादिसुरासुरेश, श्री पार्श्वनाथ प[illegible]यामि ॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा संपूर्णम् ।

१८९६ प्रभाती मंगल

Opening जै जै जिन देवन के देवा, सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।
अद्भुत है प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलप मन मेरी ॥

Closing निम्नार के तुम मूल स्वामी, बड भागनि पाइयैं ।
जन रूपचंद चिंता कहा जब सरण चरण न आइयैं ॥

Colophon इति श्री मंगलजीत समाप्तम् ।

१८९७. प्रतिष्ठा-तिलक

Opening अथ बिंबजिनेन्द्रस्य कर्त्तव्य लक्षणान्वितम् ।
ऋज्यावत सुसस्थान तरुणाग दिगम्बरम् ॥१॥

Closing : ये केचिज्जिन .... नरेन्द्रार्चितान् ॥१०॥

Colophon इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचित प्रतिष्ठातिलक समाप्तम् ।

१८९८ पूजामाहात्म्य

Opening : नीर के चढ़ाये वीर भवदधि पार हूजे चरन चढाये दाह दुरित मिटाईये ।
पुष्प के चढाये पूजनीक हूजे जगत मे अक्षत चढ़ाऐ ते अभय पद पाईये ।

Closing : पाप न कर पावै जाके जिय दया आवै धर्म को बढावे दया कहीं आचरन को ।
ताते भव्य दया कीजे तिहुलोक सुख लीजै कहत विनोदीलाल जी तहु मरन को ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८९९ पूजासग्रह

यह पूरा ग्रथ अस्पष्ट है । इसे पढ़ा नही जा सकता ।

१९०० पूजासग्रह

Opening : प्रणमि सकल सिद्धनिकू प्रणमि सकल जिनराय ।
प्रणमि सकल सिद्धान्तकूं नमि गणधर के पाय ।।

Closing : मनवछित दायक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरे ।
ग्रह दु ख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौवीसी पूज करे ।

Colophon : इति केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । इति श्री नवग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विशति जिनपूजा सपूर्णम् ।

१६०१ पूजा-विधान

Opening : चितवत वदन अमल चद्रोपम तजि चिता चित होय अकामी ।
त्रिभुवन चद्र पाप तम चदन नमत चरन चद्रादिक नामी ।।
तिहु जग छाई चद्रिका कीरत चिह्न चाद चितत शिवगामी ।
वदो चतुर चकोर चद्रमा चद्रवरन चद्रप्रभु स्वामी ।।

Closing : राखो सभार उर कोस मे, नहि विसरो पल रकधन ।
परमाद चोर टारन निमित करो पास जिन गुण कथन ।।

Colophon नहीं है।
विशेष —इसमें कई पूजाएँ सकलित है ।

१६०२ पुण्याहवाचन

Opening श्री शान्तिनाथममरासुरमर्तिनाथ
भास्वत्किरीटमणिदीधितिपादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशान्तिकरण प्रणव प्रणम्य,
होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुत्क्षिपामि ।।

Closing श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव पुष्टि समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु अभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्र-धन तथास्तु ।

Colophon : इति पुण्याहवाचन सपूर्णम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६१६ ।

१६०३ पुण्याहवाचन

Opening श्रीनिर्ज्जरेशाधिपचक्रिपूर्व , श्रीपादपकेरुहयुग्ममीशम् ।
श्रीवर्द्धमान प्रणिपत्य भक्त्या सकल्यरीतिकथयामि सिद्ध ।।१।।

Closing , देखे, क्र० १६०२।
Colophon : इति पुण्याहवाचन सपूर्णम् ।

१६०४ पुण्याहवाचन

Opening देखे, क्र० १६०२।
Closing देखे, क्र० १६०२।
Clolophon इति श्री पुण्याह वाचन सपूर्णम् ।

१६०५ पुण्याहवाचन

Opening : देखे, क्र० १६०२।
Closing : चतुर्वर्णसघप्रसीदन्तु प्रीयन्ता शांतिभवन्तु कीर्तीभवतु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनधान्य तथास्तु ।
Colophon : इति पुण्याहवाचन लघु सम्पूर्णम् ।

१६०६. पुण्याहवाचन

Opening : देखें, क्र० १६०२।
Closing : देखे, क्र० १६०२।
Co'ophon इति पुण्याहवाचन सम्पूर्णम् । सवत् १८६६ साके १७३२ प्रमादनाम महरेतीथ श्रात्र (ण) मासे शुक्लपक्षे षष्टम्या तद्दिने लिखित कारजा नगरे द० देवमनराय स्वकरेण स्व-पठनार्थं ज्ञानावर्णिकर्म्मक्षयार्थम् । श्री सरस्वत्यै नम ।

१६०७ पुण्याहवाचन

Opening . ॐ पुण्याह ३ प्रीयंता ३ भगवतोर्हता सर्वज्ञा। सर्वदर्शिन सकल-वीर्याः सुसकलसुखकरास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वरपूजिता ... ।

Closing : स्वस्तिभद्र चास्तु ३ न स्वी क्ष्वी हस स्वस्ति स्वस्ति
स्वस्ति भवतु मे स्वाहा।

Colophon : इति पुण्याहवाचन ।

१९०८. पुष्पाजलि पूजा

Opening : वीरदेव को प्रनमि करि अर्चा करो त्रिकाल ।
पुष्पाजलिव्रत कथा को सुनौ भविक अघटाल ।१।।

Closing : घाति कम निरमूलन करो निर्वानिपद तव अनुसरै ।
जा विधि व्रत प्रभाव तित लह्यो, ललितकीर्ति कवि इम विधि
कह्यो ।।

Colophon : पुष्पाजलिव्रत कथा समाप्तम् ।

१९०९ रत्नत्रयपूजा

Opening : चिदगतिफणविष हरन मन, दुख पावक जलधार ।
शिवसुख सुधा सरोवरो सम्यक त्रयी निहार ।।

Closing : एक सरूप प्रकाश निज वचन कह्यो न जाय ।
तीन भेद व्यौहार सब द्यानत को सुखदाय ।।

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम् ।

१९१०. रत्नत्रयपूजा

Opening : पचभेद जाकै प्रगट ज्ञेय प्रकासन भान ।
मोह तपन हर चद्रमा, सोई सम्यक् ज्ञान ।।

Closing देखे, क्र० १९०९ ।

Colophon : इति रत्नत्रय पूजा ।

विशेष— इसी से ध्यानपूजा, समुच्चय आरती भी अन्तर्भूत है ।

१६११ रत्नत्रयपूजा

Opening : देखे, क०१६१२ ।

Closing मोहाद्रिसकटतटीविकटप्रवास संपादिने सकलसत्वहितकराय ।
रत्नत्रयाय शुभहेतिसमप्रभाय पुष्पांजलिं प्रविमल हि अवतारयामि ॥

Colophon . अनुपलब्ध ।

१६१२ रत्नत्रय-पूजा

Opening श्रीमतसन्मत नत्वा श्रीमत, सुगुरुनपि ।
श्रीमदागमत श्रीमान् वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम् ॥१॥

Closing देखे, क० १६०६ ।

Colophon इति रत्नत्रय जी की भाषा आरती सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६२३ ।

१६१३. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखे, क० १६१२ ।

Closing : इति दर्शनस्तुति मुक्ति ॥६॥

Colophon . इति श्री रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

१६१४ रत्नत्रय-पूजा

Opening देखें, क० १६१२ ।

Closing : सम्यक दरशन ज्ञाण व्रत शिवमग तीनों मई ।
पार उतारण जांन द्यानत पूजो व्रत सहित ॥१०॥

Colophon : इति समुच्चय पूजा जी समाप्तम् ।

१९१५ रत्नत्रय-पूजा

Opening देखे,, क्र० १९१२ ।

Closing : अतुलसुखनिधान ... ... दर्शनाख्य सुधातु ॥३॥

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१९१६. रत्नत्रय-जयमाला

Opening : जय जय सद्दर्शन भवभव निरमन मोह महातरु वारण ।
उपसम कमल दिवाकर सकल गुणाकर परम मुक्ति सुखकारण ॥

Closing . मदरागकषायरज समन भवदुर्जयदातत्रयदमनम् ।
परम शिवसौख्यनिवासकर चरण प्रणमामि विशुद्धितरम् ॥

Colophon नहीं है ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६३२ ।

१९१७. रविव्रत उद्यापन

Opening पार्श्वनाथमहं वंदे सर्वविघ्ननिवारकम् ।
कमठोपसर्गहन्तं जागीकल्पतरु परम् ॥

Closing । रविव्रतमहापूजा श्लोकपिण्डीकृताधुना ।
पचात्माविने विप्र लेखक चित्ततप्पका ॥

Colophon इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते आदित्यवार व्रत उद्यापन विधि पूजा समाप्तम् ।

१९१८ रविव्रत-पूजा

Opening . इश्वाकुवंशकुलमंडनअश्वसेनो तद्वल्लभ प्रतिवसाजिनवामदेवि ।

तस्या जिन विमलमूर्त्तिसुरेद्रवंद्य त्रैलोक्यनाथजिनपार्श्वपर नमामि ॥

Closing . इति रविव्रत पूजा सुरपति पद दूजा जे करत नव व्रत सही ।
मन वचकाय धावही सो सुगद पावही पार्श्वनाथ फल देत सही ॥१२॥

Colophon इति रविव्रत पूजा सम्पूर्णम् ।

१६१६· रविव्रत-पूजा

Opening देखे, क० १६१८ ।

Closing .इक्ष्वाकीवंशभूषननृपो श्रीअश्वसेनोनुज,
वामानदनइन्द्रचद्रधरनी ससेव्यमान सदा ।
प्रत्याहार्य विभूषित वसुबुधि कल्याणकारी सदा,
ते तुभ्य विदधातु वाछितफल श्रीपार्श्वकल्पद्रुम ॥१२॥

Colophon इति रविव्रत पूजा ।

१६२० ऋषिमंडल-पूजा

Openign प्रणम्य श्री जिनाधीश — वक्षे पूजादिमलपश ॥

Closing श्रीमच्चारुचरित्र - नदीगुणादिमुंनि: ॥

Colophon इति ऋषिमडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभि. श्लोकं ग्रथाग्रथ । ३८० । सवत् १८१८ कार्तिक शुक्ले १४ बुद्धे लि० पडित श्री हेमराजेन हुकमचद गहोई श्रावकस्य पठनार्थम् ।

१६२१. ऋषिमडल-पूजा

Opening : देखें, क० १६२० ।

Closing : देखें, क्र० १६२० ।

Colophon : इति ऋषिमडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभि श्लोक ग्रथाग्रथ । सवत् १६५६, वैशाख कृष्ण ८ मगलवारे लि० ।

१६२२ ऋषिमडल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६२० ।

Closing देखे, क्र० १६२० ।

Colophon : इति ऋषिमडलपूजा विधि समाप्तम् ।

१६२३ ऋषिमडल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६२० ।

Closing दखे, क्र० १६२० ।

Colophon इति श्री ऋषिमडलपूजा समाप्तम् ।

१६२४ सहस्रनाम-पूजा

Opening : पंचपरमगुरु कोनमों उर धरि परम सुप्रीति ।
तीरथराज जिनन्द जी, चोबीसो धरि चीत ।।१।।

Closing : सम्वत् विक्रम भूप के जुग गतिग्रह ममि जान ।
यह रचना पूरी भई मगल मुद सुखथान ।।
सिखिरचद कृत पाठ यह वन्यौ अनुपम रास,
जो पढसी मन लाय के पासी सुख्य सुवास ।।

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मिति पौषशुद्ध ८ बार शुभ बुध संमत् १६४२ । को पूर्ण हुई सो जयवत प्रवर्त्तो । श्रीकल्याणमस्तु । शिखिरचंद अग्रवाल गोइल गोती कवि श्री वृ दावन के लघु सुअन कृत जयवतो ।

१९२५. सकलीकरण

Opening : इन्द्रश्चैत्यालय गत्वा वीक्ष्य यज्ञागसज्जिनान् ।
यागमगलपूजार्थं परिकर्म्मात्रिरेदिदम् ॥१॥

Closing : सिद्धार्थान् अभिमन्त्र्य परमत्रेण सर्वविघ्नोप ममर्थान् सर्वदिक्षु क्षिपेत् ॥

Colophon : इति सकलीकरण सपूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र० पृ० १९४ ।

१९२६ सकलीकरण विधि

Opening : धृत्वा रेषरपारहारपटकं ग्रैवेयका लरक,
केयूरागदमर्दित्र धुरकटी सूत्रा च मुद्राकितम् ।
चनत्कु डलरार्णपूरममल पाणिद्वय ककणम्,
मजीर कटकपत जिनपते श्रीगधमुद्राकिते ॥

Closing : सर्वराजभय छि० सर्वचोरभय छि० सर्वदृष्टिभय छि० सर्वदृष्टिमृगभय छि० सर्वसर्पभय छि० सर्ववृश्चिकभय छि० सर्वग्रहभय चि० सर्वदोषभय छि० सर्वव्या · — ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१९२७ सकलीकरण विधि

Opening : वासपूज्यं जगत्पूज्य लोकालोकप्रकाशकम् ।
नत्वा वक्ष्येत्र पूजाना मत्रान्पूर्वपुराणत ॥

Closing : लोकमाचोक्त श्री सोमसेनमुनिभि शुभमत्रपूर्वम् ।

Colophon : इति श्री सकलीकरण विधि सम्पूर्णम् स० १९२१ ।

१९२८. सकलीकरण विधि

Opening : देखें, क्र० १९२५ ।

Closing : देखें, क्र० १९२५ ।

Colophon : इति सकलीकरण सम्पूर्णम् । ब्र० पण्डित परमानन्देन बाबू धर्म-कुमारस्य पठनार्थं मिति आषाढ़ शुक्लपक्षे शनिवासरे संवत् १९५५ का । शुभ भूयात् ।

१९२९. समाधिमरण

Opening : गौतम स्वामी वंदु सिरनामी मरण समाधि भला है ।
मोक्ष पाऊ नीस दिन ध्याउ गाउ वचन कलायें ।।१।।

Closing : हास आवे शीव पद पावे बील सुख अनन्ता ।
द्यानत सोगत होय हमारी जैनधर्म जइवत ।।२०।।

Colophon इति श्री समाधिमरण समाप्त ।।

१९३०. सामायिकपाठ

Opening : आदि ऋषभ सनमति चरम तीर्थ कर चउबीस ।
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि नमो धारि कर सीस ।।

Closing ऐसे सामायिक पढौ सार जान मुनिवृंद ।
धर्मराग मति अल्प फुनि भाषामय जयचंद ।।

Colophon . इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्नम् ।

१९३१. सामायिक वचनिका

Opening : देखें, क्र० १९३० ।

Closing : देखें, क्र० १९३० ।

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् ।

१६३२ समवशरण

Opening : आज गई थी समोसरण मैं कहाँ कहुँ हीत हेत री ।
बार बार दरवाजे चहुदिस परखा कोट समेत री ॥१॥

Closing : परम सरस्वती सिव — - गहे निज ग्याने तीन जु वरी ।
कहे दीप याते तुम सेवा भजै भावकर उरसो री ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६३३. समवशरन

Opening धूल साल देखे मूल साल नरहत,
डर मानिषल देखें जो ईमान महामानी को ।
वेदी के विलोकै आप वेदी पर वेदी होत,
निरवेद पद पावै याते है कहानी को ।

Closing · धरि लई सुध अनुभूत को ज्ञानलोग भोगी लयो ।
अनुभाग बध स्थिति भागतें, भागरागदारिद गयला ॥

Colophon : इति श्री मोक्षमार्ग सम्पूर्णम् । सवत् १७७४ वर्षे पोसमासे शुक्लपक्षे सप्तमी शनिवासरे लिखितम् । शुभमस्तु ।

१६३४ सम्मेदाचल-पूजा

Opening : मुक्तिकान्ता प्रदातार स्थानेषु स्थानमुत्तमम् ।
मुक्ति तीर्थ कर प्राप्य बदे शैलेन्द्रसिद्धिदम् ॥१॥

Closing : बजीवद्रमर्तेद्रवेद्रतरणी · प्राप्नुवन्ति शिवम् ॥१३॥

Colophon : इति सम्मेदाचल पूजनविधान समाप्तम् । सवत् १८२६ भाद्र वदि १२ भौम दिने लिखि ।

१९३५. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : गिरसम्मेदतैं बीस जिनेश्वर शिव गए,
अवर असंखित मुनि तहा तैं सिद्ध भए।
वदौ मन वच काय नमो सिर नायकै,
तिष्ठौ श्री महाराज सबै इति आयकै ॥

Closing : ए बीस जिनेश्वर नमित सुरेश्वर निन मघया पूजन आवैं।
नर नारी ध्यावैं सो सुख पावैं रामचन्द्र जिन सिर नावैं ॥११॥

Colophon इति सम्मेदशिखर पूजा सम्पूर्णम्।

१९३६ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening . परमपूज्य जिन बीस जहाँ त शिव लये,
औरहु बहुत मुनीश शिवालै सुखमये।
ऐसे श्री सम्मेद शिखर नमिहू मुदा,
दरब साजि शुचि रूचि युत पूज रचो सदा ॥

Closing : जय एक बार वदे जु कोय
तसु नर्क तिर्य च कुगत न होय।
इत्यादि घनी महिमा अपार
प्रणमो मनवचकर सीसधार ॥

Colophon : 'इति'।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४१।

१९३७ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्टसुखथान।
शिखर समेद सदानमों होई पाप की हान ॥

Closing । नेमीनाथ श्री अरहनाथ श्री मल्लाना के पूजे पाये,
श्रीप्रमनाथ श्री सुविधपद्म श्री मुनिसुव्रत को निचें जाये।
श्रीचन्द्रप्रभु कोस एक पर लौट फेर मुनसोव्रत आये।
शीतल अनत संभव अभिनदन चित्त भाये वदो सुख पाये।

Colophon । इति कवित्त सपूर्णम्।
मनी भादो, वदी ५, वारगुरु सम्बत् १६२६।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४२।

१६३८. सम्मेदशिखरपूजा-विधान

Opennig प्रणम्य सर्वज्ञमनतबोधामाप्तप्रद सद्गुणरत्नसिद्धम्।
कुर्व्वेत्रिशुध्या सुभ्रता हि तीथ सम्मेदशैलस्थजिनेन्द्रपूजाम्।।

Closing चतु मुनीन्द्रिर्भि श्लोकैमानूछदोवचोमये।
ज्ञातव्या प्रथसख्या नृपणकै लेखकोत्तमै। ५।।

Colophon । इति भट्टारक श्री धर्म्मचद्र विनुच र पडित गगादास कृत सम्मेदा-चलपूजा समाप्तम्।

१६३६. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening . पच परमगुरु सारदा सीस ।।१।।

Closing सिखरसमेद भानिये ।।

Colophon । इति सवैया सपूर्णम्।

१६४० सम्मेदशिखर-पूजा

Opening । देखें क्र० १६३७।

Closing । तुच्छ बुद्ध मोरी सही पडीत करो विचार।
भूल चूक अब होई जहा लीजो चतुर सुधार ।।६।।

Colophon : इति श्री सम्नेदसिखर जी सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

१६४१. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening अमल गग सुवारिणां भरि झारिणा सुखकारिणा ,
भवतापनिवारिणा मलहारिणा कर्मवारिणा. ।
सम्मेदाचलपर्वत अपवर्गत सुखअर्पितम्,
वीसतीर्थसुपूजित भवर्वाजित मुक्तिसर्जितम् ।।

Closing . यः यात्राकरि भावसुद्धमनसा ते स्वर्गमुक्तिप्रदा
ते नारकतिर्य चगतिविमुखा सद्भावनाभावत ।
तेषा पुत्रकलत्रमित्रभवता मल्लक्ष्मी लीलाकरा
सत्समेदगिरिसु धर्ममत कुर्वन्तु वो मगलम् ।।

Colophon : इति श्री सम्मेद जी की पूजा सलाप्ता: ।

१६४२. समुच्चय चौवीसी पूजा

Opening : रिषभ अजित · पूजत सुरराय ।।
Closing . मुक्ति मुक्ति दातार – सिव लहै ।।
Colophon इति श्री समुच्चय पूजा सपूर्णम् ।

१६४३ शातिनाथ-पूजा

Opening : शाति जिनेश्वर नमू तीर्थ वसु दुगुनही ।
पचमचक्री अनता दुविधि षटगुनीही ।।
तृणवत् रिधि सब छारि धरि तप सिववरी ।
आह्वानन विधि करूं बार त्रय उच्चरी ।।

Closing प्रभु कै चैय प्रमाण सुरतन धरि सेवा करत सोहयो ।
देवी वृद जिनवर को जनम कल्याणक गायो ।।

Colophon : इति श्री सपूर्णम् ।

१६४४· शातिनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६४३ ।

Closing : इति जिनमाला अमल रसाला ·· — सु दर ततषिन वरई ॥

Colophon : इति श्री शातिनाथ जी की पूजा सपूर्णम् ।

१६४५ शातिपाठ

Opening : शांतिजिनशशिनिर्म्मलवक्त्र सीलगुणव्रतसयमपात्रम् ।
अष्टसहस्रसुलक्षणगात्र नौमि जिनोत्तममबुजनेत्रम् ।

Closing क्षेम सर्वप्रजाना प्रभवतु बलवान् धार्म्मिको भूमिपाल,
काले काले च सम्यक् वर्षतु मघवान व्याधयो यातु नाशम् ।
दुर्भिक्ष चौरमारिक्षणमपि जगत मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्र धर्मचक्र प्रभवतु सतत सर्व्व शौख्यप्रदायि ॥

Colophon इति श्री शातिजिनस्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५६ ।

१६४६ शातिपाठ

Opening : देखें, १६४५ ।

Closing : मत्रहीन क्रियाहीन श्रद्धाहीनं तथैव च ।
स्तवनभक्तिः न जानामि क्षमस्व परमेश्वर, ॥

Colodhon : इति विसर्जन मत्र सम्पूर्णम् ।

१६४७ शांतिपाठ

Opening : देखें, क्र० १६४५ ।

Closing : आह्वानाय पुरादेव लब्धभागा यथाक्रमम् ।
मयाभ्यर्चिता भवता सर्वे यातु यथा स्थितिम् ।

Colophon इति श्री शांति सम्पूर्णम् ।

१६४८ शांतिपाठ

Opening : देखें, क्र० १६४५ ।

Closing : आह्वानन नैव जानामि नैव जानामि पूजनम ।
विसर्जन नैव जनामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
स्वस्व स्थान गच्छतु स्वाहा ।

Colophon : इति शांति पाठ ।

१६४९ शांतिचक्र-पूजा

Opening : अर्हन्बीजमनाहत च हृदये ... यद्वाछितम् ॥

Closing निशेषश्रुतबोधवृतमतिभि प्राज्ञैरुदारैरपि
स्तोत्रैर्यस्य गुणार्णवस्य हरिभि ।
– ... श्री शांतिनाथ सदा ॥

Colophon : इति श्री शांतिचक्र पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ३७६ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६ ।

१६५०. शातिधारा

Opening : श्री खण्डोद्रवकदमेसु रूचिरं कर्पूरचूर्ण.मितैः
समिश्रैरूतिगधिलं नवनदिकसारकूपादिभि. ।
• — देवा जिनस्थापये ॥१॥

Closing सर्व्वदेशमारी छिद-२ भिद-२ सर्व्वविषभय छिद-२ भिद-२
सर्व्वक्रूररोगवैतालशाकिनी डाकिनी भय छिद-२ भिद-२ सर्व-
वेदनी छिद२ भिद-२ सर्वमोहनी ••• • • ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६५१ शातिधारा

Opening सिद्धावल श्री ललनाललाम मही महीयो महिमाभिरामम् ।
आसार ससार यथोपपराम नमामिनाभेय जिन निकामम् ॥१॥

Closing नेत्रे दद्वरूजाविनाशनकर ••• — स्नानस्य गधोदिकम् ॥

Colophon : इति शांतिधारा ।

१६५२ शातिधारा

Opening : ॐ ह्री श्री क्ली रो हं व भ ह्र स त प व व म म ह ह स स
त त पं प ••• — •••।

Closing : देखें, क्र० १६५१ ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । इति सिहासन प्रतिष्ठा सपूर्ण ।
शुभमस्तु ।

१९५३. सप्तर्षि-पूजा

Opening : श्रीमद्गणीन्द्र-हिमवन्मुखकदराया. वाग्गीसप्तन्नु-रिलिवाक विनिर्गतायाम् ।
स्नातानेकविग्रधर्मतरंगिकायां योगीश्वरानघरत्नधरान् समर्च्चे ।

Closing : असमसुखसार तीक्ष्णदंष्ट्राकराल स्वकरकरजटिल दीर्घजिह्वा-करालम् ।
सुघटविकृतचक्र शाविदासप्रसस्य भजतु नमतु जैन भैरव क्षेत्रपालम् ॥१॥

Colophon अनुपलब्ध है ।

१९५४ सप्तर्षि-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९५३ ।

Closing : ए रिसि व्रत — ····· बसुरिद्धिह ॥

Colophon : इति सप्तऋषि पूजा समाप्तम् ।

१९५५. सप्तर्षि-पूजा

Opening वंदेह विश्वसेनेश — ··· · ज्ञानरूपं निरंजनम् ॥१॥

Closing मानव विकृति येषां ··· ··· तत्व तत्वार्थवेदिनः ॥१४॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६५६. सरस्वती-पूजा

Opening : ॐ नमः प्रमहित-परमार्थसुद्धसिद्धांतसारे,
जिनपतिसमयेऽस्मिन् सारतां सबधान: ।
जयति समवसारकीत्तत: सन्मुनिन्द्रैः
स बसतु मम चित्ते सच्छ्रुतज्ञानरूप' ।

Closing : अज्ञान तिमिरहर ज्ञान दिवाकर, पढ़े सुणे जे भाव घनी ।
ब्रह्म जिनदास भासि विविध प्रकासि मनवंछित फल बुद्धिघणी ।।

Colophon . इति सरस्वति जयमाला सपूर्णम् ।

१६५७ शास्त्र-पूजा

Opening : पय पयोधेस्त्रिदशापगायाः पय. पय पेयतयोपयोग्यम् ।
समतभद्रा श्रुतदेवतायैः भवत्या परायै. परया ददामि ।।१।।

Closing · जिनवाणी के ज्ञान तैं सूझे लोक अलोक ।
द्यानत जग जंयत को सदा देत है धोक ।।११।।

Co'ophon : इति शास्त्र पूजा ।

१६५८. शास्त्र-पूजा

Opening : जननमृत्युजराक्षयकारण ' ... अहं परिपूजये ।।१।।

Closing : मलयकीर्ति कृतामपि सस्तुति पठति य सतत मतिमान्नर: ।
विजयकीत्तिगुरुकृतमादरात् सुमतिकल्पलताफलमस्तुति ।।१०।।

Colophon : इति सरस्वति स्तुति विधानम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६८ ।

१६५६. शास्त्र-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : दुरिततिमिरहंस मोक्षलक्ष्मी सरोजम्,
मदन भुजगमंत्र चित्तमातंगसिंहम् ।
विसनघनसमीर विश्वतत्त्वैकदीपम्,
विषयरसकरीजाल ज्ञानमाराधयेत्वम् ।।

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्तम् ।

१६६०. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : देखें, क्र० १६५७ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा जी समाप्तम् ।

१६६१. शास्त्रपूजा

Opening : देखे, क्र० १६५८ ।

Closing : स्तुत्वेति ········ समुद्धरेत् ।।२।

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्ता ।

१६६२. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : देखें, क्र० १६५८ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा सम्पूर्णम् ।

१६६३. शास्त्र जयमाला

Opening : सपयसुहकारण ··· ··· संयमकरणं ।।१।।

Closing : इय जिनवरवाणी ' ' णवि उत्तरई ॥१३॥

Colophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी की जयमाल सम्पूर्णम् ।

१९६४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा

Opening : सिद्ध सिद्धार्थद सुद्ध सिद्धात्मान स्ववर्गगम् ।
ध्रौव्योत्पादगुणे युक्त वदे त जगहेतवे ॥

Closing : विश्वभूषण तस्य पट्टे प्रसिद्ध. कविनायक: ।
तेनेद रचित: पाठ' सत्रुंजयाख्याभिधानक: ॥

Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मजो श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचितं शत्रुञ्जय गिरिपूजा समाप्तम् सवत् सं १० ? वर्षे अश्विनी शुक्ल द्वितीयां पटनानामनगरे श्रीमूलसघे अवावती गच्छ भट्टारकाधिराज श्री सुरेंद्रकीर्तिजी तच्छिष्येण विनय ताविद तेजपालेनेय पूजा लिखिता । सत्रु जय पूजाया· कमलानि प्रथम वलये ।१॥ द्वितीय वलये ॥८॥ तृतीये ॥१२॥ चतुर्थे ॥१३॥ पचमे ॥३२ एव ६६॥ कल्याणमस्तु । इति सपूणम् ।

१९६५ सिद्धपूजा

Opening : उर्ध्वाधोरयुत सविदुसपर ब्रह्मासुरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदल तत्संधितत्वान्वितम् ।
अत: पत्रतटेष्वनाहतयुत ह्रींकार सवेष्टितम् ,
देव ध्यायति सुमुक्ति सुभगो वैरीभकंठीरव ॥१॥

Closing : असमसमयसार चारुचैतन्यचिन्हम्,
परपरणतिमुक्त पद्मनदीन्द्रवद्यम् ।
निखिलगुणनिकेत सिद्धचक्र विशुद्धम्,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोभ्येति मुक्तिम् ।

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० २००
जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६६० ।

१९६६. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : आवृष्ट सुरसपदं विदधति ' ' साराधनादेवता ॥

Colophon ; इति सिद्धपूजा जयमाला समाप्ता ।

१९६७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : देखें, क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा जयमाला समाप्तम् ।

१९६८. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing . देखें, क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा समाप्ता ।

१९६९. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : देखें, क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा समाप्ता ।

१९७०. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : जो पूजैं गावैं घृत चढावैं मन लगावैं प्रीति सौं ।
कुस्याल चन्द्र कहैं कहां लौं जस जिनौ का रीतसौं ।
जे नाम अक्षर जपैं हरषैं धन्य ते नरनारि हैं ।
प्रभु पतित तारन दुख निवारन भगत को निरतार हैं ।

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी समाप्तम् ।

१९७१. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : देखें, क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजन प्रतिज्ञा सम्पूर्णम् ।

१९७२. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९७० ।

Closing : देखें, क० १९७० ।

Colophon इति श्री सिद्धमहाराज की पूजा सम्पूर्णम् ।

१९७३. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : सिद्ध बसैं ससार, सिद्धन की पूजा करो ।
आवागमन निवार, मन वच तन पूजा करो ।।

Colophon : इति सिद्धपूजा संपूर्णम् ।

१९७४. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु सुदृष्टिरस्तु धनधान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु विजयोरस्तु भयोरस्तु पुत्रपौत्रोद्भवोरस्तु तव सिद्धप्रसादात् ॥१॥

Colophon : इति सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

१९७५. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : कृत्याकृत्तिमचारुचैत्यनिलयान् दुष्कर्मणा शान्तये ॥

Colophon : नही है ।

१९७६ सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : देखें क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा ।

१९७७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क० १९६५ ।

Closing : देखें, क० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा माला सम्पूर्णम् ।

१६७८. सिद्धपूजा

Opening : परम ब्रह्म परमातमा परम जोत परमीस ।
परम निरजन परम सिव नमो सिद्ध जगदीस ॥१॥

Closing : सुद्ध विसुद्ध सदा अविनासी .... जाने सो दीवाना आतम
को मह ॥

Colophon : संपूर्ण ।

१६७६. सिद्धपूजा

Opening : इत्थ चक्रमुपास्य दिव्य ध्यान फल न्यस्तुते ॥

Closing : आकृष्ट सुरमपदा विदधति मुक्तिश्रियोवश्यताम्........ पायात्प-
चनम कृपाक्षरमयी साराधनादेवता ॥१॥

Colophon नहीं है ।

१६८०. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज्य चौबीस जिह जिह थानक सिव गये ।
सिद्ध भूमि निम दीस मन बच तन पूजा करो ॥१॥

Closing : जो तीरथ जावै पाप मिटावै ध्यावै गावै भक्ति करै ।
ताके जस कहिए सपति लहिए गिर के गुन को बुद्ध उचरै
॥१०॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१६८१. सिद्धचक्र-पूजा

Opening : जिनाधीस सिवईस नमि सहस गुणित विस्तार ।
सिद्ध चक्र पूजा रचों शुद्ध त्रियोग संभार ॥

Closign : जिन गुण करण आरम्भ हास्य कोधाम है।
बायस का नहिं सिंधु तारण को काम है ॥

Colophon इति श्री सिद्धचक्रपाठभाषा समाप्तम्।
संवत् १९६४ फाल्गुन शुक्ल ९ लिखितम् ॥

१९८२ सिद्धचक्र-पूजा

Opening : अरिहत पद ध्यातो थको दव्वह गुण परजाय रे।
भेद छेद करि आत्मा अरिहतरूपी थाय रे ॥

Closing : योग असख्य ते जिण कह्या नव पद मोक्ष ते जाणो रे।
एह तणें अविलबनें आतम ध्यान प्रमाणो रे। २१ वी० ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१९८३. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening वदौ श्री भगवानकू भावभगत सिरनाय।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ॥

Closing सवत् अष्टादश सही सत्तर एक महान।
भादौ कृष्ण जु सप्तमी पूरन भयौ सुजान ॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम्।

१९८४ सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening श्री आदीश्वर वदौ महान, कैलास सिखर तैं मोक्ष जांन।
चपापुर तैं श्री वासपूज, तिन मुकति लही अति हरषि हूज ॥१॥

Closing : देखें, क्र० १९८३।

Colophon : इति सिद्धक्षेत्र पूजा।

१६८५ शिखर-विलास-पूजा

Opening : जेठ शुक्ल चतुर्थ दिवस ········करिकै बहुत उछाह ।।

Closing : ··· ध्यावै सो सुख पावै रामचन्द्र निति सिरनावैं ।।

Colophon इति श्री शिखर विलास जी की पूजा सम्पूर्णम् । लिखते सीकर-मध्ये — मिति फाल्गुन सुदि अठाई संवत् १६४२ । का लिखते बैठराज दिवाण जी सुखलाल जी का पोता भूल चूक सुद्ध करो ।

विशेष—इसके Closing के पहले का बहुत से पत्र गायब हैं ।

१६८६ सील-बत्तीसी

Opening सीलवतीसीवर्णवउ ·· ···· · सदा सुमरो रिसहेस्वर ।१।।

Closing : हरिहर इद नरिंद नरसुर जप हिए कान्ताजेन नारी ।
संजम धरम सुगण अकू जपहि जसु ते हरि ।।

Colophon : इति सीलबतीसी समाप्तम् ।

१६८७. सिंहासन-प्रतिष्ठा

Opening : श्रीमद्वीरजिनेशानां प्रणिपत्य महोदयम् ।
नव्यासनस्य सूत्रेण शुद्धि वक्ष्ये यथागमम् ।।

Closing : नेत्रे द्व ··· नाशनकर गात्र पवित्रीकरम्
वात पित्तकफादिदोषरहित सूत्र च सूत्र भवेत् ।
पाप कर्म कुरोगनाशनपर राहुक्षय कुर्वते,
श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगल स्नानस्य गंधोदकम् ।

Colophon · इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ संवत् १६५५ । श्री इदं पुस्तक लिखावा भगवानदीन पंडित ।

देखें, जै. सि. भ. ग्र., क्र. ६६४ ।

१९८८. शीतलनाथ पूजा

Opening : सीतल जुगपद नमू धर्मदमधा इम भाष्यौ,
उत्तमषिमा सु आदि अंत ब्रह्मचर्यं सन्ध्यायौ।
सुनि प्रतिबोध हूयो भवि मोक्ष मारग कौं लागै,
आह्वानन विधि करु चलण जुग करि अनुरागै ॥१॥

Closing : पूर्वाषाढ़ नक्षत्र माघ वदि द्वादशी,
जनमैं श्री जिननाथ नियोगे सब हूसी।

Colophon अनुपलब्ध।

विशेष— इसके बाद अनन्तनाथ, पार्श्वनाथपूजा, शान्तिनाथ पूजा तथा पद्मावती पूजा अधूरी-अधूरी लिखी गई है।

१९८९ स्नानपूजा-विधि

Opening : प्रथम हुँ निस्सही पूर्वक देह रैं जी आवी अग,
सुद्ध करी नवा वस्त्र पहरी स्वभाल तिलक करिनै ।

Closing : देवचन्द्र जिन पूजतां करता भवपार।
जिन प्रतिमा जिन सारषी कही सूत्र मझार ॥

Colophon : इति स्नानपूजा विधि सपूर्णम्।

१९९० सोलहकारण-पूजा

Opening : एन्द्रं पद प्राप्य पर प्रमोद धन्यात्मनामात्मनिमन्यमान ।
दृक्-शुद्धिमुख्यादि जिनेन्द्रलक्ष्मी महामोह षोडशकारणानि ॥

Closing . भक्ति प्रदा सुरेन्द्रमस्तुतमिद तीर्थंकराणां पदम्,
लब्धु वांछति योनि (पि) वा चतुर ससारभीताशयै ॥
श्रीमद्दर्शनशुद्धिभूरिविनय ज्ञान तदा तत्फलम्।
भक्त्या षोडशकारणानि सतत सपूज्य आराधयेत् ॥

Colophon नहीं है।

१६६१. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६० ।
Closing : इय सोलाकारण — .... — सिद्धवर गणहियइ हरा ।
Colophon इति सोलाकारण पूजा जयमाल सपूर्णम् ।

१६६२ सोलहकारण-पूजा

Opening देखें, क्र० १६६० ।
Closing इण बहु भविय - — .. सुकम्पवि — ... ।
Colophon : अनुपलब्ध ।

१६६३ सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६० ।
Closing : देखें, क्र० १६६१
Colophon . इति श्री सोलहकारण पूजा सम्पूर्णम् ।

१६६४. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६० ।
Closing : देखें, क्र० १६६१ ।
Colophon : इति षोडसकारण अंग पूजा समाप्ताः ।

१६६५. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६० ।

Closing : एई सोले भावना सहित धरै व्रत जोइ ।
देव इन्द्र नरविंद पद द्यानत शिव पद होइ ॥

Colophon : इति श्री सोलै कारण पूजा जी समाप्तम् ।

१६६६. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६० ॥
Closing : एते षोडशभावना – मोक्ष च सौख्यास्पदम् ॥
Colophon : इति श्री षोडशकारण जयमाला भाषा संस्कृत पूजा समाप्तम् ।

१६६७. सोलहकारणपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६० ।
Closing : देखे, क्र० १६६१ ।
Colophon : इति षोडशकारण पूजा ।

१६६८. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६० ।
Closing : भविभवियणिवारण सोलहकारण पयडमिगुण-गण-सायर' ।
पणविवि तित्थकर — ··· ॥
Colophon : अनुपलब्ध ।

१६६६ सोलहकारण-पूजा

Openign सरब परब मैं बडा अठाई परब है,
नंदीश्वर स्वर जांहि लिए बहु दरब है ।
हमैं सकति सो नांहि इहां करि थापना,
पूजैं जिनग्रह प्रतिमा है हित आपना ॥

Closing : देखें, क० १६६५ ।

Colophon : इति सोलैकारण पूजा ।

२०००. सोलह्कारण-पूजा

Opening : मैया मेरी कूरिया हसुन ?
आवे मेरी कृरिया हसुन ।
लै खोज मेरी हम बहूहमको न विसरो ये कहमा ।
कर हे सीता वीसेर हम ॥१॥

Closing साझ सुवेरा वेर न जाने न जाने धूप अब बरखा जी ॥

Colophon : नही है ।

२००१ सोलह्कारण-पूजा

Opening सोलैकारन भाय तीर्थंकर जे भये,
हर्षे इन्द्र अपार मेरु पै ले गए ।
पूजा करि निज धन्य लख्यौ बहु चावसौं
हमहूं षोडस भावन भावें भाव सौं ॥

Closing देखे, क० १६६५ ।

Colophon · इति सोलह कारन पूजा सपूर्णम् । भाद्र शुक्ल १० गुरु सं० १६६५ आरा मे बाबू हरिदास ने लिखा बाबू अनतकुमार के पढ़ने हेतु । शुभम् ।

२००२. सोनागिरि-पूजा

Opening : जबूद्वीप मझार भरत क्षेत्तर कह्यौ,
आरज षड सुजान बड़ देसै लह्यौ ॥

सोनागिर अभिराम सुपर्वत है तहाँ ।
पच कोडि अर अरध मुक्ति पहुंचे तहाँ ॥

Closing : सोनागिर जैमाल का लघुमति कहि बनाय ।
पढ़ै गुनै जो प्रेम सो तिनको पातक जाय ॥१७॥

Colophon इति सोनागिरि पूजा सपूर्णम् ।

२००३· स्तवन जयमाल

Opening श्रीमन् श्रीजिनराजजन्मसमये इद्रादिहर्षायमान् ।
हस्ताब्धविराजमानत्रिपुरीपुष्पाजलि दापयन् ।
इन्द्राणीपरिवारभृत्यसहिता· देवागनावृत्यवान,
नानागीतविनोदमगलविधौ पूजार्थमादसौ ॥१॥

Closing : जिनवर वरमातामाननीय समर्थो स जयति जिनराज लालचद्र विनोदी ।
जिनवरपदपूज्य भावनेंद्रसुपूज्य सकलमलविमुक्त ते लभते विमुक्तिम् ।

Colophon इति श्री स्तवन जयमाल सम्पूर्णम् ।

२००४. स्वाध्याय पाठ

Opening · शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे ।
नम श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान-जिनेशिने ॥१॥

Closing । उज्जोवण मुज्जोवण णिव्वाहण ' — भणिया ॥३॥

Colophon । इति स्वाध्याय पाठः ।

२००५. श्यामलयक्ष पूजा

Opening : महिषासीनकराष्ठासित नख-शिखसुन्दररूप ।
स्थापित यक्ष अष्टमजिना श्यामलरूप अनूप ॥

Closing : श्यामल यक्ष समर्चं अर्चं पूजे जो प्राणी ।
तनमन कर आह्लाद प्रगति रुचि हृदि हरषानि ।।
तेइ अन्न धन सौभाग्य अष्टगत पद मिलि जावै ।
अजितदास मन आस पूज एहि गहि सुख पावै ।।

Colophon : इति श्री श्यामल-यक्ष पूजा सम्पूर्णम् ।

२००६. तत्वार्थसूत्राष्टक-जयमाला

Opening : उदधिक्षीरसुनीरसुनिर्म्मलै कलशकाचनपूरितशीतलै ।
पवनपावनश्रीश्रुतपूजनै जिनजुहे जिनसूत्रमहं भजे ।।१।।

Closing : इति जिनमतसूत्रे ... ... मोक्षमार्गस्य भानु· ।।

Colophon इति तत्वार्थसूत्राष्टक जयमालसहित समाप्ता ।

२००७ तेरहद्वीप-पूजा

Opening : श्री अरिहंत प्रमाण करि पच परमगुरु ध्याइ ।
तिनके गुन बरनन करौं, मन वच सीस नवाइ ।।

Closing : अचल मेरु पश्चिम सुखकार कुमुद देश बसै निरधार ।
जिन मदिर तहाँ पूजो जाइ रूपाचल पर अरघ चढ़ाइ ।।

Colophon अनुपलब्ध ।

२००८. तीनलोक-सबधी-पूजा

Opening : यह विधि ठाडो होय कै प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नासै कर्म जु आठ ।।

Closing तिहू जग भीतर श्री जिन मदिर बने अकिर्त्तम महासुखदाय ।

नर सुर खग कर वदनीक जे तिनको भविजन पाठ कराय ।।
धन धान्यादिक सपति तिनकै पुत्र पौत्र सुख होउ भलाय ।
चक्रिपद सुरपद खग इद्र होय कै करम नास शिवपुर सुखथाय ।।

Colophon : इति श्री तीनलोक-सबधी पूजा सपूर्णम् ।

२००९. तीसचौवीसी पूजा

२००६

Opening : सर्वौषडाह्वानम् मयुक्तान् ठ. ठ स्थापन-निष्टिनार्थान् ।।

Closing : सकलसुखधामात्रिकालस्य ..... शिवकान्ति ।।

Colophon : इति चौवीसी पूजा समाप्तम् ।

२०१०. तीसचौबीसी-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु णमोऽस्तु णमोऽस्तु ·· सव्वसाहूण ।।

Closing : जम्बूधातकपुष्करेषु नित्यमाप्नुते ।।

Colophon : इति मधुकरविनियौगात् सवणविभावशर्म्मणाविहिता सुहितकरो-
भव्यानां नद्यादचद्र तारा कनि इति पडित श्री भावशर्मकृत मधु-
करकारित त्रिंशतचतुर्विंशतिकार्चन समाप्तम् ।

२०११. उद्यापन

Opening : भवांभोधिनिमग्नाना जन्तुना तारणे क्षम ।
सम्थापयामि दशधा धर्म्मशर्म्मैककारणम् ।।

Closing : श्रीनाभीजिनीदो परमानदो परमसुखकरकारम् ।
भवसागरपार दुरधनिवार परम ··· ·· सुखकारम् ।।

Colophon : इति ।

२०१२. वर्द्धमान-पूजा

Opening : श्रीमतवीर हरैं भवपीर भरैं सुख सीर अनाकुल ताई ।
केहरि अंक अरी करि दंक नये शिव पंकज मोलि सुआई ।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु भक्त समेत हिये हरिषाई ।
हे करुना धन धारक देव इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ।

Closing : श्री सनमति के जुगल पद जो पूजैं धरि प्रीत ।
वृंदावन सो चतुर नर लहै मुक्त नवनीत ।।

Colophon : इति श्री वीर वर्द्धमान पूजा समाप्तम् ।

२०१३. वर्तमानचौबीसी-पाठ

Opening : वंदो पाँचो परमगुरु सुरगुरवंदत जास ।
विघन हरन मंगल करन पूजत परम प्रकाश ।।

Closing : रिषभ देव को आदि अंत श्री वर्द्धमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरन कमल को पूजै जो प्रानी गुनमाल उचार ।।
ताके पुत्र मित्र धन जीवन सुख समाज गुन मिले अपार ।
सुरपद भोग भोगि चक्री ह्वै अनुक्रम लहै मोक्ष पदसार ।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीस तीर्थंकर जिन पूजापाठ वृंदावन कृत सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे तिथौ १५, भृगुवासरे संवत् १९५२ ।

विशेष—इसके नीचे कवि नाम वर्णन भी दिया गया है ।

२०१४. वर्तमानचौबीसी-पूजा

Opening : श्री आदीश्वर आदि जिन अंतनाम महावीर ।
बन्दौं मन वच काय सो मेटौं भव भय भीर ।।१।।

Closing : चौबीसो जिनराज की महिमा कही बताई ।
पढ़ै सुनै नरनारी सब सुर शिव पहुंचे जाई ।।४३।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीसी बास ठिठाने ? की पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । कल्यानमस्तु शुभ सम्वत् १८६० । मासोत्तमे मास अग्रहने मासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां चन्द्रवासर पुस्तकमिद रघुनाथ सर्मने लेखि पट्ठनपुरमध्ये आलमगज निवसतु । लेखक पाठकयो मगलमस्तु ।। शुभ भूयात् ।

२०१५ वर्तमानजिननाम

Opening : नत्वा सिद्धसमूह च ज्ञानमूर्तिजिनप्रभम् ।
भरतैरावतास्थाना निनं· साक विदेहजं ।।

Closing भूतानागतवतर्मानजिन •• सद्भव्यसप्रार्थनात् ।।१०।।

Clolophon इति श्री अतीतवर्त्तमानागतपचभ रतैरावतत्रिशच्चतुर्विशतिका लौकिकाव्यवस्थाया वीक्ष्य कृता शुभचन्द्रेण जिनभक्तिरागात्चिर नन्दतु । इति त्रिशत्चतुर्विशतिका पूजा समाप्ता ।

२०१६. विद्यमान-बीसतीर्थ कर-पूजा

Opening : पूर्वापरविदेहेषु विद्यमान-जिनेश्वर ।
स्थापयामि अहम् अत्र शुद्धसम्यक्तहेतवे ।।१।।

Closing : श्री मदिरादियुग देवमजिन वीर्यमुनमम् ।
भूयात् भव्य सता सौख्य स्वर्ग-मुक्ति-सुखप्रद. ।।

Colophon : इति श्री बीस विद्यमान पूजा सपूर्णम् ।

२०१७. विद्यमान बीस पूजा

Opening देखे, क्र० २०१६ ।

Closing : ए बीस जिणेसर णमिय सुरासुर,
बिहरमाण मय सथुणिमा ।
जे भणई भणावइ अरु मनम वइ ,
ते पावइ सिव परमपय ॥

Colophon : इति बीस बहरमाण की पूजा जयमाल समाप्तम् ।

२०१८ विद्यमान बीस तीर्थ कर पूजा विधान

Opening : वदो श्री जिनबीसको वि हमान सुखखान ।
दीप अढाई क्षेत्र मे श्री विदेह शुभ थान ॥१॥

Closing : सम्वत्सर विक्रम विगत वसु जगग्रहमसि कद ।
ज्येष्ट शुद्ध प्रतिपद सुदि पूरन भयो सुछन्द ॥

Colophon : इति श्री सीमन्धरादि बीस तीर्थंकर पूजा समाप्तम् । शुभमस्तु ।
लिखा शिखिरचन्द भाद्रपद कृष्ण ग्यारह (एकादशी) वार
शुक्रको शुभ बेला पूर्ण करी । सो जयवन्त प्रवर्त्तो ।

२०१९ विद्यमान बीस तीर्थ कर-पूजा

Opening : श्रीमज्जबूधातुकीपुष्कराद्धद्वीपेषच्चार्यविदेहा शर स्यु ।
वेदा वेदा विद्यमानाजिनेद्रा प्रत्येक तास्तेषु नित्य यजामि ॥१॥

Closing : एते विंशति तीर्थपा अघहरा, कर्म्मारिविध्वसका,
ससारार्णव तारणैकचतुरा इद्रादिदेवैरिथा ।
अतातितगुणाकरा सुखकरा मोहाधकाराषहा,
मुक्ति श्रीललनाविलास ललिता रक्षतु वो भाक्तिकान् ॥१२॥

Colophon : इनि विंशतिविद्यमान तीर्थंकर पूजा समाप्ता ।

२०२० व्रत-विधान

Opening : चौदाशि ग्यारस ११ आर्वं ८ तीज ३ चौथ ४ एव उपवास ४५
भावनापचीसी व्रत दर्से १० पून्यो १५ एव उपवास २५ भावनां
वत्तीसी व्रत ।

Closing : *आश्विनन्या पूर्वमुपवास एक पूर्णे सप्तविंशति,*
नक्षत्रव्रते द्वितीयमुपवासस्वस्मां क्रियते ॥

Colophon : इति व्रत विधानम् ।
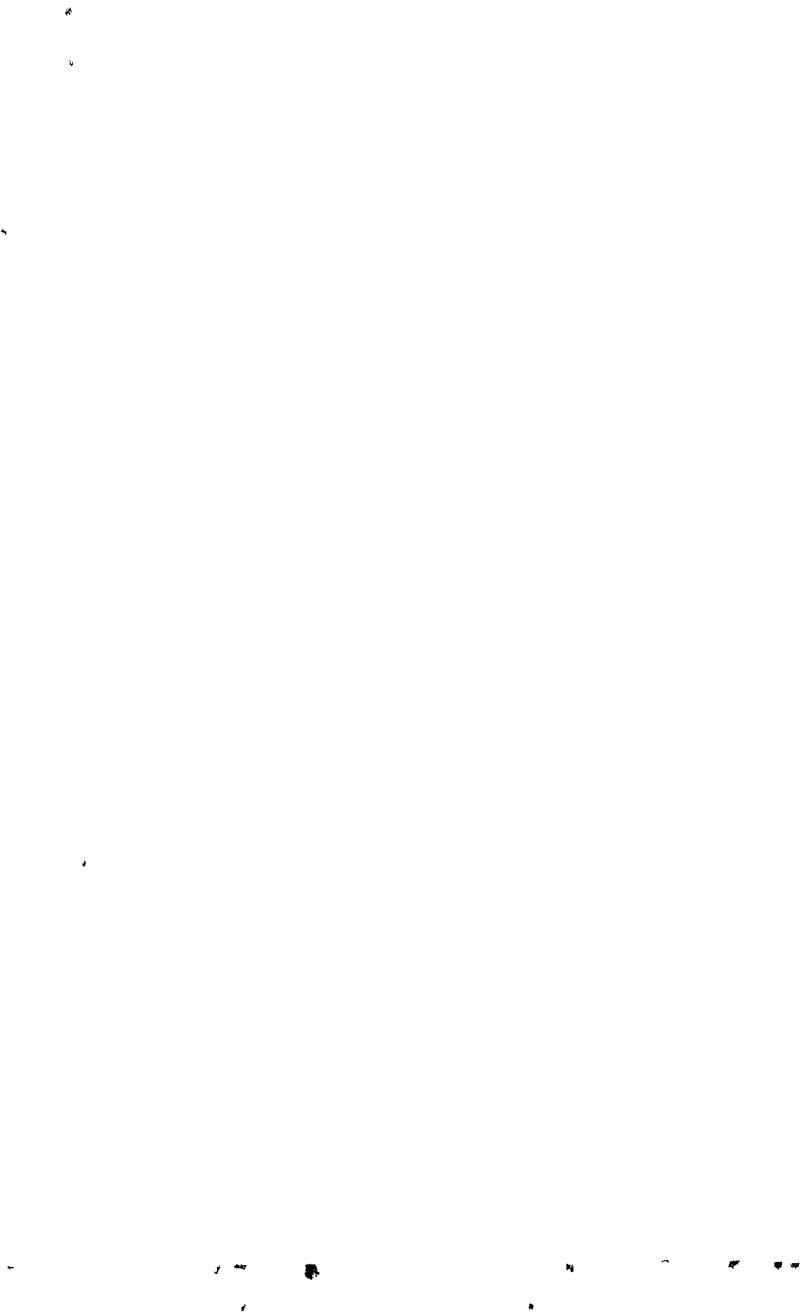
श्रुतपंचमी पर्व एवं श्री जैन सिद्धान्त भवन का
95 वाँ वार्षिक प्रतिवेदन

श्रुतपंचमी के पावन पर्व एवं श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा के 95 वाँ वार्षिकोत्सव के अवसर पर आप सभी महानुभावो, माताओ, बहनो विद्वज्जन, एवं उपस्थित भाई-बहनो का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। आप सभी को मालूम ही है कि आज का दिन अत्यन्त पावन एवं पुनीत दिन है। हम सभी इस महान् जैनागम एव श्रुत स्कन्ध यत्र की पूजा अर्चना के लिए एकत्रित हुए हैं जिस ग्रथ को ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी मे आज के ही दिन ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को आचार्य पुष्पदन्त ने लिपिबद्ध पूर्ण किया गया था। आज भवन का 95 वाँ वार्षिक प्रतिवेदन आप सभी के सामने प्रस्तुत करते हुए हम गौरवान्वित हैं।

आज से 154 वर्ष पूर्व पितामह प० प्रवर बाबू प्रभुदास जी ने अपने अथक परिश्रम से प्राचीन ग्रन्थो का भण्डार एकत्रित किया। बाबू प्रभुदास जी के पौत्र राजर्षि देव कुमार जैन का ध्यान जब शास्त्रो की सुव्यवस्था की ओर गया तब भट्टारक श्री हर्षकीर्ति जी महाराज की प्रेरणा से इन्होंने श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना सन् 1903 ई० में आज ही के दिन कर एक अद्वितीय कार्य किया था और पितामह बाबू प्रभु दासजी द्वारा एकत्रित सभी ग्रन्थो को भवन को अर्पित कर दिया। साथ ही भट्टारक जी ने भी अपनी सम्पूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थ को भवन को समर्पित कर दिया था।

आप जानते हैं कि शास्त्र भण्डारो का महत्त्व मन्दिरो, चैत्यालयों मूत्तियो के निर्माण एव पूजनादि से कम नही होता क्योकि तीर्थ करो, आचार्यों की वाणी इनमे सुरक्षित है। क्योंकि ज्ञान के बिना क्रियाकाण्ड इच्छित फलदायी नही होते। देव, गुरु एव धर्म का स्वरूप शास्त्रो मे निहित है।

प्राचीन काल में लोगो की स्मरणशक्ति प्रखर होती थी। शताब्दियों तक मौखिक पठन-पाठन की परम्परा थी किन्तु काल एव परिस्थितियाँ बदलती गयी। लोगो की स्मरणशक्ति क्षीण पड़ती गयी। ऐसी स्थिति में जिनवाणी के लुप्त होने की सम्भावनाए बढती गयी। उस समय श्रुतधर आचार्य धरसेन जी महाराज को जब यह आभास हुआ कि ज्ञानधारा लुप्त होती जा रही है तो उन्होंने आगम ग्रन्थों को लिपिबद्ध करने के निमित्त गिरनार पर्वत पर अपने दो शिष्यों मुनि पुष्पदन्त और मुनि भूतबलि के सहयोग से जैन धर्म के प्रमुख अगम षट्खण्डागम को लिपिबद्ध कराने का कार्य प्रारम्भ किया। प्रथम शिष्य मुनि पुष्पदन्त जी इसे अपने जीवन काल मे पूर्ण न कर सके किन्तु द्वितीय शिष्य मुनि भूतबलि ने पूर्व प्रथम शताब्दी

को आज ही के दिन ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को उक्त जैन वाङ्मय वाणी षट्-खण्डागम को पूर्ण किया। इसी कारण आज का दिन ज्येष्ठ शुक्ल पचमी श्रुतपचमी पर्व के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सम्पूर्ण भारत में लोग आज के दिन षट्खण्डागम की पूजा, आरती विभिन्न प्रकारके उत्सव मनाकर सम्पन्न करते हैं।

जैन परम्परा मे पहले ताडपत्रो पर ये शास्त्र लिखे जाते थे। धीरे-धीरे हस्तनिर्मित कागज का अविष्कार हुआ और कागज पर ग्रन्थों को लिपिबद्ध किए जाने की परम्परा प्रारम्भ हुई। जैन सिद्धान्त भवन मे केवल जैन ग्रन्थ की ही नही अपितु जैनेतर धर्मों को मिलाकर लगभग 7000 हस्त-लिखित ग्रन्थ सगृहीत हैं।

इस वर्ष सन् 1997-98 मे हिन्दी की 30 छपी पुस्तकें, अग्रेजी की 20 छपी पुस्तकें बढायी गयी। आज इस ग्रन्थागार में 12,000 छपी हिन्दी बगला, कन्नड, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओ की पुस्तक हैं, 5000 अग्रेजी मे छपी दुर्लभ एव बहुमूल्य ग्रथो का सग्रह एव लगभग 7000 हस्तलिखित एव 1700 ताडपत्रीय ग्रथ सुव्यवस्थित ढग से सगृहीत है।

ग्रन्थो के रख रखाव एव उनकी सुरक्षा हेतु समय समय स्टौक चेकिग, लेवरिंग, बाइण्डिग आदि कार्य चलता रहता है।

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थागार के प्रकाशन विभाग द्वारा हिन्दी मे श्री जैन सिद्धान्त भास्कर तथा अग्रेजी के "जैन एन्टीक्वायरी" का प्रकाशन 1912 से ही सुव्यवस्थित ढग मे चलता आ रहा है। इन दोनों शोध पत्रिकाओ मे जैन साहित्य, पुरातत्व, इतिहास एव कला सम्बन्धी सैकडो महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते चले आ रहे हैं। जल्द ही हम भास्कर का 50-51 वाँ अक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त ज्ञान प्रदीपिका, प्रतिभा लेख सग्रह मुनिसुव्रत काव्य, वैद्यसार, सचित्र जैन रामायण श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रथावली (दो भागोमें) तथा भास्कर भाग 1 से 3। तक छपे लेखो की सूची पुस्तक रूप मे प्रकाशित है। भाग-49 किरण 1-2 मे 31 से 46 तक के अको के लेखो की सूची भी छापी जा चुकी है। शोध कर्त्ताओ की सुविधाओं को ध्यान मे रखते हुए बहुमूल्य तथा दुर्लभ ग्रन्थो की जेरोक्स कापी करवाकर भी देने की व्यवस्था हम करते हैं।

श्री जैन सिद्धान्त भवन का सदुपयोग सरस्वती पूजा, लक्षण पर्व, श्रुतपचमी, वार्षिकोत्सव कवि गोष्ठी महावीर जयन्ती एव मुनिवरो के उपदेश आदि विभिन्न धार्मिक एवं सास्कृतिक कार्यक्रम के लिए भी किया जाता है। आरा नगर के मध्य अनुपम एव स्वच्छद वातावरण मे स्थित यह ग्रन्थागार दर्शनीय एव वदनीय है। इसके कण-कण मे धर्म, कला एव सस्कृति की त्रिवेणी लोगो मे चेतना के बीज बो रही है।

श्री जैन सिद्धान्त भवन में 60 साप्ताहिक, मासिक, षाण्मासिक शोध पत्र पत्रिकाएँ देश-विदेश से श्री जैन सिद्धान्त भास्कर के परिवर्तन में आती हैं।

श्री जैन सिद्धान्त भवन में विडियो-आडीयो कैसेट की लाइब्रेरी है जिसमें जैन तीर्थ स्थलों, मस्तकाभिषेक, रवीन्द्र जैन, मुनि महाराजों, पं० गणेश प्रसाद वर्णी जैसे संतों आदि के प्रवचन एवं जैन भजन आदि के विडियो कैसेट 15 एवं आडीयो कैसेट 20 तथा हस्तलिखित ग्रंथों की माईक्रो फिल्म भी संगृहीत हैं।

शोधकार्य के क्षेत्र में भी श्री जैन सिद्धान्त भवन के अन्तर्गत श्री देवकुमार जैन शोध संस्थान अपनी निःशुल्क सेवा प्रदान कर रही है। इस शोध संस्थान को मगध-विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। यहाँ की प्रचुर सामग्री ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएँ ताडपत्रीय-ग्रंथ आदि अत्यन्त उपयोगी हैं। यहाँ जैन साहित्य का ही नही जैनेतर साहित्य प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रजी आदि विविध भाषा विषयक दुर्लभ ग्रंथ आदि शोध कार्य हेतु प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध हैं। इसी वर्ष ग्रंथालय मे लगभग 100 पुस्तकें निर्गत की गयी हैं। जैनागम के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० राजाराम जैन मानद शोध निदेशक के रूप में क्रियाशील हैं तथा इनके निर्देशन में शोधार्थी शोध कार्य कर रहे हैं। इस वर्ष शोध निदेशक के रूप में वैशाली शोध संस्थान के विख्यात प्राध्यापक डॉ० लालचन्द्र जैन ने भी अपना सहयोग देने की स्वीकृति दी है।

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रंथागार के तत्त्वावधान में निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमार जैन कला-दीर्घा की स्थायी प्रदर्शनी प्रभु शान्ति नाथ जैन मन्दिर पर दर्शनार्थियों के लिए नित्य खुली रहती है। इस कला-दीर्घा में प्राचीन एवं आधुनिक चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्रों के अतिरिक्त प्राचीन सिक्के, सुप्रसिद्ध विद्वानों के पत्रों एवं ताडपत्रीय ग्रन्थ एवं अन्य विभिन्न सामग्रियों का अनुपम संग्रह है। जिसे देखने हजारों-हजार की संख्या मे दर्शनार्थी भारत के विभिन्न भागों से आते हैं, और इसे देखकर इनकी भूरी-भूरी प्रशंसा करते हैं।

इसकी एक शाखा, दिगम्बर जैन महावीर कीर्ति सरस्वती भवन राजगृह मे स्थापित है। दिसम्बर, '93 मे भगवान बाहुबलि मस्तकाभिषेक के समय इसकी एक और शाखा श्री जैन बाला विश्राम, धर्मकुञ्ज, धनुपुरा आरा मे "पैनोरमा ऑफ जैन आर्टस" के नाम से खोली गयी जिसमें देश के उत्कृष्ट जैन मन्दिरों के फोटो चित्र प्रदर्शित हैं।

मैं भवन की प्रबन्धकारिणी के सभी सदस्य पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं के प्रति अपना अनुग्रह प्रकट करता हूँ, जिनके बहुमूल्य सहयोग से जैनागम की सेवा निरन्तर हो रही है। आज इस अवसर पर

उपस्थित सभी माताओं, बहनों, भाई बन्धुओं के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनकी उपस्थिति से यह कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हो रहा है।

हमे पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग भविष्य में भी प्राप्त होता रहेगा।

और अन्त मे आप सभी से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि श्रुतपञ्चमी पूजा पूर्ण कर जब आप अपने-अपने घर जाएंगे तो अपने मन्दिर में रखे या घर मे रखे, शास्त्रो की साफ सफाई कर जहाँ तक सभव हो, शास्त्रों को वेस्टन मे लपेटकर रखे। तभी श्रुतपञ्चमी पर्व पर जिनवाणी माता की पूजा हमारे लिए सफल होगी।

जय जिनेन्द्र, जय जिनवाणी।

अजय कुमार जैन
मानद मत्री

पराग जैन
सयुक्त मत्री द्वारा पठित

●

मूडबिद्री जैनमठ के भट्टारक स्वामीजी दिवंगत

कर्नाटक में दिगम्बर जैन संस्कृति के महत्त्वपूर्ण प्राचीन केन्द्र मूडबिद्री में जैनमठ के पीठासीन पट्टाचार्य, स्वस्ति श्री ज्ञानयोगी चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी का भट्टारक-भवन मे ता० 15 जनवरी 98 को अचानक और आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। अतिम रात्रि मे कोई भी व्यक्ति उनके पास नही था। मध्याह्न में दरवाजा तोडकर जब लोग उनके कक्ष मे गये तो वहां उन्हे मृत पाया गया। समझा जाता है कि रात्रि में सोते समय हृदयघात से उनका निधन हुआ होगा।

लगभग पैंतीस वर्ष पूर्व मूडबिद्रीका एक किशोर धर्मराज शेट्टी, जैन विद्याओं के अर्जनका अभिप्राय लेकर दक्षिण से उत्तर भारत मे आया। सागर, कटनी तथा वाराणसी के जैन विद्यालयो मे तथा आरा के जैन-सिद्धान्त-भवन मे उसने विद्यार्जन किया और श्री महावीर निर्वाण महोत्सव-वर्ष 1974 में, दिल्ली मे भारतीय ज्ञानपीठ तथा वीर सेवा मन्दिर मे सहायक के रूप में कुछ समय तक साहित्य सेवा का कार्य किया। इसी बीच प्राय पच्चीस वर्ष से "गुरुविहीन" मुडबिद्री भट्टारकपीठ के लिये उनका चयन हुआ तथा परम्परानुसार श्री जैनमठ श्रवण बेलगोल के स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने क्षुल्लक दीक्षा प्रदान करके मूडबिद्री के पीठासीन भट्टारक के रूप मे उन्हे पट्टाभिषिक्त कराया। इस प्रकार उस विख्यात जैन पीठको लगभग 22 वर्ष तक उन्होने कुशलता-पूर्वक सचालित किया।

मठकी अनेक अचल सम्पत्तियो के दीर्घकालीन विवाद सुलझाकर, उन पर पुन मठका स्वत्वाधिकार स्थापित करना स्वामीजी के कार्यकालीन उल्लेखनीय उपलब्धि मानी जायेगी।

दक्षिण काशीके भट्टारक बनकर भी स्वामीजी ने उत्तर भारत से जीवन्त-सम्पर्क बनाये रखा। मध्यप्रदेश राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, बिहार, बगाल और आसाम तथा नागालैण्ड तक उन्होने बार-बार दूर-दूर तक यात्राएं की। पूज्य गणेश प्रसादजी वर्णी पूज्य आर्यिका विशुद्धमती माताजी तथा पूज्य आचार्य विद्यानन्द के प्रति उनकी विशेष भक्ति ज्ञान-दाता विद्वानों का उन्होने सदा सम्मान किया। उनकी छात्र अवस्था से लेकर अन्त तक मेरा उनसे घनिष्ठ सम्पर्क रहा। उनके जाने से मैंने एक आदरणीय मित्र खो दिया है।

उन्होंने आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड और जापान आदि अनेक देशों का भ्रमण किया था। उनके निधन का समाचार फैलते ही दूर-दूर से मठ के शुभचिन्तक

और भक्तगण मूडबिद्री में एकत्र हो गये। श्रवणबेलगोल मठ के कर्मयोगी चारु-कीर्ति स्वामीजी ने स्वय पधारकर अंत्येष्टि कराई तथा मठ का चार्ज ग्रहण किया। इस अवसर पर हुमचा के श्रीदेवेन्द्रकीर्ति स्वामीजी तथा कारकल और नरसिंहराज्य पुरा के भट्टारक और कनकगिरि के नव-दीक्षित भट्टारक श्रीभुवनकीर्ति स्वामीजी उपस्थित रहे।

धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्रीयुत वीरेन्द्रजी हेगडे, केन्द्रीय मंत्री श्री धनंजय, पूर्वमंत्री श्री अमरनाथ शेट्टी, विधायक अभयचन्द, नगर अध्यक्ष श्री शैणाय सहित हजारों की सख्या में लोगो ने शव-यात्रा में भाग लिया। श्री शांतिराज शास्त्री श्रवण बेलगोला तथा श्री देवकुमार शास्त्री, प्रभाकराचार्य और श्री धर्म साम्राज्य एव डाक्टर आरिगा ने व्यवस्था का सचालन किया।

— नीरज जैन सतना

श्री मुडबिद्री क्षेत्र के पूज्य भट्टारक जी के देहावसान पर

आज दिनांक 7-2-98 की अपराह्न 2 बजे से श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा की एक सभा श्री सुबोध कुमार जैन जी की अध्यक्षता में देवाश्रम आरा में हुई जिसमें निम्न महानुभाव उपस्थित रहे।

1	श्री सुबोध कुमार जी जैन	ह०/
2.	श्री प्रो० अ० श्याम मोहन अस्थाना	ह०/
3.	श्री नन्देश्वर प्रसाद जी जैन	ह०/
4.	श्री अभय कुमार जी जैन	ह०/
5	श्री मुकेश कुमार जैन	ह०/
6.	श्री नेमि चन्द जैन	ह०/
7	श्री प्रो० डा० राकेन्द्र चन्द जैन	ह०/
8	श्री अतुल कुमार जी जैन	ह०/

टाइम्स ऑफ इण्डिया दिल्ली के अंक मे दिनांक 2-2-98 को दु:खद समाचार प्रकाशित हुआ कि मूडबिद्री के परम पूज्य भट्टारकरत्न श्री चारुकीर्ति जी महाराज मूडबिद्री को समाधिमरण (देहान्त) दिनांक 11-1-98 गुरुवार को हो गया। इसके पूर्व उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। श्रद्धेय भट्टारक जी का आरा नगरी मे दो बार पदार्पण हुआ और उनके द्वारा श्री शांतिनाथ मन्दिर, जैन सिद्धान्त भवन तथा अन्य स्थानों पर बहुत धार्मिक एवं प्रभाव-शाली प्रवचन हुए थे। आरा नगर के जैन-जैनेतर समाज ने इसका लाभ उठाया। तदुपरान्त पावापुरी जी, राजगृह व अन्य तीर्थों की वन्दना करते हुए अपने धर्मोपदेश दिये। वे श्री जैन सिद्धान्त भवन की प्रशासनिक समिति में अध्यक्ष थे और उत्साहपूर्वक अपना नेतृत्व हमे दिया।

विदेशो में विगत 5-6 वर्षों से उन्होने भ्रमणकर विदेशी एव भारतीय मूल के निवासियो के बीच अपना धार्मिक प्रवचनो आदि के द्वारा जैन सिद्धान्तों का प्रचार एव प्रसार किया। उनके असामयिक निधन से आरा वासी काफी दुखित हैं। आज उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु एक मिनट का मौन धारण कर वीर प्रभु से प्रार्थना की गई कि उनको आत्मा को शान्ति प्रदान प्रदान करें एवं इस प्रकार अपनी विनयांजलि समर्पित की गई।

श्री जैन मठ मूडबिद्री के व्यवस्थापक ट्रस्टियों को इस प्रस्ताव की प्रतिलिपि भेजने का निर्णय लिया गया।

ह०/
सुबोध कुमार जैन

पाठकों के उद्गार

अंक मे प्रकाशित सामग्री—यथेष्ट ज्ञानवर्धक व उपयोगी है। पुस्तक की छपाई स्पष्ट व सुन्दर है—तथा गेट-अप आकर्षक है। लेख—जैन दर्शन और कर्म—एक चिन्तन' मे एक नया सोच प्रगट हुआ है—प्रो० डॉ० राजा राम जी जैन का लेख "इक्कीसवी सदी की दस्तक एवं जैन समाज के उत्तरदायित्व" एक मील के पत्थर की तरह दिशा निर्देश देने मे सफल हैं। बधाई ।।

भवदीय
इन्दर चन्द पाटनी
व्यवस्थापक
सरस्वती भण्डार, अजमेर
12-8-97

(२)

जैन पत्रकारिता के क्षेत्र मे "जैन सिद्धान्त भास्कर" त्रैमासिकी वस्तुत. भास्करवत ही प्रकाशमान है। इसमे शोध / खोज से परिपूर्ण आलेखो की प्रस्तुति जैन विद्या के अध्येताओ के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है सम्पादक जी के परिश्रम का परिणाम ही इतनी सुन्दर शोध पत्रिका समाज को प्राप्त हो रही है। आलेख भी भेजू गा। एक दो आलेख—श्रवकाचार के प्रेक्ष्य मे अपेक्षित है।

अभारै

भवदीय
ह० श्रेयास कुमार जैन
वडोदा
22-10-97

(३)

मान्यवर महोदय,

सादर जय जिनेन्द्र

"जैन सिद्धान्त भास्कर" दिसम्बर '96 प्राप्त हो गया था जिसका हार्दिक धन्यवाद। यह पत्रिका अपना एक उचा स्थान रखती है। इसमे जितने भी लेख होते हैं, वह सभी बहुत खोजपूर्ण जानकारी से ओत-प्रोत होते हैं, यह वास्तव मे प्रेरणादायक है। इसकी जितनी भी प्रशसा की जाय कम है। आपका कार्य बहुत सराहनीय है।

शेष शुभ।

मगल कामनाओं सहित
ह० सुमेर चन्द जैन
सम्पादक, वर्णी प्रवचन
15 प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर-251002
15-8-97

(४)

प्रिय भाई,

आपका पत्र मिला भास्कर का वाल्यूम 49/1996 डॉक से यथा समय मिल गया था मैं उस समय विदेश यात्रा पर था अत: पत्र नही जा सका इसका मुझे खेद है।

भास्कर इस भीषण महँगाई और पत्रकारिता के पतन युग में भी आपना स्तर और निरन्तरता बनाये चल रहा है, यह सचमुच सराहनीय है। यह वाल्यूम अभी पढ़ नही पाया हूँ। बाद मे आपको लिखूगा।

धन्यवाद सहित—

भवदीय
नीरज जैन
शान्ति सदन, सतना
मध्य प्रदेश-485001
22-8-97

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम — अमर जैन शहीद"
सम्पादक— डॉ कपूरचन्द्र जैन एव डॉ० श्रीमती ज्योति जैन
प्रकाशक —श्री कैलाश चन्द जैन स्मृति न्यास
मार्फत —डॉ० कपूरचन्द्र स्टाफ क्वार्टर न० 6
कुन्दकुन्द जैन महाविद्यालय, खतौली 251201
मुजफ्फर नगर (उ० प्र)
मू० 40/- जैन विद्वानो एव छात्रो के लिए रियायती मू० 20/-

प्रेषित अमर जैन शहीद की प्रति मिली। यह आपने ठीक ही किया कि जैन शहीदो की अलग से पुस्तक छपाई और 500-600 जैन स्वतत्रता सेनानियो की जीवनियो को जो आपने इकट्ठा किया जिसे बाद मे कुछ किस्तो में छापने की योजना है। भारत वर्ष को पाच भौगोलिक हिस्सो में बाटकर प्रदेशों के हिसाब से प्रकाशित होना चाहिए।

अमर जैन शहीद मे आरा नगर के शहीद श्री मनोहर जैन का नाम आना चाहिए था, जिनका परिचय मैंने आपके पास भेजा था। आरा के स्वतत्रता सेनानियों मे अपनी सहादत के कारण ही वे स्वतत्रता सेनानियों में अग्रणी माने जाते हैं। दुर्भाग्य से उनका कोई चित्र उपलब्ध नहीं है वरना मूर्ति अवश्य स्थापित करवाई जाती। वर्तमान पुस्तिका में आपने अधिक से अधिक चित्रों को उपलब्ध करने का प्रयत्न अवश्य किया होगा क्योंकि इसमे शहीदों का चित्र बहुत कम है। छपाई कागज आदि सतोष जनक है। इस प्रकाशन के लिए बधाई,

—सुबोध कुमार जैन

पुस्तक समालोचना

1—महाकवि आ० ज्ञानसागर के हिन्दी साहित्य की मौलिक विशेषताएँ 2—महाकवि आचार्य ज्ञानसागर अध्यात्म सदोहन 3—महाकवि आचार्य ज्ञानसागर के संस्कृत साहित्य में प्रकृति चित्रण 4—आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज इगलिश मे जीवनी 5—सतखजा के सन्त 6—विद्यासागर की लहरे 7—महामनीषि आ० विद्यासागर शोध—निर्देशिका 8—जीवन और साहित्यिक अनुदान।

उपर्युक्त पुस्तकें महामनिषि आचार्य श्री विद्यासागर जी साहित्य की विशाल शृंखला में प्रेषित 8 पुस्तकें प्राप्त हुई।

जैन साहित्य और दर्शन के क्षेत्र मे और उससे भी आगे बढकर भारतीय साहित्य के क्षेत्र मे पू० मुनिराज विद्यासागर जी का अवदान कभी भुलाया नही जा सकता। उनके द्वारा मूक माटी का जो अद्‌भुत लेखन हुआ है उसका सर्वत्र हिन्दी साहित्य के क्षेत्र मे अपूर्व स्वागत हुआ है। मुक माटी पर तो आधारित इस ग्रन्थ की प्रशसा में अनेक पुस्तक लिखी गई है।

पू० मुनिराज महाकवि आ० ज्ञानसागर जी जो कि स्याद्‌वाद महाविद्यालय काशी के छात्र थे। उनके ही दीक्षित होकर और अन्त मे अपने ही दीक्षा गुरू के द्वारा आ० पद का त्याग करना और उसके पूर्व अपने शिष्य विद्यासागर जी को आ० पद प्रदान करना, अपूर्व घटना हुई जिसकी मिशाल खोजना असभव है।

मुनि महाकवि आ० ज्ञानसागर जी महराज की साहित्य साधना के विषय में उपयुक्त पुस्तको की क्रम सख्या 2—महाकवि आचार्य ज्ञानसागर आध्यात्म सदोहन 3—महाकवि आचार्य ज्ञानसागर के सस्कृत साहित्य मे प्रकृति चित्रण और हिन्दी साहित्य की मौलिक विशेषताएँ जो कि श्री जैन सिद्धान्त भास्कर में अन्य पुस्तकों के साथ समीक्षा हेतु प्राप्त हुई है, ये तीन पुस्तक भी आ० विद्यासागर जी महाराज की अद्‌भुत गुरूभक्ति को दर्शाती है।

पूज्य आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज के विषय में इसके पूर्व भी अनेक साहित्य प्रकाशित हो चुके है और अपनी अद्‌भूत गुरूभक्ति के उदाहरण स्वरूप आ० श्री विद्यासागर जी महाराज अपने पूज्य गुरू की लेखनी से निकले सभी अप्रकाशित पाण्डुलिपियो को प्रकाशित करवा चुके हैं।

अपने परम श्रद्धेय दीक्षा गुरू के साहित्य को प्रकाश मे लाने का श्रेय आ० श्री विद्यासागर जी को हैं। उपर्युक्त सभी साहित्य पठनीय है और देश के सभी पुस्तकालयो मे तथा स्कूल और कॉलेजों मे, रखे जाएँ, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। क्रम सख्या (1-2-3)

4. अंग्रेजी भाषा में आ० श्री विद्यासागर जी महाराज की लघु जीवनी को डा० बड़े लाल जैन द्वारा हिन्दी भाषा में लिख कर तथा उसका अंग्रेजी में अनुवाद डा० लालचन्द जैन से करवाकर प्रकाशित हुआ है। इन दोनों महामन्त्री के कार्य, गागर में सागर के समान प्रतीत होते हैं और जो लोग हिन्दी भाषा-भाषी नही है, उनके बीच अंग्रेजी की यहपुस्तक वितरण करनी चाहिए।

5 'सतलजा' के सन्त आ० श्री विद्यासागरजी महाराज की जीवनी है जिसे कवि लाल चन्द जैन ने हिन्दी कविता मे लिखकर अपने पूज्य सन्त के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं।

6. 'विद्यासागर की लहर" का प्रकाशन दि० जैन युवक सघ, सागर वालो ने सन्त शिरोमणि आ० श्री विद्यासागर जी महाराज के रजत दीक्षा के अवसर पर अपनी विनम्र प्रस्तुति प्रकाशित की है। पुस्तकों के द्वारा तथा उनके द्वारा दीक्षित वर्तमान शिष्य-परिचय, आदि जो लिखे हैं, वे सभी पठनीय है और इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है।

7. महाकवि आ० विद्यासागरजी साहित्य साधना एव शोध निर्देशिका मुनि श्री सुधासागर जी महाराज के पूज्य आचार्य श्री द्वारा रचित सभी साहित्य पर शोध करने के लिए उपयोगी पुस्तिका लिखी है।

8 डा० विमल कुमार जैन द्वारा लिखित महामहिषि मुनि विद्यासागरजी महाराज की जीवनी एव उनका साहित्यिक अवदान। विद्यासागर साहित्य के शोध के सन्दर्भ में अत्यन्त उपयोगी प्रसिद्ध होगी और जैन अध्येताओ के लिए अनुसधान के क्षेत्र में, उपयोगी है।

कुरल-काव्य का नवीनतम प्रकाशन श्री कुन्द कुन्द भारती नई दिल्ली द्वारा हुआ है। सन्त श्री एलाचार्य द्वारा विरचित तिरुक्कुरल एक ऐसा काव्य ग्रन्थ है जिसे जैन और अजैन विद्वानो मे एक समान आदर प्राप्त हुआ। कबीरवादी इसे पचम वेद मानते हैं। इस नीति ग्रन्थ मे जो कि तमिल भाषा का ग्रन्थ है किसी धर्म या दर्शन का सिद्धान्त नही बताएं हैं अपितु सूक्तियो का सकलन है। यह किसी धर्म या समुदाय का नही है। इसी कारण इसाई लेखको ने इसे इसाई ग्रन्थ माना है। कबीर पन्थी इस ग्रन्थ को लेखक जुलाहा बताते हैं, हिन्दू लेखक हिन्दु मानते हैं और श्री ए० एन० चक्रवर्ती ने यह विश्वास व्यक्त किया है कि यह ग्रन्थ आ० कुन्द कुन्द का लिखा है।

प० गोबिन्द राय जैन शास्त्री ने इसका अनुवाद किया था। अब पुन आ० विद्यासागर जी महाराज की प्रेरणा से डा० सुधीर जैन ने सम्पादन किया है। श्री कुन्द-कुन्द भारती ट्रस्ट द्वारा प्रकाशन के क्षेत्र मे बराबर नयी नयी रचनाएं आ रही हैं और आ० श्री विद्यानन्द जी महाराज जी का नेतृत्व इस सस्थान को मिल रहा है। कीमत 50/-

प्रतिष्ठा रत्नाकर हिन्दी भाषा मे सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठा रत्नाकर पं० गुलाब चन्दजी पुष्प 019 पृष्ठों की एक अद्‌भूत कृति पू० आ० विद्या विमल सागर जी महाराज के शुभाशिर्वाद से प्रतिष्ठा की विधियाँ विस्तृत रूप से इसमे एकत्रित की गई है। और यह विशाल पुस्तक सभी प्रतिष्ठा कारको के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

प० गुलाब चन्दजी से हमारा परिचय राजगीर के पहले पर्वत पर बाबू छोटे लाम की प्रेरणा मे भगवान महावीर की प्रथम देशना स्मारक रूप मे जो प्रतिष्ठा हुई थी, उसी में प्रतिष्ठाकारक के रूप मे हुआ था। इस प्रतिष्ठा में इन्द्र-इन्द्राणी क्रमश: साहु अशोक कुमार जैन और उनकी पत्नि बने थे और बहुत विशाल तौर पर इस प्रतिष्ठा का आयोजन करने का सौभाग्य हमे प्राप्त हुआ था। इसके प्रतिष्ठा कारक के रूप में प० गुलाबचन्द जी को बहुत निकट से देखने समझने का अवसर मिला था। प्रतिष्ठा के समस्त कार्यक्रम गौरवपूर्वक और प्रतिष्ठा रत्नाकर की प्रति देश के सभी जैन ग्रन्थागारों में एव देश के सभी नगरो के प्रमुख मन्दिरो मे अवश्य होनी चाहिए। इससे सभी को जानकारी होगी कि प्रतिष्ठा का विधान किस प्रकार और कैसे शुद्ध रूप मे सम्पन्न किया जा सकता है। इस ग्रन्थ के लेखक प० गुलाब चन्द जी पुष्प को हार्दिक बधाई देता हूँ और इसके प्रकाशक प्रति बिहार जैन समाज दिल्ली को साधुवाद देता हूँ।

कीमत 200/-

●

छपते-छपते

दिल्ली, से बहुत दु खद समाचार आया है कि साहू अशोक कुमार जी हृदय रोग से अस्वस्थ चल रहे थे, पर अब बीमारी ने घोर रूप ले लिया और उनके ईलाज के लिए अमेरिका ले जाया जा रहा है। यह भी सूचना मिली है कि उनके हृदय प्रत्यारोपण का विचार चल रहा है जो कि केवल अमेरिका मे ही सम्भव है।

हमारे परिवार तथा साहू परिवार का सम्बन्ध उस समय से है, जब 60 वर्ष पूर्व हमलोगो ने मिलजुलकर, डालमिया बन्धु के साथ पटना के पास बिहटा मे, एक वृहद चीनी मिल की स्थापना की थी। हमलोग एक साथ ही बिहटा मे रहते थे। बिहटा मिल की स्थापना के उपरान्त ही साहू अशोक कुमार जी के पिता स्वर्गीय शाति प्रसाद जी के साथ सेठ रामकृष्ण डालमिया, की एक मात्र पुत्री श्रीमती रमा डालमिया के विवाह का निर्णय, बिहटा मे ही लिया गया था। यही साहू जी से परिचय करने और उन्हे देखने सुनने के लिए उन्हे बिहटा मे ही निमन्त्रित किया गया था। वे आए थे और हम सब ने उन्हे पहलोबार वहाँ देखा।

समय किस प्रकार परिवर्तन होता है, सब पुरानी बाते, इस समय याद आ रही है। जबकि साहू अशोक कुमार जी की बीमारी के कारण, सारा जैन समाज चिंतित है।

हमलोगो की शुभकामना है कि वे पूर्ण स्वास्थ लाभ करें और समाज का नेतृत्व करते रहे।

लेखक-सुबोध कुमार जैन

With effect from 1st Jan. 1996

The Sacred Books of the Jainas

(With Introduction & translation in English with original Commentary)

Vol I	DRAVYA SAMGRAHA by S C Ghoshal	Rs. 248-00
,, II	TATTVARTHADHIGAMA SUTRA by J. L Jaini	Rs. 177-00
,, III	PANCHASTIKAYA SARA by A. Chakravatinyanar	Rs. 196-00
,, IV	PURUSARTH SIDDHYUPAYA by Ajit Pd Jain	Rs. 108-00
,, V	GOMMAT-SARA JIVAKAND by J L Jaini	Rs. 316-00
, VI	GOMMAT-SARA-KARMAKAND (Pt.—I) by J L. Jaini	Rs 236-00
,, VII	ATMANUSHASAN by J L Jaini	Rs. 63-00
,, VIII	SAMAYASARA by J L Jaini	Rs 172-00
,, IX	NIYAM-SAR by V. Sainggar	Rs 70-00
,, X	GOMMAT-SARA-KARMAKAND (Pt —2) by Shital Pd	Rs 312-00
, XI	PARIKSAMUKHAM by S C Ghosal	Rs 212-00

Write to Xerox Publication Section

Dept. of Rare Books & Manuscripts

D. K. Jain Oriental Library Devashram ARA Bihar 802301

With effect from 1st. Jan. 1996

The Religious Scriptures of the Jainas

(With Introduction & translation in English)
in the Original Commentaty)

No	Title / Author		Price
1	GANITA-SARA -SAMGRAHA OF MAHAVIRACHARYA by M. Ranga Charya	Rs	378-00
2	NYAYAVATARA by S. C. Vidyabhushan	Rs.	43-00
3	PRAMATMA PRAKASH by C R Jain	Rs	75-00
4	DWADHANU PREKSHA by Shital Pd	Rs	127-00
5	RATNA KARAND SRAVAKACHARA by C R Jain	Rs	92-00
6	ATMA SIDHI by J L Jaini	Rs	84-00
7	THE NYAYAKARNIKA by M D. Desai	Rs	50-00
8	BHADRABAHU SAMHITA (Jainas Laws) by J L Jaini	Rs.	108-00
9	SANMATI TARKA by S L Sanghavi, B D Deshi	Rs.	309-00
10	JAIN LAW by C R. Jain	Rs	222-00

Consisting of —

I Bhadra Bahu Samhita
II Vardbamanu Niti
III Indranandi Jina Samhita
IV Arhan Niti
V Trivanikachar

Write to Xerox Publication Section
Dept. of Rare Books & Manuscripts
D. K. Jain Oriental Library, Devashram, ARA, Bihar 802301

33	THE SECRED PHILOSOPHY		
	by C R. Jain	Rs	26-00
34	SAPTBHANGIENYAYA		
	by Lala Kangmal	Rs.	26-00
35	AN INTRODUCTION TO JAINISM		
	by A B. Letthe M A	Rs.	96-00
36	SANYAS DHRMA		
	(A complement to householders Dharma)		
	by C R Jain	Rs.	127-00
37	OM NI SCIENCE		
	by C R. Jain	Rs.	16-00
38	HISTORICAL JAINISM		
	(A History of Jaina Church)		
	by Bool Chandra	Rs.	18-00
39	JAINA LITERATURE IN TAMIL		
	by Prof A C Chakraverty	Rs	63-00
40	ICONOGRAPHY OF THE JAINA GODESS SARASWATI		
	by Umakant P Shah	Rs.	34-00
41	COSMOLOGY OLD & NEW		
	A Modern Commentary on 5th Chapter of Thattvarth Satra		
	by C R Jain	Rs	205-00
42	RISHABH DEO, THE FOUNDER OF JAINISM		
	by C R Jain	Rs	64-00
43	LORD ARISTANEMIU		
	by H. Bhattacharya	Rs	68-00
44	SUBHACHANDRA AND HIS PRAKRIT GRAMMER		
	by A N Upadhya	Rs.	19-00
45	MS OF VARANGA CARITA		
	by A N Upadhya	Rs.	16-00
46	JAINISM CHRISTIANITY & SCIENCE		
	by C. R Jaini	Rs	156-00
47	THE BRIGHT ONES IN JAINISM (Svarga Loka)		
	by J L Jaini	Rs	18-00

Write to Xerox Publication Section
Dept. of Rare Books & Manuscripts
D K. Jain Oriental Library, Devashram, ARA, Bihar 802301

48	THE JAINA PUJA by C R. Jain	Rs	43-00
49	JAINA PENANCE by C R Jain	Rs	133-00
50	THE PRINCIPLES OF JAINISM by Dr. Shital Pd	Rs.	14-00
51	MAHAVIRA THE GREAT HERO by A S Sunavala	Rs	7-00
52	THE LIFTING OF VEIL OR THE GEMS OF ISLAM by C R Jain	Rs	142-00
53	MEDIAEVAL JAINISM by B A Saletere	Rs	319-00
54	SRAVAN BELGOLA by G. S. Mahinath	Rs	48-00
55	LIFE OF MAHAVIRA by M C Jaini	Rs.	85-00
56	MAHATMA GANDHI OF AHINSA by an Ahimsaist	Rs	26-00
57	JAINA PSYCHOLOGY by C R Jain	Rs	52-00
58	JAINISM & WORLD PROBLEM by C R Jain	Rs	171-00
59	JAINA LOGIC by C R Jain	Rs	26-00
60	THE NECTER OF SPRITUALISM by Sri Ganesh Pd Ji Varnsi	Rs	7-00
61	A LECTURE ON JAINISM by Banarasi Dass	Rs.	68-00
62	AN INSIGHT INTO JAINISM by R Dass	Rs	68-00
63	THE HERITAGE OF THE LAST ARHANT by Charlotle Krause	Rs	26-00

Write to Xerox Publication Section
Dept. of Rare Books & Manuscripts
D K. Jain Oriental Library, Devashram, ARA, Bihar 802301

With effect from 1st Jan. 1996

JAIN SIDHANT BHAWAN SERIES

1 मुनिसुव्रत काव्य (चरित्र) संस्कृत और भाषा टीका सहित । लेखक— प० के० भुजवली शास्त्री विद्याभूषण एवं प० हरनाथ द्विवेदी 30-00
2 ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिकशास्त्र, भाषा टीका सहित स० प्रो० रामव्यास पाण्डेय, ज्योतिषाचार्य 24-00
3 प्रतिमा लेख संग्रह स० श्री कामता प्रसाद जैन, एम आर ए एस, 24-00
4 प्रशस्ति संग्रह(प्रथमभाग)स०प०के०भुजवली शास्त्रीविद्याभूषण 18-00
5 वैद्यसागर स० प० सत्यधर आयुर्वेदाचार्य काव्यतीर्थ 24-00
6 तिलोय पण्णती ((प्रथम भाग) स० डा० ए० एन० उपाध्ये
7 भवन की अंग्रेजी पुस्तकों की सूची 6-00
8 An Introduction of Jain Sidhant Bhawan
9 Rules and by-laws of Deva Kumar Jain Oriental Research Institute, Arrah
10 श्री जैन सिद्धान्त भास्कर लेख सूची 6-00
(भाग १ से ३० तक)
The Jaina Antiquary-Articles Index
(Part 1 to 30)
11 भारतीय दर्शन में सर्वज्ञ स्वरूप विमर्श:
जैन दर्शन के आलोक में—डा० लालचन्द जैन एम. ए. 12 00

NIRMAL PRAKASHAN SERIES

1 तीर्थङ्कर—डा० रामनाथ पाठक "प्रणयी" 12-00
2 प्रकाश दीप (जैन भक्ति पद संग्रह) स० सुबोध कुमार जैन 6-00
3 सोलह कारण भावनाओं की पूजा रूपान्तरकार श्री सुबोध कु०जैन 6 00
4 महामुनि सुदर्शन—श्रीमती प्रमिला जैन 6-00
5 ओंकार धुनिसार—सुबोध कुमार जैन 6-00
6 राष्ट्रीय एकता की भाषा हिन्दी (जैन सन्तों का योगदान) 6-00
लेखक सुबोध कुमार जैन
7 सम्राट कुमारपाल—सुबोध कुमार जैन 6-00
8 ध्यान कैसे करें—सुबोध कुमार जैन 6-00
9 कौशाम्बीगढ़ का इतिहास 6-00
10 श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रंथावली भाग I & II 235-00
11 सचित्र जैन रामायण 1400-00

जनता प्रिंटिंग प्रेस, आरा।

जा सामान्य ग्रहण वस्तुओ का
करत, नही आकार का,
अविशेष ज्ञान अर्थों का
दर्शन उस कह शास्त्रो मे (43)

दर्शन, ज्ञान के पूर्व ससारी जीवो के,
न दोनो उपयोग होत युगपत ।
पर कवलिनाथ के तो
दोनो ही होते युगपत (44)

अशुभ से विनिवृत्ति
शुभ मे प्रवृत्ति, यह जानो चारित्र ।
पर, व्यवहार नय स, व्रत-समिति गुप्ति
ऐसा जिनवर न कहा । (45)

बाह्य-अभ्यतर क्रिया के अवरोध
नष्ट करे ससार के कारणो को ।
ज्ञानी के, कहा, जिन प्रभु न,
परम सम्यक् चारित्र होता (46)

दोनो ही (निश्चय/व्यवहार) क्योकि मनि को मोक्ष हेतु
ध्यान म प्राप्त होत नियम स
अतएव तुम प्रयत्न-चित्त स
ध्यान का अभ्यास करो (47)

मत भरमो मत फसो मत द्वेष करो
इष्ट अनिष्ट वस्तु स ।
स्थिर ईच्छा जो चित्त म
विभिन्न ध्यान सिद्धि के लिए (48)

पैतीस सोलह, छ , पाँच,
चार दो एक को जपो-ध्याओ
परमेष्ठी वाचक व
अन्य गुरु उपदेशो को (49)

नष्ट चतुर्घातकम,
दर्शन सुख ज्ञान वीर्यमय
शुभ देह म शुद्ध आत्मा
अर्हन् का विचिन्तन करना (50)

अष्टकर्म-विदेही,
लोक-अलोक के ज्ञाता दृष्टा ।
पुरुषाकारी आत्मा (को)
ध्याओ, लोक शिखर स्थित (जो) (51)

दर्शन-ज्ञान-प्रधान,
वीर्य, चारित्र, उत्तमतप करे ।
अपने व पर को जाने (जनावे)
वह मुनि, आचार्य-रूप ध्याओ ।। (52)

जो रत्नत्रययुक्त
नित्य धर्मोपदश मे निरत ।
वह उपाध्याय आत्मा
यतिवर-व, नम उन्हे (53)

जो मुनि दर्शन-ज्ञान, समग्र
मोक्ष-मार्ग
साध सदा शुद्ध
वह मुनि साधु नमो उन्हे (54)

जो कुछ भी ध्याव निरीहवृत्ति म
जब साधु होता वह
प्राप्त कर एकत्व को
तब उसका वह निश्चय ध्यान (55)

मत करो, मत बोलो मत सोचो
ताकि उसम बनो स्थिर,
आत्मा, आत्मा म रह
यही परम, होता ध्यान (56)

तप श्रुत व्रतवान चेता
ध्यान रथ धुरधर होता जभी,
तभी तीनो म निरत,
उन्हे लब्ध हेतु मग्न रहता (57)

इस द्रव्य सग्रह को, मुनिनाथ,
जो श्रुतज्ञानपूर्ण, दोष-सचय-च्युत है
शुद्ध कर । इस अल्पज्ञानी-
नेमिचद मुनि न कथन किया (58)

समाप्त

"THE PANCHA PARMES-THIS"
The original painting available at
N K C K Jain Gallary of Art & Culture
Sri Jain Siddhant Bhawan, Arrrah